माय ब्लैक डायरी पार्ट-1

(भाव आलोचना)

प्रस्तावना

चाहे चौथा आरा, सत्ययुग हो, या पाँचवाँ आरा – कलियुग... दोनों ही युगों में अस्तित्व रखने वाले सभी जीवों में अनादि काल से सर्व प्रकार के पापों के सहज संस्कार तो विद्यमान रहे ही हैं। 'न चिद् अनीदृशं जगत्।' ऐसा नहीं है कि जगत् कभी ऐसा नहीं था। जगत् हमेशा से ऐसा ही रहा है।

(1) भरत और बाहुबली... दो सगे भाई, भूमि के लिए युद्ध करते हैं, करोड़ों सैनिकों को मार डालते हैं... ऋषभदेव उपस्थित हैं, किन्तु उन्हें रोक नहीं पाते। यह घटना भी चौथे आरे की ही है।

(2) सीता का अपहरण चौथे आरे में ही हुआ। राम और रावण का युद्ध और लाखों लोगों का संहार भी चौथे आरे में ही घटित हुआ। वह भी प्रभु के दो भक्तों के बीच का संघर्ष था–एक ओर राम, जिन्हें उसी भव में मोक्ष प्राप्त करना था, और दूसरी ओर रावण, जिसे तीन भव पश्चात् तीर्थंकर बनना था!

(3) महाभारत का महाभयानक युद्ध भी चौथे आरे में ही घटित हुआ।

(4) कुल की वधू द्रौपदी के वस्त्र खींचकर उसे भरी सभा में पूर्णत: निर्वस्त्र करने का प्रयास भी चौथे आरे में ही हुआ।

(5) सत्यकि विद्याधर ने गुप्त रूप से कुलीन वंश की अनेक स्त्रियों के साथ बलात्कार किया। यह घटना भगवान महावीर की उपस्थिति में ही घटी। और आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा घृणित कर्म करने वाला सत्यकि निकट भविष्य में तीर्थंकर बनने वाला है।

(6) चेडा और कोणिक के बीच युद्ध, जिसमें 1 करोड़ 80 लाख सैनिकों का सर्वनाश हुआ... यह सब इसी चौथे आरे में हुआ।

(7) पुष्पचूल और पुष्पचूला, भाई और बहन, विवाह करते हैं और काम-क्रीड़ा में लिप्त होते हैं। यह कृत्य उनका अपना पिता ही करवाता है, और यह भी चौथे आरे में ही हुआ।

(8) गजसुकुमाल मुनि को जीवित जला दिया गया, खंदकमुनि की चमड़ी उधेड़ दी गई, झांझरिया मुनि का सिर काट दिया गया, 500 साधुओं को तेल की घानी में बीजों की तरह पीस दिया गया... मेतारज मुनि को अंधा कर दिया गया। ऐसी वीभत्स घटनाएँ तीर्थंकरों की उपस्थिति में चौथे आरे में घटीं...

(9) नन्दिषेण, जिसने अपनी दीक्षा त्याग दी और 12 वर्षों तक एक वेश्या के घर काम-सुखों में लिप्त रहा, वह भी चौथे आरे में ही हुआ। आषाढ़भूति मुनि भी दीक्षा त्यागने के बाद अभिनेत्रियों पर मोहित हो गए; यह भी चौथे आरे की ही घटना है। आषाढ़ाचार्य ने दीक्षा त्याग दी, स्वेच्छा से दो राजकुमारों की हत्या की और उनके आभूषण ले लिए... यह चौथे आरे की घटना है।

यदि आप इतिहास का अवलोकन करें, तो आपको सत्ययुग में भी पापों का ढेर मिलेगा। अंतर केवल इतना है कि वर्तमान युग में विज्ञान द्वारा की गई खोजें, मोबाइल जैसे उपकरण जो उसने दुनिया को दिए हैं–ये हजारों भयानक प्रलोभन अतीत में उपस्थित नहीं थे। ये प्रलोभन अब हैं, और वे अत्यंत सस्ते एवं सर्वसुलभ हैं... और इसी कारण से, कलियुग में, और विशेषकर पिछले बीस वर्षों में, पाप की प्रबलता भयावह सीमा तक बढ़ गई है। पाप पहले भी थे, किन्तु उनका प्रतिशत बहुत अधिक हो गया है, और विकृति भी कई, कई, कई गुना बढ़ गई है। मेरी दीक्षा 30 वर्ष पूर्व हुई थी। उस समय मैंने भारत में मोबाइल नहीं देखा था। मैंने कॉर्डलेस फोन भी नहीं देखा था। और उससे भी दो-तीन वर्ष पूर्व, मैंने भाव-आलोचना की थी। पूज्य आचार्य देव श्रमणिगणनायक अभयशेखरसूरिजी के प्रवचनों ने मुझे भाव-आलोचना के लिए प्रेरित किया था। यद्यपि उस समय मेरे जीवन में मोबाइल जैसे प्रलोभन नहीं थे, फिर भी पाप बहुत थे। मैंने 400 पृष्ठों की एक आलोचना लिखी, उसे पूज्य आचार्य कुलचंद्रसूरिजी को दी, और इस प्रकार मेरी आत्मा का वास्तविक उत्थान आरम्भ हुआ... उसके बाद, पूज्य गुरुदेवश्री युगप्रधानआचार्यसम चंद्रशेखर वि. म. मेरे प्रायश्चित्त-दाता एवं दीक्षा-दाता बने। पंद्रह वर्ष उनके सान्निध्य में व्यतीत हुए। उनके देहावसान के पश्चात्, मैंने एक बार पूज्य आचार्य जयसुंदर सू. म. के समक्ष आलोचना की, और तत्पश्चात्, पूज्य आचार्य कुलचंद्र सू. म. के साथ आलोचना की प्रक्रिया चलती रही। कुलपति में गणिपद समारोह हुआ, किन्तु पूज्य आचार्य कुलचंद्र सू. म. की 92 वर्ष की आयु के कारण, प्रायश्चित्त प्रदान करने की सुविधा कम हो गई। इसी बीच, मैं पूज्य आचार्य अभयशेखर सू. म. के साथ चातुर्मास करने बैंगलोर आया। साहेबजी के अनुपम गुणों को देखकर, मैंने उनके साथ अपनी आलोचना आरम्भ की। मानसून के दौरान मैंने यह पुस्तक 'ब्लैक डायरी' लिखनी शुरू की। कारण? वर्तमान में, आलोचना के लिए बिंदु सूचीबद्ध करने वाली पुस्तकें उपलब्ध हैं; वे अच्छी हैं, वे उत्तम हैं... किन्तु लोग भ्रमित होने के कारण, केवल एक टिक-मार्क (X) लगाकर आलोचना कर लेते हैं, और ऐसा करने में, उनके पश्चात्ताप का भाव प्रकट नहीं होता। एक प्रकार से, यह भी माया-सेवन के समान है। क्योंकि, कौन-से पाप किए, किस प्रकार किए, किस तीव्रता से किए... यह सब एक टिक-मार्क से प्रकट नहीं होता। यदि आलोचना पश्चात्ताप के साथ, स्पष्टता से की जाए... तो वह उन पापों के संस्कारों को ही नष्ट कर देती है, और वे जीवन में पुनः प्रवेश नहीं करते। किन्तु टिक-मार्क वाली आलोचना से यह फल प्राप्त नहीं होता। कुछ लोग केवल टिक नहीं लगाते; वे कुछ लिखते हैं... किन्तु या तो वे लिखना नहीं जानते, या उनमें स्पष्टता से लिखने का साहस नहीं होता... या वे अपने पापों को स्पष्ट रूप से स्मरण नहीं कर पाते... ऐसे लोगों को भी आलोचना का विशिष्ट फल प्राप्त नहीं होता। यह पुस्तक, ब्लैक डायरी, ऐसे हजारों जीवों पर महान उपकार करने हेतु लिखी गई है! इसमें हिंसा, झूठ आदि सभी पापों के अनेक उदाहरण विस्तार से लिखे गए हैं। जो इसे पढ़ेंगे,

उन्हें अपने पाप स्मरण आएँगे, पश्चात्ताप भी उत्पन्न होगा, और उन्हें यह भी बोध होगा कि अपने पापों के विषय में सूक्ष्मता से कैसे लिखा जाए। इसमें वर्णित कुछ पापों के लिए पाठकों को लग सकता है–'यह तो केवल कल्पना है। ऐसा नहीं हो सकता...' किन्तु विश्वास रखें कि जो पाप असंभव और काल्पनिक प्रतीत होते हैं, वे भी वास्तव में घटित हुए हैं। सभी से एक विनम्र निवेदन: कृपया इस पूरी पुस्तक को ध्यानपूर्वक पढ़ें... और इसमें से अपनी आत्मा के पापों को खोजें। यह पुस्तक केवल जानकारी प्राप्त करने के लिए नहीं, बल्कि पश्चात्ताप उत्पन्न करके आलोचना करने के लिए है। यह पुस्तक यह देखने या सोचने के लिए नहीं है कि– 'दूसरे भी पापी हैं, दूसरों में यह पाप है...' इस पुस्तक को पढ़ने से पहले, लक्ष्मणा नामक पुस्तक अवश्य पढ़ें। यदि आप पहले नहीं पढ़ सकते, तो बाद में लक्ष्मणा अवश्य पढ़ें। इसी प्रकार, रुक्मिणी भी अवश्य पढ़ें। ये पुस्तकें आपमें पापों के प्रति भय उत्पन्न करेंगी, और उससे पापों के लिए पश्चात्ताप निश्चित रूप से उत्पन्न होगा। मेरे श्रद्धेय गुरुदेवश्री द्वारा 53 वर्ष पूर्व लिखित पुस्तक ब्रह्मचर्य, और पुस्तक जो जे अमृतकुंभ ढोळाय न... भी विशेष रूप से पठनीय है। अंत में, एक ही अभिलाषा है... कि इस पुस्तक, ब्लैक डायरी, को पढ़ने के पश्चात्, आप सभी अपने-अपने जीवन की ब्लैक डायरी लिखें और इतने शुद्ध व निष्पाप बन जाएँ कि आप में से प्रत्येक के जीवन की व्हाइट डायरी लिखने का प्रसंग उपस्थित हो... मुझे दृढ़ विश्वास है कि एक ब्लैक डायरी पुस्तक हजारों व्हाइट डायरी के निर्माण का कारण बनेगी।

युगप्रधानआचार्यसम पूज्य पंन्यास प्रवर

श्री चंद्रशेखरविजयजी म. के एक शिष्य

गुणहंस वि.

कुमार पार्क, बैंगलोर

दिनांक: 16-9-2025, सायं 4:30

माय ब्लैक डायरी

भाव आलोचना

1. भाव-आलोचना क्या है?

भाव अर्थात् यह जीवन! जन्म से लेकर वर्तमान क्षण तक बीते हुए समय में किए गए सभी पापों को गुरु के समक्ष स्पष्ट रूप से कहना ही भाव-आलोचना है! वास्तव में, यह पापों की आलोचना है, भाव की नहीं। तथापि, क्योंकि इसमें सम्पूर्ण भाव = जन्म से लेकर वर्तमान तक के प्रत्येक पाप की आलोचना की जाती है, इसलिए भाव के पापों की आलोचना को लोक-प्रचलित रूप में भाव-आलोचना के नाम से जाना जाता है। जीवन भर के पापों की आलोचना = एक प्रबुद्ध गुरु के समक्ष स्पष्ट शब्दों में स्वीकार करना।

2. भाव-आलोचना क्यों करनी चाहिए?

जब हमने इस जीवन में जन्म लिया, तब हम पूर्णतः अज्ञानी थे। पाप क्या था और पुण्य क्या? हम नहीं जानते थे। और जब तक हमारे माता-पिता, सत्पुरुष मित्रों, या सद्गुरु ने हमें इस पुण्य और पाप का अर्थ नहीं समझाया, तब तक हम अज्ञान के वशीभूत होकर पाप करते रहे। दूसरी ओर, हमारे भीतर हिंसा जैसे अठारह प्रकार के पापों के संस्कार अनादि काल से विद्यमान हैं! और ये संस्कार अत्यंत गहरे हैं। हम उनके अभ्यस्त हो चुके हैं। शराब का व्यसनी व्यक्ति, शराब कितनी भी बुरी क्यों न हो, बार-बार शराब पिएगा। उसी प्रकार, हम जो हिंसा आदि पापों के अभ्यस्त हैं, वे कितने भी बुरे क्यों न हों, उन्हें बार-बार करेंगे। = शराबी यह नहीं जानता कि 'शराब बुरी है।' और उसे शराब की आदत (व्यसन = निर्भरता) पड़ गई है। इसलिए, प्रत्येक अवसर पर, उसके मन में शराब की लालसा उत्पन्न होगी, और यदि वह उपलब्ध हो गई, तो वह उसे अवश्य पिएगा। उसी प्रकार, हम नहीं जानते कि 'अठारह प्रकार के पाप बुरे हैं,' और हम अनादि काल से इन अठारह प्रकार के पापों के व्यसनी हैं। इसलिए, विभिन्न अवसरों पर, इन पापों में लिप्त होने की इच्छा उत्पन्न होना स्वाभाविक है, और जैसे ही हमें साधन मिलते हैं, हम निश्चित रूप से हिंसा आदि पाप करेंगे। = किन्तु जैसे वह शराबी, बार-बार पीकर, धीरे-धीरे अपना स्वास्थ्य नष्ट कर लेता है, वैसे ही हम भी, पाप करके, अपनी आत्मा के लिए भयानक हानि के बीज बो रहे हैं। यदि शराबी पीना नहीं छोड़ता या कम नहीं करता... तो उसका यकृत (लीवर) धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगा, और मृत्यु शीघ्र आ जाएगी। उसी प्रकार, यदि हम अपने पापों को नहीं छोड़ते या कम नहीं करते... तो हमें निश्चित रूप से नरक और तिर्यंच गति जैसी दुर्गतियों में अनंत काल तक भटकना पड़ेगा।

(1) पहले, कोई शराबी को समझाता है, 'भाई! शराब पीने से तुम्हारा स्वास्थ्य निश्चित रूप से बिगड़ेगा; मृत्यु और रोग शीघ्र आ जाएँगे। तुम्हारा परिवार तुम्हारे बिना निराश्रित हो जाएगा। शराब के कारण तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जाएगा, और तुम भिखारी बन जाओगे। तुम्हारी ऐसी स्थिति हो जाएगी कि तुम्हारे पास शराब खरीदने के लिए भी पैसे नहीं होंगे... इसलिए, तुम्हें शराब अवश्य छोड़ देनी चाहिए।'

(2) इस स्पष्टीकरण के माध्यम से, शराबी को यह ज्ञान होता है कि 'शराब के नुकसान अनेक हैं।'

(3) शराबी इस तथ्य को स्वीकार करता है कि 'नुकसान वास्तव में अनेक हैं।' और इसी कारण, उसके मन में पश्चात्ताप उत्पन्न होता है: 'मैंने इतनी शराब पीकर अपना जीवन क्यों बर्बाद कर लिया? मेरा धन लगभग समाप्त हो चुका है, मेरा परिवार मुझसे अत्यंत दुखी है, और अब मेरा शरीर भी मेरा साथ नहीं दे रहा... मैंने ऐसा क्यों किया?...'

(4) पश्चात्ताप से पीड़ित होकर, शराबी एक डॉक्टर के पास जाता है, अपनी गलतियों का विस्तार से वर्णन करता है, रोता है, और गिड़गिड़ाता है, 'मुझे बचाइए।'

(5) डॉक्टर उसका इलाज करता है; वह या तो उससे एक ही बार में शराब छुड़वा देता है या धीरे-धीरे। यदि

व्यक्ति में इच्छाशक्ति है, तो वह एक ही झटके में शराब छोड़ देता है! यदि उसमें इच्छाशक्ति की कमी है, तो वह धीरे-धीरे छोड़ता है!

(6) दवाइयाँ लेना, योग और प्राणायाम का अभ्यास करना... यह उपचार एक ओर चलता है, वहीं दूसरी ओर, वह शराब छोड़ता रहता है... जब तक कि एक दिन ऐसा नहीं आ जाता कि वह शराब के व्यसन से पूर्णत: मुक्त हो जाता है।

अब, आइए इसी विषय की पापों के संबंध में विस्तार से जाँच करें।

(1) माता-पिता, सत्पुरुष मित्र, और सद्गुरु हमें समझाते हैं, 'भाई! ये सभी पाप तुम्हारी आत्मा को भयानक हानि पहुँचाएँगे। तुम्हें हजारों, लाखों, करोड़ों, और अब्जों जन्मों तक दुर्गतियों में भटकना पड़ेगा। और तुममें ऐसा कष्ट सहन करने की क्षमता नहीं है। इसलिए, तुम्हें पाप का त्याग अवश्य करना चाहिए। यह हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, झूठा आरोप, चुगलखोरी, रति-अरति, निंदा, कपटपूर्ण असत्य, और मिथ्या मान्यता का शल्य... इन अठारह पापों का त्याग करो।'

(2) यह सब सुनने या पढ़ने के पश्चात्, हमें यह ज्ञान होता है कि 'ये अठारह पाप करने योग्य नहीं हैं।' अब तक, हमें यह ज्ञान भी नहीं था, इसलिए हमने कभी अठारह पापों को गलत नहीं माना। किन्तु अब, वह बोध जागृत हो गया है।

(3) हमें न केवल ज्ञान प्राप्त हुआ है, बल्कि इस विषय में हमारी श्रद्धा भी विकसित होती है, कि 'वास्तव में, ये पाप नहीं करने चाहिए। मैं इस सारी गंदगी में कहाँ उलझ गया? मैंने ऐसे घृणित पाप क्यों किए... मुझे अब इन सभी पापों का त्याग करना ही होगा।' इस प्रकार, हमारे भीतर अपने पापों के लिए गहरा पश्चात्ताप भी जागृत होता है।

(4) हम एक सद्गुरु के पास जाते हैं और अत्यधिक पश्चात्ताप के साथ, अपनी सभी गलतियाँ प्रकट करते हैं... हम रोते हैं। हमारी स्थिति ऐसी हो जाती है कि हमारे गले से स्वर भी मुश्किल से निकलता है। हमारे गाल आँसुओं से भीग जाते हैं, और हमारी नाक बहने लगती है। हमने गुरु की गोद में अपना सिर रख दिया है और फूट-फूट कर रो रहे हैं। हमारे आँसुओं से गुरु के वस्त्र भीग रहे हैं। गुरु प्रेम से हमारे सिर पर हाथ फेरते हैं... उनका स्पर्श सांत्वना से भरा है, किन्तु इस मौन आश्वासन के साथ, वे दो मधुर शब्द भी कहते हैं: 'तुम धन्य हो... कि आज तुम्हारे भीतर पश्चात्ताप का ऐसा अद्भुत भाव उत्पन्न हुआ है...' यही आलोचना है! शराब से व्यथित होकर, उस व्यथा के साथ डॉक्टर के समक्ष अपनी पीने की आदत का वर्णन करना... पापों से व्यथित होकर, उस व्यथा के साथ गुरु के समक्ष अपनी पापी प्रवृत्तियों का वर्णन करना...

(5) अब, गुरु हमारा उपचार आरम्भ करते हैं। वे हमसे एक ही बार में सभी पाप छुड़वा सकते हैं, या धीरे-धीरे। यदि हममें इच्छाशक्ति है, तो हम एक ही झटके में सभी पापों का त्याग कर देते हैं! और यदि हममें इच्छाशक्ति

की कमी है, तो हम धीरे-धीरे पापों का त्याग करते हैं!

(6) उपवास, आयंबिल, शास्त्र अध्ययन, दूसरों की सेवा (वैयावच्च)... प्रायश्चित्त के रूप में यह उपचार एक ओर चलता है, वहीं दूसरी ओर, हम धीरे-धीरे अपने पापों का त्याग करते रहते हैं... जब तक कि एक दिन ऐसा नहीं आ जाता कि हम पाप से पूर्णतः मुक्त हो जाते हैं...

मुख्य बिंदु इस प्रश्न का उत्तर है, 'पश्चात्ताप के साथ आलोचना क्यों करनी चाहिए?' उत्तर यह है कि एक प्रबुद्ध गुरु के संपर्क से, अज्ञान दूर हुआ और यह श्रद्धा उत्पन्न हुई कि 'मुझे पाप का त्याग करना चाहिए।' तथापि, अनंत भूतकालों में, हमने सभी अठारह पाप अनंत बार किए हैं, और इस प्रकार उनके संस्कार अत्यंत, अत्यंत, अत्यंत गहरे हैं। यही कारण है कि, ज्ञान होने के बावजूद, पाप का त्याग संभव नहीं हो पाता...

एक शराबी को देखिए। आपको कई ऐसे शराबी मिलेंगे जिन्हें अब अपने व्यसन के लिए गहरा पश्चात्ताप होता है। वे उस बर्बादी को समझते हैं जो उन्होंने स्वयं की है; वे शराब छोड़ना चाहते हैं, किन्तु व्यसन ऐसा हो गया है कि जब पीने का समय आता है, तो एक तीव्र लालसा उत्पन्न होती है, उनके पूरे शरीर की नसें खिंचने लगती हैं, वे स्वयं को रोक नहीं पाते, और 'न पीने' की इच्छा के बावजूद, वे पी लेते हैं। कभी-कभी, दृढ़ संकल्प के साथ प्रतिज्ञा लेने के बाद भी, 'मैं नहीं पिऊँगा,' वे उस प्रतिज्ञा को तोड़ देते हैं... अंततः, वे हिम्मत हार जाते हैं... उन्हें कोई संभावना नहीं दिखती कि 'मैं कभी शराब छोड़ पाऊँगा।'

हमारी स्थिति भी ऐसी ही है। हमें अपने विभिन्न पापों के लिए गहरा पश्चात्ताप हो सकता है। हम उन पापों से होने वाली हानि से भी अवगत हैं। हम उन पापों का त्याग करना चाहते हैं, किन्तु पाप का व्यसन (गहरे संस्कार) ऐसा है कि जैसे ही हमें कोई प्रलोभन मिलता है, हम वह पाप कर बैठते हैं। कभी-कभी, पाप करने की इतनी तीव्र इच्छा उत्पन्न होती है कि हम स्वयं आगे बढ़कर प्रलोभनों की तलाश करते हैं और पाप करते हैं। क्रोध जैसे पाप ऐसे हैं कि हम क्रोध करने का कारण खोजने नहीं जाते, किन्तु यदि कोई कारण उपस्थित हो जाए, तो हम क्रोध करने से स्वयं को रोक नहीं पाते। और भोजन तथा अब्रह्म या मैथुन से संबंधित पाप ऐसे हैं कि जब कोई बाह्य प्रलोभन न भी हो, तब भी हमें ऐसी लालसा होती है कि हम स्वयं उनकी ओर जाते हैं और पाप करते हैं...

इसलिए, पाप का त्याग करना अत्यंत कठिन है... और इसका एकमात्र कारण हमारे पापों के गहरे संस्कार हैं! यदि ये संस्कार क्षीण हो जाएँ, यदि वे टूट जाएँ... तो पाप कम होते हैं और समाप्त हो जाते हैं। और पाप के संस्कारों को क्षीण करने का अचूक उपाय है पश्चात्ताप + पश्चात्ताप के साथ, ईमानदारी से, स्पष्टता से, विस्तार से गुरु के समक्ष सभी पापों का वर्णन करना... + गुरु द्वारा दिए गए प्रायश्चित्त को करना...

इन तीनों के बिना–(1) पश्चात्ताप (2) आलोचना (3) प्रायश्चित्त–पाप के संस्कार नहीं टूट सकते। यदि वे नहीं टूटते, तो पाप समाप्त नहीं होंगे (कम नहीं होंगे...)। यदि वे समाप्त नहीं होते, तो संसार का चक्र नहीं टूटेगा, और मोक्ष के द्वार नहीं खुलेंगे... इसलिए, पाप के संस्कारों को नष्ट करने के लिए, और उन्हें नष्ट करके, पाप का

पूर्णतः त्याग करने के लिए, और उसका त्याग करके, मोक्ष प्राप्त करने के लिए, अपने पापों के लिए पश्चात्ताप, आलोचना, और प्रायश्चित्त अवश्य, अवश्य करना चाहिए।

इसमें, पश्चात्ताप मुख्यतः मन का विषय है...
आलोचना मुख्यतः वाणी का विषय है...
प्रायश्चित्त मुख्यतः शरीर का विषय है...
जैसे भारत पाकिस्तान को नेस्तनाबूद करने के लिए थल, जल और वायु से आक्रमण करता है, वैसे ही हमें भी पाप के संस्कारों पर–मन से पश्चात्ताप, वाणी से आलोचना, और शरीर से प्रायश्चित्त द्वारा–आक्रमण करके उन्हें नेस्तनाबूद कर देना चाहिए।
आइए भाव-आलोचना के लाभ पर एक और दृष्टि से विचार करें।
(1) हमने अपने मन, वचन और शरीर से जो पाप किए हैं, उनके द्वारा हमने पाप के अनंत कर्म बाँधे हैं, और इन पाप कर्मों में भविष्य के जन्मों में नरक जैसी गतियों में दुःख देने की शक्ति है...
(2) इस प्रकार, हमारी आत्मा में दो चीजें निहित हैं: (A) पाप कर्म = दुःख देने वाले पाप कर्म, और (B) पाप के संस्कार = हिंसा जैसे नए पाप उत्पन्न करने वाले पाप के संस्कार...
(3) यदि हम भाव-आलोचना को तीन भागों में विभाजित करें, तो भाव-आलोचना से पहले पश्चात्ताप आता है, फिर स्वयं भाव-आलोचना, और उसके बाद प्रायश्चित्त।
(4) ये तीनों मिलकर दो कार्य सिद्ध करते हैं... वे बँधे हुए पाप कर्मों को नष्ट करते हैं, और वे अनादि काल से चले आ रहे पाप के संस्कारों को नष्ट करते हैं...
(5) जब बँधे हुए पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं, तो दुःख नहीं आता... (वह आने वाला था, किन्तु अब नहीं आएगा)। जब पाप के गहरे संस्कार नष्ट हो जाते हैं, तो हिंसा जैसे पाप उत्पन्न नहीं होते...
(6) इस प्रकार, यदि हम देखें:
पश्चात्ताप + भाव-आलोचना + प्रायश्चित्त
→ पाप कर्मों का नाश, अतः दुःख नहीं आता।
→ पाप के संस्कारों का नाश, अतः पाप उत्पन्न नहीं होते।
इसलिए, भाव-आलोचना निश्चित रूप से करनी चाहिए।
3. क्या केवल पश्चात्ताप से काम नहीं चलेगा?
एक व्यक्ति जो पूर्णतः स्वस्थ है, वह डॉक्टर के पास नहीं जाता। किन्तु यदि उसे बुखार आ जाए, या पेट में तीव्र दर्द हो, या छाती में तीव्र दर्द हो... तो वह क्या करता है? अपनी बीमारी से व्यथित होकर, वह व्यक्ति निश्चित रूप से डॉक्टर के पास जाएगा, है न? वह अपनी बीमारी का विस्तार से डॉक्टर को वर्णन करेगा, है न? और वह बताई गई दवा लेगा, है न?
यदि कोई रोगी सोचे, 'मैं अपनी बीमारियों से बहुत परेशान हूँ, बस इतना ही काफी है! अब बीमारी ठीक हो जाएगी। अब मुझे किसी डॉक्टर को अपनी बीमारी दिखाने की आवश्यकता नहीं है।'
तो क्या उस रोगी की बीमारी ठीक हो जाएगी? वह बिल्कुल ठीक नहीं होगी।

=
उसी प्रकार, यदि हमें अपने पापों के लिए तीव्र वेदना = पश्चात्ताप होता है, तो हम निश्चित रूप से एक सद्गुरु के पास जाएँगे, जो पापों के लिए डॉक्टर हैं। हम निश्चित रूप से सद्गुरु को अपने पापों का विस्तार से खुलासा करेंगे, और हम निश्चित रूप से उनके द्वारा दिए गए प्रायश्चित्त रूपी औषधि को पूरा करेंगे।
यदि हम सोचें, 'मुझे अपने पापों के लिए पश्चात्ताप है, बस इतना ही काफी है! अब मेरे पाप समाप्त हो जाएँगे। अब मुझे किसी गुरु को अपने पाप बताने की आवश्यकता नहीं है,' तो क्या हमारे पाप समाप्त हो जाएँगे? वे नहीं होंगे। इसलिए, केवल पश्चात्ताप से काम नहीं चलेगा; आलोचना नितांत आवश्यक है...
4. यदि हम अपने पापों को सद्गुरु के बजाय किसी और के सामने स्वीकार करें, तो क्या वह पर्याप्त नहीं होगा?
यदि कोई रोगी अपनी बीमारियाँ डॉक्टर के बजाय दूसरों को बताए तो क्या लाभ है? दूसरों को न तो बीमारी का ज्ञान होता है, न ही दवा का, तो वे क्या दवा देंगे? बल्कि! कभी-कभी ऐसा हो सकता है कि अज्ञानी लोग कोई गलत दवा बता दें, और यदि हम वह दवा ले लें, तो बीमारी कम होने के बजाय बढ़ सकती है, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती है। कभी-कभी, ये अज्ञानी लोग बीमारी का सही निदान भी नहीं कर पाते। किसी को मलेरिया हो सकता है, और अज्ञानी लोग उसे पीलिया बताकर उसकी दवा लेने का सुझाव दे सकते हैं। यदि हम उनकी बात मानें, तो केवल हानि ही है।
अधिकांश लोग अज्ञानी होते हैं, फिर भी उनका मन यह स्वीकार नहीं करता कि 'मैं अज्ञानी हूँ।' इसलिए जब हम उन्हें अपनी शारीरिक समस्याओं का वर्णन करते हैं, तो वे दो कार्य करेंगे: (१) वे उन समस्याओं को किसी रोग का नाम दे देंगे, और (२) वे उस रोग के लिए कोई औषधि भी सुझा देंगे... यदि हम उन पर विश्वास कर लें, तो हमारा गलत मार्ग पर जाना निश्चित है... और उसमें रोग तो और भी बढ़ने ही वाला है...
इसी प्रकार, यदि हम सद्गुरु के अतिरिक्त किसी अन्य के समक्ष अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो दूसरे लोग अज्ञानी होते हैं। इसलिए हमारी बातें सुनने के बाद भी, वे यह नहीं जान पाएंगे कि 'वास्तव में हमारे पाप क्या हैं, और उनके निवारण के लिए क्या प्रायश्चित्त दिया जाना चाहिए... क्या हितकारी सलाह दी जानी चाहिए...' अत:, वे अज्ञानी स्वयं को ज्ञानी मानकर हमारे पाप को कोई नाम दे देंगे, जैसे 'आपको क्रोध है...' और उस पाप के प्रायश्चित्त स्वरूप कोई भी मनमाना तप बता देंगे, जैसे 'प्रतिदिन शांतिकरम् स्तोत्र का पाठ करें...' यदि हम अपनी सरलता में उन पर विश्वास कर लें, तो क्या होगा? हमारे पापों का नाश तो बिलकुल नहीं होगा। शांतिकरम् स्तोत्र का पाठ करने से क्रोध का नाश नहीं होता...
रोगी को तभी लाभ होता है जब वह किसी अच्छे चिकित्सक से परामर्श लेता है। रोगी को भले ही लगे कि उसे कोई भी रोग है, परंतु चिकित्सक सही रोग का निदान करेगा और उसके लिए सही औषधि भी देगा... और उससे रोगी का रोग ठीक हो जाता है...
5. यदि हम स्वयं ही प्रायश्चित्त कर लें तो क्या पर्याप्त नहीं होगा?
यदि कोई रोगी जिसे चिकित्सा विज्ञान का कोई ज्ञान नहीं है, किसी रोग से पीड़ित होने पर स्वयं ही औषधि लेना शुरू कर दे, तो क्या होता है? रोग की पीड़ा के बावजूद उसे यह पता नहीं होता कि उसे रोग क्या है। और मान लीजिए कि उसे पता भी चल जाए, तो उसे यह निश्चित रूप से नहीं पता होता कि उसकी औषधि क्या

है। यदि औषधि का पता भी हो, तो उसे यह नहीं पता होता कि उसे कब, कितनी मात्रा में, और कितने समय तक लेना है... इसलिए, रोग + औषधि + औषधि की मात्रा + औषधि के समय... इन सब के विषय में अज्ञानता के कारण यदि वह स्वयं औषधि लेता है, तो निश्चित रूप से रोग के बढ़ने की संभावना है। उसके ठीक होने का तो प्रश्न ही दूर है...

इसी प्रकार, हम जो पापी हैं, हमें अपने पापों के लिए पश्चात्ताप तो हो सकता है, परंतु वास्तव में पाप क्या है + उसका प्रायश्चित्त क्या है + वह कितना होना चाहिए + उसे कब करना चाहिए... यह सब हम नहीं जानते। इसलिए यदि हम यह प्रायश्चित्त स्वयं करते हैं, तो यह अत्यंत अनुचित माना जाता है। उसमें पाप कम नहीं होता, बल्कि उसके बढ़ने की निश्चित संभावना होती है...

हालांकि, जब कोई चिकित्सक स्वयं बीमार पड़ता है, तो बुखार और सर्दी जैसी कुछ निश्चित बीमारियों के लिए वह स्वयं औषधि ले लेता है; वह किसी दूसरे चिकित्सक के पास नहीं जाता... और जो चिकित्सक नहीं है, वह भी सर्दी जैसी सामान्य बीमारियों के लिए अक्सर स्वयं ही औषधि ले लेता है... परंतु जैन शासन में प्रायश्चित्त के विषय में ऐसा नहीं है। यहाँ तो महान आचार्य को भी, जो अद्वितीय ज्ञानी हैं, जो हजारों को प्रायश्चित्त-दाता है, उन्हें भी अपने छोटे से छोटे पाप का प्रायश्चित्त किसी अन्य से ही लेना होता है। इसका कारण यह है कि चिकित्सक या किसी अन्य रोगी को केवल अपना रोग ठीक करना होता है; उसे अपना अहंकार मिटाना नहीं होता, न ही उसे सरलता और विनम्रता विकसित करनी होती है। जबकि पापी को न केवल अपने पाप कर्मों को दूर करना होता है, बल्कि उस अहंकार को भी मिटाना होता है जो सोचता है, 'मैं अपने पाप दूसरों को कैसे बताऊँ?' उसे उस माया को भी मिटाना होता है जो सोचती है, 'मैं अपने घृणित पाप दूसरों को कैसे बता सकता हूँ? वे क्या सोचेंगे? बेहतर है कि उन पापों के बारे में बात ही न की जाए।' इसलिए, यदि कोई पिछले पापों का प्रायश्चित्त स्वयं ही कर लेता है, तो अहंकार और माया ज्यों के त्यों बने रहते हैं। नए पाप उत्पन्न होते हैं, और इस प्रकार प्रायश्चित्त लेने से पिछले पाप कभी भी शुद्ध नहीं होते... इस बात को बहुत अच्छी तरह समझना चाहिए।

यदि किसी दूसरे छोटे किंतु ज्ञानी साधु के समक्ष आलोचना करने का अवसर हो, प्रायश्चित्त लेने का अवसर हो, फिर भी आलस्य, अहंकार या माया के कारण कोई दूसरे से प्रायश्चित्त न लेकर स्वयं ही ले लेता है, तो उसके किए हुए पाप शुद्ध नहीं होते, और ऊपर से अहंकार, माया और आलस्य जैसे नए पाप उत्पन्न होते हैं! इसीलिए जैन शासन में किसी को भी, यहाँ तक कि महान आचार्य को भी, अपने पाप का प्रायश्चित्त स्वयं नहीं करना होता है। उसे यह किसी अन्य से ही लेना होता है–चाहे वह कोई अन्य महान आचार्य हो, या कोई कनिष्ठ आचार्य, या फिर उसका अपना ही कोई ज्ञानी शिष्य... यदि वह ऐसा करता है तभी उसके पिछले पाप शुद्ध होते हैं। अहंकार या माया नामक पापों का पोषण नहीं होता, आलस्य का पोषण नहीं होता, और भगवान द्वारा दिखाए गए मार्ग का पालन होता है... इस प्रकार अनेक लाभ प्राप्त होते हैं।

6. यदि पापों के लिए पश्चात्ताप न हो तो क्या पर्याप्त नहीं होगा?

जिस जीव को अपने द्वारा किए गए पापों के लिए कोई पश्चात्ताप (पीड़ा, दुःख, आघात) नहीं होता, वह भले ही अपने पापों को किसी ज्ञानी गुरु के समक्ष स्वीकार कर ले और उनके द्वारा दिए गए प्रायश्चित्त को पूरा भी

कर ले... फिर भी कोई विशेष लाभ नहीं होता। सबसे पहले तो, यदि उसे अपने पापों के लिए कोई पश्चात्ताप नहीं है, तो वह उन्हें गुरु के समक्ष स्वीकार ही क्यों कर रहा है? इस पर विचार करना चाहिए। (१) उसके पाप पकड़े गए हैं, इसलिए अब वह लोगों को यह दिखाने लगता है कि 'मैंने आलोचना और प्रायश्चित्त करके शुद्धि प्राप्त कर ली है... ताकि लोग बातें करना बंद कर दें।' इसमें कोई नेक इरादा नहीं है, केवल दूसरों के लिए दिखावा करने की भावना है, इसलिए शुद्धि नहीं हो सकती। (२) कुछ पापी ढीठ होते हैं। न कोई पश्चात्ताप, न ही कोई शर्म। 'मैंने २५ लड़कियों को फँसाया और उन सभी के साथ मजे किए।' ऐसा कहने में भी उनका अहंकार तृप्त होता है–मेरी शक्ति कितनी महान है? ... इसी प्रकार, चोरी, गुंडागर्दी, दुष्टता, धूर्तता, चालाकी और धोखेबाजी में... इन सब में उन्हें लगता है, 'मेरी शक्ति कितनी महान है?' तो कुछ लोग आलोचना के नाम पर केवल अपनी डींगें हाँक रहे होते हैं... अब ऐसी मनोवृत्ति वाला व्यक्ति कैसे शुद्ध हो सकता है?... (३) कुछ जड़बुद्धि होते हैं; कोई पश्चात्ताप नहीं। लेकिन उन्होंने सुना होता है कि 'आलोचना करने से हमारे सारे पाप धुल जाते हैं...' इसलिए वे आलोचना करते हैं। वे यह नहीं समझते कि पाप इस तरह से नहीं धुलते... पश्चात्ताप नितांत आवश्यक है...

संक्षेप में, जो लोग पश्चात्ताप की भावना के बिना आलोचना करते हैं, उनके पाप ऐसे प्रतिकूल परिणामों के कारण नष्ट नहीं होते हैं। इसलिए, यदि बिना किसी पश्चात्ताप के केवल 'आलोचना और प्रायश्चीत' हो, तो भी इससे आत्मा को लाभ नहीं होता।

बिना पश्चात्ताप के आलोचना का एक सकारात्मक पहलू यह है कि ऐसी आलोचना करने के क्रम में, किसी दिन पश्चात्ताप की भावना जागृत हो सकती है। या, ऐसी आलोचना की प्रक्रिया में, व्यक्ति कम से कम एक सुगुरु के संपर्क में तो आता है; और यदि वह सुगुरु कुछ योग्य बातें समझाए, तो उससे भी पश्चात्ताप जागृत हो सकता है। विकल्पत:, एक बार आलोचना करने का संस्कार बन जाने पर, व्यक्ति हर बार ऐसा करता रहता है, और ऐसा करते-करते अंततः पश्चात्ताप उत्पन्न हो सकता है।

बिना पश्चात्ताप के आलोचना का एक नकारात्मक पहलू यह है कि पश्चात्ताप के अभाव के कारण पाप नष्ट नहीं होंगे। और वह आत्मा बस यह मान लेगा, 'मैंने अपनी आलोचना पूरी कर ली है, इसलिए मैं शुद्ध हो गया हूँ।' परिणामस्वरूप, वह उस पाप के लिए फिर कभी आलोचना नहीं करेगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह इस भ्रम में है कि 'मैं शुद्ध हो गया हूँ।' इसलिए, पाप का उन्मूलन नहीं होगा; पश्चात्ताप की कमी के कारण आलोचना के समय उसका उन्मूलन नहीं होगा, और भविष्य में इस भ्रम के कारण कि 'मेरा पाप नष्ट हो गया है', उसका उन्मूलन नहीं होगा। वह बस दूसरी बार आलोचना करेगा ही नहीं।

मामले का सार यह है: पश्चात्ताप ही आलोचना की प्राण-शक्ति है। यदि आलोचना ट्यूबलाइट है, तो पश्चात्ताप बिजली है। यदि आलोचना कार है, तो पश्चात्ताप पेट्रोल है। यदि आलोचना बॉलपेन है, तो पश्चात्ताप उसमें भरी स्याही है। बिना बिजली की ट्यूबलाइट, बिना पेट्रोल की कार, या बिना स्याही की बॉलपेन किस काम आ सकती है? किसी काम की नहीं। उसी प्रकार, पश्चात्ताप के बिना आलोचना और संबंधित क्रियाएं किस काम आ सकती हैं? किसी काम की नहीं।

7. पाप क्या है? वह केवल अशुभभाव है।

हिंसा, झूठ इत्यादि अठारह पाप सुप्रसिद्ध हैं। लेकिन वे पारंपरिक दृष्टिकोण से जाने जाते हैं। वास्तव में, पाप अशुभभाव है! श्री निशीथसूत्र में लिखा है कि 'पड़ीसेवाना उ भवो'—भाव ही प्रतिसेवना है। अर्थात्, अशुभभाव ही पाप है। और यदि आप वास्तविकता देखें, तो हिंसा जैसे अठारह पापों को पाप कहा भी कहाँ जाता है? उन्हें पापस्थान कहा जाता है। पापस्थान का क्या अर्थ है? पाप के रहने का स्थान! जैसे बस स्टैंड (बसस्थान) बस के रुकने का स्थान है। बस अलग है, और बस स्टैंड अलग है। इसी प्रकार, रेलवे स्टेशन ट्रेन के रुकने का स्थान है। ट्रेन अलग है, और स्टेशन अलग है। उसी प्रकार, पापस्थान पाप के रहने का स्थान है। उसके भीतर, पाप तो अशुभभाव है, और उसके रहने का स्थान himsā जैसे अठारह कर्म हैं। इसलिए, ये अठारह कर्म पाप नहीं, बल्कि पापस्थान हैं। यही कारण है कि हम कहते हैं, 'उन अठारह पापस्थान में मेरी आत्मा ने जो भी पाप किया हो...'—उसके लिए, मिच्छामी दुक्कड़ं!

सांसारिक व्यवहार में, हिंसा जैसे पापस्थान को ही पाप कहा जा सकता है, लेकिन परम सत्य (परार्थ) यह है कि पापस्थान पाप नहीं हैं; बल्कि उनमें निवास करने वाला अशुभभाव पाप है। निशीथभाष्य के इस कथन को कभी नहीं भूलना चाहिए: 'पड़ीसेवाना उ भवो'–भाव ही प्रतिसेवाना है, क्रिया नहीं। (चूर्णिकार ने 'उ = तु' का स्थान 'भावो' शब्द के बाद करके अर्थ स्पष्ट किया है।)

हाँ, जैसे बस स्टैंड के बिना बस नहीं रुक सकती, या रेलवे स्टेशन के बिना ट्रेन नहीं, वैसे ही अशुभभाव भी हिंसा जैसे पापस्थान में ही रहते हैं, अन्यथा नहीं। इसलिए, यदि कोई अशुभभाव को रहने नहीं देना चाहता, तो उसे हिंसा जैसे अशुभभाव को पूरी तरह से त्याग देना चाहिए और उनसे दूर रहना चाहिए।

हालांकि, यदि बीच में ट्रैफिक हो, तो बस वहाँ भी रुक सकती है। यदि सिग्नल न हो, तो ट्रेन बिना स्टेशन के भी रुक सकती है। इसी प्रकार, अशुभभाव हिंसा जैसे पापस्थान के बिना भी हो सकते हैं, लेकिन ऐसा बहुत ही कम होता है।

साथ ही, यह भी आवश्यक नहीं है कि बस स्टैंड पर हमेशा बस हो, या रेलवे स्टेशन पर हमेशा ट्रेन हो। उसी प्रकार, यह भी आवश्यक नहीं है कि हिंसा जैसे पापस्थान में हमेशा अशुभभाव मौजूद हो। लेकिन अधिकांशत: ऐसा होता है।

इसलिए, इस तथ्य का बार-बार स्मरण करना चाहिए:

अशुभभाव ही पाप हैं, अशुभभाव ही पाप हैं, अशुभभाव ही पाप हैं।

हिंसा से शुरू होने वाले अठारह कर्म पापों के स्थान हैं, और इसलिए उन्हें पाप कहा जाता है।

1. भव आलोचना या भाव आलोचना?

लगभग सभी लोग भ्रमित और अज्ञानी हैं। तो, पहला मुद्दा यह है कि लोग १८ कर्मों को गलत मानते ही नहीं हैं। जो थोड़े अधिक समझदार हुए हैं, वे यह मानने लगे हैं कि हिंसा जैसे १८ कर्म ही पाप हैं; वे इस सिद्धांत तक नहीं पहुँचे हैं कि 'केवल अशुभभाव ही पाप है'। इसलिए, जब ये सभी भ्रमित लोग आलोचना करते हैं, तो वे अपने पापकर्मों की सूची बनाकर ही संतोष कर लेते हैं। वे अपने पापी भावों को बिलकुल भी प्रकट नहीं करते, या बहुत ही कम प्रकट करते हैं। परिणामस्वरूप, उनकी आलोचना केवल पापकर्मों की आलोचना बनकर रह जाती है, लेकिन वह कभी भी उस पाप की आलोचना नहीं बन पाती जो अशुभभाव है। यही कारण है कि, यद्यपि भव आलोचना शब्द तकनीकी रूप से सही है–भव आलोचना = अपने पूरे जीवन के अशुभभाव

रूपी पापों की आलोचना–लोग इस अर्थ को ठीक से नहीं समझते। अत:, अब यह स्पष्ट करना आवश्यक हो गया है कि भव आलोचना का अर्थ भाव आलोचना है!

वर्तमान युग में, भव आलोचना के लिए अद्‌भुत प्रेरणाएँ मिलती हैं। लोग इन प्रेरणाओं को अपनाते हैं और भव आलोचना के लिए तैयार भी हो जाते हैं, लेकिन वे यह नहीं जानते कि इसे कैसे करना है। उनके लिए भव आलोचना पर पुस्तकें भी छापी जाती हैं। इन पुस्तकों में, हिंसा और झूठ जैसे पापों से संबंधित विभिन्न बिंदु लिखे होते हैं; ऐसे ५००, ८०० या १००० बिंदु हो सकते हैं। इन बिंदुओं का संदर्भ लेकर अपनी भव आलोचना लिखनी होती है। हालांकि, लोग अज्ञानी हैं; उन्हें इस बात की जानकारी नहीं है कि 'ये बिंदु अधिकतर अशुभ कर्मों के बिंदु हैं।' इनका उपयोग यह याद करने के लिए किया जाना है: 'क्या मेरे जीवन में ऐसे अशुभ कर्म हुए हैं? और यदि हुए हैं, तो उस समय मेरे अशुभभाव क्या थे?' यह याद करने के बाद, उस अशुभ कर्म और उस समय के अशुभभाव को विस्तार से लिखना होता है। केवल अशुभ कर्म लिखकर संतुष्ट नहीं होना है। लेकिन भ्रमित लोगों में ऐसी समझ नहीं होती। वे न केवल अपने अशुभभाव के बारे में नहीं लिखते, बल्कि उनके पास अपने अशुभ कर्मों के बारे में लिखने का भी समय नहीं होता। वे उसी भव आलोचना पुस्तक में, बिंदुओं के आगे सही (✓) या गलत (✗) का निशान लगा देते हैं। कुछ लोग सही का निशान लगाकर 'कई बार,' 'कभी-कभी,' या 'शायद ही कभी' जैसी टिप्पणी जोड़ सकते हैं। इस तरह, वे पापकर्म की आवृत्ति का संकेत देते हैं। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि जो लोग पापकर्म और उसकी आवृत्ति पर ध्यान देते हैं, वे अपने पापी भावों को बिलकुल भी ध्यान में नहीं लेते। और वे ऐसी भव आलोचना से संतुष्ट महसूस करते हैं। यह भव आलोचना अत्यंत अधूरी है; इससे मुश्किल से ५-१०% लाभ ही मिल सकता है। और भविष्य में, वे यह मानकर बैठ जाते हैं, 'मेरी आलोचना हो गई,' इसलिए फिर से आलोचना करने का विचार भी उनके मन में नहीं आता। परिणामस्वरूप, उनके भयानक अशुभभाव की आलोचना अधूरी रह जाती है। फलस्वरूप, न तो उनके गहरे संस्कार समाप्त होते हैं, और न ही उन अशुभभाव से उत्पन्न हुए कर्म। तो फिर, उस भव आलोचना का विशेष लाभ क्या है?

मैं 'सही-गलत' शैली की आलोचना का एक उदाहरण देता हूँ, ताकि आपको एक विचार मिल सके।

(१) रात्रि-भोजन किया / (हाँ), कई बार, अभी भी जारी है।

(२) शराब पी / (हाँ), कभी-कभी, अब छोड़ दी है।

(३) चरस-गांजा का सेवन किया ✗ (नहीं)।

(४) बलात्कार किया ✗ (नहीं)।

(५) प्रकृति के विरुद्ध कृत्य किए (इसका अर्थ नहीं पता)।

(६) जानवर पाले / (हाँ)... एक कुत्ता है।

(८) जैनेतर मंदिर में गया / (हाँ)... घूमने के लिए गया था।

(९) चोरी की ✓ (हाँ)।

इस आलोचना को देखिए। इसमें, स्वीकार करने वाली आत्मा का इरादा अपने पापों को छिपाने का नहीं है, लेकिन उसे बस इस बात की जानकारी नहीं है कि 'मुझे अशुभ कर्म के समय अपने भावों को प्रकट करना है।' और यही कारण है कि इस सूची में, अशुभभाव की आलोचना अधिकतर कहीं नहीं दिखाई देती। तो बताइए, इसे भव आलोचना कैसे कहा जा सकता है? जीवन भर के पापों की आलोचना ही भव आलोचना है! पाप का

अर्थ है अशुभभाव, और यहाँ उसकी कोई आलोचना नहीं है, तो इसे भव आलोचना कैसे कहा जा सकता है?
९. इस पुस्तक में क्या होगा?... ध्यान से पढ़ें।
इस प्रकार, हजारों लोग आलोचना करते हैं, लेकिन वह अधूरी और त्रुटिपूर्ण रहती है। इसी कमी को दूर करने के लिए मैंने यह पुस्तक लिखना शुरू किया है। इसमें, पापकर्मों का वर्णन तो निश्चित रूप से होगा, लेकिन उनके साथ-साथ पापी भावों का भी वर्णन होगा।
(१) पापकर्मों और पापी भावों का वर्णन क्रमिक रूप से, हिंसा, झूठ आदि अठारह पापस्थान के क्रम में प्रस्तुत किया जाएगा।
(२) मैं उन सभी पापों का स्मरण करके वर्णन करूँगा जो अब तक मेरे ज्ञान में आए हैं। यह वर्णन इस प्रकार होगा मानो 'यह पाप मैंने किया है...' उदाहरण के लिए, किसी ने अश्लील वीडियो देखे होंगे; मैंने नहीं देखे, लेकिन वर्णन में मैं लिखूँगा, 'मैंने अश्लील वीडियो देखे, मैंने उन्हें छिपकर देखा, मैंने उन्हें दोस्तों के साथ देखा...' इस तरह वर्णन करने का कारण यह है कि यदि पाठक ने ऐसे पाप किए हैं, तो उन्हें ऐसा महसूस होगा जैसे वे अपनी ही भव आलोचना पढ़ रहे हैं। और ऐसा महसूस करने पर, उनमें पश्चाताप जागृत होने की संभावना है।
(३) यहाँ वर्णित पाप किसी एक आत्मा द्वारा किए गए नहीं हैं। बल्कि, यह दो सौ से पाँच सौ विभिन्न आत्माओं द्वारा किए गए विभिन्न पापों का वर्णन है।
(४) कुछ पाप केवल पुरुष करते हैं, और कुछ केवल स्त्रियाँ। ऐसे पापों का वर्णन उसी के अनुसार प्रस्तुत किया जाएगा। अर्थात्, जो पाप केवल पुरुष करते हैं, उसका वर्णन इस प्रकार होगा जैसे 'कोई पुरुष उन पापों के बारे में लिख रहा है।' और जो पाप केवल स्त्रियाँ करती हैं, उसका वर्णन इस प्रकार होगा जैसे 'कोई स्त्री उन पापों के बारे में लिख रही है।' उदाहरण के लिए, 'मैंने अपनी पत्नी को पीटा' एक पुरुष का पाप होगा। और 'मैंने अपने पति को धोखा दिया' एक स्त्री का पाप होगा। लेकिन 'मैंने रात में खाया' जैसा पाप दोनों कर सकते हैं। उस स्थिति में, चूँकि मैं स्वयं एक पुरुष हूँ, वर्णन इस प्रकार होगा जैसे 'कोई पुरुष पाप के बारे में लिख रहा है।' उदाहरण के लिए, यह लिखा जाएगा, 'मैं रात के बारह बजे होटल में खाने गया।' महिला पाठकों को इसे अपने लिए समझकर अनुकूलित करना चाहिए। यह स्वाभाविक है।
(५) कुछ पाप ऐसे भी हो सकते हैं जिनके बारे में मैंने न तो जाना है और न ही पढ़ा है। तथापि, जिन पापों के बारे में मैं जानता हूँ और पढ़ा है, उनके आधार पर मैं कल्पना कर सकता हूँ कि 'ऐसे पाप भी संभव होने चाहिए।' और इसलिए, मैं ऐसी कल्पना के आधार पर भी पापों के बारे में लिखूँगा। इन कल्पित पापों का मेरे पास कोई प्रत्यक्ष उदाहरण नहीं हो सकता, लेकिन यह पूरी तरह से संभव है कि मेरे द्वारा लिखे गए काल्पनिक पाप दुनिया में किसी ने किए हों, और शायद इससे भी बुरे पाप किए गए हों।
(६) दुनिया में होने वाले हर एक पाप का वर्णन इस पुस्तक में करना संभव ही नहीं है। वास्तव में, इसका ०.१% भी वर्णन करना संभव नहीं है।
पिछले दस वर्षों में, मुझे अनेक पापों के बारे में पता चला है। शुरू में, मुझे आश्चर्य और आघात लगता था, लेकिन अब यह सब सामान्य हो गया है। मोह के वश में एक आत्मा क्या नहीं करेगी? वही तो असली आश्चर्य है; वह क्या करती है, यह नहीं। यह अत्यंत आवश्यक है कि लोग पश्चाताप पूर्वक अपने अशुभ कर्मों के साथ-

साथ अपने अशुभभाव की भी आलोचना करें, और यही मेरा प्रयास है। हाँ, बहुतों को यह भी लग सकता है, 'क्या ऐसा पाप भी संभव है? निश्चित रूप से यह झूठ तो नहीं लिखा गया है!' लेकिन उन सभी से मेरा केवल यही कहना है: क्योंकि आपने वह पाप नहीं किया है या नहीं देखा है, इसलिए आपको ऐसा महसूस होना स्वाभाविक है। लेकिन दुनिया बहुत बड़ी और बहुत अजीब है। इसमें, ऐसे पाप बिलकुल हो सकते हैं जो आपने या मैंने नहीं किए, नहीं देखे, और जिनकी कल्पना भी नहीं की। मैंने जो कुछ काल्पनिक पाप लिखे हैं, वे भी पूरी तरह से निराधार नहीं हैं। वे सच्ची घटनाओं से समर्थित हैं।

10. लोकोत्तर गंगा नदी

जैनेतरों का मानना है कि गंगा नदी में स्नान करने से सभी पाप धुल जाते हैं। इसी कारण से, एक फिल्मी गीत में व्यंग्यात्मक टिप्पणी की गई है, 'राम! तेरी गंगा मैली हो गई, पापियों ने पाप धोते धोते...' जैन दर्शन ऐसी शारीरिक स्नान से ātmā के पापों की शुद्धि को स्वीकार नहीं करता। जैनेतरों में भी, एक अंतर्दृष्टि वाले कवि ने एक दोहा रचा है: 'हाँ, पश्चात्ताप स्वर्ग से उतरी एक विशाल धारा है; पापी उसमें डुबकी लगाकर पुण्यवान बन जाता है...' यदि कोई पापी केवल गंगा के जल में स्नान करने से शुद्ध हो सकता, तो कवि ऐसा क्यों कहता? कि पश्चात्ताप नामक एक महान धारा स्वर्ग से उतरी है, और जो पापी इस धारा में डुबकी लगाता है वह पुण्यवान और शुद्ध हो जाता है। गंगा नदी के बजाय पश्चात्ताप की धारा में डुबकी लगाकर शुद्ध होने की बात कहकर, कवि अप्रत्यक्ष रूप से यह सुझाव देता है कि 'गंगा में स्नान करने से कोई शुद्ध नहीं हो सकता।' फिर भी, आइए देखें कि अनेकांतवाद के दृष्टिकोण से यह भी कैसे सत्य हो सकता है। गंगा नदी हिमालय से निकलती है। हमारे पास भी दो हिमालय हैं। और दो गंगा नदियाँ हैं। दो नेत्र एक हिमालय हैं, और हृदय दूसरा हिमालय है! हृदय रूपी हिमालय से पश्चाताप रूपी गंगा बहती है, और वह भावात्मक है। उस पश्चाताप के कारण, दो नेत्र रूपी दूसरे हिमालय से अश्रु रूपी दूसरी गंगा नदी बहती है। वह द्रव्यात्मक है। इन दो गंगा नदियों में, एक पापी के सभी पाप धुल जाते हैं।

यदि हम अपने पापों के लिए अपने हृदय में पश्चाताप महसूस करते हैं, तो हमें समझना चाहिए कि हमने गंगा नदी में डुबकी लगा ली है। यदि इस पश्चाताप के कारण हमारी आँखों से आँसू गिरते हैं, तो हमें समझना चाहिए कि हमने गंगा नदी में डुबकी लगा ली है। कभी-कभी, शरीर की प्रवृत्ति के कारण, आँसू नहीं गिर सकते या कम हो सकते हैं, लेकिन यदि हृदय में पश्चाताप की भावना है, तो पाप निश्चित रूप से धुल जाएंगे। हमें इन दो गंगा नदियों में स्नान करना ही चाहिए।

– X – X –

मेरी काली डायरी भाग-१

भव / भाव आलोचना

प्रथम पापस्थान : हिंसा

(१) उस समय मेरी उम्र कोई १०-१२ साल की होगी। हमारा परिवार एक गाँव में रहता था। उन दिनों आज की तरह गैस के चूल्हे नहीं होते थे, बल्कि कोयले और लकड़ी से जलने वाले चूल्हे होते थे; उन्हीं पर खाना बनता था। गाँव में गंदगी के कारण मक्खियाँ बहुत होती थीं। मैं छोटी थी और किसी ने मुझे सही समझ नहीं दी थी। मक्खियाँ पकड़ने का मुझे बहुत शौक था! अगर कहीं बहुत सारी मक्खियाँ बैठी होतीं, तो मैं तेज़ी से उन्हें अपनी मुट्ठी में पकड़ लेती। मैं जितनी ज़्यादा मक्खियाँ पकड़ती, उतना ही मुझे अपनी कुशलता पर गर्व होता।

मुझे इस बात का ज़रा भी एहसास नहीं था कि मैं अपनी ज़रा-सी खुशी के लिए निर्दोष मक्खियों को अपनी मुट्ठी की जेल में कैद कर रही थी। वे बेचारी मक्खियाँ मेरी मुट्ठी में बंद होकर कितना कष्ट पाती होंगी।
फिर, यह जानने के लिए कि 'मैंने कितनी मक्खियाँ पकड़ी हैं?' मैं धीरे-धीरे एक-एक करके उन्हें अपनी मुट्ठी से छोड़ती। मैंने एक साथ पाँच, सात, यहाँ तक कि दस मक्खियाँ भी पकड़ी हैं। मेरा यह क्रूर मनोरंजन कुछ समय तक चलता रहा। पर अब मुझे और ज़्यादा मज़ा चाहिए था, इसलिए मैंने अपने मित्रों को भी इस पाप में शामिल कर लिया, और हम शर्त लगाते: 'कौन ज़्यादा मक्खियाँ पकड़ सकता है?' अगर मैं जीत जाती, तो खुश होती। अगर हार जाती, तो और ज़्यादा मक्खियाँ पकड़कर जीतने की कोशिश करती।
न जाने क्यों, एक दिन मेरे मन में एक बहुत ही भयानक विचार आया। यह मुझे किसी ने सिखाया नहीं था, पर लगता है कि मुझमें किसी परमाधामी देव के संस्कार अव्यक्त रूप में पड़े होंगे–'दूसरे जीवों को अधिक-से-अधिक और तरह-तरह की पीड़ा देकर विकृत आनंद लेना।' मेरे मन में विचार आया कि, 'घर में हमारे चूल्हे में आग जल रही है। अगर मैं इन मक्खियों को उस आग में फेंक दूँ तो क्या होगा? देखती हूँ।' और बस, मैं मक्खियों को पकड़कर चूल्हे के पास गई। लंबे अनुभव से मुझे पता था कि 'अगर मैं मक्खियों को यूँ ही चूल्हे में डालने की कोशिश करूँगी, तो वे आग तक पहुँचने से पहले ही उड़ जाएँगी।' इसलिए मैंने ज़ोर से मक्खियों को आग में फेंका। जैसे कोई गेंद ज़ोर से फेंकी हो! उसी क्षण अधिकांश मक्खियाँ आग की लपटों में फँस गईं, जल गईं और मर गईं। पर मुझे कोई दया नहीं आई। पता नहीं क्यों। शायद इसलिए कि मक्खियाँ चीख़ नहीं सकती थीं, और न ही उनसे कोई खून निकलता हुआ दिखाई दे रहा था। अगर ये बातें हुई होतीं, तो शायद करुणा आ जाती, पर यह भी निश्चित नहीं है। मुझे तो मक्खियों को जलता देखकर आनंद आता था। उसके बाद, मैं रोज़ कई बार ऐसा करने लगी। मैं कई वर्षों तक गाँव में रही और वर्षों तक यह क्रूर हिंसा करती रही। उसके बाद हम अहमदाबाद आ गए। पता नहीं वह बुरी आदत कब छूट गई। मेरी शादी भी हो गई, और मेरी एक बेटी हुई। उसकी शादी हो गई, लेकिन ससुराल में उसे बहुत दुख मिला। अंत में, वह मेरे पास वापस घर आकर रहने लगी। वह हर दिन रोती है, अवसाद में है, सदमे में है; वह एक ज़िंदा लाश है। उसे तड़पता, कष्ट पाता, दर्द में और घुलता हुआ देखकर मुझे बहुत बड़ा आघात लगता है! तीन साल से मैं बिना आग के ही जल रही हूँ। मेरी बेटी की स्थिति का कोई समाधान नहीं हो रहा है। अब मुझे अपना बचपन याद आता है। अब मुझे समझ आता है कि 'उन मक्खियों की पीड़ा कैसी रही होगी।' और ऐसा लगता है कि मेरी बेटी के अपने पाप कर्म तो होंगे ही, जिनके कारण वह दुख भोग रही है, पर साथ ही मेरे भी मक्खियों को मारने से बँधे पाप कर्म आज मुझे बहुत सता रहे हैं। एक माँ के रूप में, यह मैं ही अनुभव करती हूँ कि 'अपनी प्यारी बेटी को इतनी भयंकर पीड़ा भोगते हुए देखकर मुझे कितनी यातना होती है...' मुझे वह गीत याद आता है, 'किए हुए कर्म अब मुझे नड़ते हैं, मेरा हृदय सिसक-सिसक कर रोता है। जीना चाहूँ, पर जी नहीं सकती; मरना चाहूँ, पर मर नहीं सकती...' मेरे द्वारा उन हज़ारों मक्खियों को निर्दयतापूर्वक मारने का पाप इसी जीवन में मेरे लिए तीव्र वेदना का कारण बन गया है।
(२) हमारा भवन चार मंज़िला था। हम छत पर खेल रहे थे। गाँवों में सूअर तो हर जगह दिखते हैं। मेरी नज़र नीचे गई और मैंने देखा कि किसी सूअरी के ताज़े जन्मे छोटे-छोटे, गोरे-गोरे बच्चे नीचे घूम रहे हैं। उन्हें देखने की

मेरी उत्सुकता हुई। उन्हें मारने की मेरी कोई इच्छा नहीं थी, पर १५-१६ साल की उम्र में कुछ नया करने की, कुछ नया देखने की जिज्ञासा थी। मैंने छत पर इधर-उधर देखा; वहाँ एक बड़ा पत्थर पड़ा था। वह दो ईंटों जितना बड़ा था। मैंने उसे दोनों हाथों से उठाया, अपने दोस्तों को इकट्ठा किया और कहा, 'देखो, मेरा निशाना कितना पक्का है।' और एक सूअर के बच्चे के सिर पर निशाना साधकर, मैंने पूरी ताकत से वह पत्थर फेंका। मेरा निशाना एकदम पक्का था; पत्थर सीधा उसके सिर पर जाकर लगा। सूअर का बच्चा दर्द भरी तीखी चीख़ के साथ चिल्लाया, उसका सिर फट गया, और खून की धारा बहने लगी। बाकी के पाँच-सात बच्चे थोड़ी दूर भाग गए और वे भी चिल्लाने लगे। उन सभी बच्चों की माँ, सूअरी, मरते हुए बच्चे के पास दौड़कर आई। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगी, पर उसके बच्चे को कौन बचा सकता था? यह दृश्य देखकर मैं पूरी तरह से हिल गया। मैं तो सिर्फ़ अपना निशाना दिखाना चाहता था, पर मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि इसका इतना भयानक परिणाम होगा। मैं अपने दोस्तों के साथ नीचे भागा और घायल बच्चे के पास पहुँचा। हमने सोचा कि उसका इलाज करवाएँ, पर यह संभव नहीं था। वह बच्चा तड़प-तड़प कर मेरी आँखों के सामने ही मर गया। जब हम पास जाकर देखने की कोशिश कर रहे थे, तो माँ सूअरी हम पर झपटी। उसे लगा कि हम उसके बच्चे को नुकसान पहुँचाने आए हैं। मुझे लगा कि माँ को परेशान नहीं करना चाहिए; वैसे भी बच्चा तो मर ही चुका था। हम सब भारी मन से अपने-अपने घर चले गए। सालों बाद, जब भी मुझे यह घटना याद आती है, मैं काँप उठता हूँ। मुझे लगता है कि इस पाप के कारण मेरी अपनी मृत्यु भी ऐसी ही होगी। किसी भूकंप में, मेरे सिर पर कोई स्लैब गिर सकता है, या कुछ गुंडे लोहे की रॉड से मेरे सिर पर वार करके उसे फोड़ सकते हैं, या मैं किसी ऊँची जगह से गिर सकता हूँ और मेरा सिर किसी चीज़ से टकराकर फट सकता है... और मुझे वैसी ही भयानक मौत मिलेगी। शायद मेरे पश्चाताप और आलोचना के कारण मेरे पाप टूट गए हों और मुझे ऐसा भयानक फल न मिले। पर यह तो केवल ज्ञानी ही जानते हैं। मुझे बस एक पंक्ति याद आती है: 'मेरे कर्मों का दण्ड मुझे मिले; मृत्यु भी हो तो संतोषपूर्वक स्वीकार करूँगा।'

(३) हम सालों पहले एक गाँव में रहते थे। एक दिन, हमारे घर के आँगन में, मैंने देखा कि चींटियों की एक कतार ज़मीन के किसी हिस्से से निकलकर दूसरी तरफ जा रही है। मैं न तो बहुत छोटा था और न ही बहुत बड़ा। मुझमें लगातार एक जिज्ञासा और कुछ नया करने की इच्छा बनी रहती थी। मैं दौड़कर एक पत्थर ले आया, एक जगह बैठ गया, और उस पत्थर से एक चींटी को कुचल दिया। मुझे यह देखकर मज़ा आया। उसके ठीक पीछे दूसरी चींटी आ रही थी; मैंने तुरंत उसे भी कुचल दिया। जैसे स्कूल में छात्र एक-दूसरे के पास कतार में खड़े होते हैं, या जिस तरह लोग स्टेशन या थिएटर पर टिकट खरीदने के लिए एक-दूसरे से सटकर खड़े होते हैं, वैसे ही वे हज़ारों चींटियाँ एक कतार में चल रही थीं। वहीं बैठकर, मैं एक-एक करके उन्हें पत्थर से कुचलता रहा। चींटियों में इतनी बुद्धि नहीं थी कि वे सोचें, 'हमसे आगे वाली चींटियाँ मर रही हैं, इसलिए यह रास्ता मौत का है। हमें इस रास्ते पर नहीं जाना चाहिए। चलो, वापस मुड़ जाएँ, रुक जाएँ।' मानो वे शहीद होने के लिए ही निकली हों, वे एक के बाद एक आती रहीं, और मैं उन सबको कुचलता रहा।

उसी समय, मेरी बहन वहाँ आ गई। मैंने उसे भी यह हिंसा करने के लिए बिठा दिया। 'तू भी एक पत्थर ले आ और वहाँ बैठ जा... कितनी सारी चींटियाँ हैं... देख, ऐसे कुचल... मज़ा आएगा।' वह भी मेरी तरह करने लगी। लगभग

२० मिनट तक, मैं और मेरी बहन यह हिंसा करते रहे। अचानक, मेरी माँ की नज़र पड़ गई। वह तुरंत दौड़कर आईं, हमारे हाथों से पत्थर छीन लिए, हम दोनों को एक-एक थप्पड़ मारा और कहा, 'मैंने तुम्हें थप्पड़ मारा... तुम्हें दर्द हुआ न? अच्छा नहीं लगा न! पर तुम तो उन्हें पूरा का पूरा कुचल रहे हो। सोचो, उन्हें कितना दर्द होता होगा। तुम्हें पता है कि ऐसा करने से क्या फल मिलता है? एक दिन, तुम सड़क पर चल रहे होगे, और कोई कार या ट्रक तुम्हें टक्कर मार देगा। तुम नीचे गिर जाओगे, और गाड़ी तुम्हारे ऊपर से गुज़र जाएगी। तुम कुचल दिए जाओगे। या फिर, किसी जन्म में, तुम्हें अपराधी सिद्ध कर दिया जाएगा, और राजा तुम्हें ज़ंजीरों में जकड़वा देगा। तुम्हें हज़ारों लोगों के सामने एक मैदान में खड़ा कर दिया जाएगा, और फिर तुम्हारे ऊपर एक हाथी छोड़ा जाएगा। चूँकि तुम्हारे हाथ-पैर ज़ंजीरों से बँधे होंगे, तुम कुछ नहीं कर पाओगे, भाग नहीं पाओगे। फिर भी, डर के मारे, तुम बचने के लिए छटपटाओगे, लेकिन ज़ंजीरों के कारण तुम गिर जाओगे। उस समय, राजा और हज़ारों लोग हँसेंगे। सब इस जीवंत दृश्य को देखकर आनंद लेंगे, और तालियाँ बजाएँगे। पर तुम्हें वह अपमान देखने का समय नहीं मिलेगा क्योंकि तुम्हारे सामने एक भयानक मौत खड़ी होगी। तो तुम हाथी से बचने की कोशिश करोगे, भले ही ज़मीन पर घिसटकर ही क्यों न हो। अगर हम तर्क से सोचें, तो यह बिलकुल साफ़ है कि तुम मैदान से बचकर नहीं निकल सकते, क्योंकि सैनिकों ने उसे घेर रखा है। इसलिए, अगर तुम्हारे पैरों में ज़ंजीरें न भी होतीं, तो भी हाथी के हमले से बचना असंभव होता। और यहाँ तुम अपने पैरों से ज़मीन पर घिसटकर भागने की कोशिश कर रहे हो। वास्तव में, तुम्हें यह कोशिश भी नहीं करनी चाहिए। अगर मौत निश्चित है, तो व्यक्ति को भाग-दौड़ किए बिना शान से मरना चाहिए। पर उस समय, तुम्हें या किसी और को ऐसे विचार नहीं आएँगे। मौत का डर हर किसी को मौत से बचने की कोशिश करने के लिए प्रेरित करता है। तुम भी घिसटते हुए जाओगे, और तुम्हारी हरकतों को, तुम्हारे चेहरे पर डर को देखकर सब हँसेंगे। वह राजा चिल्लाएगा, 'भाग, भाग...' और सब फिर से हँसेंगे, पर तुम लाचार होगे। और वह उन्मत्त हाथी, पास आकर, अपने भारी पैरों से तुम्हारे शरीर को कुचल देगा। तुम दर्द से चीख़ोगे, और राजा और लोग विकृत आनंद से चिल्लाएँगे। खून, मांस, आँतें, दिल—सब कुछ एक साथ पिस जाएगा, और तुम्हारी ātmā अगले भव के लिए प्रस्थान कर जाएगी। बेटा, क्या तुम ऐसी गति चाहते हो? नहीं न? तो फिर कभी ऐसा मत करना।' उसके बाद, मेरी माँ हम दोनों को देरासर ले गईं, हमसे भगवान के सामने क्षमा माँगने को कहा, और हमने भी क्षमा माँगी। आज भी, मैं भगवान से अज्ञानता में किए गए उस कृत्य को क्षमा करने की प्रार्थना करता हूँ।

(४) उस दिन, मैं एक यात्रा से लौटा था। मैं अत्यंत थका हुआ था। भोजन करने के बाद, मैं तुरंत ही सो गया। बहुत गहरी नींद थी, पर मेरे शरीर पर कुछ काटने के एहसास से मेरी नींद खुल गई। जहाँ काटा था, मैंने सहज ही हाथ से खुजलाया और नींद में ही फिर सो गया। अर्ध-जागृत अवस्था के कारण, मुझे यह भी पता नहीं चला कि मैंने क्या किया है। थोड़ी देर बाद, मुझे फिर से काटने का एहसास हुआ। मैंने फिर खुजलाया। पर जब ऐसा तीन-चार बार हुआ, तो मैं पूरी तरह जाग गया। मैं बिस्तर पर बैठ गया। अधूरी नींद से जागने के कारण मेरा सिर बहुत भारी हो रहा था। यात्रा की थकान से मेरा पूरा शरीर पहले से ही दुख रहा था। चूँकि मैं एक घंटा भी नहीं सोया था, इसलिए थकान और सिर के भारीपन ने मुझे गुस्सा दिला दिया। मुझे नहीं पता था कि कौन काट रहा है। गुस्से में, मैं...

मैंने बत्ती जलाई, और जब मैंने ध्यान से देखा, तो मेरे होश उड़ गए, हज़ारों चींटियों की एक कतार आगे बढ़ रही थी। वे मेरा खून पीने के लिए मेरे ऊपर चढ़ गई थीं, और उनका काटना तीखा था। क्रोध की एक लहर दौड़ गई, और तुरंत यह विचार आया कि, 'अगर मैं इन्हें नहीं मारूँगा, तो ये मुझे सोने नहीं देंगी।' मैं रसोई में गया,

एक माचिस की डिब्बी ले आया, और एक तीली जलाई। उस लौ से, मैं चींटियों को भस्म करने लगा। बेचारी लाल जीव आग को कब तक सह सकती थीं? वे तेज़ी से जलने और मरने लगीं। ऐसा करते समय, एक माचिस की तीली जलकर मेरी उँगलियों तक आ गई, और लौ ने मुझे झुलसा दिया। मैंने तुरंत उसे फेंक दिया। मुझे तब यह ख़याल नहीं आया कि जब आग ने सिर्फ़ मेरी उँगली को छुआ, जिससे मैं ऐसे झटके से पीछे हट गया, तो मैं इन चींटियों के पूरे शरीर को आग लगा रहा हूँ। वे कितनी भयानक पीड़ा का अनुभव कर रही होंगी! पर उस समय, मुझमें 'सभी जीवों को आत्मवत् देखने' की समझ नहीं थी। ऊपर से, मेरी थकान और सिरदर्द ने मुझे चींटियों को अपना दुश्मन समझने पर मजबूर कर दिया था।

और इसलिए, मैंने दूसरी, और फिर तीसरी माचिस की तीली जलाई, और उन्हें जलाता रहा, पर मुझे बार-बार माचिस जलाने का काम असुविधाजनक लगा। अचानक, मुझे याद आया, 'मेरे पास सिगरेट के लिए एक लाइटर है। वह लगातार जलता रह सकता है, मेरा हाथ भी नहीं जलेगा, और वह अपने आप बुझेगा भी नहीं।' मैंने लाइटर निकाला और उसे जलाया, मेरे चेहरे पर एक राक्षसी संतोष फैल गया। बस फिर क्या था। मैं हर कोने-कोने में गया, जहाँ-जहाँ चींटियाँ दिखीं, उन्हें ढूँढ-ढूँढकर लाइटर की लौ में राख कर दिया। उसके बाद, मैं चैन से सो गया।

उन दिनों, मैं एक नास्तिक की तरह, एक बड़ा पापी था। मैं सच्चे गुरुओं की संगति में नहीं था। अब, मुझे गहरा पश्चात्ताप होता है। मेरी पत्नी एक धार्मिक महिला है। यह सब मेरे विवाह से पहले हुआ था, जब मैं अपनी उभरती जवानी में था। पर विवाह के बाद, उसके कारण मुझमें कई बदलाव आए। जब मैंने उसे इस घटना के बारे में बताया, तो वह करुणा से और अगले जन्म में मेरी भयानक गति की कल्पना करके रो पड़ी। उसने मुझसे कहा, 'तुम्हें जल्द-से-जल्द आलोचना करके इस पाप को धोना चाहिए। तुम्हें पता है? आज हम जो ख़बरें अक्सर सुनते हैं कि 'फलाँ व्यक्ति जलकर मर गया', वह ठीक इसीलिए होता है क्योंकि उन्होंने पिछले जन्म में किसी जीव को जलाया होगा। जैसा बोओगे, वैसा काटोगे!' गोशालक ने दो साधुओं को अग्नि से जलाकर मार डाला था। उसने प्रभु महावीर को भी भस्म करने का प्रयत्न किया था। इस पाप के परिणामस्वरूप, गोशालक न केवल उसी जीवन में अग्नि से मरा, बल्कि अनंत जन्मों तक अग्नि या शस्त्र से मरने के लिए अभिशप्त है। तुमने बहुत ग़लत किया है, पर अभी भी एक मौका है। अगर तुम किसी गुरु के पास जाकर सच्चे पश्चात्ताप के साथ आलोचना करो, तो तुम बच सकते हो।'

गुरुदेव! एक श्राविका सचमुच एक धर्मपत्नी होती है; उसकी सलाह ने मुझमें एक परिवर्तन ला दिया है। मैंने यह आलोचना लिखी है। कृपया मुझे इसके लिए कठोर-से-कठोर प्रायश्चित दें और मुझे इस पाप से बचाइए। इस जीवन में अब मुझसे ऐसा पाप कभी नहीं होगा।

(५)

कॉलेज में लगभग तीन साल तक, मेरा एक जैन लड़के के साथ प्रेम-संबंध था। पर न तो उसका परिवार और न ही मेरा परिवार हमारी शादी को स्वीकार करने के लिए तैयार था। लड़का अपने परिवार के विरुद्ध जाने को तैयार नहीं था। मुझे लगा कि मैं उसके बिना नहीं जी सकती। मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई, और किसी की सलाह पर, मैंने कुछ मांत्रिक से संपर्क किया। मैंने इन मंत्र-तंत्र के जानकारों से कहा, 'मैं इसी लड़के से शादी

करना चाहती हूँ और किसी से नहीं; वरना मैं जी नहीं पाऊँगी। पर हमारे परिवार वाले नहीं मान रहे हैं, और इस वजह से लड़का भी पीछे हट गया है।' कुछ विचार-विमर्श और कुछ छोटे-मोटे अनुष्ठान करने के बाद, उन मांत्रिक ने मुझसे कहा, 'हम तुम्हारा काम करवा सकते हैं। पर उसके लिए तुम्हें एक काम करना होगा। बताओ अगर तुम तैयार हो।' मैंने पूछा, 'कितना खर्च आएगा?' वे तो केवल मुझे लूटने के लिए ही बैठे थे। उन्होंने कहा, 'कुल मिलाकर पचास हज़ार लगेंगे। इसमें हमारी फीस भी शामिल है। एक रुपया भी ज़्यादा नहीं।' मैं चौंक गई। मेरे पास इतने पैसे नहीं थे, और मेरे माता-पिता तो बिलकुल नहीं देते, क्योंकि वे खुद इस रिश्ते के खिलाफ थे। फिर भी, मैं मान गई और पूछा, 'क्या करना होगा?' उन्होंने कहा, 'एक बली देनी होगी।' मैं समझी नहीं, तो मैंने पूछा, 'मतलब?' उन्होंने समझाया, 'बली का अर्थ है, एक तांत्रिक अनुष्ठान करके देवी माँ के सामने एक बकरे की गरदन काटनी होगी। अगर तुम देवी को बकरे के खून और मांस का भोग लगाओगी, तो वह प्रसन्न होकर तुम्हारा यह काम कर देंगी। जो सब ना कह रहे हैं, वे हाँ कहने लगेंगे।'

मैं सन्न रह गई। मैं, एक जैन परिवार की बेटी! बचपन से ही मुझमें जीवदया के संस्कार डाले गए थे। मैं चींटी या कीड़े-मकोड़े तक नहीं मारती थी, मच्छर को तो सिर्फ़ उड़ा देती थी। ऐसे में, एक बकरे की हत्या मेरे लिए कैसे संभव थी? मैंने मना कर दिया। पर जब मैं घर लौटकर सोचने लगी, तो मुझे उस लड़के की याद आने लगी। मैं फूट-फूटकर रोने लगी। मेरा उसके प्रति मोह इतना गहरा था कि मैं उसके बिना जीने की कल्पना भी नहीं कर सकती थी। मेरे मन में एक युद्ध छिड़ गया। अंत में, जीवदया का गुण हार गया, और सांसारिक मोह और वासना की जीत हुई। मैंने बली करवाने का निर्णय ले लिया। मैंने पचास हज़ार रुपये उन मांत्रिक को दे दिए, और बलि के लिए एक दिन तय हो गया। बकरे को मुझे नहीं काटना था, पर मुझे वहाँ उपस्थित रहना था। मेरी आँखों के सामने एक बकरा लाया गया; वह चिल्ला रहा था। उसे रस्सी से घसीटा जा रहा था। यह सब अपनी आँखों के सामने होता देख, मैं भीतर तक हिल गई। मेरा मन बदल गया और मैंने सोचा, 'मुझे मना कर देना चाहिए,' पर मैं ना नहीं कह सकी। मैं पूरी तरह से किंकर्तव्यविमूढ़ थी, समझ नहीं पा रही थी कि क्या करूँ। और वहीं, देवी की मूर्ति के सामने, मेरी आँखों के ठीक सामने, बकरे की गरदन पर एक हथियार से वार किया गया। मेरी आँखें कसकर बंद हो गईं, मेरे मुँह से एक चीख़ निकल गई, और ठीक उसी पल, एक चीख़ बकरे के मुँह से भी निकली। एक-दो मिनट बाद, मैंने झिझकते हुए अपनी आँखें खोलीं। बकरा ज़मीन पर कटा हुआ पड़ा था। मांत्रिक बाकी का अनुष्ठान कर रहे थे। उन्होंने मेरी तरह कई लोगों को चीख़ते हुए देखा होगा, इसलिए उनके लिए यह कोई नई बात नहीं थी। उन्होंने मुझसे कहा, 'तुम्हारा काम हो जाएगा। एक महीने के भीतर तुम्हें परिणाम दिख जाएगा।' मैंने कुछ नहीं कहा; तब तक मेरी इच्छा ही मर चुकी थी। इतनी भयंकर हिंसा करवाकर प्राप्त किया हुआ प्रिय व्यक्ति मेरे जीवन में कभी खुशी कैसे ला सकता था? यह प्रश्न अब मुझमें उठा।

जब मैं घर गई, तो मैं शांत हो गई, पर बकरे का दृश्य मेरी आँखों के सामने बार-बार घूम रहा था। मैं बहुत परेशान थी। पर जो हो चुका था, उसे बदला नहीं जा सकता था। इसी सोच के साथ, मैं उस लड़के से शादी करने के अपने प्रयास जारी रखे। एक महीने के भीतर, परिणाम तो आया, पर मेरी आशा से एकदम विपरीत! उसकी सगाई हो गई, पर मुझसे नहीं–किसी और लड़की से। यह सुनकर मुझे दुख ज़रूर हुआ, पर मैं उसे सह

सकी, क्योंकि मन में एक ही विचार आया: 'मैंने एक बहुत बड़ा पाप किया है, और यह उसी का प्रतिकूल फल है।' मैंने उन मांत्रिक से कोई बहस नहीं की और न ही उनसे बात की। मैं हर तरह से धोखा खा चुकी थी। मैं, जिसने आज तक जानबूझकर एक चींटी को भी नुकसान नहीं पहुँचाया था, एक लड़के के मोह में और उसे पाने की इच्छा में, एक बकरे की बलि करवा बैठी और पचास हज़ार रुपये की चोरी कर ली।
आज, मुझे इन सभी पापों के लिए भयानक पश्चात्ताप हो रहा है। भविष्य के जन्मों में, मुझे शायद एक बकरा बनकर इसी तरह कटना पड़ेगा। शायद इसी जीवन में, किसी दुर्घटना में मेरे अंग कट जाएँ। या शायद मधुमेह या कैंसर फैलने के कारण उन्हें काटना पड़े। इनमें से कोई भी परिणाम संभव है। मैं उनसे डरती हूँ। मैंने सुना है कि पश्चात्ताप और आलोचना से ऐसे बड़े-बड़े पाप भी मिट सकते हैं। इतना बड़ा अपराध करके फिर क्षमा माँगना, यह उम्मीद करना कि 'कोई सज़ा न मिले, या केवल छोटी-मोटी सज़ा मिले,' पूरी तरह से ग़लत है। फिर भी, आज मैं यह प्रार्थना करती हूँ: 'इस अधम आत्मा द्वारा किए गए इन सभी पापों को क्षमा कर दें।' कुछ समय बाद, मैंने अपने माता-पिता को सब कुछ बता दिया, जिसमें ५०,००० रुपये की चोरी भी शामिल थी। मैं उनके सामने बहुत रोई। मेरे आँसू देखकर, उन्होंने कुछ नहीं कहा। मेरे पिता ने खुद मुझसे कहा, 'चलो, हम कसाईखाने चलते हैं! वहाँ हम तुम्हारे ही हाथों से एक लाख रुपये के बकरों को मुक्त कराने की व्यवस्था करेंगे। जो मर गया है, उसे हम नहीं बचा सकते, पर जो मरने वाले हैं, उन्हें बचाकर हम इस पाप का कुछ प्रायश्चित तो कर ही सकते हैं।'
(कर्नाटक के एक शहर में घटी एक सच्ची घटना, मामूली बदलावों के साथ)
(६)
हमारे फर्नीचर में खटमलों का भारी उपद्रव हो गया। जब हम सोते या बैठते तो वे हमें काटते थे। कुछ दिनों तक, मैंने दूसरे उपाय आज़माए और इसे सहन किया, पर फिर मेरा धैर्य समाप्त हो गया, और मेरे मन में एक अत्यंत क्रूर विचार आया। मैंने एक सुई ली और फर्नीचर की दरारों में ढूँढने लगा। जो भी खटमल मुझे दिखता, मैं उसे सुई की पतली नोंक से छेद देता और फिर अपने पास रखे लाइटर में जला देता। मैंने गिना नहीं कि कितने, पर इस तरह मैंने बहुत सारे खटमलों को छेदा और जलाया। अब जब मैं धर्म से जुड़ा हूँ, साधुओं की संगति में आया हूँ, प्रवचन सुने हैं, और शास्त्र पढ़े हैं, तो मुझे होश आया है। शायद मेरे शरीर में भाला घोंपा जाएगा, या कोई मेरे पेट, छाती या पीठ में छुरा घोंप देगा, या मैं किसी आतंकवादी की गोली का शिकार बनूँगा, या किसी दुर्घटना में काँच के टुकड़े मेरे पूरे शरीर में घुस जाएँगे। इस एक कृत्य से, मुझे छेदे जाने के अनगिनत फल मिल सकते हैं। यह भी संभव है कि मुझे कोई ऐसी गंभीर बीमारी हो जाए कि उसके इलाज के लिए मुझे सैकड़ों इंजेक्शन लगवाने पड़ें, और हर एक के साथ बहुत दर्द और डर सहना पड़े। आज भी मुझे आश्चर्य होता है: एक जैन परिवार में जन्म लेने के बावजूद मुझमें ऐसी क्रूरता कैसे आ सकती थी? खटमलों को सुई पर पिरोकर जलाना–कितना निर्दयी पाप है यह!
(७)
एक व्यापारी पार्टी बीस करोड़ रुपये की धोखाधड़ी करके पैसे देने से मुकर गई। यह पच्चीस साल पहले की बात है! उस समय के बीस करोड़ आज के कम से कम दो सौ करोड़ के बराबर होंगे। उस नुकसान में मेरे अपने

पच्चीस लाख रुपये चले गए थे। मैं उस व्यापारी पर अत्यंत कुपित था। वह भी जैन था, और उसने बहुत से लोगों को ठगा था, इसलिए मेरे साथ-साथ और भी कई लोग क्रोध से उबल रहे थे। हम सब इकट्ठे हुए, और हमारे बीच कुछ क्रूर प्रवृत्ति वाले लोग भी थे। उन्होंने कहा, 'देखो, उससे हमारे पैसे तो वापस मिलने वाले नहीं हैं। लेकिन अगर हमने उसे बिना सज़ा दिए छोड़ दिया, तो दूसरों की हिम्मत बढ़ जाएगी। दूसरे भी भुगतान करने से मुकर जाएँगे। इससे हज़ारों लोगों का नुक़सान होगा। इसलिए, हमें इस व्यापारी को ऐसी सज़ा देनी चाहिए कि बाज़ार के सभी व्यापारियों में एक डर बैठ जाए, ताकि कोई भी पैसे डुबाने की सोचने की हिम्मत भी न कर सके।'

हम सबने इस भावना का समर्थन किया, क्योंकि हर कोई गुस्से में था। हम में से दो-पाँच सबसे खूंखार आदमी नेता बन गए। एक पूरी योजना बनाई गई, और उस व्यापारी को पकड़ लिया गया। उसे इस बात का अंदाज़ा भी नहीं था कि उसके हाथों नुक़सान उठाने वाले लोग उसके धोखे का कैसा बदला ले सकते हैं। हम उसे एक कमरे में ले गए और दरवाज़ा बंद कर दिया। हमने उसके हाथ-पैर रस्सियों से बाँध दिए, उसके सारे कपड़े उतारकर उसे पूरी तरह निर्वस्त्र कर दिया, और उसके मुँह में कपड़े का इतना मज़बूत डाट लगाया कि वह चीख ही न सके। वह बस दबी हुई 'ऊँ-ऊँ' जैसी आवाज़ ही निकाल पा रहा था। हमने उसे एक कुर्सी से बाँध दिया। फिर, हम सबने बारी-बारी से जलती हुई सिगरेट से उसके पूरे शरीर को दागा। हम उसे तड़पा-तड़पा कर मार डालना चाहते थे, ताकि भविष्य में कोई भी ऐसा विश्वासघात न करे। हमने उसके गुप्तांगों को भी नहीं बख्शा; वहाँ भी हमने उसे सिगरेट से जलाया। उस समूह में गैर-जैन भी थे, लेकिन मुझ जैसे जैन भी थे, हालाँकि वे संख्या में कम थे। पर मुझे तो अपना पाप देखना है। उस समय, मैंने भी भयानक निर्दयता से उसे सिगरेट से दागा था। हाँ, उसके गुप्तांगों को जलाने की हिम्मत मुझमें नहीं थी, लेकिन मेरा समर्थन और सहमति तो उसमें थी ही।

उसे दागने के बाद भी हमारा पाप खत्म नहीं हुआ। हमारे समूह के दो-तीन लोग हॉकी स्टिक लाए थे। उन स्टिक के प्रहारों से उन्होंने उस व्यापारी के पैरों की हड्डियाँ तोड़ दीं और उसके घुटनों को चकनाचूर कर दिया। उसकी आँखों में असीम पीड़ा और भय था। दया की याचना भी थी। लेकिन उस क्षण, हम सब पर प्रतिशोध की ऐसी धुन सवार थी कि हमें और कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। वह व्यापारी अत्यधिक यातना सहने के बाद मर गया। जब यह घटना सार्वजनिक हुई, तो पूरे बाज़ार में सन्नाटा छा गया। सब सीधे हो गए। जो पार्टियाँ पैसे डुबाने की योजना बना रही थीं, वे चुपचाप बैठ गईं और ईमानदार बन गईं। बाद में, हमें इस पर गर्व भी हुआ। हमने एक-दूसरे के इस पाप-कृत्य की सराहना करते हुए कहा, 'क्योंकि हमने उसे इस तरह तड़पा-तड़पा कर मार डाला, इसलिए बाकी सब लाइन पर आ गए हैं।' पहले तो हमने एक घृणित पाप किया, और फिर उसकी प्रशंसा की। इतना ही नहीं, हमने तो उस हिंसा को धर्म ही माना। हम कहते थे, 'अब जो हज़ारों लोगों को किसी पार्टी के पैसे डुबाने से नुक़सान होता, वह नहीं होगा, क्योंकि अब कोई भी पार्टी पैसे डुबाने की हिम्मत नहीं करेगी। हमने हज़ारों परिवारों को बचा लिया है।'

लेकिन अब मुझे समझ में आता है कि मैंने बहुत ग़लत किया; मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। पैसे जैसी तुच्छ चीज़ के लिए अपने ही एक जैन भाई, या किसी भी व्यक्ति की, इतनी क्रूरता से जान लेना एक अत्यंत

घिनौना कर्म है। यदि मेरे भाग्य में धन है, तो एक क्या सौ पार्टियाँ भी पैसे डुबा दें, तो भी मुझे कोई नुक़सान नहीं होगा, क्योंकि मेरे पैसे उनके पास होंगे ही नहीं। और मान लीजिए मेरे पैसे उनके पास हैं भी, तो भी पैसे डुबाने वाली पार्टी मुझे मेरे पैसे चुका देगी। और यदि मेरा पुण्य क्षीण हो, तो भले ही कोई पार्टी पैसे न डुबाए, मैं ख़ुद ही दिवालिया हो जाऊँगा।

जब हमने उस व्यापारी को तड़पा-तड़पा कर मारा, तो हमने परमाधामी जैसा व्यवहार किया। उसकी आँखों में जो भय, दीनता, आँसू और दया की याचना थी–हमने कुछ नहीं देखा। हमने केवल अपनी क्रूरता को पोषित किया। यदि ये बँधे हुए कर्म उदय में आएँगे, तो नरक में, मैं भी उस व्यापारी की तरह ही भय, दीनता और आँसुओं के साथ परमाधामी से दया की भीख माँग रहा होऊँगा। लेकिन वे परमाधामी मुझ पर ज़रा भी दया नहीं करेंगे; वे मुझे ठीक उसी तरह तड़पा-तड़पा कर मारेंगे। वह व्यापारी तो एक-दो घंटे की पीड़ा सहकर मर गया। लेकिन नरक में, मेरी पीड़ा उसकी पीड़ा से कम से कम हज़ार गुना ज़्यादा होगी, और वहाँ मृत्यु भी नहीं होगी। मुझे यह कम से कम १०,००० वर्षों तक सहना होगा। भविष्य में क्या होगा? मैं नहीं जानता। अगर मैंने निकाचित कर्म बाँधे हैं, तो मुझे भोगना ही पड़ेगा। लेकिन मैं यह आलोचना इसलिए कर रहा हूँ कि वे कर्म एक बार अपना दंड देकर मुझे छोड़ दें। मैं उस पीड़ा को जन्म-जन्मांतर की श्रृंखला में अनगिनत भवों तक नहीं भोगना चाहता। हाँ, एक बार भी मैं इसे कैसे सहूँगा, यह मैं नहीं जानता। यह सहना अत्यंत कठिन है। नरक की यातनाएँ कैसी होती हैं? मैं जानता हूँ। मैं निश्चित रूप से जानता हूँ। लेकिन अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत?

(८)

मैं बाथरूम में नहा रहा था कि मैंने सैकड़ों चींटियों को निकलते हुए देखा। उनसे छुटकारा पाने का मुझे कोई और तरीक़ा नहीं सूझा, इसलिए मैंने एक बाल्टी में पानी भरा और बलपूर्वक उनकी दिशा में उड़ेल दिया। पानी के बहाव में बहकर वे चींटियाँ पानी के साथ नाली में चली गईं। मेरा इरादा चींटियों को मारने का नहीं था, लेकिन मुझे लगा कि इतनी सारी चींटियों को हटाना तो है, तो यही उपाय मेरे दिमाग में आया और मैंने वैसा ही किया।

(९)

हमारे घर के फर्नीचर में दीमक लग गई। हज़ारों की संख्या में ये जीव थे। अगर मैं उन्हें बचाना चाहता, तो मुझे सारा फर्नीचर फेंककर नया बनवाना पड़ता। लेकिन मेरा दिल ऐसा करने को तैयार नहीं था; मैं इतना बड़ा खर्च नहीं उठाना चाहता था। इसलिए मैंने दीमक-नाशक रसायन का छिड़काव करवा दिया और उन हज़ारों दीमकों के प्राण चले गए। मेरे मन में उन्हें मारने का कोई भाव नहीं था, और रसायन का छिड़काव करते समय भी मेरे मन में एक तरह का अफ़सोस था; क्रूरता नहीं थी। लेकिन केवल धन के लोभ में आकर मैंने यह हिंसा की।

अधिकांश लोग शायद यही सोचेंगे, 'दीमकों को बचाने के लिए लाखों रुपये का फर्नीचर फेंक देना कहाँ की समझदारी है? अगर दो-पाँच हज़ार की बात होती, तो समझ में भी आता।' मेरी सोच भी ठीक यही थी। लेकिन मैंने यह नहीं सोचा कि उन जीवों को मारकर मैंने जो पैसा बचाया, वह मैंने दूसरे तरीक़ों से गँवा ही दिया। जब

मैंने उन्हें मार दिया, उसके बाद मेरे परिवार के अलग-अलग सदस्य एक के बाद एक अजीब-अजीब बीमारियों से बीमार पड़ने लगे। डॉक्टर की फ़ीस, रिपोर्ट और दवाओं का खर्च काफ़ी बढ़ गया। इन बीमारियों पर हुआ खर्च नया फर्नीचर बनवाने की लागत से भी ज़्यादा हो गया, और जो पीड़ा सबने भोगी, वह अलग। बेशक, मैं यह निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि ये बीमारियाँ दीमकों को मारने का ही सीधा परिणाम थीं। हो सकता है कि वे अन्य कारणों से हुई हों। हालाँकि, तब तक मेरे परिवार में किसी को भी इतनी गंभीर बीमारी नहीं हुई थी कि डॉक्टर के पास जाना पड़े। दीमकों को मारने के तुरंत बाद एक के बाद एक इन बीमारियों का शुरू होना यह निश्चित करता है कि यह उसी कृत्य का परिणाम था। मैं यह समझने में असफल रहा कि उन जीवों का जीवन मेरे धन से कहीं ज़्यादा कीमती है। 'वे जीव तुच्छ हैं; उन्हें मारने पर यहाँ की अदालतें सज़ा नहीं देतीं। और चूँकि वे हमारी संपत्ति को नुक़सान पहुँचा रहे हैं, इसलिए अपनी सुरक्षा के लिए उन्हें मारना ज़रूरी है।' यह अब मुझे स्पष्ट हो गया है कि ऐसी नीच मनोवृत्ति मेरे भीतर निहित थी।

(१०)

कम उम्र से ही मुझे एक अजीब आदत पड़ गई थी। मैं मक्खियाँ पकड़ता था। फिर, मैं एक हाथ में मक्खी के एक या दो नन्हे पैरों को पकड़ता और दूसरे हाथ से उसके बाकी के पैर एक-एक करके तोड़ देता था। किसी के लिए इसकी कल्पना करना भी शायद मुश्किल हो, लेकिन यह परम सत्य है। मक्खी के पैर हमारे बाल से भी पतले होते हैं। सिर पकड़कर बाल तो खींचे जा सकते हैं, लेकिन एक नन्ही सी मक्खी को पकड़कर बाल से भी पतले पैर कैसे तोड़े जा सकते हैं? लेकिन यह निकृष्ट कला मैंने सीख ली थी, और मेरी यह आदत वर्षों तक बनी रही। कुछ समझ आने के बाद मैंने यह पाप छोड़ दिया। लेकिन धार्मिक प्रवचन सुनने के बाद मुझे एहसास हुआ कि जीवन में किए गए ऐसे सभी पापों की आलोचना करनी चाहिए। मैंने यह केवल एक विकृत आनंद के लिए किया। इससे मुझे कुछ भी हासिल नहीं होना था। इस कृत्य के पीछे कोई कारण नहीं था, फिर भी मैंने यह किया।

(११)

पहले मेरी दो बेटियाँ हुईं, और फिर दो बेटे। मैं ३१ वर्ष की हुई और पाँचवीं बार गर्भवती हुई। मेरी चौथी डिलीवरी को दो साल हो चुके थे, और इस पाँचवीं गर्भावस्था के दौरान मेरा स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नहीं था। चार बच्चे होने के बाद पाँचवें बच्चे के विचार से मुझे थोड़ी शर्म भी आने लगी थी। मैं एक धार्मिक व्यक्ति थी, और मेरे पति भी थे, लेकिन मेरी मति मारी गई थी। किसी ने मुझे कभी यह नहीं सिखाया था कि गर्भपात एक सबसे भयंकर पाप है। मैंने धार्मिक प्रवचन सुने थे, लेकिन मैंने यह विशेष बात कभी नहीं सुनी थी। और इसमें पूज्य साधु-संतों का कोई दोष नहीं है, क्योंकि उन्होंने सोचा होगा, 'हमारे जैन तो चींटी-मकोड़े भी नहीं मारते, तो वे गर्भपात–गर्भ में अपने ही बच्चे की हत्या–भला क्यों करेंगे?' लेकिन अपनी नासमझी के कारण मैंने गर्भपात करवा लिया। मन में थोड़ी कचोट तो हुई, लेकिन उसके तुरंत बाद मैं अपने सामान्य जीवन में लौट आई।

यह घटना ४७ साल पहले की है। उस समय गर्भपात की ऐसी सुविधाएँ आसानी से उपलब्ध नहीं थीं, फिर भी मैंने यह करवा लिया। मेरे मन में यह विचार आता है कि आज, जब गर्भपात की सुविधाएँ इतनी सुलभ हैं, तो गर्भपात की संख्या कितनी बढ़ गई होगी। और तो और, मैं एक धार्मिक महिला थी—इतनी धार्मिक कि मेरी सगी बहन ने

dīkshā ली है। मेरा उनके साथ गहरा भावनात्मक संबंध है और मैं उनसे अक्सर मिलती हूँ। अगर मैंने भी गर्भपात करवाया, तो जो महिलाएँ धार्मिक नहीं हैं, जो आधुनिक पीढ़ी की हैं, उनके लिए यह कितना आसान होगा। इसके अलावा, चिकित्सा विज्ञान उन्हें सिखाता है कि पहले तीन महीनों तक भ्रूण में जीव नहीं होता; वह उसके बाद प्रवेश करता है। यह सुनकर, ये आधुनिक गर्भवती महिलाएँ मानती हैं कि यदि आप तीन महीने के भीतर गर्भपात कराती हैं, तो आपको हत्या का पाप नहीं लगता, क्योंकि जीव तो है ही नहीं, तो किसे मारना? वे सोचती हैं कि उस अवस्था में केवल गर्भ में मौजूद जड़ पुद्गल को साफ़ किया जा रहा है।

हमारा जैन धर्म मानता है कि गर्भधारण के पहले क्षण से ही उसमें जीव होता है; वही जीव शरीर के निर्माण का कार्य करता है। इसलिए, हमारे जैन धर्म के अनुसार, यदि गर्भधारण के पहले क्षण से लेकर नौवें महीने तक किसी भी समय गर्भपात किया जाता है, तो यह गर्भ में अपने ही बच्चे की हत्या से कम नहीं है। लेकिन आधुनिक महिलाएँ, जो चिकित्सा विज्ञान में शिक्षित हैं, लेकिन जैन धर्म में नहीं, वे विज्ञान की बात पर विश्वास करेंगी, जैन धर्म की बात पर नहीं। और इसी कारण से, वे पूरी सहजता से गर्भपात कराएंगी। अच्छा होगा यदि यह महापाप रुक सके।

गर्भपात के बाद, मैं फिर से अपने सांसारिक जीवन में व्यस्त हो गई। अपने चार बच्चों का पालन-पोषण करने और पंचेन्द्रिय के सुखों का आनंद लेने के अलावा और क्या लक्ष्य था? जीवन क्यों जीना है? इस प्रश्न का कोई आत्म-केंद्रित उत्तर नहीं था। जब मेरा चौथा बच्चा मेरी गोद और पालने में खेलने की उम्र का था, तब मैंने पूज्य पंडित चंद्रशेखर एम.एस. के प्रवचन सुने। उनके अचूक प्रवचनों का मेरे मन पर बहुत गहरा और सकारात्मक प्रभाव पड़ा। उसके बाद, मैं धर्म से और गहराई से जुड़ गई। लेकिन मैंने जो गर्भपात का पाप किया था, उसकी ālochanā अभी बाकी थी। और सच कहूँ तो, तब तक मुझे इसके लिए कोई विशेष पछतावा भी नहीं हुआ था।

लेकिन एक दिन, मेरा सबसे छोटा बेटा मेरे पास आया और बोला, 'मम्मी! मैं दीक्षा लेना चाहता हूँ।' उस समय, मुझे लगा कि वह सिर्फ़ मज़ाक कर रहा है। लड़के कभी-कभी किसी की बातें सुनकर ऐसे क्षणिक आवेश में आ जाते हैं। इसलिए मैंने इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। लेकिन वह दृढ़ था, और अंततः, मामला गंभीर हो गया। उसकी दीक्षा हुई, और वह पूज्य पंडित चंद्रशेखर एम.एस., मुनि गुणहंस विजयजी का शिष्य बन गया! इस बेटे का विछोह मेरे लिए एक बड़ा आघात था, और मेरा पाप मेरे मन में उमड़ आया। अगर मैंने उस बच्चे को जन्म दिया होता, तो वह आज १७ साल का होता। वह लड़का या लड़की हो सकता था, लेकिन वह मेरा बच्चा होता। मेरे भीतर एक गहरा पश्चाताप जागा। मेरे बेटे की दीक्षा को लगभग १९ साल हो चुके हैं। बाद में, जब उसका चातुर्मास बारडोली में था, तो मैं उसके पास गई और रोते हुए अपना पाप कबूल किया। मैंने उससे कहा, 'एम.एस.! मैंने तुम्हारे अपने भाई या बहन को मार डाला। अगर वह बच्चा आज जीवित होता, तो वह तुमसे सिर्फ़ दो साल छोटा होता।' उसके बाद, मेरे बेटे, मुनि ने, विहार किया और दक्षिण भारत की यात्रा की। तब से दस साल बीत चुके हैं। दो साल पहले, उसका चातुर्मास विजयवाड़ा में था। मैं वहाँ ८० दिनों तक रही। मैंने अपने पाप का प्रायश्चित तो कर लिया था, लेकिन मेरे मन को अभी भी शांति नहीं थी। मेरे मन में एक विचार आया: 'मैं सबके सामने अपने पापों को कबूल करूँगी और उन सबसे विनती करूँगी, 'कृपया गर्भपात न कराएँ।' और अगर मेरे आँसुओं, मेरे कबूलनामे और मेरी विनती के कारण कुछ महिलाएँ गर्भपात कराने से रुक जाती हैं–अरे! यदि दो-पाँच गर्भपात भी रुक गए–तो मैं अपने प्रयास को सफल मानूँगी।' अपने बेटे,

मुनि की अनुमति से, मैंने १२०० लोगों की सभा के सामने अपने गर्भपात के पाप को कबूल किया। मैंने आँसू भरी आँखों से कबूल किया। आज भी, जब भी मुझे यह पाप याद आता है, मैं दुखी हो जाती हूँ। मैं रोने लगती हूँ।

(१२)

जब मैं कॉलेज में थी, तब मुझे एक जैन लड़के से प्यार हो गया। हमारे बीच शारीरिक संबंध बन गए। वह मुझसे कहता था, 'सावधान रहना, गर्भवती मत हो जाना।' अहंकार में आकर मैंने उससे कह दिया, 'मैं कोई मूर्ख नहीं हूँ। मैं सब कुछ समझती हूँ। मुझे सारा ज्ञान है।' इससे वह निश्चिंत हो गया। लेकिन मेरी होशियारी किसी काम न आई। मैंने समय का जैसा ध्यान रखना चाहिए था, वैसा नहीं रखा और मैं गर्भवती हो गई। मैं बुरी तरह डर गई। मैंने उसे संदेश भेजा: 'तुरंत अपनी बिल्डिंग के नीचे आओ, मुझे तुमसे मिलना है।' मैं अपनी कार में उसकी बिल्डिंग पहुँची और उसे बताया, 'मैं गर्भवती हूँ।' बेचारा लड़का इतना स्तब्ध हुआ कि वह बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। बिल्डिंग के चौकीदार ने उसे उठाकर अंदर पहुँचाया। थोड़ी देर बाद उसे होश तो आ गया, लेकिन उसके चेहरे पर गहरे तनाव की लकीरें खिंच गईं। फिर हम एक होटल में गए, इस मामले पर चर्चा की और दोनों ने एक फ़ैसला लिया। हम एक दूर के अस्पताल में गए और गर्भपात करवा लिया। हम दोनों महापापी हैं! अपने माता-पिता से छिपकर, हम बिना शादी के रिश्ते में रहे। हमने जैन धर्म को धोखा दिया। हमने सामाजिक व्यवस्था को धोखा दिया। हमने अपने माता-पिता को धोखा दिया। यह पाप हमारा है, लेकिन...

सज़ा मैंने अपने ही गर्भ के बच्चे को दी! वह पूरी तरह से निर्दोष था, लेकिन अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए, अपने पाप को छिपाने के लिए, मैंने एक पंचेन्द्रिय जीव, एक इंसान, अपने ही गर्भ के बच्चे को मार डाला। यह मेरी विषय-भोग की लत के कारण ही था कि मुझे ऐसा महापाप-कृत्य करना पड़ा।

(१३) मैं अहमदाबाद में रहती थी। अपने मोबाइल फ़ोन–मीडिया और चैटिंग–के माध्यम से मेरा परिचय बैंगलोर के एक लड़के से हुआ। हमारा परिचय 'हाय, हेलो...' से शुरू हुआ, फिर बात प्रेम-प्रसंग और फिर अश्लील बातों तक पहुँच गई। हमने एक-दूसरे से मिलने का फ़ैसला किया। हम दोनों एक बिलकुल अनजान जगह पर मिलने के लिए सहमत हुए। हम चेन्नई के एक होटल में मिले, एक कमरा बुक किया और हर तरह का पाप किया। मैं अहमदाबाद लौट आई, और कुछ समय बाद मुझे पता चला कि मैं गर्भवती हो गई हूँ। मैं बहुत डर गई। मैंने उस लड़के को फोन किया और उसे सब कुछ बताया। लड़का धोखेबाज़ नहीं था; उसने मुझसे शादी करने की तैयारी तो दिखाई, लेकिन जब उसने इस बारे में अपने माता-पिता से बात की, तो उसके पिता ने साफ़ मना कर दिया। उन्होंने उससे कहा, 'अगर तुम उससे शादी करना चाहते हो, तो करो। लेकिन उसके बाद, इस घर में दोबारा कदम मत रखना। पहने हुए कपड़ों में ही यह घर छोड़ दो। तुम्हें एक रुपया भी नहीं मिलेगा।' उस लड़के ने अभी कमाना शुरू नहीं किया था। अगर वह मुझसे शादी कर भी लेता, तो हम अपना जीवन कैसे चलाते? उसने मुझे सच्ची स्थिति बताई, और उसकी एकमात्र सलाह थी, 'गर्भपात करवा लो।' और मेरे पास भी कोई दूसरा विकल्प नहीं था। मैं उसकी बात से सहमत हो गई। कुछ व्यवस्था करके मैंने गर्भपात की गोलियाँ मंगवाईं और यह प्रक्रिया पूरी की। पाप मेरा था, लेकिन सज़ा मेरे बच्चे को मिली! मैं माँ नहीं, बल्कि

एक राक्षसी हूँ। अब, उस लड़के की शादी किसी और लड़की से हो गई है, और मेरी शादी किसी और पुरुष से हो गई है। मैंने अपने पति को कुछ नहीं बताया है। मैं अपने वैवाहिक जीवन में आग नहीं लगाना चाहती। मैंने तब से उस लड़के से कोई संपर्क नहीं रखा है। लेकिन यह गर्भपात मुझे एक काँटे की तरह चुभता है। इसलिए, इसे कबूल करके, मैं शुद्ध होना चाहती हूँ।

(१४) हमारी शादी के तुरंत बाद, हम अपने हनीमून पर गए। हम बीस दिन की यात्रा के बाद लौटे, और उसके तुरंत बाद, मुझे पता चला कि मैं गर्भवती हूँ। हमारी शादी को अभी दो-तीन महीने भी नहीं हुए थे, और मैं इतनी जल्दी यह ज़िम्मेदारी स्वीकार नहीं करना चाहती थी। मेरा दिल भोग-विलास और आमोद-प्रमोद की इच्छाओं से भरा था। अगर अभी बच्चा हो जाता, तो हमारी शादी के पहले चार-पाँच साल सिर्फ़ उसकी देखभाल में ही बीत जाते। और मेरे मन में एक बात घर कर गई थी: 'ये साल तो आनंद लेने के हैं।' मैंने अपने पति से बात की; उनके विचार भी मेरे जैसे ही थे। और केवल अपने सुखों की ख़ातिर, हमने अपने ही बच्चे की जान ले ली। मैं नहीं जानती क्यों, लेकिन यह उभरती जवानी, एक नई शादी... ये इतने भयानक तत्व हैं कि वे मुझ जैसी धार्मिक और समझदार जैन लड़की को भी शैतान बना सकते हैं। उस समय, मुझे कोई बीमारी नहीं थी। कोई आर्थिक समस्या नहीं थी, न ही गर्भपात के लिए किसी का कोई दबाव था। मेरे पति तो सिर्फ़ इसलिए राज़ी हो गए थे क्योंकि मैंने यह सुझाव दिया था। अगर मैंने माँ बनने की तत्परता दिखाई होती, तो वे बिलकुल भी मना नहीं करते। लेकिन मैं ख़ुद ही एक डायन बन गई और अपने पहले बच्चे को निगल गई। मैंने सुना है कि जब एक कुतिया पिल्लों को जन्म देती है, तो उसे बहुत तेज़ भूख लगती है। उस समय, अगर उसे खाने के लिए कुछ और नहीं मिलता, तो वह अपने ही पिल्ले को खा जाती है। उस कुतिया के पास तो कम से कम भूख की विवशता थी, जिसने उसे अपना बच्चा खाने पर मजबूर किया। लेकिन मैं तो उस कुतिया से भी ज़्यादा नीच हूँ। मैं विषय-वासना की भूखी थी, और मेरा बच्चा उस भूख को संतुष्ट करने में एक बाधा जैसा लगा, इसलिए मैंने उसे गर्भ में ही मार डाला। वह कुतिया मुझसे बेहतर है। यह सब मेरा विलंबित ज्ञान है।

(15) डॉक्टर ने मुझसे कहा, 'इस बात की पूरी संभावना है कि तुम्हारी कोख में पल रहा बच्चा असामान्य पैदा होगा। अगर वह जिया भी, तो लंगड़ा, अपंग, रोगी और मानसिक रूप से विकलांग होगा। तुम जीवन भर उसकी देखभाल कैसे करोगी?' मैंने यह बात मान ली, क्योंकि मुझे ऐसे बच्चे की देखभाल करना असंभव लग रहा था, और अंत में मैंने गर्भपात करा लिया। लेकिन उसके बाद, मैंने ऐसे कई मामले सुने जहाँ डॉक्टरों ने गर्भ में पल रहे बच्चे को असामान्य घोषित किया था, फिर भी माँ ने उसे जन्म दिया, और बच्चा पूरी तरह से सामान्य पैदा हुआ। ऐसा नहीं है कि डॉक्टर झूठ बोलना चाहते हैं, लेकिन वे किसी भी तरह का जोखिम नहीं उठाना चाहते। इसलिए अगर उन्हें दो या पाँच प्रतिशत भी लगता है कि बच्चा असामान्य होगा, तो वे गर्भपात की सलाह देते हैं। डॉक्टर सोचते हैं, 'माता-पिता क्यों कष्ट भोगें? वे दूसरा बच्चा पैदा कर सकते हैं।' डॉक्टर अपने सामने मौजूद माता-पिता के बारे में तो सोचते हैं, लेकिन गर्भ में पल रहे बच्चे के लिए उनके मन में ऐसी कोई भावना नहीं होती। उन्हें लगता है कि बच्चा माता-पिता के लिए बस एक ज़रूरी चीज़ है। यह बच्चा नहीं तो दूसरा हो जाएगा। इसलिए, एक कमज़ोर बच्चे को जाने ही देना चाहिए। यह वैसा ही है जैसे आप बाज़ार में वॉशिंग मशीन या कोई और चीज़ खरीदने जाएँ; अगर एक कंपनी का उत्पाद कमज़ोर लगता है, तो आप उसे

नहीं खरीदते क्योंकि दूसरी कंपनी का उत्पाद उपलब्ध है। इसी तरह, एक डॉक्टर के लिए, बच्चा बस एक वस्तु है जिसकी माता-पिता को ज़रूरत है। अगर बेहतर उपलब्ध है, तो डॉक्टर पहले, कमज़ोर वाले को अस्वीकार करने में संकोच नहीं करता। इसीलिए अगर उन्हें पाँच या दस प्रतिशत भी असामान्यता की संभावना दिखती है, तो वे गर्भपात की सलाह देते हैं। मैंने उनकी सलाह मान ली, और मैंने अपना बच्चा खो दिया। लेकिन अब मुझे एहसास होता है कि हज़ारों बच्चे जिन्हें डॉक्टरों ने असामान्य कहा था, वे पूरी तरह से सामान्य पैदा हुए हैं। मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई है। अब मेरे मन में यह विचार आता है कि मान लो मुझे लकवा मार जाए, अगर मैं असामान्य हो जाऊँ, तो क्या मुझे यह स्वीकार होगा कि मेरा पति मुझे मारकर दूसरी पत्नी ले आए? इससे मुझे कितना दर्द होगा? अगर वह मुझे मारेगा, तो शारीरिक पीड़ा तो होगी ही, लेकिन उसके साथ यह सोचकर मुझे कितनी मानसिक व्यथा होगी कि 'मेरा अपना पति मुझे मार रहा है'? मैं निश्चित रूप से अपने पति से गिड़गिड़ाऊँगी, 'कृपया मुझे मत मारो। अगर तुम मेरी देखभाल नहीं कर सकते, तो मुझे किसी आश्रय गृह में रख दो। मैं उनके सहारे अपना जीवन जी लूँगी।' ठीक उसी तरह, मेरे असामान्य बच्चे को गर्भपात के दौरान कितनी तीव्र पीड़ा हुई होगी! और उसे यह सोचकर मानसिक पीड़ा भी हुई होगी कि 'मेरी अपनी माँ ने मुझे मरवा दिया।' हालाँकि उसकी अविकसित अवस्था में ऐसे विचार आना संभव नहीं है, लेकिन कोई भी निश्चित रूप से इसकी कल्पना तो कर ही सकता है। डॉक्टर का इरादा शायद गलत न रहा हो, लेकिन उन पर विश्वास करके मैंने एक गंभीर ग़लती की है। अगर मैंने जन्म दिया होता, तो संभव है कि बच्चा सामान्य पैदा होता। और मान लो कि वह असामान्य पैदा भी होता, तो भी दुनिया में हज़ारों श्रेष्ठ माताएँ हैं जो अपने असामान्य बच्चों की देखभाल करती हैं। मैं भी एक ऐसी श्रेष्ठ माँ बन सकती थी! मैं इतनी नीच क्यों हो गई? हे प्रभु! मैं अपने इस अपराध के लिए क्षमा माँगती हूँ। मैं उस बच्चे से भी क्षमा माँगती हूँ। आप उसे अच्छी गति प्रदान करें। बस यही मेरी विनती है।

(16) मैं आपको अपने जीवन की सबसे भयावह घटना बता रहा हूँ, गुरुदेव! यह एक ऐसी बात है जो मैं कभी किसी को नहीं बताता। लेकिन इस पाप को करने के कुछ ही वर्षों के भीतर, पश्चात्ताप शुरू हो गया था। उसके बाद, जब मैंने `भाव-आलोचना` पर आपके प्रवचन सुने, तो मैं पूरी तरह से हिल गया, और मुझे अपने मन का बोझ हल्का करने का एक रास्ता भी मिल गया।

बात यह हुई। मेरा विवाह हुआ, और उसके तुरंत बाद, मेरी पत्नी की सबसे अच्छी सहेली का भी विवाह हो गया। मुझे उसकी शादी में शामिल होना पड़ा। जैसे ही मैंने उसकी सहेली को देखा, मैं पूरी तरह से मोहित हो गया। मेरा मन अत्यंत बेचैन हो गया। लेकिन मैं जानता था कि मैं विवाहित हूँ और वह भी विवाह कर रही है; और कुछ भी संभव नहीं था। फिर भी, उस दिन से, मैं व्याकुल रहने लगा। मेरी पत्नी ने देखा कि मैं परेशान हूँ और उसने मुझसे कारण भी पूछा। मैं सतर्क हो गया। अगर उसे मेरी वासना की ज़रा भी भनक लग जाती, तो बहुत बड़ा अनर्थ हो जाता। जिसे मैं चाहता था वह मुझे मिलती नहीं और जो मेरे पास थी, उसे भी खोने का ख़तरा था। उस समय, मैंने बीमारी और व्यापार के तनाव का बहाना बनाकर उसे किसी तरह मना लिया। उसके बाद, मैंने अपने मन को समझाया, 'जो संभव नहीं है, उसके बारे में सोचना ही क्यों?' परिणामस्वरूप, उस स्त्री के प्रति गहरा लगाव मेरे दिल में एक बीज की तरह बना रहा, लेकिन उसके कारण होने वाली बेचैनी मेरे

चेहरे पर अब दिखाई नहीं देती थी। इस वजह से, मेरा वैवाहिक जीवन सुचारू रूप से चलने लगा। कभी-कभी मेरी वासना की आग में पेट्रोल छिड़क जाता था, और लपटें भड़क उठती थीं। मेरी पत्नी और वह स्त्री बहुत करीबी–बेहद करीबी–सहेलियाँ थीं। वे हर दिन मोबाइल फोन पर बात करती थीं। जब मैं पास बैठा होता, तो मुझे उसकी बातें, उसकी हँसी सुनाई देती। उसे सुनते ही मुझे तुरंत उसका अद्भुत रूप याद आ जाता–उसकी शादी के दिन का उसका अनुपम सौंदर्य, उसके सारे गहने और श्रृंगार, उसकी मोहक अदा। वह सब मुझे याद आ जाता, और एक भयंकर कामवासना जाग उठती। हालाँकि, मैं पूरी तरह से सावधान था। इसके अलावा, वह मुझसे प्यार नहीं करती थी; वह शादीशुदा थी और अपने पति के साथ खुश थी। तो मैं उसे कैसे पा सकता था? लेकिन उनकी बातचीत के दौरान ऐसे क्षणों में मेरा मन व्याकुल हो जाता था। मैं अपनी पत्नी से उसके बारे में कुछ पूछता भी नहीं था, कहीं उसे किसी तरह का शक न हो जाए। और मेरी पत्नी को मुझसे बहुत प्यार था, पूरा भरोसा था। वह भी सुंदर और बुद्धिमान थी; उसमें कोई कमी नहीं थी। लेकिन मेरे दिल में सिर्फ वही स्त्री बसती थी। उसका नाम कामना था। उसका ससुराल दूसरे शहर में था, और उसका मायका हमारे शहर में था। मेरी पत्नी का मायका और ससुराल दोनों एक ही शहर में थे। कामना साल में दो-तीन बार अपने मायके आती थी, और उन मौकों पर वह हमारे घर ज़रूर आती थी। वह दो-चार घंटे रुकती थी। मैं 'हाय-हैलो' से ज़्यादा बात नहीं कर पाता था, क्योंकि मुझे डर लगता था। फिर भी, उस समय, अगर मैं घर पर होता, तो मैं खुद को छिप-छिपकर उसे देखने से नहीं रोक पाता था। एक तरफ़ तीव्र वासना थी, और दूसरी तरफ़ डरपोक स्वभाव। इस तरह दो-तीन साल बीत गए। मुझे एक पुत्र की प्राप्ति हुई। वह सिर्फ़ छह महीने का था जब एक भयानक घटना घटी। कामना के पति की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई, और वह विधवा हो गई। हम दोनों उसके ससुराल गए। मैंने उसका हृदय-विदारक विलाप देखा। मेरी पत्नी ने ही बड़ी मुश्किल से उसे सांत्वना दी। हमारा बेटा छोटा होने के बावजूद, मेरी पत्नी किसी तरह उसके साथ दो-तीन दिन वहाँ रही, जिससे कामना को बहुत ढाढ़स मिला। अंततः, मेरी पत्नी लौट आई, और कामना भी अपने मायके में रहने आ गई। वह अभी भी जवान थी। उसका पुनर्विवाह करना और बसना ज़रूरी था, लेकिन अपने पति के लिए उसका प्यार इतना गहरा था कि तुरंत पुनर्विवाह करना उसके लिए संभव नहीं था। जब उसका मन सदमे से उबरता, तभी वह कुछ सोच सकती थी। और सामाजिक मान्यताओं के अनुसार भी, जल्दबाज़ी में शादी करना अनुचित था। इसलिए दूसरी शादी में कम से कम एक-दो साल तो लगने ही थे। इस बीच, मेरी पत्नी अब कामना का मन बहलाने के लिए लगभग हर दोपहर उसके घर जाने लगी। वह उसे कहीं बाहर ले जाती, अपने छोटे बेटे को भी साथ ले जाती। कामना माँ नहीं बनी थी, और पति के प्यार का खालीपन तो था ही, इसलिए उसका वात्सल्य इस छोटे बच्चे की ओर मुड़ गया। कामना को धीरे-धीरे उससे गहरा लगाव हो गया। वह धीरे-धीरे ठीक होने लगी, और इसका मुख्य कारण मेरी पत्नी थी, और उससे भी ज़्यादा, मेरा बेटा पर्व था। मेरी पत्नी मुझे यह सब बताती थी, और अचानक, मेरे मन में एक भयानक, हत्यारा विचार उत्पन्न हुआ। पहले तो मैं अपने ही विचार से डर गया। मैंने उसे झटक दिया। लेकिन कामना के लिए मेरी सुप्त वासनाएँ अब धधकने लगी थीं। इसलिए मेरा चंचल मन बार-बार उस घातक विचार की ओर दौड़ने लगा।

(A) कामना को एक-दो साल में पुनर्विवाह करना ही होगा; यह निश्चित है।

(B) मेरी पत्नी उसकी सबसे अच्छी सहेली है; कामना को उससे स्नेह है।
(C) मेरा बेटा पर्व छोटा है, बहुत छोटा, केवल सात महीने का। और कामना को अब उससे अत्यधिक स्नेह हो गया है।
(D) अब, अगर मेरी पत्नी मर जाए तो? मैं विधुर हो जाऊँगा। पर्व के लिए मेरा पुनर्विवाह करना आवश्यक होगा। अब, कामना को एक नए पति की ज़रूरत है, और मुझे एक नई पत्नी की! अब तक कामना के मन में मेरी छवि बहुत अच्छी रही है। मैंने कभी कोई अभद्र व्यवहार नहीं किया है। मैंने अपने मन के विचारों को बाहर नहीं आने दिया है। मेरी पत्नी भी उसके सामने मेरे स्वभाव की प्रशंसा करती है, क्योंकि मैंने वास्तव में उसे अच्छी तरह से रखा है और उसे प्यार दिया है। मेरी पत्नी के मुँह से मेरी प्रशंसा सुनकर, भले ही उसके मन में मेरे प्रति लगाव पैदा न हुआ हो, सम्मान तो ज़रूर पैदा हुआ होगा। इसके अलावा, एक विधवा को आसानी से एक नेक आदमी नहीं मिलता; उसे आमतौर पर एक विधुर या तलाकशुदा ही मिलता है। और सबसे बड़ा हथियार है पर्व! मेरी पत्नी की मृत्यु के बाद, माँ के बिना छोटा पर्व कामना के दिल में करुणा के बीज जगाएगा। मैं पर्व के बहाने उसके परिवार से उसका हाथ माँग सकूँगा! यह बिल्कुल भी अनुचित नहीं लगेगा। कामना को पर्व से पहले से ही स्नेह है, और अगर करुणा भी जाग गई, तो मेरा विवाह उसके साथ अत्यंत सरल हो जाएगा। बस! अब सिर्फ़ एक चीज़ की ज़रूरत है: 'मेरी पत्नी की मृत्यु!' लेकिन वह कब मरेगी? और अगर एक-दो साल बीत गए, तो कामना का पुनर्विवाह हो जाएगा। अगर मैं सच में कामना को पाना चाहता हूँ, तो मेरी पत्नी की मृत्यु आवश्यक है, और वह भी जल्दी। लेकिन वह बूढ़ी नहीं है; वह जवान है। वह बीमार नहीं है; वह स्वस्थ है। कामना के पति की तरह उसकी अचानक मृत्यु की संभावना कम है। केवल एक ही रास्ता है: 'अगर वह खुद नहीं मरती, तो मुझे उसे मारना होगा।'
मैं अपने ही विचारों से काँप गया! लेकिन मेरी वासना प्रबल थी, और यह विचार बार-बार पनपने लगा: 'मेरी पत्नी की हत्या!' मैं अपनी पत्नी को कैसे मारूँ? मैं कौन-सा तरीका अपना सकता हूँ जिससे मैं पकड़ा भी न जाऊँ, और उसकी मृत्यु स्वाभाविक लगे? अच्छी बात यह थी कि हमारा प्यार पड़ोसियों और समाज में प्रसिद्ध था; हमारे बीच कोई झगड़ा नहीं होता था। हम दोनों एक-दूसरे का बहुत ख़याल रखते थे। इसलिए अगर मेरी पत्नी अचानक मर भी जाती, तो किसी को मुझ पर शक होने की कोई संभावना नहीं थी। लेकिन मुझे एक ऐसी योजना बनानी थी जिसमें कोई गड़बड़ न हो। अगर वह किसी भी कारण से बच गई, तो सब ख़त्म हो जाता!
गुरुदेव! मैंने सोचा, 'क्या हो अगर मैं उसे बालकनी में कपड़े सुखाते समय चौथी मंज़िल से धक्का दे दूँ?' लेकिन अगर वह नहीं मरी तो? अगर वह बच गई तो? तब मुझे कामना तो नहीं मिलेगी, लेकिन एक ऐसी पत्नी की शिकायत पर जेल ज़रूर मिल जाएगी जो अब मेरा असली चेहरा जान चुकी होगी!
मैंने कई और तरीकों पर विचार किया, लेकिन कोई भी मुझे ठीक नहीं लगा। अंत में, भगवान ने मेरी सुन ली (सच तो यह है कि मेरे अपने भयानक कर्मों के उदय ने मेरी सुन ली)। मेरी पत्नी को बुखार हो गया। बुखार बढ़ गया। मैं खुद उसे डॉक्टर के पास ले गया। हमने रिपोर्ट करवाई; पता चला कि उसे सेरिब्रल मलेरिया है। उसका इलाज शुरू हो गया। आज के समय में, यह बीमारी काफी आम मानी जाती है। लेकिन मुझे अपना

बहाना मिल गया था। मैंने थोड़ी हिम्मत जुटाई और डॉक्टर को रिश्वत की पेशकश की। उसे बस एक ऐसा इंजेक्शन देना था जिससे बिना किसी शक के मौत हो जाए। डॉक्टर अंततः मान गया, और उसने इस तरह से इलाज किया कि मेरी पत्नी की मृत्यु हो गई। लेकिन चूँकि वह पहले से ही बीमार थी, और उसके प्रति मेरा प्यार और देखभाल हमेशा ज़ाहिर रहा था–और इस बीमारी के दौरान मैंने उसका विशेष ख़याल रखा था–उसकी मृत्यु से सभी को दुःख तो हुआ, लेकिन किसी ने मुझ पर शक नहीं किया। मेरी पत्नी का शव मेरे घर में पड़ा था। सब आए थे, कामना भी। उसे देखकर, मैंने अपनी घिनौनी योजना को और आगे बढ़ाया। मैं रो तो रहा ही था, लेकिन अब मैंने अपने बेटे पर्व को उठाया और कहने लगा, 'अब इस बेचारे बच्चे की देखभाल कौन करेगा? भगवान कितना क्रूर है! उसे कम से कम इस बच्चे पर तो दया करनी चाहिए थी। अब, माँ के बिना, यह निश्चित रूप से मर जाएगा,' वगैरह-वगैरह। सबने मेरी बातें सुनीं, कामना ने भी सुनीं। उसके मन में कुछ विचार ज़रूर आए होंगे। लेकिन मैं बेहद सतर्क था; मैं बिल्कुल भी जल्दबाज़ी नहीं करना चाहता था। जल्दबाज़ी करके मैं ज़रा सा भी शक पैदा नहीं करना चाहता था।

अंतिम संस्कार हो गया। मैंने दूसरों के ज़रिए पर्व को कामना के पास यह संदेश भेजकर पहुँचाया: 'वह कहती थी कि पर्व तुम्हारे साथ बहुत घुल-मिल जाता है। अब उसके बिना इसकी देखभाल कौन करेगा? अगर तुम्हें सुविधा हो, तो दिन में दो-चार घंटे के लिए भी अगर तुम इसे देख लो, तो मेरे लिए आसानी हो जाएगी।' वह मान गई। उसका दिल तो पहले से ही पर्व से जुड़ा हुआ था। वह उसकी देखभाल करने लगी। मुझे और ज़्यादा कोशिश नहीं करनी पड़ी। कामना के परिवार के मन में यह विचार अपने आप आया कि 'मैं अब विधुर हूँ। मेरा पर्व कामना के साथ खुश है। कामना को एक पति की ज़रूरत है, और मुझे पर्व की देखभाल के लिए एक पत्नी की।' सिर्फ़ वे ही नहीं, लगभग पूरे समाज का यही विचार था। सब कुछ स्वाभाविक रूप से हो गया। और मेरी इच्छा पूरी हुई; मेरा विवाह कामना से हो गया। बिना किसी धूमधाम के, शांति से। पर्व हमारे मिलन का ज़रिया बना। मेरी वासना पूरी हुई, लेकिन एक हत्या की क़ीमत पर!

तब से कई साल बीत चुके हैं। कामना से मुझे एक बेटी हुई है; उसका नाम पूर्वी है। मेरा व्यवसाय अच्छा चल रहा है, हमारा परिवार खुश है, और सब अतीत को भूल चुके हैं। लेकिन अतीत मुझे नहीं भूलता। मुझे बार-बार अपनी पत्नी की हत्या का वह पाप याद आता है। मुझमें पुलिस के पास जाकर अपना गुनाह कबूल करने की हिम्मत नहीं है। और मैं यह भी जानता हूँ कि केवल `आलोचना` और `प्रायश्चित्त` करने से यह पाप धुल नहीं जाएगा; यह मुझे दुर्गति में जाने से नहीं रोकेगा। और मैं यह स्वीकारोक्ति कष्ट से बचने के लिए नहीं कर रहा हूँ। लेकिन मैं यह स्वीकारोक्ति अपनी आत्मा की शांति के लिए कर रहा हूँ। भले ही मेरे बाँधे हुए कर्म न टूटें, भले ही मेरा नरक का मार्ग न बदले, पर मेरे भीतर हत्या के क्रूर `संस्कार` टूट जाएँ। ताकि भविष्य के जन्मों में, मुझे दुःख भले ही आए, लेकिन हत्या का पाप मेरे जीवन में प्रवेश न करे। और अगर वह पाप दोबारा नहीं होगा, तो दुःखों की एक नई श्रृंखला नहीं बनेगी।

मैं कामना को अपने पाप के बारे में कभी नहीं बता पाया, और न ही कभी बता पाऊँगा। क्योंकि अगर उसे पता चला, तो मैं कल्पना कर सकता हूँ कि उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी। मैं अपने बेटे पर्व को भी इस पाप के बारे में कभी नहीं बता पाऊँगा: 'बेटा, जब तुम सिर्फ़ एक साल के थे, मैंने तुम्हारी माँ, अपनी पत्नी को, बिना

उसकी किसी ग़लती के, केवल अपनी वासना को पूरा करने के लिए मार डाला था। मैंने अपनी खुशी के लिए तुम्हें अनाथ बना दिया! मैंने तुम्हारी माँ के विश्वास को धोखा दिया। उसकी मृत्यु के समय, उसके अंतिम शब्द केवल यही थे, "मेरे पर्व को दुःख मत होने देना।" मैं उसे कैसे बताऊँ कि उसके पर्व और मेरे पर्व, दोनों को माँ के बिना करने का घोर पाप करने वाला मैं ही था; कि तुम स्वाभाविक मौत नहीं मरी, बल्कि मैंने तुम्हें एक डॉक्टर से मरवाया था जिसे मैंने बड़ी रक़म दी थी?'

गुरुदेव! मैंने एक विश्वस्त व्यक्ति को एक सील बंद लिफ़ाफ़ा दिया है, जिसमें निर्देश है कि मेरी मृत्यु के बाद इसे पर्व को दे दिया जाए। उसमें, मैंने अपना पाप स्वीकार किया है, और साथ ही लिखा है: 'पर्व! मैं समझता हूँ कि तुम मुझे कभी माफ़ नहीं कर सकते। लेकिन कम से कम इतना करना: मुझसे नफ़रत मत करना, मेरी निंदा मत करना। मेरे प्रति उदासीनता का भाव रखना। मेरी स्मृति सभा में, मेरी प्रशंसा मत करना, लेकिन कहीं भी मेरी आलोचना या निंदा भी मत करना। मेरे लिए अपने मन में भी बदले की भावना मत रखना। ऐसा इसलिए क्योंकि इससे तुम्हारी अपनी आत्मा को नुक़सान होगा। अगर तुम मेरी निंदा और आलोचना करोगे, अगर तुम मुझसे नफ़रत और तिरस्कार करोगे, तो इससे मेरा क्या नुक़सान होगा? मैं तो पहले ही मर चुका होऊँगा। लेकिन इन सभी द्वेषपूर्ण भावों के कारण, तुम बहुत बड़े पाप कर्म बाँध लोगे। मैंने तो पाप बाँधे ही हैं, पर तुम भी पाप बाँध लोगे, और मैं यह नहीं चाहता कि जैसे मैं हत्या करके पापी बना, वैसे तुम एक हत्यारे की निंदा, आलोचना और नफ़रत करके पापी बनो।'

'तुम्हारी माँ को मारने के बाद, मुझे पश्चात्ताप हुआ। मुझे सारी खुशियों के बीच भी पश्चात्ताप होता रहा। इसीलिए मैंने तुम्हारी बेहतर देखभाल की है। तुम्हें याद होगा, तुम्हारे पूरे जीवन में, मैंने तुम्हें कभी थप्पड़ तो क्या, ऊँची आवाज़ में डाँटा तक नहीं है। तुमने जो भी ग़लती की, मैंने हमेशा तुम्हें प्यार से समझाया, मैंने तुम्हें कभी फटकारा नहीं। अपने तरीक़े से, मैंने इसे अपने पापों का `प्रायश्चित्त` माना: 'तुम्हारे लिए प्यार! सिर्फ़ और सिर्फ़ प्यार!' तुम मुझसे प्यार मत करना, क्योंकि मैंने तुम्हारी माँ को मारा है। लेकिन मुझसे नफ़रत और तिरस्कार करके पापी भी मत बनना।'

गुरुदेव! मैंने यह लिखकर लिफ़ाफ़े में रख दिया है। मेरी मृत्यु के बाद यह पर्व को मिल जाएगा। अब, कृपया मुझे सबसे कठोर `प्रायश्चित्त` दीजिए। कोई दया मत दिखाइए, कोई कसर मत छोड़िए।

(17) मेरे पति आयातित और तस्करी के माल का व्यापार करते थे। उनमें कोई धार्मिकता नहीं थी। लेकिन चूँकि उनके पास बहुत पैसा था, इसलिए वह, मैं और मेरी बेटी ऐशो-आराम का जीवन जीते थे। ताकि मुझे घर पर खाना न बनाना पड़े, मैंने अपने पति से एक रसोइया रखने का विचार रखा। उन्होंने तुरंत सबसे अच्छा रसोइया रख दिया, और मेरे घर में एक भयानक आग लग गई। वह रसोइया हर दिन हमारे घर आने लगा। मेरे पति घर पर कम ही रहते थे। मेरी छोटी बेटी खेलने में या स्कूल में व्यस्त रहती थी। इसलिए दोपहर और शाम को जब वह खाना बनाने आता, तो हम दोनों ही होते, रसोइया और मैं। मुझे यह कहते हुए भी शर्म आती है। हम वासना के पाप में फँस गए। मैंने अपने पति और अपनी छोटी बेटी को धोखा दिया। यह बहुत समय तक चलता रहा, लेकिन छिपकर यह सब करना डरावना था। इसके बजाय, हम दोनों ने मेरे पति को मारने का फ़ैसला किया। और एक दिन, हमने उस योजना को अंजाम दिया। वह शनिवार का दिन था। मेरी बेटी अंदर

सो रही थी। मैंने अपने पति के रात के खाने में कुछ मिलाकर उन्हें दे दिया। वह बेहोश हो गए। उसके बाद, रसोइए ने मेरे पति के गले की नस काट दी। मेरी आँखों के सामने, मेरे पति की मृत्यु हो गई। मैंने उन्हें मरने दिया, मरवा दिया। सवाल था, 'अब इस शरीर का क्या करें?' जैसा कि मैंने पहले से योजना बना रखी थी, मैंने दो बड़े सूटकेस तैयार रखे थे। मैं, एक जैन महिला, इतनी नीच, क्रूर और अधम हो गई कि मैंने उस नृशंस कृत्य में उस रसोइए की सहायता की। नहीं, मुझे कहना चाहिए कि यह काम मैंने ही किया था, और उसने मेरी सहायता की थी। रसोइए और मैंने मिलकर मेरे पति के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। हमने उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा और उन सभी टुकड़ों को दो बड़े सूटकेस में भर दिया। हमने सब कुछ साफ़ कर दिया। बस उन दो सूटकेसों को कार में रखकर किसी जंगल क्षेत्र में फेंकना बाक़ी था। मेरे पास एक कार थी, लेकिन हमने यह काम अगले दिन किसी उपयुक्त समय पर करने का फ़ैसला किया। अगला दिन रविवार था। हमारे `संघ` में एक महान `आचार्यदेव` `चातुर्मासप्रवेश` के लिए पधार रहे थे। उस आगमन के दौरान, हमारी अपार्टमेंट बिल्डिंग के नीचे से एक जुलूस और सैकड़ों लोग गुज़रे। हमारी बिल्डिंग की `श्राविकाएँ` `आचार्यदेव` के सामने `गहुली` करने के लिए नीचे गईं, और मैं भी उनमें शामिल थी। मैंने साहेब की `प्रदक्षिणा` भी की। मेरी क्या अधम अवस्था थी! कल रात ही मैंने अपने पति की हत्या की थी, और उनके कटे हुए शरीर से भरे दो सूटकेस अभी भी मेरे घर में थे, और यहाँ मैं एक `आचार्यदेव` के सामने `गहुली` और `प्रदक्षिणा` कर रही थी। जब यह सब समाप्त हो गया, तो मैं घर वापस चली गई। लेकिन हुआ यह कि हमारी बिल्डिंग में, हर मंज़िल पर चार फ़्लैट थे। वह रसोइया लंबे समय से मेरे घर आ रहा था, और वह दोपहर में बहुत ज़्यादा समय तक रुकता था। इस वजह से, आस-पड़ोस की सभी महिलाओं को शक होने लगा था कि 'खाना बनाने में इतना समय नहीं लगता; यह बहुत ज़्यादा समय लेता है।' और मैं भी लापरवाह हो गई थी। मैंने इस संभावना पर विचार ही नहीं किया था कि किसी को शक हो सकता है। मेरी लापरवाही के कारण, मेरा आचरण ऐसा था जो पड़ोसियों में संदेह पैदा करे। एक मालकिन का अपने रसोइए के प्रति व्यवहार के बजाय, मुझमें एक पत्नी का व्यवहार प्रकट हो गया था, और पड़ोस की महिलाओं ने इसे देख लिया था। ऊपर से, कल रात, मेरे पति के घर आने के लगभग एक घंटे बाद, रसोइया आया था, और पड़ोसियों ने उसे देख लिया था। इससे सभी को शक हो गया कि 'इस समय, रसोइया...'

'तुम घर क्यों आ गए?' हालांकि मेरे पति आ चुके थे, पर वे हम दोनों के बीच उस क्षण चल रहे घिनौने कृत्यों का अंदाज़ा नहीं लगा सकते थे, और हत्या की कल्पना तो कौन कर सकता था? फिर भी, तीनों पड़ोसी इकट्ठे हुए और गुप्त रूप से बातें करने लगे, और बड़ी चतुराई से नज़र रखने लगे। दो-तीन घंटे बाद, जब रसोइया चुपके से घर से बाहर निकला, तो पड़ोसियों का संदेह पक्का हो गया। उस पर, अगला दिन रविवार का था। उस दिन मेरे पति हमेशा घर पर ही रहते थे; वे टहलने के लिए नीचे जाते, पड़ोसियों से मिलते... लेकिन सुबह से ही वे कहीं दिखाई नहीं दिए। किसी न किसी बहाने से पड़ोसी मेरे घर आए और बातों-बातों में मेरे पति के बारे में पूछताछ की। मैं जो भी मनगढ़ंत जवाब दे सकी, मैंने दिए, लेकिन मैं बुरी तरह डरी हुई थी। पाप करते समय मेरे अंदर जो साहस था, वह पूरा हो जाने के बाद गायब हो चुका था। इसके अलावा, उन्होंने मेरी बेटी को बेहद डरा हुआ, उदास और चुप देखा। इससे वे और भी परेशान हो गए। मेरी बेटी आम तौर पर बातूनी और

हंसमुख थी, लेकिन उस दिन उसे डरा, सहमा और मौन देखकर पड़ोसियों को लगा कि कुछ गड़बड़ है। चूँकि पूरी रात बीत चुकी थी, मांस के टुकड़ों से भरे थैलों से दुर्गंध भी फैलने लगी थी। यह उनके संदेह का एक और कारण था, और उन्होंने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करा दी। पुलिस मेरे घर आई और मेरे पति के बारे में मुझसे पूछताछ की। मेरे पास जो जवाब थे, वे असंतोषजनक थे, और मैं खुद भी अत्यधिक घबराहट की स्थिति में थी। पुलिस ने घर की तलाशी ली, और दोनों थैले मिल गए। मैं टूट गई। मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। मैं बेहोश होकर फर्श पर गिर पड़ी। कुछ समय बाद, पुलिस और पड़ोसियों के प्रयासों से मुझे होश आया और मैं फूट-फूटकर रोने लगी। काम-वासना के वशीभूत होकर मैंने कितने जघन्य पाप किए थे! मैंने न केवल अपना परलोक, बल्कि यह जीवन भी बर्बाद कर लिया था। जिस शारीरिक सुख के लिए मैंने यह सब किया था, जिसे मैं रसोइये से लगातार पाना चाहती थी, वह अब कभी नहीं मिलने वाला था। इसके बदले जो मुझे मिलेगा वह थी बदनामी! जेल! मैंने अपने ही हाथों अपना सुहाग उजाड़ लिया था। पुलिस ने मेरी बेटी से बड़े प्यार से पूछताछ की; उनमें छोटे बच्चों से जानकारी निकलवाने की कला होती है। मेरी बेटी ने उन्हें बताया, 'मैं रात में जाग गई थी। मैंने बाहर जाने के लिए दरवाज़ा खोलने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं खुला। मुझे रसोइया-अंकल और मम्मी की आवाजें सुनाई दे रही थीं। मुझे जिज्ञासा हुई। मैंने अपने कमरे की खिड़की से हॉल में झाँका और डर गई। अंकल मेरे पापा के शरीर को काट रहे थे... मैं इतनी डर गई कि मेरे मुँह से आवाज़ नहीं निकली। मम्मी अंकल का साथ दे रही थीं...' बस इतना ही काफी था। सरकार छोटे बच्चों की गवाही पर आसानी से विश्वास कर लेती है। मैंने भी अपनी गलती कबूल कर ली। मैं पश्चात्ताप से भर गई थी। लेकिन जो हो चुका था, उसे बदला नहीं जा सकता था। मामला अदालत में गया। मेरे बेहोश पति को मारने का काम रसोइये ने किया था, इसलिए उसे आजीवन कारावास की सज़ा हुई। मुझे कम सज़ा दी गई क्योंकि मेरी बेटी छोटी थी। इस घटना को कई साल बीत चुके हैं। जब मैं यह लिख रही हूँ, मेरी बेटी शादीशुदा है और अपने ससुराल में रहती है। वह मुझसे नफरत नहीं करती, लेकिन उसे मुझसे कोई विशेष प्रेम भी नहीं है। उसके पिता की हत्या के बाद, मैंने उसे सच्चे स्नेह से पाला, लेकिन हत्या और पालन-पोषण में ज़मीन-आसमान का अंतर है, है न? मेरे पास मेरे पति का कमाया हुआ पर्याप्त धन था, इसलिए मेरा जीवन अब खाने-पीने और रहने के मामले में आरामदायक है। कुछ तुच्छ सुखों के लिए, मैं भ्रष्ट, हत्यारिन, विश्वासघाती बन गई। आज, मुझे गहरा पश्चात्ताप होता है। इस घटना को तीस साल बीत चुके हैं, फिर भी वे भयानक क्षण आज भी अविस्मरणीय हैं। मैंने अपना जीवन स्वयं नष्ट कर लिया है। इस वर्ष, पहली बार, मैंने आलोचना पर प्रवचन सुने। तब मुझे पता चला कि यदि मैं गुरु के समक्ष अपने पापों को स्वीकार करूँ और प्रायश्चित्त करूँ, तो मैं इन पापों से बच सकती हूँ... मैं उनसे मुक्त हो सकती हूँ। इसीलिए मैं अपना पाप आपके सामने प्रकट कर रही हूँ। गुरुदेव! अदालत ने मुझे जो सज़ा दी, समाज से मुझे जो घृणा और तिरस्कार मिला... वह सब सज़ा पूरी हो चुकी है। लेकिन मुझे हमारे जैनशासन का प्रायश्चित्त चाहिए। चाहे इससे मेरे पाप-कर्म नष्ट हों या न हों, कम से कम यह ऐसे पाप करने के गहरे संस्कारों को तो नष्ट कर देगा, और फिर, भविष्य में मेरी आत्मा ये पाप नहीं करेगी। मैं अपने दिवंगत पति से भी पूरे मन से क्षमा माँगती हूँ। मैंने उनके विश्वास को तोड़ा और मैंने उनकी जान ले ली। मैं जानती हूँ कि क्षमा की यह याचना उन तक कभी नहीं पहुँचेगी, लेकिन मैं इसे अपनी आत्मा की संतुष्टि

के लिए माँग रही हूँ। आज, मैं पैंसठ वर्ष की हूँ। मेरे जीवन का अंत निकट है। मेरी गहरी इच्छा है कि मेरा समाधिमरण हो और अच्छी या बुरी गति प्राप्त कर अपनी सज़ा भुगतने के बाद, मैं मोक्ष प्राप्त करूँ।
(18) मैं एक जैन संघ का मुख्य ट्रस्टी था। धनी होने के कारण, मैंने संघ को लाखों रुपये का दान भी दिया था। मेरी दो बेटियाँ थीं जिन्हें मैं बहुत चाहता था; बचपन से ही मैंने उनकी हर इच्छा खुशी-खुशी पूरी की थी। लेकिन फिर मेरे जीवन में एक बुरा दौर आया। मुझे व्यवसाय में भारी नुकसान हुआ और मैं कर्ज में डूब गया। मैंने अपनी पत्नी और बेटियों को नहीं बताया, क्योंकि मैं उन्हें दुखी नहीं करना चाहता था। हालांकि, मैंने अपने खर्चों में कटौती करनी शुरू कर दी, और दफ्तर में तनाव बढ़ता जा रहा था। लेनदार आते, पैसे माँगते। मैं वादे करता, झूठ बोलता। वे बहस करते, गाली-गलौज करते, और धमकियाँ देते। मैं पूरी तरह से परेशान था। दूसरी ओर, मेरी पत्नी और दोनों बेटियाँ एक शानदार जीवन की आदी थीं, इसलिए उनके खर्चे कम नहीं हुए। मैं धर्मसंकट में फँस गया था; न तो मैं उन्हें सच बता सकता था, न ही उनकी जीवनशैली बर्दाश्त कर सकता था। बाज़ार में हर दिन नई चीज़ें आतीं, और वे तीनों उनके लिए पागल हो जातीं। उनकी माँगों का कोई अंत नहीं था। मैंने मना करना शुरू कर दिया, जिससे घर में कहा-सुनी और झगड़े होने लगे। फिर, मेरी दोनों बेटियों ने अपनी छुट्टियों के लिए न्यूज़ीलैंड जाने की ज़िद की। मैंने उनसे कहा, 'हम बहुत घूम चुके हैं। कृपया इस साल धैर्य रखो।' वे दोनों मुँह फुलाकर अपनी माँ के पास रोते हुए चली गईं। मेरी नासमझ पत्नी ने उनका पक्ष लिया। उस दिन, मैं दफ्तर में एक बड़े झगड़े के बाद, अपमान सहकर घर आया था। मेरा सिर फटा जा रहा था। उसी अवस्था में, बिना कुछ सोचे-समझे, मेरी पत्नी ने मुझे भला-बुरा कहना शुरू कर दिया, 'तुम्हें अपनी बेटियों से कोई प्यार नहीं है! उन्होंने तुमसे माँगा ही क्या है? सिर्फ न्यूज़ीलैंड की एक यात्रा, और तुम उनकी इतनी छोटी सी इच्छा भी पूरी नहीं कर सकते? तुम पिता बने ही क्यों थे?' मैंने पलटकर कहा, 'बकवास बंद करो। तुम कुछ नहीं जानती।' इससे वह और भी नाराज़ हो गई, और वह बेतहाशा बोलने लगी। हमारी बहस इस हद तक बढ़ गई कि मैंने अपना आपा खो दिया और उसे एक ज़ोरदार थप्पड़ मार दिया। वह इतना ज़ोरदार था कि वह ज़मीन पर गिर पड़ी। इतने सालों में, मैंने उसे केवल प्यार दिया था। यह मेरे जीवन में पहली बार था जब मैंने उसे थप्पड़ मारा था। उसे गहरा सदमा लगा और वह पूरी तरह से चुप हो गई। मेरी दोनों बेटियाँ हमारे झगड़े को अपने कमरे में छिपकर देख रही थीं, लेकिन जैसे ही उनकी माँ गिरी, वे दौड़कर बाहर आईं, उससे लिपट गईं, और रोने लगीं। उनकी माँ ने भी उन्हें गले लगाया और रोई। मैं यह दृश्य बर्दाश्त नहीं कर सका। मुझे एहसास हुआ कि मैं उन्हें कभी खुश नहीं रख पाऊँगा। मैंने उन्हें जो आदतें डाली थीं, मैंने उन्हें जो जीवन जीना सिखाया था, उसे अब बदलना संभव नहीं था। और मेरे लिए उन आदतों को पूरा करना असंभव था, क्योंकि मेरे पास पैसे नहीं थे। किसी भी क्षण, यह घर और बाकी सब कुछ बेचना पड़ता। किराए का घर भी मुश्किल होता, क्योंकि मेरे पास किराए के लिए भी पैसे नहीं थे। तो समाधान क्या था? मैंने एक निर्णय लिया। रात में, जब सब सो गए, मैंने अपनी लाइसेंसी पिस्तौल निकाली। उसमें साइलेंसर लगा हुआ था। उसे अपनी सोती हुई पत्नी की कनपटी पर रखकर, मैंने मन ही मन 'सॉरी' कहा और गोली चला दी। बेचारी बिना चीखे ही मर गई। उसके बाद, मैंने अपनी दोनों बेटियों को भी मार डाला। लेकिन जब मैंने खुद गोली मारने के लिए पिस्तौल अपनी कनपटी पर रखी, तो मेरी हिम्मत जवाब दे गई। मैंने खुद पुलिस को फोन किया, उन्हें घर बुलाया, और

मेरे द्वारा की गई तीनों हत्याओं को कबूल कर लिया। मैं अब जेल में हूँ। केतनभाई जैन कैदियों के लिए पर्युषण करने जेल आए थे। मेरे जीवन के बारे में जानने पर, उन्होंने मुझे बहुत प्रेरित किया और मुझसे आलोचना करने और प्रायश्चित्त करने का आग्रह किया। मैं तुरंत सहमत हो गया। आखिर, मेरे जीवन में बचा ही क्या है? मेरा कोई परिवार नहीं है, कोई पैसा नहीं है। अगर किसी तरह किस्मत से पैसा आ भी जाए, तो मैं परिवार कहाँ से लाऊँगा? और अब मेरा नया परिवार शुरू करने का कोई मन नहीं है। आज भी, मेरी प्यारी पत्नी और मेरी दोनों लाडली बेटियों के चेहरे मन में आते हैं। नींद में, मैं उनके मासूम चेहरे देखता हूँ, और फिर गोलियाँ लगने के बाद उनकी टूटी-फूटी, खून से लथपथ खोपड़ियाँ। मैं इन बातों को याद करने की कोशिश नहीं करता, लेकिन वे फिर भी मेरे सामने आ जाती हैं। अब मुझे लगता है कि मैंने पूरी तरह से गलत किया। अगर मैंने उन तीनों को बैठाकर अपनी स्थिति समझाई होती, अगर मैंने उनसे शांति से बात की होती, तो वे दुखी ज़रूर होतीं, लेकिन वे निश्चित रूप से समझ जातीं। जैसे मैं उनसे प्यार करता था, वे भी मुझसे प्यार करती थीं। वे इतनी पत्थर-दिल नहीं थीं कि मेरी लाचारी को न समझतीं। वे अपनी जीवनशैली बदल लेतीं; वे मेरा समर्थन करतीं; वे मेरे दुःख में मेरी सहयोगी होतीं; उनकी गंभीरता का गुण बढ़ता। वे आर्थिक तंगी सह लेतीं। वास्तव में, उस कठिनाई से हमारा आपसी प्रेम बढ़ता; हम एक-दूसरे को सांत्वना देने लगते, और हमारा सच्चा रिश्ता खिल उठता। और कुछ सालों बाद, हम फिर से आर्थिक रूप से स्थिर हो जाते। लेकिन मैंने धैर्य खो दिया, मैंने विवेक खो दिया, मैंने दूर की नहीं सोची। इस मूर्खतापूर्ण धारणा में कि मुझे उन्हें खाने-पीने या घूमने-फिरने की कमी का दुःख नहीं देना चाहिए, मैंने उन्हें मृत्यु का ही दुःख दे दिया। मैं उन तीन निर्दोष आत्माओं से बहुत-बहुत क्षमा माँगता हूँ! मैं केवल आशा करता हूँ कि वे मुझे क्षमा कर दें।

(19) मुझे आँतों में कृमि का गंभीर रोग हो गया था। उनके कारण, मेरे शरीर में ताकत नहीं आ रही थी। मैंने एक डॉक्टर से सलाह ली, और उन्होंने ऐसी दवाएँ दीं जो पेट के अंदर कृमि को मारने के लिए थीं। मैंने वे दवाएँ लीं, और परिणामस्वरूप, सैकड़ों कृमि मर गए। अपने शरीर के स्वास्थ्य के लिए, मैंने इस प्रकार सैकड़ों जीवों की जान ले ली। अक्सर, अपने मल में उन जीवित और मृत कृमि को देखकर, मुझे बहुत दुःख होता था। कभी-कभी, ऐसा भी होता था कि जब मुझे गुदा क्षेत्र में खुजली महसूस होती, तो मैं अपनी उंगली से अंदर खुजाता, और एक या दो कृमि मेरे हाथ में आ जाते। लेकिन वे मेरी उंगलियों के बीच कुचल जाते, दो टुकड़ों में टूट जाते। वे मरने की कगार पर होते, दर्द से तड़प रहे होते। वे बेहद पतले और सफेद रंग के थे। बाद में मुझे एहसास हुआ कि मैंने अपने खाने-पीने की आदतों पर ध्यान नहीं दिया था। पिछला भोजन पचने के बाद ही नया भोजन करना, केवल भूख लगने पर ही खाना–मैं इन सभी सिद्धांतों को भूल गया था और बस अंधाधुंध खाता रहा। इससे हुए अपच के कारण ही ये सारे कृमि पैदा हुए। मैं कह सकता हूँ कि मुझे शारीरिक बीमारी को ठीक करने के लिए ये दवाएँ लेनी पड़ीं, लेकिन मैंने बीमारी होने से पहले या बाद में भी अपने खाने-पीने की आदतों को नियंत्रित नहीं किया। इसीलिए ये जीव पैदा हुए, और मैंने उन्हें मार डाला। मैं गहरी क्षमा माँगता हूँ। मिच्छामी दुक्कडं।

(20) मेरे बालों में जूँ का भारी प्रकोप हो गया था, इसलिए मैंने उन्हें साफ करने के लिए साबुन और शैम्पू से धोया। इस प्रक्रिया में, जूँ ज़रूर मर गई होंगी, या कम से कम, उन्हें कष्ट तो हुआ ही होगा। और उसके बाद, मैंने

कंघी से अपने सिर से जूँ निकाली भी। उनमें से कुछ जीवित निकलीं, जबकि कुछ कंघी के तेज़ दाँतों से बिंधकर मर गईं। मैंने जीवित जूँ को बस यूँ ही फेंक दिया। बालों में पैदा होने वाले जीव लंबे समय तक केवल बालों में ही जीवित रह सकते हैं, कहीं और नहीं। तो, एक तरह से, उन्हें कहीं और फेंककर, मैंने परोक्ष रूप से उन्हें मार डाला।

(21) मैं डॉक्टर बनना चाहता था, इसलिए मैंने मेडिकल साइंस में दाखिला लिया। अपनी पढ़ाई के दौरान, मैंने कई हिंसा-जनित पाप किए, जैसे मेंढकों और चूहों की चीर-फाड़ करना। पहले-पहले, मेरा मन कहता था, 'मुझे अभी यह हिंसा करनी पड़ रही है, लेकिन भविष्य में, एक डॉक्टर के रूप में, मैं कई लोगों को बचाऊँगा, इसलिए यह हिंसा उचित है।' आज, मैं एक डॉक्टर बन गया हूँ। लेकिन जब मैं अपने जीवन और अन्य डॉक्टरों के जीवन को देखता हूँ, तो मैं पाता हूँ कि हम सेवा नहीं कर रहे हैं। हम केवल पैसा कमाने के लिए मेहनत कर रहे हैं। मुझमें एक अच्छी बात यह है कि मैं किसी को धोखा नहीं देता। मैं गलत इलाज नहीं करता। लेकिन मैं मोटी फीस ज़रूर लेता हूँ। इसके बिना, मैं अपने खर्चे पूरे नहीं कर सकता। आखिर डॉक्टर बनने में खर्च हुए लाखों रुपये वसूलने तो हैं ही!

(22) जब रात में मच्छर मुझे काटते, तो मैं बेहद चिढ़ जाता और बहुत गुस्सा होता। मेरे सो जाने के बाद, वे मुझे काटकर और मेरे कानों में भिनभिनाकर मेरी नींद खराब कर देते थे। सोते समय, मैंने अनजाने में अपने हाथों से मच्छर मारे हैं। यानी, जहाँ मच्छर काटता, वहाँ खुजली होती; नींद में, मेरा हाथ उसी जगह पहुँच जाता और थप्पड़ से मच्छर मर जाता। लेकिन जब मैं जागा और बैठा होता था, तब भी कई मच्छर मेरे थप्पड़ों से इसी तरह मरे हैं। इन सबमें, मेरा प्रमाद एक कारण था, लेकिन मैंने उन्हें जानबूझकर नहीं मारा। हालांकि, कई बार ऐसा भी हुआ जब मैं बेहद परेशान हो गया। तब, अपने हाथों और पैरों पर बैठे मच्छरों को देखकर, मैं पूरी द्वेष भावना से उन्हें थप्पड़ मारकर खत्म कर देता था। मच्छर तड़प-तड़प कर मर जाते, और उनके खून के धब्बे मेरे शरीर पर भी लग जाते, लेकिन मैं कोई ध्यान नहीं देता था। मैंने यह भी नहीं सोचा कि 'अगर मैं पाँच या पच्चीस मच्छर मार भी दूँ, तो मेरी परेशानी कम नहीं होगी। क्योंकि मच्छर तो हज़ारों, लाखों हैं। अगर मैं पच्चीस मारूँगा, तो और 2,500 मुझे परेशान करने के लिए तैयार हैं। और क्या उन 2,500 में यह समझने की बुद्धि है कि, 'यह व्यक्ति हमें मार देगा, इसलिए हमें उसके पास नहीं जाना चाहिए'? वे तो मानो अपने भाई-बंधुओं की हत्या का बदला लेने के लिए मुझ पर टूट पड़ते हैं। मैं कितनी भी कोशिश करूँ, मच्छर मारने से मेरा दुःख कम नहीं होगा।' सबसे सरल उपाय मच्छरदानी थी! लाखों मच्छरों के होने पर भी, अगर मैं रात में मच्छरदानी के अंदर बैठता या सोता, तो एक भी मच्छर मुझे परेशान नहीं कर सकता था, और उन मच्छरों को ज़रा भी कष्ट नहीं होता। यहाँ तक कि एक ओडोमॉस ट्यूब भी एक हानिरहित समाधान था। उसे अपने शरीर पर लगाकर, मैं मच्छरों को दूर भगा सकता था। लेकिन मैंने इन सभी हानिरहित उपायों को नज़रअंदाज़ किया और ऑल-आउट, गुडनाइट, आदि जैसी चीज़ों का इस्तेमाल किया, जिससे कई मच्छर मरे और उन्हें कष्ट हुआ।

(23) मेरे घर में छोटे-बड़े कॉकरोच दिखाई देने लगे। मैं उनका आकार देखकर ही बहुत डर जाता था। इसलिए, मैंने घर के हर कोने में ब्रेकडाउन स्प्रे नामक कीटनाशक का छिड़काव किया। चौबीस घंटे बाद, मैंने मरे हुए

कॉकरोचों के ढेर देखे। वे सभी कॉकरोच उस रसायन के घातक प्रभाव के कारण मर गए थे। मैंने उन्हें झाड़ू से समेटकर बाहर फेंक दिया।

(24) मैं अपने साथी, शशि के साथ व्यापार में था। लेकिन उन दिनों, हम एक गंभीर मंदी के दौर से गुज़र रहे थे। उस दौरान, शशि ने मेरे साथ विश्वासघात किया। मैंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की। उस समय, मेरे पास अपने छोटे बेटे के लिए दूध खरीदने के भी पैसे नहीं थे। मैं यह दुःख सहन नहीं कर सका, लेकिन मेरा साथी पूरी तरह से अव्यावहारिक हो गया था। मैंने फैसला किया, 'इसे सबक सिखाना ही होगा।' मैंने अपने एक मुस्लिम दोस्त, रसूल से कहा, 'हमारी दोस्ती के नाते, तुम्हें मेरे लिए कुछ करना होगा। मैं तुम्हें अभी इसके लिए कोई पैसा नहीं दूँगा...' रसूल, जो अंडरवर्ल्ड से जुड़ा हुआ था, मान गया। मैंने उससे कहा, 'तुम्हें मेरे साथी, शशि की हत्या करनी है।' उसने मुझे आश्वासन दिया कि काम चौबीस घंटे के भीतर हो जाएगा। मैं खुश था, लेकिन मेरे मन में थोड़ा डर, थोड़ी बेचैनी घर कर गई। जब मैं घर आया, तो मैंने मन की शांति के लिए एक किताब पढ़ना शुरू किया। उसमें, मुझे एक वाक्य मिला: 'हमें ऐसे काम क्यों करने चाहिए जो परलोक में हमारी आत्मा को नुकसान पहुँचाएँ?' मुझे अपने पाप की याद आ गई; मेरी आत्मा जाग गई। मैंने तुरंत रसूल को फोन किया और उसे आगे बढ़ने से मना कर दिया। लेकिन एक बार, विचार और वचन में, मैं अपने साथी की हत्या करवा ही चुका था।

(25) मैंने कुछ दूध की मलाई इकट्ठी करके बाहर छोड़ दी थी; मैं उसे फ्रिज में रखना भूल गई। संयोग से, मुझे दो दिनों के लिए शहर से बाहर जाना पड़ा। जब मैं घर लौटी, तो एक भयानक बदबू आ रही थी। मैं रसोई में गई और देखा कि कटोरे में रखी मलाई में कीड़े बिलबिला रहे थे। मैं भयभीत हो गई। मैंने मलाई और सारे कीड़ों को नाली में फेंक दिया। मुझे कोई और उपाय नहीं सूझा। तो, मैंने उन जीवित प्राणियों को रसोई के सिंक के नाली के छेद में फेंक दिया।

(26) जब मैं गर्भवती हुई, तो मेरे पति की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। उन पर लगभग दो से तीन करोड़ रुपये का कर्ज था। मैंने फैसला किया, 'ऐसी स्थिति में, हमें एक बच्चे का नया खर्च नहीं पैदा करना चाहिए। इसके बजाय, मुझे गर्भपात करा लेना चाहिए।' मैंने अपने पति से बात की। धार्मिक और समझदार होने के कारण, उन्होंने साफ मना कर दिया, कहा, 'जो आत्मा आ रही है, वह अपना भाग्य लेकर आती है। हम कौन होते हैं उसे जीवन देने वाले, उसे खिलाने वाले, उसे पालने वाले? हम गर्भपात नहीं कराने जा रहे हैं।' मैंने उनकी बात मान ली और गर्भपात नहीं कराया। मैंने एक बच्ची को जन्म दिया। हमने उसका नाम पूजा रखा। मेरे पति की बात सच साबित हुई। उसके जन्म के बाद, उनका सितारा चमकने लगा। उन्होंने बहुत कमाया और अपने सारे कर्ज चुका दिए। आज, हमारी बेटी एक चार्टर्ड अकाउंटेंट है। वह अत्यंत बुद्धिमान और धार्मिक है। उसे देखकर, मैं अक्सर सोचती हूँ, 'एक समय था जब, अपने मन और वचन में, मैंने उसे मरवा दिया था। आज, वही हमारे परिवार का उद्धार करेगी।' मैं विचार और वचन में भ्रूण-हत्या करने के पाप के लिए क्षमा माँगती हूँ।

(27) डॉक्टर ने सलाह दी, 'तुम दोनों में से केवल एक ही बचेगा, या तो तुम या भ्रूण।' मैंने अपने पति को बताया, और उन्होंने जवाब दिया, 'चलो गर्भपात करा लेते हैं। अगर तुम जीवित रहोगी, तो हम दूसरा बच्चा कर सकते हैं।' मैं उनसे सहमत हो गई और गर्भपात करा लिया।

(28) मेरा बेटा केवल एक साल का था जब मैं दूसरी बार गर्भवती हुई। मैं मुश्किल से छोटे बच्चे की देखभाल कर पा रही थी, और नौ महीने में एक और की देखभाल करने का विचार बहुत कठिन लग रहा था। इसलिए, मैंने गर्भपात करा लिया। आज, मुझे यह ख्याल आता है कि अगर मुझे केवल एक बच्चे की देखभाल करना ही मुश्किल लग रहा था, तो मेरे उस बच्चे को कितना कष्ट हुआ होगा जब उसे टुकड़ों में काट दिया गया था? मैंने ऐसा निर्णय क्यों लिया? लेकिन अब क्या किया जा सकता है? यह गंभीर भूल हो चुकी है।
(29) मेरी पहले से ही दो बेटियाँ थीं। मैं एक बेटा चाहती थी। मैं फिर से गर्भवती हुई, लेकिन सोनोग्राफी से पता चला कि यह एक लड़की है। मेरे पति की नौकरी है, और हम एक मध्यमवर्गीय परिवार हैं, इसलिए मैं तीसरी लड़की नहीं चाहती थी। मैंने गर्भपात करा लिया। लेकिन अब जब मैं इसके बारे में सोचती हूँ, तो मुझे लगता है कि अगर सोनोग्राफी में लड़का दिखाया होता, तो मैं निश्चित रूप से उसे जन्म देती। उस मामले में, मैं 'मध्यमवर्गीय परिवार' होने का बहाना इस्तेमाल नहीं करती। तो, वास्तव में, पाप मेरे मन में था: मेरी पहले से ही दो बेटियाँ हैं, इसलिए मैं बिल्कुल भी तीसरी नहीं चाहती। और इसी विचार के कारण, मैंने गर्भपात कराया।
(30) हम एक आर्थिक संकट में फँसे हुए थे। हम मुश्किल से गुज़ारा कर रहे थे। उस स्थिति में, मैं गर्भवती हो गई, इसलिए मैंने गर्भपात करा लिया। अब मुझे एहसास होता है कि अगर हम गरीबी का दर्द सहन नहीं कर सकते, तो गर्भपात की पीड़ा उस बच्चे के लिए कितनी भयानक दर्दनाक रही होगी? और एक और विचार मन में आता है: अपने आर्थिक संकट में भी, हम काम-सुख में लिप्त थे; हमने वह बंद नहीं किया था। अगर हम जानते थे कि हमारी आर्थिक कठिनाइयाँ गंभीर हैं, तो हमें इतना ध्यान रखना चाहिए था कि गर्भधारण न हो। लेकिन हमने ऐसा कोई ध्यान नहीं दिखाया, अंधाधुंध सुख भोगा, और जब गर्भधारण हुआ, तो हमने उसे मरवा कर अपना रास्ता साफ कर लिया।
(31) मेरे माता-पिता ने मुझे मना किया, फिर भी मैं नवरात्रि के दौरान गरबा खेलने गई। मैं लड़कों से परिचित हुई, काम-सुख में लिप्त हुई, और गर्भवती हो गई। किसी को बताए बिना, मैंने चुपचाप गर्भपात करा लिया। इस सब के बावजूद, मैंने अपने तौर-तरीके नहीं सुधारे। मैंने नवरात्रि के दौरान गरबा खेलना बंद नहीं किया। मैंने काम-सुख में लिप्त होना बंद नहीं किया, लेकिन मैंने गर्भनिरोधक का उपयोग करना शुरू कर दिया ताकि मैं गर्भवती न होऊँ। मैं निडर हो गई, क्योंकि अब गर्भावस्था की कोई संभावना नहीं थी। लेकिन इस निडरता ने मुझे और भी अधिक व्यभिचारिणी बना दिया। अब मेरी शादी हो चुकी है, लेकिन अपनी शादी से पहले, मैंने कम से कम 100 युवकों के साथ अनगिनत बार काम-क्रीड़ा की होगी। मैं एक वेश्या से भी बदतर हो गई। वह बेचारी तो मज़बूरी में, पैसा कमाने के लिए कई पुरुषों के साथ संबंध बनाती है। लेकिन मुझ पर ऐसी कोई मज़बूरी नहीं थी। हाँ, मैं काम-वासना से मज़बूर थी। और इसलिए, मैंने अपने माता-पिता को धोखा दिया और ये गंदे पाप किए। पहले, हिंसा का पाप, और फिर, हालांकि हिंसा बंद हो गई, घोर व्यभिचार के पाप जारी रहे।
(32) मैंने जीवविचार का अध्ययन किया। मैंने जाना कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति में जीवन है। लेकिन अब तक, मुझसे इन पाँचों ही प्रकार के जीवों की घोर हिंसा हुई है। मैं रोज नहाने के लिए एक-दो बाल्टी पानी का उपयोग करता था। कभी-कभी आनंद के लिए मैं शॉवर के नीचे नहाता था। कभी-कभी मैं बाथटब को पानी से भरकर उसमें नहाता था। मुझे स्विमिंग पूल में तैरने का भी बहुत शौक था। मैं सैकड़ों बार

स्विर्मिंग पूल में नहाया हूँ। सामान्य तौर पर, मैं पानी के मामले में बहुत लापरवाह रहा हूँ और अब भी हूँ। बर्तन धोते समय, मैंने नल को चालू छोड़कर ही उन्हें धोया है। उसमें से अधिकांश पानी व्यर्थ ही चला जाता है। मैंने कपड़े भी इसी तरह, नल चालू रखकर ही धोए हैं! जब मैं वॉशबेसिन में हाथ धोता हूँ, तो नल पूरी ताकत से खोल देता हूँ। इस प्रकार, मुझसे जलकाय के जीवों की बहुत हिंसा हुई है। और यह अब भी जारी है... पहले की तुलना में कुछ बदलाव आया है। मेरा यह पक्का निश्चय है कि मैं यह सब अनावश्यक हिंसा क्यों करूँ? यदि मैं थोड़ी जयणा का पालन करूँ, तो इसमें मुझे क्या परेशानी है? कम से कम अनावश्यक हिंसा तो रुक जाएगी।
(33) मैंने जीवविचार का अध्ययन तो किया है, लेकिन अब तक मुझसे अग्निकाय की भी बहुत हिंसा हुई है। यदि मैं बिना किसी कारण के एक साथ सारे स्विच चालू कर दूँ, तो सारी लाइटें और सारे पंखे चालू हो जाते हैं। इसमें अग्निकाय की घोर हिंसा होना निश्चित है, है न? लेकिन अब तक, मैंने इस बात पर कभी ध्यान ही नहीं दिया। और अब जब मैं समझ गया हूँ, तब भी पुरानी आदतों के कारण मुझसे गलतियाँ हो जाती हैं। यदि अंदर के कमरे में लाइट और पंखा चालू है और मैं बाहर के कमरे में आ जाता हूँ, तो मैं अंदर के कमरे की लाइट और पंखा बंद नहीं करता। इसमें प्रमाद, लापरवाही और भूल, तीनों का योग रहता है। बाहर के कमरे में आने के बाद, यदि मैं टीवी देखने बैठ जाऊँ या किसी से बातचीत में लग जाऊँ, तो अंदर के कमरे में घंटों तक लाइट और पंखा चलता रहता है। यही बात तब भी होती है जब मैं बाहर के कमरे से अंदर के कमरे में जाता हूँ! ऐसा कई बार हुआ है। इसकी कोई गिनती नहीं है। अब, जीवविचार का अध्ययन करने के बाद, मैं इस बारे में सावधान रहने की कोशिश करता हूँ। फिर भी, कभी-कभी गलती हो ही जाती है।
(34) मुझे एयर कंडीशनर की आदत हो गई है। स्थिति यह है कि, चूँकि मैं बैंगलोर में रहता हूँ, वहाँ लगभग कोई गर्मी नहीं होती। गर्मियों में भी ठंडक रहती है। लेकिन मुझे एक बुरी आदत पड़ गई है। मुझे एसी चालू करना ही है, चाहे कुछ भी हो जाए। मैं एसी चालू करके कंबल ओढ़कर सोता हूँ। साल में मुश्किल से एक-दो महीने ही ऐसे होते हैं जब पंखे की भी जरूरत पड़ती हो। लेकिन मुझे तो पूरे बारह महीने एसी चाहिए। फिर, मैंने एक प्रवचन में सुना कि एसी यूनिट से जहाँ पानी टपकता है, उस जगह पर निगोद बनने की संभावना रहती है। और उसमें अनंत जीव होते हैं। यह सुनने के बाद, मैंने उस जगह को देखा जहाँ पानी टपकता था, और यह बिल्कुल सच था; वहाँ निगोद की परतें जम गई थीं। इसके अलावा, चूँकि मैं हर दिन एसी का उपयोग करता था, पानी के लगातार टपकने का मतलब था कि निगोद को कभी सूखने या अजीवित होने का मौका ही नहीं मिला। मैंने यह सब देखा, और अब मुझे पश्चाताप होता है कि 'इतने वर्षों से, निगोद के अनंत जीवों की निरंतर हिंसा का पाप मुझे लगता रहा...' लेकिन मेरा यह प्रमाद पूरी तरह से दूर नहीं हुआ है। हाँ, मैंने एसी का उपयोग कम कर दिया है। 12 महीने के बजाय, अब मैं लगभग चार महीने एसी का उपयोग करता हूँ। लेकिन वह भी आवश्यक नहीं है, और मैं निश्चित रूप से इसे और कम करने का प्रयास करूँगा।
(35) एक नई इमारत बननी थी, और मुझे एक नया घर खरीदना था। उस समय इस इमारत की कीमतें कम थीं, लेकिन इसके पूरा होने पर कीमतें बढ़ने वाली थीं। मेरे अनुभव के आधार पर, यह निश्चित था। मेरे बजट को देखते हुए, तुरंत एक फ्लैट बुक करना आवश्यक था, इसलिए मैंने अग्रिम में ऐसा कर लिया। चातुर्मास में एक व्याख्यान के दौरान, मुझे पता चला कि एक श्रावक को नया घर नहीं बनवाना चाहिए, क्योंकि इसमें घोर

विराधना होती है–भूमि की खुदाई करनी पड़ती है, और भी बहुत कुछ। इसके बजाय, किसी को ऐसा घर खरीदना चाहिए जो किसी और ने पहले से ही अपने लिए बनवाया हो। ऐसा करने में, कोई नई हिंसा का आरंभ नहीं होता। जो हिंसा हो चुकी है, वह श्रावक के लिए नहीं हुई; वह तो पहले वाले मालिक ने अपने लिए करवाई थी, इसलिए उसका पाप श्रावक को नहीं लगता।

यह जानने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि भले ही मैं इमारत का निर्माण नहीं कर रहा हूँ, क्योंकि मैंने फ्लैट अग्रिम में बुक किया और आवश्यक राशि का भुगतान किया, इसलिए इसके निर्माण के दौरान होने वाली किसी भी हिंसा के परिणामों में मैं भी भागीदार बनूँगा। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि पृथ्वी में हजारों, यहाँ तक कि लाखों, चींटियाँ और कीड़े होते हैं। उनके अलावा, अनगिनत अन्य जीव-जंतु होते हैं; पृथ्वी स्वयं एक जीवंत इकाई है। एक इमारत के निर्माण में पानी और आग का अंधाधुंध उपयोग होता है। मैं इस सारी हिंसा में एक पक्षकार बन गया था। इमारत में कुल 10 मंजिलें थीं और हर मंजिल पर 4 फ्लैट थे, यानी कुल 40 फ्लैट। यदि हिंसा को 40 भागों में विभाजित किया जाता, तो एक फ्लैट लेने से, एक हिस्सा मेरे हिस्से में आता। इसका मतलब है कि मैं कुल हिंसा के 2.5% पाप का भागीदार होता।

(36) मेरा व्यवसाय भवन निर्माण का है। आज तक, मैंने लगभग 40 छोटी-बड़ी इमारतें बनाई हैं, और इसका पाप निश्चित रूप से मुझे लगा है। नींव खोदने से लेकर ढाँचा पूरा करने तक, पूरी प्रक्रिया अपार हिंसा से भरी है। लेकिन मेरा सबसे बड़ा पाप कुछ और था। एक आदमी के पास एक प्रमुख स्थान पर जमीन का एक बड़ा टुकड़ा था। अगर मैं उसे हासिल कर पाता, तो वहाँ एक बड़ी इमारत खड़ी की जा सकती थी, जिससे करोड़ों का मुनाफा होने का वादा था! मैंने मालिक के साथ एक बैठक की। वह जमीन बेचने को तैयार था लेकिन उसने स्पष्ट किया, "वहाँ अवैध रूप से बनी झोपड़ियों में कई गरीब लोग रह रहे हैं। मैंने उन्हें कई बार जगह खाली करने के लिए मनाने की कोशिश की है, लेकिन वे सभी आक्रामक लोग हैं। यदि आप उनसे निपटने के लिए तैयार हैं, तो मैं आपको कम कीमत पर जमीन दे दूँगा।" मैंने बड़े अहंकार के साथ उस मालिक से कहा, "मेरे पास उनसे दोगुने आक्रामक लोग हैं, और पुलिस बल में मेरी पहुँच है। आप बस यह काम और यह जमीन मुझे सौंप दीजिए।" सौदा कम कीमत पर तय हो गया। बेचारा मालिक वर्षों के संघर्ष के बाद थक चुका था; उसके लिए वह जमीन सिर्फ एक बेकार बोझ थी। उसे जो भी राशि मिली, वह उसके लिए शुद्ध लाभ थी। एक बार जब जमीन मेरी हो गई, तो मैंने झुग्गी-झोपड़ी वालों को डराने-धमकाने के लिए कुछ और ज़्यादा आक्रामक गुंडों को पैसे खिलाए। अदालत और पुलिस की सलाह पर काम करते हुए, मैंने झोपड़ियों को बुलडोजर से ज़मींदोज करवा दिया और उस स्थल पर एक विशाल इमारत का निर्माण करवाया। मुझे लाखों रुपये की रिश्वत देनी पड़ी, लेकिन बदले में मैंने करोड़ों कमाए। अब मुझे समझ में आता है: मुझे यह सब करने की क्या ज़रूरत थी? मेरे पास पहले से ही करोड़ों थे। मेरे पास सात पीढ़ियों तक चलने के लिए पर्याप्त धन है। तो फिर मुझे ऐसे संघर्ष और धमकी का सहारा क्यों लेना पड़ा? माना कि गरीब झुग्गी-झोपड़ी वालों की भी गलती थी। उन्होंने भी belligerence (आक्रामकता) के साथ काम किया था, उस जमीन पर अवैध रूप से कब्जा कर रखा था। लेकिन मुझे उनकी गलती पर ध्यान नहीं देना चाहिए था। वे बेघर थे, ज़रूरत के मारे थे, और धर्म को नहीं समझते थे, इसीलिए उन्होंने आक्रामक रूप से जमीन पर कब्जा कर लिया। लेकिन मेरे

पास कई घर थे; मुझ पर ऐसी कोई मजबूरी नहीं थी। मैं अच्छी तरह समझता था कि यह सब धमकी वगैरह उचित नहीं है। और वह जमीन तो शुरू में मेरी थी भी नहीं; मैं इसे हासिल करने से पहले जानता था कि मुझे यह सब करना पड़ेगा। अगर मैंने वह जमीन नहीं ली होती, तो मुझे क्या समस्या होती? लेकिन लोभ, लालच, अहंकार और प्रतिष्ठा की चाह में, मैंने हिंसा का यह घोर पाप किया।
यद्यपि मैंने किसी की हत्या नहीं करवाई, लेकिन धमकियों और लोगों को बेघर करके, मैंने भावनात्मक दृष्टिकोण से निश्चित रूप से हिंसा की है। वे करोड़ों रुपये मुझे क्या शांति देंगे? ऐसी दुर्भावना पर बने उन शानदार फ्लैटों के निवासियों को क्या सुख मिलेगा? तीनों काल में यह संभव नहीं है कि दूसरों को खून के आँसू रुलाकर कोई सुखी हो जाए। गुरुदेव! मैंने अब निर्माण व्यवसाय छोड़ दिया है। मेरी अपनी अंतरात्मा अब मुझे कचोटती है। इन पिछले पापों का पश्चाताप मेरे भीतर गहरा है। इस आलोचना को करके, मैं अपने पापों का बोझ हल्का करना चाहता हूँ। मैंने खरीदारों को आकर्षित करने के लिए अपने फ्लैटों की बहुत प्रशंसा भी की है, हर बेडरूम, टॉयलेट, बाथरूम और रसोई की अनूठी विशेषताओं का वर्णन किया है, जिससे मैंने अपने ऊपर अनावश्यक पापों का बंधन किया है। मनपूर्वक मिच्छामी दुक्कडं।
(37) मेरे पति, दो बच्चे और मैं एक ही बेडरूम में साथ सोते थे। कमरे में मच्छरों का उपद्रव बहुत बढ़ गया था। मैं मच्छर मारने के लिए एक इलेक्ट्रिक रैकेट ले आई, जिसमें बिजली का करंट होता है। जैसे ही यह किसी मच्छर को छूता है, वह कीट जलकर मर जाता है। एक-दो दिन तक मैंने इसी तरह मच्छर मारे, लेकिन मेरा दिल काँप उठा। "हाय! मैंने इन बेचारे जीवों को जीते-जी जला दिया।" उसके बाद, मैंने उन्हें मारना बंद कर दिया, लेकिन मेरे पति और बेटों ने यह प्रथा जारी रखी। रात को सोने से पहले, मेरे बेटे 15-20 मिनट तक मच्छरों को ढूँढ़ते और अपने पिता को दिखाते, जो फिर उन्हें रैकेट से मार देते। मुझे बहुत पीड़ा होती और मैं उन्हें रुकने के लिए कहती, लेकिन वे सुनते नहीं थे। मेरे पति कहते, "तुम मच्छरों पर तो दया दिखा रही हो, हम तीनों पर थोड़ी दया क्यों नहीं दिखाती? सोचो हम कितने परेशान होते हैं। और अगर उनके काटने से हमें मलेरिया या कोई और बीमारी हो गई, तो कल्पना करो कि हमें कितना कष्ट सहना पड़ेगा।" उन्होंने मेरी चिंताओं को हँसी में उड़ा दिया, और वे उन्हें मारते रहे।
मैंने उन्हें समझाने की कोशिश छोड़ दी और इसके बजाय यह पता लगाया कि मच्छर आ कहाँ से रहे हैं। मुझे एहसास हुआ कि वे बाथरूम और वॉशरूम की खिड़कियों से अंदर आ रहे थे। मैंने वहाँ प्लास्टिक की शीट लगवा दी, जिससे रोशनी तो नहीं रुकी लेकिन मच्छरों का आना बंद हो गया। हालाँकि, उस समय तक, मेरे कारण और मेरे हाथों से बहुत सारे मच्छर मर चुके थे। मैं सच्चे हृदय से क्षमा माँगती हूँ।
(38) सुबह, मैं ऑफिस जाने के लिए कार स्टार्ट की, लेकिन मैंने चारों पहियों के नीचे जाँच नहीं की थी। एक छोटा पिल्ला पिछले पहियों में से एक के नीचे बैठा था। जब मैंने कार स्टार्ट की, तो वह पहिये के नीचे कुचल गया। जैसे ही मैंने उसकी चीख सुनी, मैं जल्दी से बाहर निकला। वह फँस गया था। मैं वापस कार में बैठा और उसे पीछे किया। फिर मैं दोबारा बाहर निकला और पिल्ले को बाहर निकाला, लेकिन उसका बहुत खून बह चुका था और वह दर्द से तड़प रहा था। मैं बहुत दुखी हुआ, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता था। मैंने उसे पशु चिकित्सक के पास ले जाने का भी सोचा, लेकिन मेरे ले जाने से पहले ही वह मर गया। इसके प्रायश्चित के

रूप में, मैंने तुरंत एक डॉग शेल्टर को ₹11,000 ,
सकता। सच्चा प्रायश्चित तो एक ही है–जो सुगुरु द्वारा दिया जाए।
(39) मैंने बहुत यात्रा की है। मेरे पास एक कार है और मैंने अपने परिवार के साथ पूरी गति से लंबी ड्राइव पर दूर-दराज के स्थानों की यात्रा की है। हमने सुबह के अंधेरे में और रात में 10 या 11 बजे तक यात्रा की है। ज़्यादातर समय, मैं ही गाड़ी चला रहा होता हूँ। बहुत लंबी यात्राओं के लिए, मैं एक ड्राइवर किराए पर लेता हूँ। मुख्य बात यह है कि मैंने एक प्रवचन में सुना कि सड़क पर कितने जीव मर जाते हैं। तभी मुझे याद आया। एक बार, मैं हाईवे पर तेजी से गाड़ी चला रहा था कि अचानक एक कुत्ता सड़क पार करने की कोशिश करने लगा। वह मेरी कार के नीचे आ गया और मौके पर ही मर गया। इसी तरह, एक सुबह तड़के, एक बड़ा सूअर भी मेरी तेज रफ्तार कार से टकरा गया। मैंने अपनी हेडलाइट्स की रोशनी में देखा कि वह खून से लथपथ पड़ा था, अपनी आखिरी साँसें ले रहा था। एक अन्य अवसर पर, मैंने एक साँप को सड़क पार करते देखा–एक साँप जो दो से ढाई फीट लंबा था! मैंने उसे देखा, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी; इससे पहले कि मैं ब्रेक लगा पाता और रुक पाता, कार उसके ऊपर से तेजी से निकल गई।
ये तीन घटनाएँ हैं जो मुझे याद हैं और मैंने सुनाई हैं। लेकिन मुझे लगता है कि चींटियों, कीड़ों, इल्लियों और कनखजूरों जैसे अनगिनत जीव मरे होंगे। ऐसे जीव सड़क के किनारे की वनस्पतियों से सड़क पर आ ही जाते हैं। उन बेचारे जीवों को कैसे पता चलेगा कि सड़क उनके लिए निश्चित मृत्यु है? वर्षों से, यह हिंसा मेरे कारण हुई है। मेरा उन जीवों को मारने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन यह निश्चित रूप से लापरवाही, भूल और सुख की खोज ही तो है, है न? अब, मैंने और मेरे परिवार ने कार या बस से यात्रा करना लगभग बंद कर दिया है। हम केवल अपने शहर की सीमा के भीतर ही यात्रा करते हैं, जहाँ यातायात किसी को भी धीरे-धीरे गाड़ी चलाने के लिए मजबूर करता है, जिससे बड़ी जीवहिंसा को रोका जा सकता है। अगर हमें शहर से बाहर यात्रा करनी हो, तो अब हम ज़्यादातर ट्रेन से जाते हैं। चूँकि ट्रेन निश्चित पटरियों पर चलती है और उन पर जीवों के होने की संभावना नहीं होती, इसलिए जीव-जंतुओं को मारने की संभावना बहुत कम हो जाती है। और अगर हमें सड़क मार्ग से यात्रा करनी ही पड़े, तो हम ज़्यादातर दिन के उजाले में करते हैं–सूर्योदय के आधे घंटे बाद से लेकर सूर्यास्त के आधे घंटे पहले तक। बस! हम केवल इसी अवधि में यात्रा करते हैं। चूँकि इसके बाहर का समय अंधेरा होता है, इसलिए हम तब हाईवे पर यात्रा नहीं करते। लेकिन जो भी हिंसा मेरे खाते में हुई है, वह किसी भी तरह से छोटी नहीं है। मैंने इस तरह से हजारों जीवों को मारा है। कृपया मुझे इसके लिए कठोर प्रायश्चित प्रदान करें। यह तथ्य कि मैं अब सुधर गया हूँ, मुझे मेरे पिछले पापों से मुक्त नहीं करता है। यदि मैं तीन हत्याएँ करने के बाद एक गुणी संत भी बन जाऊँ, तो भी मुझे उन तीन हत्याओं की सजा का सामना करना ही पड़ेगा। इसलिए, मैं इस प्रायश्चित के लिए तैयार हूँ।
(40) एक पार्टी पर मेरे लाखों रुपये बकाया थे, जो फँस गए थे। वह वास्तव में मुश्किल में था; ऐसा मामला नहीं था कि उसने अपना पैसा सुरक्षित कर लिया हो और फिर हाथ खड़े कर दिए हों। उसने अपना घर और अपनी पत्नी के गहने बेच दिए और जो कुछ भी चुका सकता था, चुका दिया। उसने नौकरी कर ली और भागा नहीं। उसने हम लेनदारों से सच्ची भावना से कहा, "अगर मेरे पास पैसा होता, तो मैं निश्चित रूप से आपको दे

देता। आप खुद जाँच कर सकते हैं; अगर आपको मेरी कोई संपत्ति या पैसा मिले, तो कृपया मुझे बताएं। मैं निश्चित रूप से वह भी आपको दे दूँगा।" उसने जो कुछ भी कहा, वह सच था।
लेकिन मुझे भी पैसे की ज़रूरत थी। मेरी स्थिति इतनी खराब नहीं थी कि अगर मुझे पैसे वापस नहीं मिलते तो मैं कर्जदार हो जाता या मुझे अपना घर बेचना पड़ता। नहीं! बस इतना था कि मेरी पूँजी कम हो जाती, आधी भी हो जाती। लेकिन चूँकि यह एक बड़ी राशि थी, मैं इसे सहन नहीं कर सका। मैं अक्सर उस जैन व्यापारी को फ़ोन पर खूब डाँटता-डपटता, गाली-गलौज करता और धमकियाँ देता। बेचारा आदमी शांति से जवाब देता, लेकिन मुझे शांति नहीं थी। मैं उसके घर भी गया और झगड़ा किया, ज़ोर-ज़ोर से गालियाँ दीं ताकि उसके पड़ोसी सब कुछ सुन सकें। उस जैन व्यापारी ने मुझसे विनती भी की, "भाई! कृपया धीरे बोलिए, पड़ोसियों में मेरी प्रतिष्ठा जा रही है।" लेकिन यह सुनकर, मैं और भी ज़ोर से चिल्लाया, और गालियाँ दीं, और धमकियाँ दीं। वह व्यापारी और उसकी पत्नी विनती करते रहे। उनके दो बच्चे अंदर खड़े होकर डर से यह दृश्य देख रहे थे। जब मेरी नज़र उन पर पड़ती, तो वे डर जाते और वापस अंदर भाग जाते। ऐसा कई बार हुआ। मैंने अपनी धमकियों पर कभी अमल नहीं किया, न ही मेरा ऐसा कोई इरादा था। लेकिन मेरी प्रताड़ना ने उस जैन परिवार को अत्यधिक कष्ट दिया। उन्हें अन्य लेनदारों द्वारा भी प्रताड़ित किया गया होगा।
एक दिन, मुझे खबर मिली कि पूरे परिवार ने जहर खाकर जान दे दी है। माता-पिता ने खुद अपने दो बच्चों को बड़ी संख्या में नींद की गोलियाँ खिला दी थीं, और फिर उन्होंने भी खा लीं। खबर छपी। उस व्यक्ति द्वारा लिखा एक पत्र भी मिला, जिसमें लिखा था, "इसमें किसी का दोष नहीं है। मैं बस कर्ज में डूब गया हूँ, और मैं पैसा चुकाने या अपने परिवार की देखभाल करने में असमर्थ हूँ। इसीलिए हम आत्महत्या कर रहे हैं।" मैंने सारे संदेश पढ़े और तस्वीरें देखीं। मुझे बहुत दुःख हुआ। अपने लोभ के कारण, मैंने अत्यधिक क्रोध में काम किया था, लेकिन मैंने कभी ऐसे परिणाम की कल्पना नहीं की थी। आज भी, मुझे उस लड़के और लड़की के चेहरे याद हैं, दोनों लगभग 10-12 साल के थे। वे अपने माता-पिता की दयनीय दशा देखकर रोते हुए छिप-छिपकर देखते थे। मेरा अपना चेहरा इतना भयावह हो गया था कि वे मुझसे डरते थे। उनकी आँखों के सारे भाव अब मुझे स्पष्ट दिखाई देते हैं। यद्यपि मैंने उन्हें मारा नहीं, और ऐसा करने का कोई इरादा नहीं था, वे मेरे क्रोध में दी गई धमकियों से डर गए और अंततः आत्महत्या कर ली। क्या यह उनकी गलती थी? अगर कोई गलती थी, तो उस व्यापारी की थी! बाकी तीन तो निर्दोष थे, है न? जब भी मुझे यह घटना याद आती है, मेरी आँखें आँसुओं से भर जाती हैं। तुच्छ धन के लिए, मैं एक पूरे जैन परिवार के विनाश का निमित्त बन गया। धिक्कार है मुझ पर!
(41) सदियों से, मुसलमानों ने हिंदुओं और जैनियों पर कई अत्याचार किए हैं। कश्मीर और हिंदुस्तान के अन्य हिस्सों में वर्तमान समय में उनके द्वारा किए गए अत्याचारों के बारे में सुनकर मैं तीव्र क्रोध से भर गया। मेरे मन में ऐसे विचार आते थे कि, "इन एक-एक मुसलमान को पकड़-पकड़कर मार डालना चाहिए। या उनके खाने-पीने में जहर मिलाकर उन्हें खत्म कर देना चाहिए। या पाकिस्तान पर एक परमाणु बम गिरा देना चाहिए।" ऐसे कई विचार मेरे मन में आए। इसीलिए जब भी मैं यह खबर सुनता कि "इज़राइल ने इतने मुसलमानों को मारा" या "भारत ने इतने आतंकवादियों को मारा," तो मेरे दिल में बहुत खुशी की भावना होती

थी। एक ही विचार उठता था: "इन दुष्टों को मारना ही चाहिए।"
लेकिन फिर मैंने प्रवचन सुने। म.सा. ने बहुत सुंदर ढंग से समझाया कि "यदि हम ऐसे क्रूर विचार रखते हैं, तो हम अपने ऊपर घोर पापकर्म का बंधन करेंगे। हमारे सोचने या बोलने मात्र से कुछ होने वाला नहीं है। तो हम व्यर्थ में ऐसे विचार क्यों सोचें? ऐसे शब्द क्यों बोलें? यदि सत्ता हमारे हाथ में होती और हम कुछ करते, तो वह विचार करने की एक अलग बात होती। लेकिन इस मामले में, हमारे पास कोई शक्ति नहीं है। तो हम ऐसे विचार क्यों सोचें? हम ऐसी बातें क्यों कहें?" म.सा. के शब्द मेरे दिल में उतर गए।
दूसरी बात जो म.सा. ने समझाई वह यह थी कि "मुसलमान बुरे नहीं हैं; उनके भीतर की दुर्भावना बुरी है। हमारे देश में पारसी हैं; क्या हमारे मन में उनके बारे में कभी ऐसे हिंसक विचार आते हैं? नहीं। क्योंकि उनमें कोई दुर्भावना नहीं है। इसलिए हमें यह भावना विकसित करनी चाहिए कि मुसलमान बुरे नहीं हैं, बल्कि उनकी दुर्भावना बहुत बुरी है। उसी को नष्ट करना होगा।" यह बात भी मेरे मन में बैठ गई।
बस। तब से, चाहे कितनी भी भयानक घटनाएँ क्यों न हों, मुझे मुसलमानों, हत्यारों या गुंडों पर गुस्सा नहीं आता। इसके बजाय, मैं अपना गुस्सा उनकी दुर्भावना पर निर्देशित करता हूँ। मैं यह भावना विकसित करता हूँ कि "उसका नाश हो।" लेकिन यह समझ हासिल करने से पहले, मैंने कई, कई बार क्रूर विचार सोचे थे। हिंसा के उन विचारों के लिए, मैं अपने अंतर्मन से क्षमा माँगता हूँ। मुझे ऐसे सर्वथा व्यर्थ हिंसक विचारों या कथनों में कभी शामिल नहीं होना चाहिए था।
(42) मेरे बचपन में, और हाल ही में भी, मुझे मज़ाक करने की आदत थी, लेकिन कभी-कभी मैं क्रूर मज़ाक करता था। मैं सातवीं कक्षा में था। स्कूल में, दिन की शुरुआत प्रार्थना से होती थी, उसके बाद पाठ पढ़ाए जाते थे। प्रार्थना के दौरान, हम सभी छात्र अपनी-अपनी जगह पर खड़े होते थे। एक दिन, मुझे एक शरारत सूझी। प्रार्थना के बाद, मेरे बगल वाले छात्र के बेंच पर बैठने से ठीक पहले, मैंने अपने ज्योमेट्री बॉक्स से कम्पास निकाला और उसे सीधा वहीं रख दिया जहाँ वह बैठने वाला था। उसे कोई अंदाज़ा नहीं था। जैसे ही वह बैठने गया, कम्पास की नुकीली नोंक उसकी पीठ में चुभ गई। उसने ज़ोर से चीख मारी, और खून की धारा बहने लगी। मैं डर गया। शिक्षक ने पहले जल्दी से उस लड़के को डॉक्टर के पास भेजा, उसके माता-पिता को सूचित किया, और फिर मुझे पकड़ लिया। उन्होंने मुझे दो-तीन थप्पड़ मारे और मेरे माता-पिता को बुलाया। उन्होंने मुझे ट्रांसफर सर्टिफिकेट जारी करने की बात कही। मेरे पिता, मेरी गलती के बारे में जानकर और यह महसूस करके कि मुझे स्कूल से निकाल दिया जाएगा, बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने मुझे प्रिंसिपल के सामने ही मारा। शिक्षक ने हस्तक्षेप किया और मेरे पिता को रोका। प्रिंसिपल को मुझ पर दया आ गई, उन्होंने मुझे इस निर्देश और चेतावनी के साथ स्कूल में रख लिया, "दोबारा कोई शरारत मत करना।" लेकिन मज़ाक-मज़ाक में, मैं अपने ही दोस्त को गंभीर दर्द देने का कारण बन गया।
(43) मुझे फिल्मों का बहुत शौक था और मैंने बहुत सारे लड़ाई के दृश्य देखे थे। मुझे हीरो जैसी अदाएँ दिखाने की आदत पड़ गई थी। मैं उस समय छठी कक्षा में था। कक्षा में अवकाश के दौरान, सिर्फ दिखावा करने के लिए, मैंने एक दोस्त के चेहरे पर ज़ोर से लात मारी। मैंने जूते पहने हुए थे। उसकी नाक से खून बहने लगा, और उसके मुँह और नाक से खून निकलने लगा। मैं बुरी तरह डर गया। सभी छात्र चारों ओर इकट्ठा हो गए।

अवकाश समाप्त होने वाला था। एक लड़के ने जल्दी से शिक्षक को बुलाया। मेरे पास कोई बचाव नहीं था। मुझे थप्पड़ सहने पड़े, और मेरे माता-पिता को बुलाया गया। उन्होंने मेरी गलती के लिए माफी माँगी और मुझे निष्कासित न करने की विनती की। ये मूर्खता में की गई हिंसा के कार्य हैं। टेलीविजन देखने से मेरा मन इतना दूषित हो गया था कि मैं इस तरह का व्यवहार करने लगा।

(44) मुझे अपने पिता से घृणा थी। उनमें कई बड़े दुर्गुण थे। वे मेरी माँ के प्रति वफ़ादार नहीं थे; उनके अन्य स्त्रियों से संबंध थे। जब मेरी माँ इस बारे में उनसे बात करतीं, तो वे उन्हें पशुओं की तरह पीटते थे। मेरे पिता शराब पीते थे और तम्बाकू का सेवन करते थे। उनका स्वभाव अत्यंत घृणित था! यह सच है कि उन्होंने मुझे कभी नहीं मारा; वे मुझसे प्रेम करते थे और मेरी सभी इच्छाएँ पूरी करते थे। हम लखपति या करोड़पति नहीं, बल्कि अरबपति थे। जब मैं 22 वर्ष का हुआ, तब तक मेरे मन में अपने पिता के विचित्र पापों के प्रति तीव्र घृणा उत्पन्न हो गई थी। जो बात मैं सबसे अधिक सहन नहीं कर पाता था, वह थी माँ के प्रति उनकी बेवफ़ाई और उनकी क्रूरतापूर्ण पिटाई। मैंने निश्चय किया, "मैं अपने पिता की हत्या कर दूँगा।"

एक रात, जब मेरे माता-पिता सो रहे थे, मैं एक तेज़ चाकू लेकर दबे पाँव उनके कमरे में गया। मैंने अपने मन में द्वेष पाल रखा था; मैंने अपने पिता का गला रेतने की योजना बनाई थी। मैं बिस्तर के पास पहुँच भी गया, लेकिन मेरे सोते हुए पिता का चेहरा एकदम निर्दोष लग रहा था। मैं सोच में पड़ गया। मुझे याद आया, वे मेरी माँ को कब पीटते थे? जब वह उन्हें दूसरी औरतों के बारे में टोकती थीं। अन्यथा, वे उन्हें कभी नहीं पीटते थे। उन्होंने उन्हें कभी भी धर्म-पालन करने से नहीं रोका। किसी कारण से, मेरा संकल्प ढीला पड़ गया। मैं चाकू लेकर अपने पिता के गले से मुश्किल से दो-तीन फ़ुट दूर था, लेकिन मैं वहाँ से लौट आया। मैंने सब कुछ भाग्य पर छोड़ दिया। अब मेरा विवाह हो चुका है, लेकिन जीवन में एक बार, मैंने इस तरह से अपने पिता को मारने का विचार किया था और एक छोटा-सा प्रयास भी किया था। मेरे पिता का जीवन अब बदल चुका है। उन्होंने अपने दोनों व्यसन और व्यभिचार छोड़ दिए हैं। मेरी माँ के साथ भी उनका संबंध सुधर गया है क्योंकि कलह का कारण ही नहीं रहा।

(45) यह मेरे विवाह से पहले की बात है। एक रात, मेरे सिर में दर्द था और मैं अंदर के कमरे में आराम कर रहा था। उसी समय, मेरे भाई ने बाहर के हॉल में तेज़ आवाज़ में टेलीविज़न चालू कर दिया। शोर के कारण मैं सो नहीं पा रहा था। मैंने बाहर जाकर भाई से टी.वी. बंद करने को कहा। उसने कहा, "सिर्फ़ तुम्हारी वजह से बाकी सबका टी.वी. देखना बंद नहीं होना चाहिए।" मुझे गुस्सा आ गया, मैंने सोचा, "मेरे सिर में तेज़ दर्द है, फिर भी इसे कोई परवाह नहीं।" बिना कुछ और कहे, मैं अंदर गया और दरवाज़ा बंद कर लिया। लेकिन दरवाज़ा पूरी तरह से बंद नहीं हो रहा था। मैंने थोड़ा ज़ोर लगाया, पर वह फिर भी बंद नहीं हुआ। मैंने दरवाज़े को पूरा खोला और यह सोचकर उसे ज़ोर से पटककर बंद कर दिया कि इस बल से वह बंद हो जाएगा। लेकिन मैंने यह विचार ही नहीं किया कि दरवाज़ा बंद क्यों नहीं हो रहा था। जैसे ही मैंने उसे पटका, एक ज़ोरदार 'धड़ाम' की आवाज़ के साथ, एक मोटी छिपकली के दो टुकड़े ज़मीन पर आ गिरे। दोनों टुकड़े तड़प रहे थे।

मेरे मुँह से चीख़ निकल गई। अब मुझे समझ आया कि दरवाज़ा बंद क्यों नहीं हो रहा था। वह छिपकली दरवाज़े की चौखट के ऊपरी किनारे पर थी। जब मैं उसे बंद करने की कोशिश कर रहा था, तो उसकी मोटाई

के कारण वह बंद नहीं हो पा रहा था। और जब मैंने उसे ज़ोर से पटका, तो वह दो टुकड़ों में कट गई। मेरा पूरा शरीर सिहर उठा। उसे छूने की मेरी हिम्मत नहीं हुई। मेरी नींद उड़ गई; मैं उस पूरी रात सो नहीं सका। वह बहुत देर तक तड़पती रही और फिर मर गई। अगली सुबह, मैंने किसी और से उसे बाहर फिंकवाया। अभी जब मैं यह लिख रहा हूँ, तब भी मेरा मन काँप जाता है। वह दृश्य मेरे सामने आ जाता है, और मुझे अत्यंत पश्चात्ताप होता है। तब से, मैंने खिड़की-दरवाज़े बंद करने से पहले हमेशा देखने की आदत बना ली है, और मैं उन्हें कभी भी ज़ोर से बंद नहीं करता।

(46) अनाज पीसने के लिए, हम घर के लिए एक बिजली की चक्की लाए थे। ज़रूरत पड़ने पर मैं उसमें अनाज पीस लेता था। एक बार, चक्की को ठीक से जाँचे बिना, मैंने उसमें अनाज डाला और उसे चालू कर दिया। बाद में, मैंने देखा कि अनाज तो पिस गया था, लेकिन वह लाल हो गया था। उसमें माँस मिल गया था। पता नहीं कैसे, चक्की के अंदर दो चूहे छिपे हुए थे। चूँकि मैंने जाँच नहीं की थी, वे बेचारे जीव अनाज के साथ पिस गए। मुझे तुरंत 500 मुनियों की वह घटना याद आ गई, जिन्हें तेल की घानी में पील दिया गया था। मुझे लगा कि प्रमाद के इस पाप के कारण, मैंने भी वैसा ही कर्म बाँध लिया होगा, जिससे मेरी मृत्यु भी चक्की में, पानी में, या किसी और मशीन में पिसकर होगी। मैं अपनी इस लापरवाही से हुई हिंसा के पाप के लिए सच्चे हृदय से क्षमा माँगता हूँ।

(47) मैं घर पर दीवाली की सफ़ाई कर रहा था। जब मैं माळिया साफ़ करने गया, तो मुझे पता नहीं था कि एक कबूतरी ने वहाँ घोंसला बनाया था और उसमें दो अंडे दिए थे। मैंने सावधानी नहीं बरती। मैंने जल्दबाज़ी में सफ़ाई कर दी, और घोंसले के साथ वे दोनों अंडे ज़मीन पर गिरकर टूट गए। इसके बाद, मैंने माँ कबूतरी को आते देखा। अपने अंडे गायब देखकर वह अत्यंत व्याकुल हो गई। मुझे साफ़ दिख रहा था कि वह उन्हें इधर-उधर ढूँढ़ रही थी।

एक दूसरे अवसर पर, इसी तरह, अंडे की जगह पालीताणा में सफ़ाई करते समय दीवार पर लगी एक तस्वीर के पीछे से कबूतर का एक नवजात बच्चा गिर गया। वह बच्चा उड़ नहीं सकता था, इसीलिए ज़मीन पर गिर गया। गिरने से उसके शरीर पर गहरी चोट आई; ख़ून बह रहा था और वह तड़प रहा था। मैंने उसके मुँह पर थोड़ा पानी छिड़का, लेकिन वह मर गया। लेकिन जब मैं उस पर पानी छिड़क रहा था, तभी माँ कबूतरी आ गई थी। अपने बच्चे को इस तरह ज़मीन पर पड़ा देखकर वह स्पष्ट रूप से बहुत पीड़ा में थी। मुझे अपने बेटे की याद आ गई। अगर वह स्कूल से आधा घंटा भी देर से आता है, तो मैं कितना तनाव में आ जाता हूँ। अगर वह बीमार पड़ जाता है, तो मैं कितना तनाव में आ जाता हूँ। कबूतरी, आख़िरकार, वह भी तो एक माँ है? जब उसके अंडे टूटे होंगे या जब उसका बच्चा गिरकर घायल हुआ और मर गया, तो उसे भी तो भयानक पीड़ा हुई होगी।

मैंने एक नर और मादा कबूतर को घोंसला बनाते देखा है। मादा के गर्भवती होने के बाद, वे दोनों एक उपयुक्त जगह खोजते हैं और निर्माण शुरू करते हैं। वे ऐसी जगह ढूँढ़ते हैं जहाँ कोई बिल्ली या कुत्ता कहीं से भी झपट न सके। और वे एक-एक तिनका लाकर बड़ी मेहनत से घोंसला बनाते हैं। मादा कबूतरी उसमें अंडे देती है। फिर वह उन्हें ठीक से सेती है। यदि कोई इंसान पास से गुज़रता है, तो वह अपने अंडों को छिपाने और

बचाने की कोशिश में सिकुड़ जाती है। वह उड़कर नहीं जाती क्योंकि उसका बच्चा–उसका अंडा–वहाँ है। वह ऐसी स्थिति में उसे अकेला नहीं छोड़ती। यह सब मैंने कई बार अनुभव किया है। और बच्चे के जन्म के बाद, वह अपनी चोंच में उसके लिए पानी लाती है और पिलाती है, दाने लाती है और खिलाती है। मैंने कबूतरों में ऐसा वात्सल्य देखा है। जब उस कबूतरी का अंडा या बच्चा नष्ट हो जाता है, तो उसका दुःख कैसा होगा? मैं केवल कल्पना कर सकता हूँ। वह बेचारी मुझसे लड़ने तो नहीं आएगी। लेकिन उसे मेरे प्रति क्रोध तो अवश्य ही आया होगा। अगर वह बेचारी बोल सकती, तो वह निश्चित रूप से मुझसे झगड़ा करती और कहती, "तुमने अपनी लापरवाही से मेरे बच्चे को मार डाला।" बहुत-बहुत भावपूर्वक, मैं अपनी लापरवाही से हुई इस हिंसा के पाप के लिए क्षमा माँगता हूँ।

(48) मैंने शौक़ के तौर पर घर में एक कुत्ता पाला था। सुरक्षा के लिए इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। लेकिन कुत्ते को खिलाने के लिए जो तैयार भोजन के पैकेट मिलते थे, उनमें माँस भी होता था। मैंने कुत्ते को यह भोजन खिलाया।

उसे खुश रखने और मज़बूत बनाने के लिए, मैं घर पर माँस भी लाता था और उसे खिलाता था। मैंने यह भी देखा कि चाहे सड़क पर हो या घर में, कुत्ता अपनी जीभ के एक लपकारे से छोटे-मोटे कीड़ों को खा जाता था। उसने मेरे घर में इस तरह बहुत सारी चींटियाँ खाईं, जब तक कि मैंने उसे पीटकर यह नहीं सिखाया, 'तुम्हें चींटियाँ नहीं चाटनी हैं।' मैं उसे नहलाने में हर दिन बहुत सारा पानी बर्बाद करता था। मेरे दिमाग़ पर एक तरह का पागलपन सवार हो गया था।

सिर्फ़ कुत्ते का मासिक ख़र्च ₹15,000 ,

नहीं होती थी। हाँ! मैं अपने घरेलू सहायक को कम वेतन देता, या 'साधार्मिक' कार्यों के लिए कम दान देता... मेरे मन में, एक इंसान से ज़्यादा कीमती एक कुत्ता था। 'आदमी दगाबाज़ हो सकते हैं, पर कुत्ता कभी अपनी वफ़ादारी नहीं छोड़ता'–मैं ऐसी मूर्खतापूर्ण बातें किया करता था। मुझे यह एहसास नहीं था कि सिर्फ़ यही एक गुण उसे महान नहीं बनाता; इसके विपरीत, एक मनुष्य में गुणों का भंडार होता है। सभी लोग विश्वासघाती नहीं होते... पर मैं तो कुत्ते के शौक़ में पागल था! हालाँकि, मेरा भाग्योदय हुआ; मैंने धार्मिक प्रवचनों से सीखा कि 'सिर्फ़ मनोरंजन के लिए कुत्ता पालना उचित नहीं है।' और यह तर्क मेरे मन में बैठ गया। उसके बाद, मैंने वह कुत्ता दे दिया। अब, मैं सड़क के आवारा कुत्तों को रोटियाँ खिलाता हूँ और दूध पिलाता हूँ... लेकिन घर में कोई नहीं रखता। कुत्ते को बाँधकर रखने के लिए, उसे माँस खिलाने के लिए, और कुत्ते ने जो भी कीड़े-मकौड़े और अन्य जीव खाए... उन सभी पापों के लिए, मैं सच्चे हृदय से क्षमा माँगता हूँ। कुछ लोगों ने मुझसे कहा भी, 'यह भी एक जीव है; अगर तुम इसे घर पर रखोगे, तो तुम्हें 'जीवदया' का लाभ मिलेगा...' इत्यादि। लेकिन ऐसी बहस तो ज्ञानी ही कर सकते हैं। मैं एक अज्ञानी मनुष्य हूँ, इसलिए इस मामले में मुझे कोई विशेष समझ नहीं है। मैं बस इतना ही समझ पाया हूँ: मुझे न तो किसी कुत्ते को ग़ुलाम बनाकर रखना चाहिए, और न ही उस पर हज़ारों रुपये प्रति माह और लाखों रुपये प्रति वर्ष ख़र्च करने चाहिए। मैं अपने घर की बची हुई या अतिरिक्त रोटियाँ खिलाकर भी कुत्तों के प्रति 'जीवदया' का पालन कर सकता हूँ। लेकिन जो लाखों रुपये मैं बचाता हूँ, उनसे मैं 'साधर्मिक भक्ति', 'जीवदया', और भी बहुत कुछ बड़े पैमाने पर

कर सकता हूँ। अपने मनोरंजन के लिए कुत्ता पालने, उसे माँस खिलाने और अब तक किए गए ऐसे सभी पापों के लिए, मैं सच्चे हृदय से क्षमा माँगता हूँ।

(49) हमारे शहर में कुत्तों की आबादी बहुत बढ़ गई थी, और इसके बारे में समाचारों में संदेश आ रहे थे। कई मौकों पर, जब मैं देरासर या उपाश्रय जा रहा होता था, तो कुत्तों ने मुझे परेशान किया था, और वे यातायात में भी बाधा बनते थे। तो, मैंने अपने दोस्तों के सामने कहा, 'अगर इन कुत्तों को मार दिया जाए, तो कई लोगों को शांति मिलेगी। भले ही हम उन्हें गोलियों से मारने की क्रूरता न करें, हम उनके भोजन में ज़हर मिला सकते हैं, और वे मर जाएँगे। इससे लाखों लोगों की परेशानी ख़त्म हो जाएगी। कम से कम, अगर कुत्तों की नसबंदी कर दी जाए, तो भी बहुत मदद मिलेगी... फिर नए कुत्ते पैदा नहीं होंगे।' ये सभी विचार मेरे मन में आए थे, और मैंने उन्हें अपने दोस्तों के सामने व्यक्त भी किया था... लेकिन एक हितैषी मित्र ने मुझे समझाया, 'ऐसा नहीं सोचना चाहिए। उस तर्क से तो, मनुष्यों की आबादी भी बहुत बढ़ गई है, तो क्या हमें सभी बूढ़े और बेकार लोगों को मार देना चाहिए? यातायात तो मनुष्यों की आबादी के कारण ही होता है। गाँवों में भी कुत्ते होते हैं, हैं न? क्या वे ट्रैफ़िक जाम करते हैं? तो फिर शहर के ट्रैफ़िक के लिए कुत्तों को क्यों दोष दें? और नसबंदी की बात तो इंसानों पर भी लागू हो सकती है, है न? शायद हमें मौजूदा इंसानों को नहीं मारना चाहिए, लेकिन नए इंसानों को पैदा होने से रोकने के लिए, अगर हम सभी इंसानों की नसबंदी कर दें तो? ऐसा क्यों है कि ये चीज़ें मानव जाति के साथ नहीं की जानी चाहिए, लेकिन ये सब कुत्तों की प्रजाति के साथ की जानी चाहिए? अगर कुत्ते बेकार हैं, तो लाखों इंसान भी बेकार हैं। वे देश का अनाज खा रहे हैं; उन्हें भी क्यों न ख़त्म कर दिया जाए?' मेरे दोस्त की चुभती हुई बातों का मुझ पर असर हुआ, लेकिन जो विचार मेरे मन में आए थे और जो शब्द मैंने कहे थे, वे निश्चित रूप से मेरे पाप में गिने जाएँगे! यह पाप अज्ञानता और क्रोध के कारण हुआ... इस पाप के लिए, मैं हृदय की गहराई से क्षमा माँगता हूँ।

(50) मेरे विवाह के समय, मेरे माता-पिता और मेरी बड़ी इच्छा थी कि एक भव्य आयोजन हो, इसलिए मैंने अपनी शादी का समारोह एक पार्टी प्लॉट में रखा। ज़मीन पूरी तरह से हरी-भरी घास से ढकी हुई थी, और लगभग 1,200 लोग उपस्थित थे... उन सभी ने उस घास पर चला। मैंने अपने नाम के पहले अक्षर और अपनी पत्नी के नाम के पहले अक्षर की अंग्रेज़ी में एक बड़ी बर्फ़ की मूर्ति बनवाई थी। पाँच से सात घंटे तक, वह बड़ी अक्षर-मूर्ति पार्टी प्लॉट में पिघलती रही। उसकी सुंदरता को देखकर, सबने उसकी बहुत प्रशंसा की, और मुझे भी बहुत आनंद आया... मेरा अहम् पुष्ट हुआ। भोजन का काम पूरी तरह से कैटरर्स को सौंप दिया था, इसलिए 'जयना' की कोई संभावना नहीं थी। मैंने 'जमीनकंद' के उपयोग की भी अनुमति दे दी थी। धार्मिक लोगों ने आपत्ति की थी, लेकिन मुझे उनकी सलाह बिल्कुल पसंद नहीं आई और मैंने ज़िद करके 'जमीनकंद' के पूर्ण उपयोग पर ज़ोर दिया। मैंने उन लोगों के लिए एक अलग विभाग की व्यवस्था की, जिन्होंने 'जमीनकंद' का त्याग किया था, ताकि वे आपत्ति न कर सकें... मैंने बड़े चाव और भोग-विलास के साथ अपनी शादी का जश्न मनाया। इस सब में, 'हिंसा' के ये छोटे लगने वाले पर गंभीर कृत्य हुए। अब मुझे लगता है कि विवाह जैसे आयोजन में यह गंभीर 'हिंसा' एक बड़ा अपशकुन है। ऐसे अपशकुन से शुरू हुए विवाह के सुखी और शांतिपूर्ण होने की संभावना मुझे बहुत कम लगती है। लेकिन उस समय, मुझमें ऐसी सद्बुद्धि नहीं थी... मैं बार-

बार क्षमा माँगता हूँ...

(51) आज, मैं अपने जीवन में घटी एक भयानक घटना बता रहा हूँ। मेरे विवाह के बाद, मेरे दो बच्चे हुए। हम आर्थिक रूप से संपन्न थे, लेकिन मेरी माँ और मेरी पत्नी के बीच लगातार किसी-न-किसी बात पर खटपट होती रहती थी। ग़लती मेरी पत्नी की ज़्यादा थी, लेकिन मेरी माँ की भी ग़लती थी... फिर भी, वह मेरी उपकारकर्ता है। उनकी उम्र में, मैं ही उनका एकमात्र सहारा था। अगर मैं उनका पक्ष नहीं लेता, तो उनका क्या होता? मेरे पिता का देहांत हो चुका था, इसलिए मेरी माँ का कोई और सहारा नहीं था। इसलिए, मैं अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश करता, 'इस उम्र में, माँ का स्वभाव नहीं बदलेगा। तुम्हें थोड़ा सहन करना सीखना होगा, शांत रहना सीखना होगा...' लेकिन मेरी बातें उसके दिमाग़ में नहीं घुसती थीं; उसे लगता था कि मैं अपनी माँ का पक्ष ले रहा हूँ, कि मैं 'माँ का लड़का' हूँ। परिणामस्वरूप, उसमें कोई बदलाव नहीं आया। एक अवसर पर, उन दोनों के बीच बहस बढ़ गई। मेरी पत्नी बहुत ऊँची आवाज़ में बोलने लगी। रविवार का दिन था, और मैं घर पर था। मुझे गुस्सा आ गया। 'क्या इसे कोई समझ नहीं है, ऐसी बकवास कर रही है? पड़ोसियों में मेरी इज़्ज़त का क्या रहेगा? और उसका मेरी माँ से इस तरह बात करना कैसे स्वीकार्य हो सकता है?' मैंने उसे चुप रहने को कहा, लेकिन वह गुस्से में थी और और भी ज़ोर से चिल्लाने लगी। मेरा गुस्सा बेकाबू हो गया। मैंने उसके चेहरे पर एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा। बस! उसका पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया। उसने कहा, 'मैं अभी पुलिस स्टेशन जाकर शिकायत दर्ज कराने जा रही हूँ।' मैं बेहद तनाव में आ गया। हे भगवान! अगर पुलिस में शिकायत दर्ज हो गई, तो मुझे जेल जाना पड़ेगा, परिवार की इज़्ज़त मिट्टी में मिल जाएगी... वह जैसे कपड़े पहने थी, वैसे ही घर से बाहर निकलने लगी। मैंने उसका हाथ ज़ोर से पकड़ा और उसे अंदर धकेल दिया। वह फ़र्श पर गिर गई। मैंने उसे सिर्फ़ रोकने के लिए खींचा और धकेला था; मेरा इरादा उसे गिराने का नहीं था... लेकिन यह प्रसंग भयंकर हो गया। मैंने उसकी आँखों में अंगारे देखे। एक भी शब्द कहे बिना, वह उठी और सीधे शयनकक्ष की ओर भागी। मुझे समझ नहीं आया कि वह क्या करने जा रही थी, लेकिन मैं डर गया था। वह दरवाज़ा बंद करने ही वाली थी; मैंने अपनी ताक़त लगाकर उसे बंद होने से रोका। मैं अंदर गया और उससे शांति से बात की, 'ऐसा मत करो...' इत्यादि। वह शांत हो गई। मैंने उसे 10-15 मिनट तक समझाया। उसने कुछ नहीं कहा, फिर बोली: 'ठीक है। आज रविवार है, बच्चों को 'संस्कारवाटिका' ले जाना है। मैं कपड़े बदलकर तैयार होती हूँ...' उसे शांत देखकर, मैंने सोचा कि यह अच्छा होगा, इस बहाने उसका मन बहल जाएगा... मैं कमरे से बाहर निकल आया। लेकिन मेरा अनुमान ग़लत था। जैसे ही मैं बाहर निकला, उसने दरवाज़ा ज़ोर से बंद करके कुंडी लगा ली। मैं चौंक गया, डर गया... मैं चिल्लाया, पूरी ताक़त से दरवाज़े को धक्का दिया, लेकिन वह बंद रहा... आधे-एक घंटे बाद, जब मैंने दूसरों की मदद से दरवाज़ा तोड़ा, तो मेरे सामने एक भयानक दृश्य था... मैंने अपनी पत्नी को पंखे से लटका हुआ देखा, एक नई साड़ी का फंदा उसके गले में था। वह पहले ही मर चुकी थी। उसकी जीभ और आँखें बाहर निकली हुई थीं... हमने उसे नीचे उतारा, और बाद की रस्में पूरी हुईं... हालाँकि मैंने उसे नहीं मारा, न ही मरवाया... यह भयानक भूकंप मेरे क्रोध, मेरी लापरवाही, मेरी अकुशलता के कारण आया। मेरी पत्नी दो प्यारे छोटे बच्चों को पीछे छोड़कर परलोक चली गई... अब मैं समझता हूँ कि जहाँ मेरी माँ के प्रति मेरा कर्तव्य है जिसे मुझे पूरा करना चाहिए, वहीं मेरी पत्नी के

प्रति भी मेरा कर्तव्य था। मुझे विवेक रखना चाहिए था, मुझे अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए था, मुझे उन दोनों को संभालना आना चाहिए था। मैं असफल रहा। मेरा अपनी माँ के प्रति प्रेम सच्चा था, लेकिन उससे उत्पन्न अनादर, क्रोध और असभ्य भाषा सब ग़लत था। मेरी पत्नी ने आत्महत्या की; वह 'दुर्गति' को प्राप्त हुई होगी। बच्चे अनाथ हो गए... और मैं इस सब में निमित्त कारण बना... मैं बार-बार, बार-बार क्षमा माँगता हूँ। मैं उस जीव से भी क्षमा माँगता हूँ। मैं उससे प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे क्षमा कर दे, मेरे प्रति कोई द्वेष न रखे...

– X – X –

माय ब्लैक डायरी भाग-२

भाव आलोचना

पाप स्थानक द्वितीय : मृषावाद

(1) मैं छठी कक्षा में था और सुबह की पाठशाला थी। एक दिन, मेरा स्कूल जाने का बिल्कुल मन नहीं था; मुझे बहुत आलस आ रहा था। दूसरी ओर, मेरी माँ बार-बार मुझे जगाने की कोशिश कर रही थीं... मैंने एक झूठ का सहारा लिया। 'मेरे पैर और पेट में बहुत तेज़ दर्द हो रहा है।' इसे साबित करने के लिए, मैं बिस्तर पर पैर पटकने लगा और पेट पकड़कर सिकुड़ गया। सिर्फ़ 11 या 12 साल की छोटी उम्र में, यह 'माया', यह नाटक मुझे किसने सिखाया? मैं ख़ुद नहीं जानता। लेकिन मैं उस झूठ को बड़ी सफ़ाई से बोलता रहा। शुरू में, मेरी माँ को शक हुआ कि मैं स्कूल से बचने के लिए नाटक कर रहा हूँ, लेकिन अंततः, उन्होंने मेरे अभिनय के साथ मेरे झूठ पर विश्वास कर लिया। स्कूल का समय बीत गया। मैंने अगले आधे घंटे तक नाटक जारी रखा, कहीं ऐसा न हो कि मेरी माँ को भनक लग जाए कि यह सब सिर्फ़ एक नाटक, एक झूठ था। मेरी माँ ने पेट दर्द के लिए सोंठ का काढ़ा बनाया। हालाँकि मुझे यह नापसंद था, मैंने उसे पी लिया। लगभग पंद्रह मिनट बाद, मैंने कहा, 'अब मेरे पेट और पैर का दर्द काफ़ी कम हो गया है।' मेरी माँ खुश थीं कि उनका उपाय काम कर गया... लेकिन सिर्फ़ मैं जानता था कि मैंने पहले भी झूठ बोला था और बाद में भी झूठ बोल रहा था। ये मेरे अनादि काल के 'संस्कार' ही होंगे; वरना, बिना किसी पूर्व अनुभव के मैं इस तरह झूठ बोलना कैसे जानता?

(2) हमारी 'पाठशाला' में तीन सौ से ज़्यादा बच्चे पढ़ते थे। 40 साल पहले भी, रोज़ाना कम से कम एक रुपये की 'प्रभावना' होती थी। इस ख़र्च को पूरा करने के लिए, 'पाठशाला' के प्रमुख ने एक योजना बनाई। उन्होंने ₹100, ₹50, ₹20, ₹10 ,' लो, घूमो, और दान इकट्ठा करो। तुम्हें 'प्रभावना' के रूप में एक निश्चित प्रतिशत भी दिया जाएगा।' एक दिन, मेरे सबसे अच्छे दोस्त मनीष और मैंने वे रसीदें लीं और कई जैन घरों में घूमे। उस रात, मैं 'पाठशाला' देर से पहुँचा। शिक्षक ने मुझसे पूछा कि मैं देर से क्यों आया। बिना किसी कारण के, मैंने एक कहानी गढ़ ली–एक पूरी तरह से झूठी कहानी। मैंने कहा, 'सर! हम चंदा इकट्ठा करने, रसीदें भरवाने के लिए साइकिल पर नानपुरा की ओर जा रहे थे। मैं साइकिल चला रहा था। मनीष मेरे पीछे बैठा था। रास्ते में, उसका पैर साइकिल के पहिये में फँस गया। चमड़ी छिल गई और बहुत ख़ून बह रहा था। फिर, किसी तरह, मैं उसे अस्पताल ले गया। बेचारा चल भी नहीं पा रहा था। डॉक्टर ने उसके घाव पर पट्टी की। फिर मैंने उसे घर छोड़ा। इन सब कामों में

मुझे देर हो गई...' मैंने यह झूठ इतनी गंभीरता से कहा कि शिक्षक और उनके आसपास बैठे सभी बच्चों ने मेरी कहानी पर विश्वास कर लिया। सभी के चेहरों पर चिंता दिखाई देने लगी। फिर सब अपनी पढ़ाई में लग गए, लेकिन लगभग दस मिनट बाद, मनीष 'पाठशाला' में आ गया। उसे आते और इतने ख़ुश होकर चलते देख, शिक्षक को बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने मेरी कहानी पर इस हद तक विश्वास कर लिया था कि मनीष को देखकर वे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे। मुझे ज़ोर से हँसी आ रही थी, लेकिन मैं सिर झुकाकर चुपचाप बैठा रहा। शिक्षक ने मनीष से पूछा, 'लेकिन मैंने सुना कि तुम्हारे पैर में चोट लग गई है।' बेचारा मनीष हैरान था। उसने कहा, 'नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ।' फिर पूरी कहानी साफ़ हो गई। मैंने शिक्षक से कहा, 'मैं तो सिर्फ़ मज़ाक कर रहा था।' वे क्रोधित हो गए। 'तुम किसके साथ मज़ाक कर रहे हो, तुम्हें कुछ अंदाज़ा है? मैं तुम्हारा दोस्त नहीं हूँ, मैं तुम्हारा 'विद्यागुरु' हूँ। और इतनी छोटी उम्र में ऐसे 'संस्कार'?...'उस क्षण, मुझे एहसास हुआ कि मैंने अच्छा काम नहीं किया था! लेकिन मुझे ज़्यादा पश्चात्ताप नहीं हुआ, मन में यह सोचकर, 'यह तो बस एक मज़ाक है, इसमें क्या बड़ी बात है?' लेकिन आज, 49 साल की उम्र में, जीवन के अनुभव के साथ, मैं समझता हूँ कि किसी भी तरह का झूठ, चाहे छोटा हो या बड़ा, मज़ाक में हो या स्वार्थ के लिए, नहीं बोलना चाहिए। यदि सच बोलना संभव न हो, तो चुप रहना चाहिए, लेकिन कभी भी झूठ का सहारा नहीं लेना चाहिए... अब अपने जीवन में, मैं केवल सच बोलने का पूरा प्रयास करता हूँ...

(3) मैंने कई अवसरों पर स्कूल में मेडिकल सर्टिफ़िकेट का दुरुपयोग किया है, और इसमें मेरे माता-पिता भी समर्थक थे। जब भी हमारे पूरे परिवार को विवाह जैसे विशेष अवसरों पर बाहर जाना होता, तो स्कूल के अधिकारी छुट्टी नहीं देते थे। लेकिन हम अपने पारिवारिक डॉक्टर से बीमारी का झूठा सर्टिफ़िकेट बनवाकर स्कूल में प्रस्तुत कर देते थे। स्कूल के अधिकारियों को संदेह तो होता होगा, लेकिन चूँकि कानूनी तौर पर सब कुछ सही होता था, उन्हें छुट्टी देनी पड़ती थी... इस तरह मैंने असत्य का सहारा लिया। आज मैं स्वयं दो बच्चों का पिता हूँ, और जब ऐसी कोई स्थिति आती है, तो मैं भी अपने बच्चों की छुट्टी के लिए झूठे मेडिकल सर्टिफ़िकेट बनवा देता हूँ। यदि मुझे धार्मिक कार्यों के लिए असत्य बोलना पड़ता, तो शायद उसे समझा जा सकता था। लेकिन घूमने-फिरने या सामाजिक समारोहों के लिए ऐसे झूठे प्रमाणपत्र बनवाना, अब यह बात मुझे सचमुच कचोटती है। वास्तव में, अब मुझे यह भी लगता है कि धार्मिक कार्यों के लिए भी झूठ का सहारा क्यों लिया जाए? सच क्यों न बोला जाए? जो होगा, देखा जाएगा। मैंने सुना है कि एक सज्जन पिछले 60 वर्षों से सभी 62 'पर्युषण' के दौरान 'पौषद' कर रहे हैं। जब वे एस.एस.सी. की पढ़ाई कर रहे थे, तो स्कूल ने उन्हें छुट्टी देने से साफ़ इनकार कर दिया। जवाब में उस लड़के ने स्पष्ट रूप से कहा, 'मैं 'पौषद' करने जा रहा हूँ। अगर आप मुझे निकालना चाहते हैं, तो निकाल सकते हैं...' आज वह व्यक्ति करोड़पति और बहुत धर्मनिष्ठ है... लेकिन मैं वैसा साहस नहीं दिखा सका। 'अगर मैं सच बोलूँगा, तो या तो मुझे अपने काम के लिए स्कूल से छुट्टी नहीं मिलेगी, और अगर मैं फिर भी गया, तो मुझे निकाल दिया जाएगा...' इसी डर के कारण बचपन में मेरे माता-पिता और मैं, और आज मेरे बच्चे और मैं, झूठ का सहारा लेते हैं, जो कि सरासर गलत है। अब से, मैं अपनी नैतिक शक्ति को बढ़ाने का प्रयास करूँगा... मैं इस पंक्ति को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करूँगा: 'ग्यान मिट्टे या गंगारे, सत् श्री रह्या पे चलता चल...'

(44) बचपन में ट्रेन यात्रा के दौरान, मेरे माता-पिता मेरी उम्र कम बताकर टिकट नहीं खरीदते थे, या आधा टिकट खरीदते थे। इस तरह वे झूठ बोलकर पैसे बचाते थे। वर्षों बाद, जब मैं पिता बना, तो मैंने भी कई मौकों पर अपने बच्चों की उम्र कम बताकर टिकट नहीं खरीदा, या आधा टिकट खरीदा... और इस तरह पैसे बचाए। मैंने पैसों के लालच में इस झूठ का सहारा लिया। न तो मेरे माता-पिता को और न ही मुझे कोई ऐसी आर्थिक तंगी है। हम भले ही मध्यमवर्गीय हों, लेकिन एक टिकट के पैसे बचाने से कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ने वाला; सच तो यह है कि इससे छोटा-सा भी फर्क नहीं पड़ेगा। तो फिर ऐसा झूठ क्यों बोलना? अब मुझे महसूस होता है कि इस झूठ को बोलकर मैंने जितने पैसे बचाए, उससे दस गुना ज़्यादा इस असत्य से बँधे 'पाप' के कारण नष्ट हो जाएँगे। तो, एक तो पाप हुआ, और पाप के 'संस्कार' बने, जो 'दुर्गति' में दुःख देंगे, और इस जीवन में आर्थिक नुकसान भी है। ये सभी बुराइयाँ मौजूद हैं। अपने पैसे के लोभ से जन्मे इस असत्य के पाप के लिए, मैं हृदय से क्षमा माँगता हूँ।

(5) 12वीं कक्षा में, मुझे एक लड़के से प्रेम हो गया–जवानी का पागलपन! मुझे उससे बार-बार बात करने की इच्छा होती थी। अपने मोबाइल पर, मैंने उसका नंबर एक लड़की के नाम से सेव कर लिया। 'यामी' मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी; मेरे माता-पिता उसे जानते थे। मैंने अपने प्रेमी का नंबर उसी के नाम से सेव कर लिया। यामी हमारे प्रेम प्रसंग के बारे में जानती थी और मेरा समर्थन करती थी। मैं उस लड़के को दिन में कई बार फ़ोन करती... मेरी माँ को शक होने लगा। वह मुझसे पूछती, 'तुम इतनी बार किसे फ़ोन करती हो?' मैं यामी का नाम ले लेती। मेरी माँ का शक और गहरा हो गया क्योंकि हम दोनों एक ही कक्षा में थे, इसलिए हम वैसे भी पूरे दिन साथ ही रहते थे। 'तो फिर रोज़ मोबाइल पर इतनी लंबी बातें करने की क्या ज़रूरत है?' मेरी माँ ने मेरा मोबाइल चेक किया, लेकिन उसमें सिर्फ़ यामी का नाम था... पर मेरी माँ होशियार निकलीं। उन्होंने वह नंबर ले लिया और फिर अपने मोबाइल से यामी के नाम से सेव किए गए नंबर पर फ़ोन किया। उस युवक ने फ़ोन उठाया। मेरी माँ ने उसकी आवाज़ सुनी, और यह स्पष्ट हो गया कि 'यह यामी का नहीं, बल्कि किसी लड़के का नंबर है।' मेरी माँ सब कुछ समझ गईं। उन्होंने मुझसे फिर पूछा, 'सच बताओ, तुम मुझसे कुछ छिपा रही हो।' मुझे नहीं पता था कि मेरी माँ ने मेरा झूठ पकड़ लिया है, इसलिए मैं अपनी बात पर अड़ी रही। तब मेरी माँ ने मुझे सच्चाई बताई, कि उन्होंने सब कुछ पकड़ लिया है... अब मेरे पास सच स्वीकार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। इतने समय तक, मैंने अपने माता-पिता से झूठ के सिवा कुछ नहीं कहा... और यह सिर्फ़ एक झूठ नहीं था। इसके साथ झूठ का ढेर था। यह कहकर कि 'मैं अपनी सहेली के घर पढ़ने जा रही हूँ,' मैं उस लड़के के साथ बाहर जाती थी... यह कहकर कि 'मेरी सहेली की पार्टी है,' मैं उस लड़के के साथ होटल जाती थी... ऐसे कितने ही झूठे बयानों से मैंने अपने माता-पिता को धोखा दिया है? उन्होंने मुझ पर विश्वास किया, और मैंने उस विश्वास को तोड़ा। मैंने अपना चरित्र पूरी तरह से बर्बाद कर लिया। मैं ईश्वर का धन्यवाद करती हूँ कि मेरी माँ ने मेरी गलती बहुत जल्दी पकड़ ली... मैं बच गई।

(6) कॉलेज में, बुरे दोस्तों की संगत के कारण, मुझे हुक्का और सिगरेट की लत लग गई। खर्चों के लिए पैसे तो चाहिए ही थे, है न? मुझे जो जेब खर्च मिलता था, वह मेरे नशे के लिए काफ़ी नहीं था। इसलिए, पैसे पाने के लिए मैंने झूठ का सहारा लिया। जब कॉलेज में कोई प्रोजेक्ट होता था, तो हमें उसके लिए पैसे देने पड़ते थे।

मैंने इसी को बहाना बनाया। जब कोई प्रोजेक्ट नहीं भी होता था, तब भी मैं नए-नए प्रोजेक्ट गढ़कर अपने माता-पिता को बताता और पैसे माँगता। बेचारे सोचते, 'हमारा बेटा कितना पढ़ता है! कितनी मेहनत करता है!' लेकिन मैं नशे में और गहरा धँसता जा रहा था। यह सिलसिला लंबे समय तक चला। मेरे पिता को शक होने लगा। ऊपर से, किसी ने मेरे पिता को मेरे बारे में सच्चाई बता दी, 'आपके बेटे का आचरण ठीक नहीं है, आप उस पर नज़र रखें...' और उन्होंने ख़ुद मेरी जाँच-पड़ताल करने का फ़ैसला किया। जिस दिन मैंने उनसे प्रोजेक्ट के बहाने पैसे लिए, उसी दिन वह अचानक मेरे कॉलेज आ पहुँचे। मैं अपने आवारा दोस्तों के साथ हुक्का पार्टी के लिए निकल गया था। उन्होंने मेरे बारे में पूछताछ की, तो प्रिंसिपल और सभी ने मेरी अनियमित उपस्थिति की शिकायत की। जब प्रोजेक्ट की बात आई, तो प्रिंसिपल और अन्य लोग हँसने लगे। 'वह आपको मूर्ख बना रहा है। प्रोजेक्ट तो होते हैं, लेकिन महीने में शायद एक। वह आपसे कहता है कि 6-7 हैं और आपसे पैसे ऐंठता है...' मेरे पिता को गहरा सदमा लगा; वह सब कुछ समझ गए। उस रात, पिताजी मेरे कमरे में आए, मेरे पास बैठे... उन्होंने मेरी माँ को भी वहाँ बिठाया... और प्यार से सिर्फ़ इतना कहा: 'बेटा! मैं आज तुम्हारे कॉलेज गया था, और मुझे सब कुछ पता चल गया है।' मैं डर गया था, लेकिन पिताजी ने ज़रा भी गुस्सा नहीं दिखाया। बल्कि, वह रोने लगे। 'बेटा! मैं तुम्हारे लिए दफ़्तर में हाड़-तोड़ मेहनत करता हूँ... बाज़ार में मंदी है, पैसे की तंगी है, लेकिन तुम्हारी पढ़ाई पर असर न पड़े, तुम्हारा करियर बर्बाद न हो, इसके लिए मैं दोस्तों से उधार लेकर भी तुम्हें पैसे देता हूँ। मुझे उस पैसे पर ब्याज तो नहीं देना पड़ता... लेकिन मूलधन तो चुकाना ही पड़ता है। तुम्हारी माँ और मुझे तुमसे कितनी उम्मीदें हैं। तुम भविष्य में हमारी मदद न भी करो तो कोई बात नहीं, पर कम से कम अपना भविष्य तो बना लो...' उनके आँसुओं ने मुझे असली होश में ला दिया। मैं अपने पिता के पैरों में गिर पड़ा और माफ़ी माँगी। मैंने उन्हें विश्वास दिलाया, 'मैं यह सब अभी से छोड़ रहा हूँ।' पिताजी बहुत खुश हुए। और सच में, मैंने सब कुछ छोड़ दिया। शुरुआत में वे बुरे दोस्त मेरे पीछे पड़े, और जैसे उनसे दोस्ती अच्छी नहीं थी, वैसे ही दुश्मनी भी अच्छी नहीं थी। इसलिए, बिना किसी बहस में पड़े, मैंने बहाने बनाकर उनके चंगुल से ख़ुद को छुड़ा लिया। मैंने अच्छी तरह से पढ़ाई की... और अब एक सी.ए. के तौर पर प्रैक्टिस कर रहा हूँ। लेकिन अपने असत्य के पाप के लिए, मैंने अपने माता-पिता को बहुत दुःख पहुँचाया। उसके लिए, मैं हृदय से क्षमा माँगता हूँ। और मैं अपने जीवन में असत्य न बोलने का पूरा प्रयास कर रहा हूँ...

(7) मेरे बेटे की शादी नहीं हो रही थी क्योंकि हम मध्यमवर्गीय थे और एक तीसरे दर्जे के इलाके में रहते थे... उसकी शादी कराने के लिए, मैंने क़र्ज़ लिया, कर्ज़दार बना, एक अच्छे इलाके में नया फ़्लैट ख़रीदा, एक कार ख़रीदी, और एक आलीशान जीवन बनाया... लेकिन सब कुछ उधार पर था। अब हमारी समृद्धि देखकर, मेरे बेटे के लिए शादी के प्रस्ताव आने लगे। मैंने उसकी शादी एक अच्छे परिवार की लड़की से करा दी। लेकिन मेरे भोले 'वेवई' (बेटे के ससुर) मुझे एक अमीर आदमी मानते थे, और मैंने उनके सामने ऐसा ही प्रस्तुत किया कि 'यह सारी संपत्ति मेरी अपनी है। कोई क़र्ज़ नहीं है।' सरासर झूठ! कुछ समय बाद, आर्थिक तंगी दिखने लगी। व्यापार चल रहा था, लेकिन क़र्ज़ की किश्तें चुकाना और घर के ख़र्च चलाना... यह असंभव हो गया... घर में कमी महसूस होने लगी। ख़र्चों में कटौती करना ज़रूरी हो गया। अमीरों की तरह सामान्य जीवन जीना संभव नहीं था। पहले तो मेरी बहू को इस बात का पता नहीं था, इसलिए वह अमीरों वाला जीवन जी रही थी... लेकिन फिर मुझे उसे मना करना पड़ा... उसे कुछ भनक लगी। आख़िरकार, संकट और गहरा गया, और कार वापस करनी पड़ी... अब हमें उसे पूरी

सच्चाई बतानी पड़ी। वह बेहद दुःखी हुई। 'आपने मुझे और मेरे पिता को धोखा दिया है। आपने झूठ बोला है… आपने हमें फँसाया है। अगर शादी के समय आपकी कही हर बात सच होती और फिर आपको नुक़सान हो जाता, तो मैं उसे स्वीकार कर लेती। मैं समझती हूँ कि उतार-चढ़ाव आते रहते हैं… लेकिन आपने झूठ का सहारा लेकर हमें धोखा दिया… मैं आपको कभी माफ़ नहीं करूँगी…' उसने अपने पिता को बता दिया। वह आग-बबूला हो गए और अपनी बेटी को वापस ले गए… कुछ ही दिनों में हमारे पास तलाक़ के कागज़ आ गए… हमने उनसे बहुत मिन्नतें कीं… लेकिन उनका गुस्सा शांत नहीं हुआ। मुक़दमा चलता रहा… आख़िरकार, हमें तलाक़ देना पड़ा… मेरे बेटे का जीवन बर्बाद हो गया… पूरे समाज को पता चल गया कि 'हमने झूठ बोला था…' अब, उसकी दोबारा शादी का तो सवाल ही नहीं था। कुछ समय बाद, घर भी चला गया, और हमें अपने पुराने घर में वापस जाना पड़ा… अब मुझे एहसास हुआ है कि दिखावा करने से कुछ हासिल नहीं हुआ। असत्य ने एक छोटा-सा फल दिया, लेकिन फिर जीवन भर का दुःख आया। मेरी बहू ने तलाक़ के तुरंत बाद दोबारा शादी कर ली। आज मेरा बेटा 33 साल का है। इस घटना के कारण, मेरी बेटी की शादी भी रुक गई है। वह 30 साल की उम्र में घर पर अविवाहित बैठी है… अब मुझे एहसास होता है कि हर किसी के साथ सच्चा होना चाहिए। वह `vevāī` मेरी दौलत देखकर आए थे… अगर मैंने सच कहा होता, तो वह नहीं आते। अगर वह नहीं आते तो भी ठीक था। कम से कम यह बदनामी तो न होती। हम किसी साधारण परिवार से बहू ढूँढ़ सकते थे; अब तो वह भी संभव नहीं है। गुरुदेव! मैं अपने दुःखों पर रोना नहीं चाहता। लेकिन मैं अपने पूरे परिवार द्वारा की गई असत्य की इस भूल पर रोना चाहता हूँ। हम निश्चित रूप से 'प्रायश्चित' करेंगे, लेकिन हमें ऐसा आशीर्वाद दें कि भविष्य में, जीवन भर, भले ही हमें दुःख सहने पड़ें, हम असत्य का सहारा लेकर किसी को धोखा नहीं देंगे… कृपया हम तीनों को 'प्रायश्चित' दें, लेकिन सबसे बड़ा 'प्रायश्चित' मुझे दें, क्योंकि मैंने ही बाक़ी दोनों को मनाया था।

(8) लोभ और व्यापार में धोखा

पैसे के लोभ में, मैंने झूठ बोलने में कोई कसर नहीं छोड़ी। मैं माल की जो असल ख़रीद क़ीमत होती थी, उससे ज़्यादा बताता था… फिर उसमें अपना मुनाफ़ा जोड़कर ग्राहक से कहता, 'मुझे इस क़ीमत पर बेचना पड़ेगा…'

उदाहरण के लिए, अगर मैंने कोई चीज़ ₹10 , , ' ₹13 ,

मुनाफ़ा तो रखना ही पड़ेगा, है न? इसलिए, मैं इसे ₹15 ,

मैंने अनगिनत झूठ बोले हैं… मेरा माल अच्छी गुणवत्ता का नहीं होता था, फिर भी बाज़ार में बेचने के लिए मैं उसकी झूठी तारीफ़ करके ग्राहकों को फँसा लेता था। मेरे साथी को मुझ पर पूरा भरोसा था क्योंकि मैं एक धार्मिक व्यक्ति था… और चूँकि सारा हिसाब-किताब मेरे हाथ में था, मैंने उसके साथ भी झूठ का व्यवहार किया। मैं उसे हमेशा कम मुनाफ़ा दिखाता था। अगर ₹100 , ₹10

जेब में डाल लेता। फिर मैं ₹90 , , ₹45

प्रकार, ₹50 ₹55 ,

ज़्यादा कमाए।

महाराज साहेब! पैसा ऐसी चीज़ है कि मैंने उसके लिए झूठ बोलने में कोई कसर नहीं छोड़ी… मैं सबसे बड़ा भाई हूँ। पिता के देहांत के बाद, जब संपत्ति का बँटवारा करने का समय आया, तो मैंने कुछ ऐसी संपत्तियों का ख़ुलासा नहीं किया जिनके बारे में सिर्फ़ मुझे पता था और मेरे दोनों छोटे भाइयों को नहीं। उन्हें बची हुई

संपत्ति दिखाकर मैंने कहा, 'पिताजी के पास इतनी ही दौलत थी, चलो इसे तीन हिस्सों में बाँट लेते हैं...' और मैंने इतनी 'चालाकी' से काम लिया कि उन्हें 35-35% दिया और ख़ुद 30% रखा, उदारता और स्नेह का नाटक करते हुए कहा, 'देखो, मैं कई सालों से व्यापार में हूँ, तो मेरे लिए 30% काफ़ी होगा। तुम दोनों को अभी लंबा सफ़र तय करना है.....'

वे दोनों ख़ुश थे; बेचारे नहीं जानते थे कि जहाँ मैंने उन्हें साढ़े तीन-साढ़े तीन करोड़ दिए और ख़ुद सिर्फ़ तीन करोड़ रखे... वहीं मैंने पहले ही 5 करोड़ की छिपी, अघोषित संपत्ति हड़प ली थी। तो, कुल मिलाकर मेरा हिस्सा 8 करोड़ का हुआ। आज भी वे मुझे बहुत सम्मान देते हैं, मेरी उदारता की प्रशंसा करते हैं, और परिवार के प्रति मेरे प्रेम की सराहना करते हैं... लेकिन अब, वर्षों बाद, मुझे पछतावा होता है कि 'मैंने उन्हें धोखा दिया है, मैंने उनके विश्वास को तोड़ा है... मेरा ज़मीर मुझे कचोटता है। मैं उनसे मिलने वाले सम्मान का हक़दार नहीं हूँ...'

आख़िरकार, मैंने दोनों भाइयों को अपने पास बुलाया, स्पष्टवादी बना, और आँखों में आँसू भरकर उन्हें सच्चाई बताई। मैंने माफ़ी माँगी और कहा, 'देखो, मैं वे 5 करोड़ लौटाकर इस पाप से मुक्त होना चाहता हूँ। और मैं उन 5 करोड़ में अपना हिस्सा नहीं लूँगा; समझ लो कि मैंने इतने सालों तक तुम्हारा पैसा रखा, और मैं उसका ब्याज भी दे रहा हूँ।' मेरी आँखों में आँसू थे; मैंने सोचा कि मेरे भाई नाराज़ होंगे या परेशान... लेकिन वे अविश्वसनीय रूप से नेक निकले। उन्होंने मुझसे कहा, 'बड़े भाई! अगर आपने हमें यह नहीं बताया होता, तो हमें कैसे पता चलता? हमें एक रुपया भी कहाँ से मिलने वाला था? और हमें अब वह पैसा नहीं चाहिए। हमें आपके आँसू मिल गए, उनमें हमें आपका प्यार मिल गया, बस वही काफ़ी है...'

लेकिन मैंने तय कर लिया है कि यह रक़म हक़ से मेरी नहीं है। भले ही भाई इसे न लें, मैं उनसे पूछकर उस रक़म को उनके नाम पर या परिवार के नाम पर धार्मिक/धर्मार्थ कार्यों में लगा दूँगा।

(9) एक बीमारी को छिपाना

मेरे पेट के ऊपरी हिस्से में विटिलिगो (सफ़ेद दाग) का एक धब्बा था। वह किसी को दिखाई नहीं देता था। लेकिन 'भविष्य में कहीं यह बढ़ न जाए?' इस डर से मैंने एक डॉक्टर को दिखाया। उसने कहा, 'दवा शुरू कर दो, लेकिन इस धब्बे के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता; यह ठीक हो सकता है... या अगर यह बढ़ गया, तो धीरे-धीरे पूरे शरीर पर सफ़ेद धब्बे हो सकते हैं...' मैं डर गई। मैंने दवा शुरू की, लेकिन धब्बा ठीक नहीं हुआ; कुछ समय बाद तो यह थोड़ा बढ़ गया सा लगा।

इसी बीच, मेरे माता-पिता मेरे लिए वर ढूँढ़ने लगे। वे भी मेरे धब्बे के बारे में जानते थे, लेकिन उन्होंने इसे छिपाए रखा। जब भी किसी युवक से मुलाक़ात होती, मुझे लगता कि 'मुझे उसे सच्ची बात बता देनी चाहिए। वरना, यह विश्वासघात माना जाएगा।' लेकिन मेरे माता-पिता ने मुझे सख़्ती से मना कर दिया था। इसके बावजूद, मेरा दिल नहीं मानता था, इसलिए शुरुआत में मैंने दो-तीन लड़कों को व्यक्तिगत मुलाक़ात में सच बता दिया। लेकिन यह सुनते ही उनके चेहरे उतर गए। मैं बहुत सुंदर थी, इसलिए तीनों युवक हाँ कहने को तैयार थे, लेकिन जैसे ही इस धब्बे की बात आई, वे भविष्य में मेरे चेहरे के बिगड़ने की कल्पना करके तुरंत पीछे हट गए...

मुझे इस तरह तीन बार अपमान सहना पड़ा। उसके बाद, मेरी हिम्मत टूट गई; सच पर से मेरा विश्वास उठ

गया। यह मेरे पूरे जीवन का सवाल था–अगर मेरी शादी नहीं हुई, तो मैं अपना जीवन कैसे बिताऊँगी? मेरा सहारा कौन होगा? मुझे दीक्षा की इच्छा नहीं थी, और अपने भाई-भाभी की दया पर जीना संभव नहीं था। इसलिए, उसके बाद जो भी मुलाक़ातें हुईं, मैंने इस बात को छिपाए रखा।

एक तरह से, मैंने झूठ "बोला" नहीं... लेकिन मुझे लगता है कि जिस स्थिति में सच बताना बेहद ज़रूरी था, वहाँ मैं चुप रही और दूसरे व्यक्ति को अँधेरे में रखा। यह उसके भी पूरे जीवन का सवाल था। मैं उस जीवन के साथ खिलवाड़ कर रही थी... यह भी बिना बोले एक बड़ा असत्य है।

और हाँ! एक युवक ने तो मुझसे पूछ भी लिया, 'तुम्हें कोई बीमारी तो नहीं है?' उस समय, मुझे इस धब्बे के बारे में पता था, फिर भी मैंने ना कह दिया: 'नहीं! कोई बीमारी नहीं है।' यह एक साफ़, सरासर झूठ था। उसके बाद, मेरी शादी हो गई। मैंने चुपके से दवा जारी रखी। लगभग चार साल तक, धब्बा ज़्यादा नहीं बढ़ा, लेकिन फिर धीरे-धीरे यह बिगड़ने लगा। अब यह मेरे चेहरे तक भी पहुँच गया है। लेकिन मेरा वैवाहिक जीवन अच्छी तरह से स्थापित है; मेरे दो बच्चे हैं, वे सुंदर हैं, और मेरे पति प्यार करने वाले हैं... वह मेरा सबसे अच्छा इलाज कराने की पूरी कोशिश करते हैं।

भले ही मेरी सुंदरता फीकी पड़ गई है, लेकिन उनका प्यार कम नहीं हुआ है। लेकिन मैंने उन्हें सच नहीं बताया है: 'यह समस्या शादी से पहले शुरू हो गई थी, लेकिन मैंने आपसे इसे छिपाया।' अभी, मेरे अंदर उन्हें बताने की हिम्मत नहीं है। लेकिन मुझे अपने इस पाप का प्रायश्चित और स्वीकारोक्ति करनी ही होगी; यह एक धोखा था, एक विश्वासघात, एक झूठ... मुझे कठोर से कठोर प्रायश्चित दें, गुरुदेव! मैंने पहले ही यह संकल्प ले लिया है कि इस शरीर की सुंदरता के लिए जिसके लिए मैंने ये सारे औषधीय प्रयास किए–मैं अब उस सुंदरता को निखारने का कोई प्रयास नहीं करना चाहती। यह रूप सादा ही रहे। अब किसी भी तरह का कोई श्रृंगार नहीं! वैसे भी, सफ़ेद धब्बों वाले इस चेहरे पर श्रृंगार अच्छा भी नहीं लगेगा। और अगर कोई अच्छा इलाज हो भी गया या प्लास्टिक सर्जरी हो भी गई, तो भी मैं जीवन भर कभी श्रृंगार नहीं करूँगी।

(10) व्यभिचार और ब्लैकमेल

महाराज साहेब! आज की तारीख में, मैं अपनी पत्नी को भयंकर धोखा दे रहा हूँ। दो साल पहले, अपने व्यापार के लिए, मैं ऑनलाइन अहमदाबाद की एक शादीशुदा महिला के संपर्क में आया। उसके बाद, जान-पहचान अवैध संबंध में बदल गई। मैं उसे गंदे फ़ोटो-संदेश-वीडियो भेजता था और वह मुझे भेजती थी... मैंने यह सब अपनी पत्नी से छिपाए रखा। मेरे दो बच्चे हैं जो विवाह योग्य हैं। फिर भी, सबको अँधेरे में रखकर, मैं अपनी पापपूर्ण गतिविधियों को जारी रखे हुए था।

अब हुआ यह कि उस महिला का मोबाइल टूट गया। उसने उसे ठीक करने के लिए दिया। दुकानदार ने मोबाइल ठीक तो कर दिया लेकिन अंदर की सारी चीज़ें देखकर ख़ुद के लिए स्टोर कर लीं... उसके बाद, उसने मुझे और उस महिला, दोनों को ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया। उसने मुझे धमकी दी, 'इतने पैसे दो, वरना मैं तुम्हारे इन सारे काले कारनामों को सार्वजनिक कर दूँगा...'

महाराज साहेब! पिछले एक महीने में मेरा 10 किलो वज़न कम हो गया है। मैं उसे पहले ही ₹15
हूँ। मेरे पास इतने पैसे भी नहीं हैं, इसलिए मैंने दोस्तों से पूरी तरह झूठी कहानियाँ बताकर पैसे लिए। मेरी

पत्नी को भी मेरे चेहरे से एहसास हो गया है कि 'मैं बेहद तनाव में हूँ।' मैं खा नहीं सकता, सो नहीं सकता, बातों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता, हँस नहीं सकता... मेरी पत्नी मुझसे बहुत पूछती है, लेकिन मैं उसे सच्चा जवाब कैसे दे सकता हूँ? अगर उसे पता चल गया, तो वह निश्चित रूप से मुझे तलाक़ दे देगी; वह कोई दया नहीं दिखाएगी। और उसके नज़रिए से, वह सही है।

लेकिन इस उम्र में, इतने सालों के बाद, समाज में अच्छा सम्मान पाने के बाद, अगर बच्चे इतने बड़े हो जाने पर मेरी पत्नी मुझे तलाक़ दे दे और मेरे पापपूर्ण कर्मों को कारण बताए, तो मेरा जीना मुश्किल हो जाएगा। इसलिए, मैंने उससे कई झूठ बोले हैं। 'व्यापार में तनाव है, घाटा हो गया है,' आदि। झूठी बातें बताकर, मैंने उसे अपनी तरफ रखा है। दूसरी ओर, वह महिला भी अपने पति का शक दूर करने के लिए मेरे निर्देशानुसार झूठ बोलती रहती है। मैं ख़ुद झूठ बोल रहा हूँ और उसे भी झूठ बुलवा रहा हूँ।

अब हम दोनों ने संकल्प लिया है कि 'हम भविष्य में कभी कुछ गलत नहीं करेंगे। हम भाई-बहन की तरह रहेंगे। बल्कि, हम एक-दूसरे से संपर्क भी नहीं रखेंगे।' फ़िलहाल, उस आदमी ने ब्लैकमेल करना बंद कर दिया है क्योंकि उसने काफ़ी पैसे ऐंठ लिए हैं, लेकिन बड़ी समस्या यह है कि वह हमें कभी भी फिर से ब्लैकमेल कर सकता है। मेरे मन में अभी भी चिंता है, हालाँकि यह पहले से कम है, महाराज साहेब! इन सभी पापों के लिए मुझे कठोर से कठोर प्रायश्चित दें।

(11) एक घनिष्ठ मित्र के साथ विश्वासघात

एक बार, मेरे एक बहुत घनिष्ठ मित्र ने मुझसे दो साल के लिए लगभग ₹5
के बारे में कुछ नहीं कहा, और मुझे पूछने में झिझक महसूस हुई। मुझे लगा कि 'मुझे यह पैसा बिना ब्याज या बहुत कम ब्याज पर देना होगा।' और मुझे अंदेशा था कि 'उसे व्यापार में घाटा हुआ है।' इसलिए मुझे यह डर भी था: 'क्या ये पाँच लाख वापस आएँगे? और अगर आए भी, तो शायद पाँच-दस साल बाद आएँगे, या पाँच के बजाय 3-4 लाख ही आएँगे...'

मेरे पास पैसे उपलब्ध थे। और दोस्ती के नाते, मुझे खुद ही उसे सहयोग करना चाहिए था। उसके माँगने से पहले ही मुझे सहयोग कर देना चाहिए था। लेकिन मैं इसके लिए तैयार नहीं था; मुझ पर पैसे का लालच हावी हो गया था। मेरे दोस्त को बुरा न लगे, इसलिए मैंने बड़ी मीठी भाषा में बात की, स्नेह दिखाया और कहा, 'मेरे पास पैसे उपलब्ध नहीं हैं, मैं भी घाटे में फँस गया हूँ... मैंने अब तक तुम्हें इसलिए नहीं बताया कि तुम्हें दुखी क्यों करूँ? लेकिन आज तुमने कर्ज माँगा, तो मुझे यह सब बताना पड़ा...' और फिर मैंने बहुत दुखी होने का नाटक किया।

दूसरे व्यक्ति को मुझसे बहुत उम्मीदें थीं, लेकिन उसने मेरे नाटक को सच मान लिया। उसकी उम्मीद तो टूट गई, पर मेरे प्रति उसका प्यार नहीं टूटा। हालाँकि, मेरा झूठ ज़्यादा दिन नहीं चला क्योंकि दो महीने बाद, गर्मियों की छुट्टियों में, मैं अपने परिवार के साथ कश्मीर गया। मैंने अपनी तस्वीरें स्टेटस पर लगाईं और उसे सब कुछ पता चल गया... वह स्तब्ध रह गया। उसे एहसास हुआ कि मैंने उससे सरासर झूठ बोला था।

गुस्से में उसने मुझे संदेश भेजे: 'धोखेबाज़! कश्मीर घूमने के लिए तुम्हारे पास 5-10 लाख हैं, लेकिन एक दोस्त की मुसीबत में मदद करने के लिए, तुम लाखों का घाटा दिखाते हो।' मैं रंगे हाथों पकड़ा गया। मैंने उसे संदेश

भेजा: 'यह यात्रा मेरे पैसों से नहीं, बल्कि मेरे ससुराल वालों का उपहार है। मेरे पास कोई पैसा नहीं है।' लेकिन मेरा यह जवाब भी सरासर झूठ था; वह यह बात अच्छी तरह समझ गया था... उसने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन हमारी दोस्ती हमेशा के लिए खत्म हो गई...

मुझे तब अपने पाप का ज़्यादा पश्चाताप नहीं था; बस यह बात परेशान करती थी कि 'मैं पकड़ा गया'। लेकिन समय बदला; दो साल बाद, सौभाग्य से, वह दोस्त बहुत अमीर हो गया, और मेरे पापों के कारण, मैं सच में आर्थिक संकट में आ गया। जो झूठ मैंने बोला था, वह सच हो गया। मुझे पैसों की सख्त ज़रूरत थी। मैंने दूसरों से पैसे माँगे, लेकिन सबने मेरी ही तरह कोई न कोई बहाना बना दिया।

और किसी तरह, यह खबर मेरे पुराने जिगरी दोस्त तक पहुँच गई... उसकी सज्जनता और उदारता इतनी महान थी कि उसने अपने आदमी के ज़रिए मेरे पास एक बड़ी रकम भेजी। साथ में, उसने एक संदेश भेजा: 'दोस्त! मैं खुद तुम्हारे पास इसलिए नहीं आ रहा हूँ ताकि तुम्हें शर्मिंदगी महसूस न हो। लेकिन कृपया यह रकम ले लो। इस पर तुम्हें कोई ब्याज नहीं देना है, और जब भी तुम्हारी सुविधा हो, इसे लौटा देना, चाहे कितने भी साल लग जाएँ, और अगर तुम लौटा भी न सको, तो भी कोई बात नहीं। मैं बस चाहता हूँ कि हम फिर से घनिष्ठ मित्र बन जाएँ...'

मैं चकित रह गया। उस क्षण, मुझे अपने पाप पर गहरा पश्चाताप हुआ। मैं उसके घर गया, उसे गले लगाया और बहुत रोया। मैंने उसे सब कुछ बताया कि मैंने पैसे के लालच में क्या-क्या झूठ बोला था... और आज, मैं सच्ची भावनाओं के साथ आपके सामने यह स्वीकारोक्ति कर रहा हूँ। मिच्छामी दुक्कडं।

(१२) भावनात्मक शोषण और विश्वासघात

मेरी शादी होने वाली थी। लड़कियों से मुलाकातें चल रही थीं। उनमें से, मुझे एक लड़की सुंदरता, स्वभाव आदि के मामले में पसंद आई। मैंने उसे हाँ कह दिया, और उसने भी मुझे पसंद किया। हालाँकि, उसने स्पष्ट रूप से मुझे सच बताया: 'कॉलेज जीवन में, मैं दो-तीन लड़कों के साथ प्रेम में थी। शारीरिक संबंध भी थे। मैं आपको धोखा नहीं दूँगी। मैं सच बता रही हूँ... कॉलेज के बाद, खुद इन गलतियों का एहसास होने पर, मैंने वह गंदी दुनिया छोड़ दी। मैंने अपने मन में यह संकल्प लिया है कि 'जो भी मेरा पति बनेगा, मैं जीवन भर उसके प्रति वफादार रहूँगी...'

उसकी सादगी और स्पष्टवादिता देखकर, मैं पूरी तरह से मोहित हो गया। मैंने सब कुछ स्वीकार कर लिया और हमारी शादी हो गई। शुरुआत में, तीन-चार साल तक सब ठीक चला; भगवान ने मुझे जुड़वाँ बच्चों का आशीर्वाद भी दिया। लेकिन मेरे स्वभाव के कुछ दोष धीरे-धीरे प्रकट होने लगे। एक तो यह कि मुझे जल्दी गुस्सा आ जाता था, और दूसरा तीव्र ईर्ष्या...! तो, अगर मुझे अपनी पत्नी की कोई भी गतिविधि पसंद नहीं आती, तो मैं गुस्सा हो जाता... मैं कुछ भी कह देता.. और एक बार, अत्यधिक क्रोध में, मैंने उससे कहा: 'चरित्रहीन! तूने कॉलेज में कई लड़कों के साथ व्यभिचार किया है, मैं जानता हूँ। मैंने तुझ जैसी को अपनाकर तुझ पर एहसान किया है...'

ये शब्द उसके लिए आग की तरह थे... उस समय उसके चेहरे पर अत्यधिक पीड़ा थी... पहली बार मैंने उसके रहस्य को अपनी ज़ुबान से कहा था। वह फूट-फूट कर रोने लगी और दोनों बच्चों के साथ कमरे में भाग गई।

उसने अंदर से कमरा बंद कर लिया... तब मुझे एहसास हुआ कि 'मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।' इस डर से कि कहीं वह आत्महत्या न कर ले, मैंने दरवाज़ा खटखटाया और बाहर खड़े होकर माफी माँगी। मैंने फिर ऐसी गलती न करने का वादा किया। डर के मारे, मेरा गुस्सा हवा में गायब हो गया था। आखिरकार, उसने दरवाज़ा खोला। वह बहुत रोई...

इन सभी वर्षों में, छोटी-मोटी घटनाएँ होती रहती थीं, लेकिन जिस तरह से मैंने आज रहस्य के बारे में बात की, और जिस तरह मेरी पत्नी रोई, ऐसा पहली बार हुआ था। चूँकि बच्चे छोटे थे, वे मेरी बातें नहीं समझ सके, लेकिन अपनी माँ को पहली बार इस तरह रोते देखकर वे डर गए। वे भी रोने लगे...

मेरी पत्नी ने मुझसे कहा, 'मैं हाथ जोड़कर आपसे विनती करती हूँ कि उस बात का दोबारा कभी ज़िक्र न करें। मैंने आप पर विश्वास करके यह बात बताई थी; आपने उस बात को स्वीकार किया, उदारता दिखाई, और तभी हमारी शादी हुई। आप जानते हैं कि हमारी सगाई के बाद से, मैं आपके प्रति पूरी तरह से वफादार रही हूँ... आपके आज के शब्दों ने मेरे दिल में खंजर की तरह चुभन दी है। कृपया! मुझे दोबारा ऐसा खंजर न मारें। मैं जानती हूँ कि आपका स्वभाव गुस्सैल है। चार साल से, मैंने उस गुस्से को स्वीकार किया है; मेरी इच्छा है कि 'आप इस स्वभाव को सुधारें।' लेकिन यह सुधरेगा नहीं; मैं उसके लिए तैयार होकर जी रही हूँ... और वह भी खुशी से! लेकिन मैं ये शब्द बर्दाश्त नहीं कर सकती...' मैंने उसका दर्द महसूस किया, और मैंने उससे वादा किया, 'मैं तुम्हारी बात ज़रूर ध्यान में रखूँगा।'

कुछ महीनों तक, मैंने अपना वादा निभाया, लेकिन मेरा स्वभाव नहीं सुधरा। यह सिर्फ गुस्सा ही नहीं था; ईर्ष्या भी थी। और दूसरी बार मैंने जो गंभीर गलती की, वह उसी ईर्ष्या के पाप के कारण थी!

हुआ यह कि हम सात जोड़ों सहित एक पारिवारिक यात्रा पर शिमला गए। अब, यह स्वाभाविक है कि सात जोड़े एक-दूसरे से बात करेंगे! और हँसी-मज़ाक भी होगा। मेरी पत्नी भी मेरे दोस्तों से बात कर रही थी और हँस रही थी... हम सब साथ थे; यह सब आम बात थी। लेकिन सबसे बड़ी समस्या मेरी थी...

एक बार, मेरे एक दोस्त ने एक मज़ाक सुनाया और मेरी पत्नी ने उसकी ओर देखकर ज़ोर से हँस दिया। वह दृश्य मुझे बहुत चुभा। मेरे मन में गुस्से के साथ ईर्ष्या की आग भड़क उठी... मैं चुप हो गया। उसके बाद, मैं पूरे दिन न तो हँसा और न ही बोला। अगर मेरी पत्नी कुछ पूछती, तो मैं टेढ़े-मेढ़े जवाब देता, उसे नज़रअंदाज़ करता, और पूरे दिन मुँह फुलाकर घूमता रहा... मेरी पत्नी को एहसास हो गया कि 'कुछ गड़बड़ हो गई है।' उसने सबके सामने मुझसे कुछ नहीं पूछा। लेकिन रात में खाने के बाद, जब हम होटल में अपने कमरे में पहुँचे और दोनों बच्चे बाहर दूसरे बच्चों के साथ खेल रहे थे, तो उसने मुझसे पूछा, 'क्या हुआ?' दो-तीन मिनट तक वह पूछती रही और मैं उसे नज़रअंदाज़ करता रहा, फिर मेरी ईर्ष्या फूट पड़ी:

'तुम उसे बार-बार देख रही थीं, है न? और तुम बहुत हँस रही थीं, है न? तुम्हारी ये बुरी आदतें आज की नहीं हैं; मैं जानता हूँ कि तुमने शादी से पहले भी कैसे व्यभिचारी काम किए हैं, और तुम भी जानती हो। तुम कभी नहीं सुधरने वाली...'

मेरा गुस्सा और मेरी अत्यंत ताने भरी भाषा... यह उसे हड्डियों तक चुभ गई। मैंने अपना वादा तोड़ दिया। लेकिन इस बार उसने कुछ नहीं कहा। वह पूरी तरह से चुप हो गई, उदास हो गई... यही उसकी एकमात्र

प्रतिक्रिया थी... थोड़ी देर बाद, बच्चे आए; उसने उन्हें सुला दिया और खुद भी सो गई... लेकिन मुझे एहसास हुआ कि वह देर रात तक सोई नहीं थी। मुझे भी बाद में पश्चाताप हुआ।

उसके बाद, यात्रा के सभी दिनों में, उसने सबके साथ व्यवहार बनाए रखने में कामयाबी हासिल की, लेकिन मैं उसकी निराशा को स्पष्ट रूप से महसूस कर सकता था। दोस्तों ने उससे पूछा भी, 'भाभीजी! आप इतनी उदास क्यों हैं?' उसने दर्द भरी मुस्कान के साथ जवाब दिया, 'मेरा सिर बहुत दर्द कर रहा है...' और उसने मुझसे बात करना बिल्कुल बंद कर दिया। वह केवल उतना ही बोलती थी जितना काम के लिए ज़रूरी था... हमारे घर पहुँचने के बाद भी, स्थिति वैसी ही बनी रही... उसका सदमा कम नहीं हुआ।

मुझे लगा कि 'मुझे माफी माँगनी चाहिए।' लेकिन अहंकार ने मेरी ज़ुबान रोक दी। कई दिन बीत जाने के बाद, वह थोड़ी सामान्य हुई। लेकिन वह पहले जैसी खुशी कभी हासिल नहीं कर सकी। एक दिन, चलते-फिरते, मैंने माफी माँगी: 'सॉरी! मैंने उस दिन तुम्हें बहुत बुरे शब्द कहे...' उसने कोई जवाब नहीं दिया, न ही वह गुस्सा हुई... म.सा.! मैं उसके दिए हुए सदमे को कभी कम नहीं कर सका। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, मैंने उस गलती को बार-बार दोहराया, और उसे बढ़ाया। पहले, मैंने केवल उसके सामने बोला था, लेकिन उसके बाद, किसी ऐसे ही अवसर पर, मैंने सभी जोड़ों की उपस्थिति में एक ताने में कहा, 'उसे मुझसे ज़्यादा कई दूसरे पसंद हैं। उसकी नज़रों में, मैं अब एक बूढ़ा आदमी हो गया हूँ; उसे सुंदर नौजवान चाहिए। औरतें अपने मन में पुरुषों को उतनी ही तेज़ी से बदलती हैं जितनी तेज़ी से वे कपड़े बदलती हैं।'

मैंने ये शब्द मज़ाक के तौर पर कहे थे, लेकिन उनमें वह कड़वाहट मिली हुई थी। दोस्तों और उनकी पत्नियों ने शायद मेरी कड़वाहट को नहीं पकड़ा, और वे ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुए मेरी पत्नी को देखने लगे। उसके पास एक हल्की मुस्कान बनाए रखने और चुप रहने का विकल्प चुनने के अलावा कोई चारा नहीं था... लेकिन हमारे रिश्ते बिगड़ते चले गए।

हाँ! उसकी सज्जनता इतनी महान थी कि उसने मुझ पर चिल्लाया नहीं, लड़ी नहीं, या जो मन में आया वह नहीं कहा... उसने ऐसा कुछ नहीं किया। लेकिन मुझसे बातचीत बंद हो गई, मुझसे शारीरिक संबंध भी बंद हो गए... कभी-कभी अगर मैं ज़बरदस्ती करता, तो उसमें बिल्कुल भी उत्साह नहीं होता था। इस तरह, मेरे दोनों बच्चे 15-17 साल के हो गए होंगे, और एक बार मैंने अपने जीवन की एक गंभीर गलती की...

एक रात, हम चारों साथ बैठे थे। अचानक, मेरी बेटी ने पूछा, 'पापा! मैं कई सालों से देख रही हूँ कि मम्मी अंदर से दुखी रहती हैं। वे बाहर से हँसती हैं और सबसे बात करती हैं, लेकिन मुझे लगता है कि कोई छिपा हुआ दर्द उन्हें परेशान कर रहा है। मैंने मम्मी से कई बार पूछा, लेकिन उन्होंने हँसकर टाल दिया। लेकिन मेरा अनुभव बिल्कुल गलत नहीं है। पापा! आपको मम्मी के मानसिक दर्द का कारण ज़रूर पता होगा, बताइए, क्या कारण है? मैं अब मम्मी की यह छिपी हुई उदासी नहीं देख सकती...'

मेरे बेटे ने भी वही बात कही। दोनों को अपनी माँ से अद्भुत स्नेह था... उस क्षण, मेरी पत्नी ने उनसे कहा, 'ऐसा कुछ नहीं है, यह तुम्हारा वहम है...' लेकिन दोनों बच्चों ने अपनी माँ से कहा, 'प्लीज़ मम्मी! आप अभी कुछ मत कहिए। हम अब छोटे बच्चे नहीं हैं कि आप जो भी कहेंगी, हम उसे सच मान लेंगे...'

यह मेरे लिए एक सुनहरा अवसर था। मुझे इस समय अपनी गलती स्वीकार कर लेनी चाहिए थी और कहना

चाहिए था, 'बच्चों! तुम्हारी माँ वास्तव में एक महासती की तरह पवित्र है। लेकिन गुस्से और ईर्ष्या में, मैंने उस पर झूठे आरोप लगाए, गंदे मज़ाक किए... और कोई भी पतिव्रता पत्नी यह बर्दाश्त नहीं कर सकती। यह तुम्हारी माँ की महानता है कि ऐसे आरोपों के बाद भी, वह मेरे साथ रही है। वह सालों से रही है और अब भी रहती है... उसके दर्द का एकमात्र कारण मैं हूँ।'

अगर मैंने यह सच्चे पश्चाताप के साथ कहा होता, और अगर मैंने बच्चों को उसके कॉलेज जीवन के असली तथ्य नहीं दिखाए होते... तो मेरी पत्नी का दुःख निश्चित रूप से कम हो जाता। इतने सालों के बाद भी, हमारे रिश्ते में मिठास लौट सकती थी। लेकिन मेरा दुर्भाग्य! मेरे दोष इतने अजीब थे कि मैं यह सहन नहीं कर सका कि मेरे बच्चे अपनी पत्नी, उनकी माँ से इतना प्यार करते हैं, उसे इतना सम्मान देते हैं, और उसके दुःख पर इतने दुखी हो जाते हैं। इसमें भी, मेरे अंदर ईर्ष्या पैदा हो गई। 'वे मुझसे इतना प्यार क्यों नहीं करते?' और मैंने अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार ली...

बच्चों को अपनी तरफ करने के लिए और उनके दिमाग में यह बैठाने के लिए कि 'तुम्हारी माँ अपने पापों के कारण दुखी है, मेरी वजह से नहीं...' मैंने एक भयानक गलती की... मैंने अपनी पत्नी की उपस्थिति में दोनों बच्चों से कहा:

'मुझे पता है कि वह क्यों दुखी है... और वह भी जानती है। लेकिन उसमें सच बोलने की हिम्मत नहीं है। वह तुम्हारी नज़रों में गिरने के लिए तैयार नहीं है। बस इतना है कि उसकी गंभीर गलतियों के बावजूद, मैंने उसे स्वीकार किया और इतने सालों तक...'

'रुको! रुको! रुको...' मेरी पत्नी ज़ोर से चीखी, इतनी ज़ोर से कि हम तीनों डर गए। मैंने उसकी ऐसी प्रतिक्रिया पहली बार देखी थी। अब तक उसने सब कुछ सहा था, लेकिन आज गुस्सा-सदमा-आँसू-चीख-नफरत... सभी भावनाएँ एक साथ उसके चेहरे पर उमड़ आई थीं। उस समय उसका रौद्र रूप, उसका दर्दनाक रूप, आज भी मेरे मन को जलाता है...

वह बोली... वह सोफे से उठकर दृढ़ता से बोली... 'अब तुम एक अक्षर भी मत बोलना। इतने सालों से, तुमने बहुत बकवास की है, और मैंने चुपचाप सुनी है। लेकिन आज तुम निम्न से भी निम्न हो गए हो... तुम सबसे नीच हो गए हो... तुम्हें कोई अंदाज़ा नहीं है कि तुम मेरे बच्चों के सामने क्या कह रहे हो। लेकिन तुम वह पाप मत करो। मैं तुम्हें वह पाप करने से बचाऊँगी। मैं अपनी कहानी खुद कहूँगी...'

मैंने उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन उसने रणचंडी का रूप धारण कर लिया था। मेरे दोनों बच्चे बुरी तरह से भ्रमित थे और रोने ही वाले थे। मेरी पत्नी ने बोलना शुरू किया... 'तुम्हारी माँ एक व्यभिचारिणी थी; कॉलेज जीवन में, मेरे तीन लड़कों के साथ कई बार शारीरिक संबंध थे।'

मैं उसे बोलने से रोकने गया, लेकिन 'चुप रहो! तुम बीच में मत आओ; आज मुझे फैसला करना ही होगा।' और उसने बच्चों से फिर कहना शुरू किया... 'शादी से पहले, मुलाकात के समय, मैंने उसे अपना यह सच्चा तथ्य बताया था, क्योंकि मैं उसे धोखा नहीं देना चाहती थी। यह जानने के बाद, वह जो भी फैसला करना चाहे, करे। लेकिन उसमें, मुझे धोखा देने वाली नहीं माना जाएगा...'

यह मेरे जीवन की गंभीर गलती थी, कि मैंने उस पर विश्वास किया। तुम्हारे इस पिता ने, यह सुनने के बाद भी,

मुझे स्वीकार करके मुझ पर एहसान किया। लेकिन जैसे एक कसाई बकरी को अच्छी तरह खिलाकर एहसान करता है और फिर उसे मार डालता है... तुम्हारा यह पिता एक कसाई बन गया है। वह कसाई बेहतर है क्योंकि वह बकरी को केवल एक बार मारता है... लेकिन तुम्हारे पिता ने तुम्हारी माँ = मुझे, जीते जी कई बार मारा है।

जब बकरी का गला आधा कटा होता है, तो वह अभी मरी नहीं होती और फिर भी बहुत तड़पती है... वही मेरी हालत है। मैं 16 साल से एक आधी-कटी, तड़पती, चीखती बकरी की तरह जी रही हूँ... यह सब तुम्हारे इस कसाई पिता की महिमा है!

इसके बावजूद, मैं तुम्हें एक बात ज़रूर बताऊँगी: 'जिस समय मेरी सगाई तुम्हारे पिता से हुई थी, उस समय से लेकर आज तक, मैं मन, वचन और शरीर से तुम्हारे इस कसाई पिता के प्रति वफादार रही हूँ। अब हद हो गई है... हाँ! यह तय है कि इस जन्म में मेरे जीवन में कोई दूसरा पुरुष नहीं आएगा। लेकिन अब यह कसाई–'

मैं उसके साथ नहीं रहूँगी... मैं कितना भी दुःख सह लूँगी, मैं अपना जीवन किसी आश्रम में बिताऊँगी, और अगर वहाँ भी नीच लोगों से खतरा हुआ, तो मैं दीक्षा ले लूँगी। अंत में, मैं मर जाऊँगी... लेकिन मैं इस कसाई के साथ एक दिन भी और नहीं रहूँगी... एक दिन क्या, एक रात भी और नहीं...

अब, तुम दोनों को तय करना है कि तुम क्या करना चाहते हो। क्या तुम अपनी कॉलेज के दिनों की व्यभिचारिणी माँ के साथ आना चाहते हो, या तुम अपने कसाई पिता के साथ रहना चाहते हो, जिसने तुम्हारी माँ को केवल तड़पा-तड़पा कर मारने के लिए ज़िंदा रखा है? यदि तुम उसके साथ रहना चाहते हो, तो तुम स्वतंत्र हो। वह तुम्हारे लिए कसाई नहीं है; उसने तुम्हें प्यार से पाला है और आगे भी पालेगा। और यह भी बता दूँ, तुम्हारे पिता के पास करोड़ों रुपये हैं। तुम अभी जो जीवन जी रहे हो, वह केवल उसकी दौलत के कारण है। यदि तुम यहाँ रहोगे, तो तुम वह विलासिता का जीवन जी पाओगे। यदि तुम मेरे साथ आओगे, तो वह जीवन समाप्त हो जाएगा, क्योंकि मैं इस कसाई से एक भी रुपया नहीं माँगने वाली। मुझे अपने माता-पिता के घर से लाए गए गहनों और नकदी पर गुज़ारा करना होगा। तुम्हारे नाना-नानी और तुम्हारे मामा-मामी मुझे रखेंगे या नहीं, मुझे नहीं पता। और अगर वे रख भी लें, तो उनके पास तुम्हारे पिता जितने पैसे नहीं हैं। और अगर होते भी, तो वह हमारा नहीं माना जाएगा। तुम्हें एक दबा हुआ जीवन जीना होगा। तुम जो भी तय करो, सोच-समझकर करना। मैंने अपना जीवन जी लिया है। तुम्हारा जीवन अभी शुरू हो रहा है। देखो कि मेरे पीछे चलकर तुम्हारा जीवन बर्बाद न हो जाए। और हाँ! मैं एक आखिरी बात कहना भूल गई। मैं तुम्हें अब एक ऐसे आरोप के बारे में बताऊँगी जो तुम्हारे पिता ने अभी तक मुझ पर नहीं लगाया है। भविष्य में, तुम्हारा यह पिता मुझ पर आरोप लगा सकता है, यह कहते हुए, 'कौन जाने? क्या ये दोनों बच्चे मेरे हैं या किसी और आदमी के? मेरी पत्नी को नए पुरुषों का शौक है... क्या मैं उनका जैविक पिता हूँ, या कोई और है? यह तो मेडिकल रिपोर्ट कराने के बाद ही पता चलेगा।' लो। अब, तुम्हें जो भी तय करना है, कर लो..."

महाराज साहेब! उस रात, मेरी पत्नी ने आग उगलने वाले शब्द कहे, और मुझे एक बार फिर अपनी गलती का एहसास हुआ। लेकिन तब तक, खेल खत्म हो चुका था। रात के बारह बज रहे थे, लेकिन उसने अपना बैग पैक कर लिया था और जो भी पैसा उसका अपना था, वह ले लिया था। उसने अपनी माँ को फोन किया और

उनसे कहा, 'मैं तुम्हारे घर आ रही हूँ। मैं यह घर हमेशा के लिए छोड़ रही हूँ। और मुझसे एक भी शब्द मत पूछना कि मैं क्यों जा रही हूँ। अगर तुम मुझे रखने के लिए तैयार नहीं हो, तो मुझे कुछ दिनों का समय दो; मैं अपनी व्यवस्था खुद कर लूँगी और चली जाऊँगी... मेरे भाई और भाभी से भी पूछ लेना... और प्लीज़! अगर तुमने अपने दामाद से एक मिनट के लिए भी बात की, तो मैं तुम्हारे घर भी नहीं आऊँगी। बाद में, अगर तुम्हें मेरी लाश मिले, तो रोना मत...' मैंने ये सारे शब्द सुने। वह मुझे सुनाने के लिए नहीं बोल रही थी, लेकिन उसके द्वारा बोला गया हर शब्द आग से भरा था। उसने मेरी तरफ एक नज़र भी नहीं डाली।

मैं हक्का-बक्का खड़ा रह गया, समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहूँ। मेरे जुड़वाँ बच्चे, मेरा बेटा और बेटी, भी अपनी माँ के साथ जाने के लिए तैयार हो गए। उनकी माँ के शब्दों की सच्चाई ने उन्हें छू लिया था। हालाँकि मैंने अपने जीवन में कभी किसी दूसरी महिला के साथ संबंध नहीं बनाए, लेकिन केवल वही भयानक पाप नहीं है। मैंने शुद्धता का जीवन जिया, लेकिन गुस्सा, ईर्ष्या, झूठे आरोप, रहस्य उजागर करना... ये पाप, जो छोटे दिखाई देते हैं, वे भी अत्यंत भयानक हैं, और मैंने ऐसे पाप किए हैं। आज, ऐसा लगता है कि बेहतर होता कि मैंने भी अपने कॉलेज जीवन में व्यभिचार के पाप किए होते! कम से कम तब मैं ये भयानक पाप नहीं करता। मैंने एक महासती पर झूठे आरोप लगाए, मैंने एक पतिव्रता पत्नी खो दी, मैंने दो प्यारे बच्चे खो दिए। मैं करोड़ों रुपये के साथ पूरी तरह से अकेला रह गया। वे तीनों मेरी आँखों के सामने से चले गए। मैं उन्हें रोक नहीं सका, मैं उन्हें 'बाय-बाय' नहीं कह सका, और इसलिए उन्होंने भी 'बाय-बाय' नहीं कहा। दरवाज़े के ज़ोर से बंद होने की आवाज़ गूँजी, और मैं सोफे पर ढह गया। मुझमें किसी को बताने की हिम्मत नहीं थी, और यह किसी को बताने वाली बात भी नहीं थी। जब से मैं वयस्क हुआ था, पहली बार मैं फूट-फूट कर रोया। उसमें अकेले रह जाने का दर्द था, लेकिन साथ ही, अब मुझे अपनी की हुई गलतियों पर गहरा पश्चाताप महसूस हो रहा था।

अब, मुझे अपनी पत्नी के गुण याद आने लगे। मुझे शादी से पहले हमारी मुलाकात के समय उसके जीवन की गलतियों को कबूल करने के समय की उसकी स्पष्टवादिता और सादगी याद आई, ताकि वह मुझे धोखा न दे। मुझे अब उस महान आत्मा की सहनशीलता याद आई जिसने 16-17 साल तक मेरी नीचता को चुपचाप सहा। मुझे अब समझ में आया कि मैंने उसके दिल पर कितने प्रहार किए थे। मैंने उसे तुरंत 'सॉरी, मिच्छामि दुक्कडं' कहते हुए संदेश भेजे, लेकिन मैं जानता था कि घाव इतना गहरा था कि अब उसके भरने की संभावना कम थी। इस समय, मेरे लिए चुप रहना ही सबसे अच्छा था। मैंने अपने सास-ससुर को फोन किया और उनसे कहा, 'प्लीज़ उससे कुछ मत पूछिएगा। गलती पूरी तरह से मेरी है... मैंने अपनी वाणी में सारा विवेक खो दिया था। मैंने उस पर पूरी तरह से झूठे आरोप लगाए। मैं नीच हूँ, अधम हूँ, धोखेबाज़ हूँ, दुष्ट हूँ... एक कसाई हूँ... मेरी केवल इतनी ही विनती है कि आप उसका और दोनों बच्चों का अच्छी तरह से ध्यान रखें... उन्हें कोई कष्ट न होने दें। और अगर आपको कभी मेरी किसी चीज़ की ज़रूरत हो, तो प्लीज़ मुझे याद कर लीजिएगा। इससे मुझे अपने पापों का प्रायश्चित करने का मौका मिलेगा।'

यूँ ही चार-पाँच महीने बीत गए। पर्युषण के दिन पास आने लगे। इस बार पहली बार मैंने पूरे पचास दिनों के प्रवचनों को सुनने का निश्चय किया। इतने वर्षों तक मैं धन कमाने में ही इतना उलझा रहा कि कभी प्रवचन

सुने ही नहीं। कभी-कभार रविवार की किसी कार्यशाला में चला गया, या पर्युषण में एक-आध घंटे का प्रवचन सुन लिया, बस वहीं तक सीमित रहा। उसके अलावा मुझे कोई विशेष रुचि नहीं थी।
लेकिन अब मेरे भीतर धन कमाने की रुचि समाप्त-सी होने लगी थी। किसके लिए कमाऊँ? कौन-सा अपना बचा है? केवल मैं... बिल्कुल अकेला। इसी कारण मैंने पचास दिनों के प्रवचन सुने। उनमें पूज्य आचार्य अभयशेखर म.सा. के प्रवचन सुनकर मेरे भीतर भाव-आलोचना करने की तीव्र इच्छा जागी। यहाँ जो कुछ भी मैंने लिखा है, वह हृदय की गहराइयों से निकले हुए गहन पश्चात्ताप के साथ लिखा है।
आज श्रावण सुद पूर्णिमा है – रक्षाबंधन का दिन। यदि मेरा परिवार मेरे साथ होता, तो मेरी खुशी कुछ और ही होती। हर वर्ष इस दिन हम बाहर जाते थे और पूरा दिन आनंद में बिताते थे। पर आज ऐसा कुछ नहीं है। फिर भी मैंने इस दिन को अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ दिन बना लिया है। मैंने सुबह से ही अपनी आलोचना लिखना आरंभ किया है और अपने जीवन की इस गंभीर भूल को बिना कुछ छिपाए आपके सामने प्रकट किया है।
एक निर्णय मेरा अटल है – इस जीवन में मैं दोबारा विवाह नहीं करूँगा। मैंने यह आशा भी छोड़ दी है कि मेरा परिवार कभी मेरे पास लौट आएगा। यदि ऐसा हो भी जाए, तो भी मैं आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा। पर इसे प्रायश्चित्त नहीं कहा जा सकता। कृपया मुझे इससे भी अधिक कठिन प्रायश्चित्त दीजिए।
और मैं आपको वचन देता हूँ कि पर्युषण से पहले या पर्युषण में संवत्सरी के दिन मैं अपने परिवार से – विशेष रूप से अपनी पत्नी से – क्षमा माँगने जाऊँगा, और वह भी उनके चरणों में गिरकर। मैं जानता हूँ कि वह मुझे उनके चरणों को छूने नहीं देंगी। मैं यह भी जानता हूँ कि वे मेरे पश्चात्ताप पर विश्वास नहीं करेंगी। उन्हें मेरी क्षमा-याचना मात्र एक नाटक लगेगी। या फिर, मान भी लें कि वे इसे सच्चा मान लें, तो भी वे यह जानती हैं कि "मैं कभी बदलने वाला नहीं हूँ।"
लेकिन साहेबजी! मैंने संकल्प कर लिया है। वे मुझे क्षमा करें या न करें, मुझसे बात करें या न करें, मुझसे घृणा करें, मेरा अपमान करें – फिर भी मैं सिर झुकाकर धरती पर गिरकर क्षमा याचना करूँगा। वे मेरे बारे में जो चाहे सोचें – मुझे कपटी, पाखंडी, चालाक, धोखेबाज़ समझें – सब स्वीकार है। मैंने ही ऐसी भूल की है, तो वे दोषी कैसे हो सकते हैं?
महाराज साहेब! आज जन्म-वंचन का दिन है – पर्युषण का पाँचवाँ दिन। रात के एक बजे हैं। आज मेरे आनंद की कोई सीमा नहीं है। रक्षाबंधन के दिन मैंने आलोचना लिख ली थी, पर अभी तक वह आपको दे नहीं पाया था। उसके बाद मेरे जीवन में जो घटना घटी है, वह आलोचना के रूप में तो नहीं है, फिर भी उसे आपको बताए बिना रहा नहीं जा रहा।
ऐसा हुआ कि पर्युषण के पहले ही दिन पूज्य आचार्य भगवंत ने क्षमापना के कर्तव्य को इतनी सुंदर रीति से समझाया। वैसे भी मुझे तो क्षमा माँगनी ही थी... इसलिए! प्रवचन समाप्त होते ही मैं सीधे अपने ससुराल चला गया। सौभाग्य से उस दिन रविवार था, इसलिए घर के सभी लोग उपस्थित थे। इतने महीनों से हमारा कोई संपर्क नहीं था, इसलिए उन्हें ज़रा भी अनुमान नहीं था कि मैं अचानक इस तरह वहाँ पहुँच जाऊँगा।
दरवाज़ा मेरी बेटी ने खोला। मुझे देखकर वह पहले तो चौंक गई, फिर आश्चर्यचकित हुई और साथ ही खुश भी हो गई। बच्चों के साथ मेरा व्यवहार कभी बुरा नहीं रहा था। मैंने दोनों को बहुत स्नेह से पाला था। यह सच है

कि उन्हें अपनी माँ से अत्यंत प्रेम था, लेकिन मेरे प्रति कोई घृणा नहीं थी – केवल कोमल भावना थी।
“पापा, आप?” उसने कहा।
“क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?” मैंने पूछा।
“आइए, आइए...” कहते हुए वह तुरंत एक ओर हट गई।
हॉल में कोई नहीं था। सास-ससुर अपने कमरे में थे और साला भी अपने कमरे में था।
“मम्मी! बाहर आइए! देखिए कौन आया है!” मेरी बेटी ने आवाज़ लगाई।
मैं समझ गया कि वह अपनी भाभी के साथ रसोई में काम कर रही है।
“कौन है?” अंदर से आवाज़ आई और हाथ पोंछते हुए वह बाहर आई।
जैसे ही उसकी दृष्टि मुझ पर पड़ी, वह भी स्तब्ध रह गई। न खुशी, न आश्चर्य – उसके चेहरे पर केवल पीड़ा की रेखाएँ फैल गईं। भीतर दबी हुई वेदना प्रकट हो गई। वह बिल्कुल पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ी रह गई।
मेरा हृदय पश्चात्ताप से भर गया था; मेरी आँखों को बहने के लिए बस एक कारण चाहिए था। मैं दौड़कर सीधे उसके चरणों में गिर पड़ा। दोनों हाथों से उसके पैर पकड़ लिए, मेरा सिर उसके चरणों में था और मैं फूट-फूटकर रो रहा था।
मैं बहुत कुछ कहना चाहता था। अपनी गलतियों का खुला स्वीकार करना चाहता था, लेकिन गला भर आया था। मैं बोल कैसे सकता था? फिर भी मेरे आँसू बहुत कुछ कह रहे थे। मेरी सिसकियों की आवाज़ इतनी तेज़ थी कि रसोई से उसकी भाभी और कमरों से उसकी माँ, पिता, भाई और मेरा बेटा – सब दौड़ते हुए हॉल में आ गए। उस दृश्य को देखकर वे सब कुछ समझ गए होंगे। वे मेरे बारे में क्या सोच रहे थे, मुझे नहीं पता... और सच कहूँ तो मुझे परवाह भी नहीं थी।
वास्तव में मुझे यह भी पता नहीं था कि वहाँ कौन खड़ा है, कौन मुझे देख रहा है। मेरे मन में केवल गहन पश्चात्ताप का अनुभव हो रहा था। मेरी पत्नी ने अपने पैर पीछे नहीं खींचे, क्योंकि वह अभी तक भीतर के आघात से बाहर ही नहीं आई थी।
दो या पाँच मिनट इसी तरह बीत गए। फिर मेरे ससुर मेरे पास आए, मुझे उठाया और मुझे शांत करने लगे। मैं थोड़ा शांत हुआ। रोना जारी था, लेकिन अंतर यह था कि अब मैं रोते हुए भी स्पष्ट रूप से बोल सकता था।
मैं बोलने लगा –
“आप बिल्कुल सही थीं। कसाई की तरह मैंने आपको जीवित रहते हुए काट डाला। मेरे क्रोध और मेरी ईर्ष्या ने आपको जला डाला। आपकी सरलता, आपकी पवित्रता, आपकी निष्ठा – इन सबका मैंने ऐसा प्रतिदान दिया है कि यह जानने के बाद संसार में कोई भी सरलता, पवित्रता या निष्ठा को अच्छा नहीं मानेगा।
आज मैं केवल आपसे क्षमा माँगने आया हूँ। आप मुझे क्षमा न भी करें, तो भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि मैं तुच्छ हूँ, क्षमा के योग्य नहीं हूँ। मुझे दस थप्पड़ मार दीजिए, गालियाँ दीजिए, धक्का देकर इस घर से बाहर निकाल दीजिए – मैं सब स्वीकार करूँगा। आप जो भी मुझसे लिखवाना चाहें, मैं लिखने को तैयार हूँ। अपराधी मैं हूँ, नीच मैं हूँ, तो सज़ा आपको क्यों भुगतनी पड़े?
मैं यह भी कहने नहीं आया कि ‘वापस घर चलो।’ नहीं, नहीं! उस घर में मेरे जैसा राक्षस रहता है; आप जैसी

देवी वहाँ रहने योग्य नहीं हैं। और मैं आप सबके सामने कहता हूँ – यदि वह पुनर्विवाह करना चाहे, तो खुशी-खुशी कर ले। मैं अवश्य अपनी सहमति दूँगा। वह किसी अच्छे घर में, अच्छे पति के साथ सुखी रहेगी। मैं दुष्ट हूँ... उसके योग्य नहीं हूँ... उसकी खुशी मत छीनिए।"

मेरी बेटी अपनी माँ के पास गई, क्योंकि वह अभी भी मूर्ति की तरह खड़ी थी। कोई प्रतिक्रिया नहीं, कोई हलचल नहीं...

"मम्मी! मम्मी!" कहकर मेरी बेटी ने उसका कंधा पकड़कर हल्के से हिलाया।

लेकिन कोई उत्तर नहीं मिला। वैसे भी, मुझे किसी उत्तर की अपेक्षा नहीं थी।

मेरी सास ने मुझसे कहा,

"अब जब आप आए ही हैं, तो जाने से पहले भोजन कर लीजिए। भोजन बन चुका है। सब एकासना कर रहे हैं।"

मैंने विनम्रता से कहा,

"नहीं... मैं उपवास में हूँ।"

यह बात मैंने दिखावे के लिए नहीं कही थी, केवल उनके यहाँ भोजन न करने का कारण बताने के लिए कही थी।

"तो फिर कम-से-कम पानी तो पी लीजिए?" सास ने कहा।

मैंने उत्तर दिया,

"मैं चौविहार उपवास में हूँ... पर आपका स्नेह तोड़ना नहीं चाहता। कृपया मिठाई डिब्बे में दे दीजिए। कल जब पारणा करूँगा, तब सबसे पहले वही ग्रहण करूँगा..."

मेरी सास अंदर गईं और तुरंत एक छोटे प्लास्टिक के डिब्बे में मिठाई भरकर ले आईं और मुझे दे दी।

डिब्बा हाथ में लेकर मैंने फिर से हाथ जोड़कर सिर झुकाया और क्षमा माँगी। मुझे उनसे किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया की कोई अपेक्षा नहीं थी। मैंने यह क्षमापना केवल अपनी आत्मा की शुद्धि के लिए की थी।

मैं जाने के लिए मुड़ा और जैसे ही दरवाज़ा खोलने ही वाला था, तभी आश्चर्यजनक रूप से मेरी पत्नी की दृढ़ आवाज़ सुनाई दी –

"रुकिए।"

मैंने पीछे मुड़कर देखा। वह पूरी तरह संयत थी। उसकी आँखों से भी आँसू बहने लगे थे। उसने कहा,

"यदि मैं संवत्सरी से पहले आपको क्षमा न करूँ, तो मुझे शब्द के वास्तविक अर्थ में सच्ची जैन नहीं कहा जा सकता... और मेरी क्षमा तभी सच्ची मानी जाएगी, जब मैं पूरा अतीत भूलकर आपके साथ आ जाऊँ।"

मैं केवल सुनता रहा। वह आगे बोली,

"कृपया आधे घंटे बैठिए। मैं अभी बच्चों के साथ आपके साथ चलूँगी – और वह भी हमेशा के लिए! मुझे पूरा विश्वास है कि आप फिर कभी ऐसी गंभीर भूल नहीं करेंगे..."

मैं फूट-फूटकर रो पड़ा – लेकिन इस बार ये आँसू आनंद के थे!

वह मेरे पास आई; वह मेरे चरणों में गिरकर मुझसे क्षमा माँगने ही वाली थी, पर मैंने उसे ऐसा नहीं करने दिया।

परिवार के हर सदस्य की आँखों में आँसू थे।
मैंने कहा,
“सब एकासना कर रहे हैं और भोजन बन चुका है, तो पहले सभी भोजन कर लें। मैं तो वैसे भी उपवास में हूँ। आज मैं सबको परोसूँगा।”
और सभी एकासना के लिए बैठ गए।
आज मैंने सबको अत्यंत भक्ति से परोसा – और अपनी पत्नी को तो और भी अधिक भाव से! आज उसके प्रति मेरी भक्ति में, उसके गुणों से उपजा स्नेह, दैहिक या रोमांटिक प्रेम से कहीं अधिक आनंद देने वाला था। एकासना के बाद हमने आवश्यक सामान समेटा और अपने घर पहुँचे। ऐसा लग रहा था मानो हम चारों एक नए जीवन में प्रवेश कर रहे हों।
घर पर मैंने भगवान की पालना लाने के लिए चढ़ावा लिया; मेरी पत्नी ने स्वयं उस पालना को अपने सिर पर उठाया। जन्म-वांचन के दिन पूरा संघ हमारे घर पधारा। साधु भगवंत ने भी हमारे घर पावन पधारना किया।
आज रात एक बजे मैंने इस आनंददायक प्रसंग को लिखना शुरू किया था, और अब लगभग चार बजने वाले हैं। मैंने एक मिनट भी नींद नहीं ली है, फिर भी मेरा आनंद अपार है। मेरी पत्नी इन सब बातों से अवगत है, इसलिए मैंने उसे यह सब पढ़कर भी सुनाया। वह मेरे इस परिवर्तन से अत्यंत प्रसन्न है।
मैं संकल्प करता हूँ कि अब कभी क्रोध या ईर्ष्या को उत्पन्न नहीं होने दूँगा – विशेषकर अपने परिवार के प्रति तो बिल्कुल नहीं। यह जिनवाणी की अद्‌भुत शक्ति है, जिसने मेरे जीवन में ऐसा चमत्कारिक परिवर्तन ला दिया। अपने पापों को विस्तार से लिखने से मेरे मन का पूरा बोझ उतर गया है। मैं – अहंकार की प्रतिमा – इतना विनम्र बन सका, यह केवल पश्चात्ताप और इस आलोचना को लिखने का ही फल है। प्रभु ने हम जैसे महापापियों के उद्‌धार के लिए कितना सुंदर मार्ग दिखाया है!
साहेबजी! सामान्यतः आलोचना में केवल पाप ही लिखे जाते हैं। यद्यपि यह अंतिम भाग मेरा पाप नहीं है, फिर भी मुझे लगा कि इसे आपको बताना चाहिए, इसलिए मैंने इसे भी लिख दिया है। यदि इसमें मुझसे कोई भूल हुई हो, तो मिच्छामि दुक्कडं।
(13)
मेरी एक किराने की दुकान है। मुझे धन कमाने की अत्यधिक लालसा थी, इसलिए मैं जो भी सामान बेचता था, उसमें अनेक प्रकार की मिलावट करता था। मेरी मुख्य बेईमानी यह थी कि हर महँगी और उच्च गुणवत्ता वाली वस्तु में कम-से-कम 5% घटिया किस्म की वस्तु मिला देता था। गेहूँ, चावल सहित हर चीज़ में ऐसा करके मैंने अधिक पैसा कमाया।
दूसरी बेईमानी तौल में होती थी। मैं इतना चालाक था कि हर बार थोड़ा कम ही देता था। जिस पलड़े पर सामान रखा जाता था, उसके नीचे मैं एक चुंबक (मैग्नेट) चिपका देता था, जिससे चुंबक के वजन के बराबर सामान मुझे कम देना पड़ता था।
कई बार मैं इतनी नीचता तक गिर गया कि जो माल पूरी तरह खराब हो चुका होता था, जिसमें कीड़े पड़ चुके होते थे, जिसे वास्तव में फेंक देना चाहिए था – उस नुकसान को सहने के लिए मेरा मन तैयार नहीं होता था। मैं

उस सड़े हुए माल को थोड़ा साफ करता, धूप में सुखाता और अच्छे माल में मिलाकर बेच देता। भोले-भाले ग्राहक इन छोटी-छोटी बातों को समझ ही नहीं पाते थे।
यदि मैं हर घटना अलग-अलग लिखने बैठूँ, तो हज़ारों पन्ने भर जाएँ। पर जो मैंने कहा है, उससे आप समझ सकते हैं कि मैं कैसी-कैसी धांधलियाँ करता रहा हूँ। बाहर से मैं एक प्रतिष्ठित व्यापारी कहलाता था, पर भीतर से मैं प्रथम श्रेणी का दुष्ट था!
और मुझे अपने पापों का फल तुरंत मिला। मैंने अच्छे अनाज में सड़ा हुआ अनाज मिलाकर बेचा – और आज मेरे शरीर के कुछ अंग सड़ चुके हैं। मेरे कई दाँत सड़ गए, जिससे मुझे पूरे नकली दाँत लगवाने पड़े। दूसरी ओर, मेरे दोनों घुटने अंदर से इस कदर गल चुके हैं कि अब दवाइयाँ भी काम नहीं करतीं। दो ऑपरेशन हो चुके हैं, फिर भी अब बैठना और चलना अत्यंत कठिन हो गया है।
अब मुझे सच्चा बोध हुआ है –
“मैंने दूसरों को सड़ा हुआ दिया, इसलिए मेरे अपने अंग सड़ गए।”
मैंने अनाज में कीड़े मारने के लिए ज़हर डाला; अनाज फेंककर कीड़ों को जीने नहीं दिया – इसलिए आज मेरी आँतों में कीड़ों का ढेर जमा हो गया है। वे भीतर से मेरे शरीर को खा रहे हैं।
और जैसे मैंने अच्छे में बुरा मिलाकर बेचा, वैसे ही मुझे जो कुछ भी मिला है, वह भी पूरी तरह शुद्ध नहीं है; हर चीज़ में कुछ-न-कुछ दोष मिला है। मुझे पत्नी मिली – सौंदर्य, धन आदि हर दृष्टि से उत्तम – लेकिन पिछले कुछ वर्षों से उसका शरीर अत्यधिक सूज गया है, और उसका मोटापा कम ही नहीं होता। मेरा बेटा बुद्धि में ठीक है, पर उसकी आँखों में भेंगापन है। मेरी बेटी को और कोई समस्या नहीं है, पर उसकी नाक चपटी है और उसके लगभग चार दाँत बाहर निकले हुए हैं।
अच्छे में बुरा मिलाने का फल मुझे स्पष्ट रूप से दिखाई देता है – हर अच्छी चीज़ मुझे किसी न किसी दोष के साथ ही मिली है। खैर, यह भी मेरे लिए अच्छा ही हुआ, क्योंकि इसी से मुझे पश्चात्ताप हुआ और मैंने अपनी भूलें पहचानीं।
मुझे समझ में आ गया कि अधिक धन कमाने के बदले मुझे सुख खोना पड़ा। अब मैंने ये सभी काले कर्म लगभग छोड़ दिए हैं। अब धनवान बनने की इच्छा भी नहीं रही। मेरा अपना घर है, खाने-पीने की कोई कमी नहीं है... बस, इतना ही पर्याप्त है। अब पेट भर चुका है; तिजोरी भरने की कोई लालसा नहीं रही।
मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि इन पापों के लिए मुझे कठोर प्रायश्चित्त प्रदान करें।
(14) मेरी एक कपड़े की दुकान है, जिसमें रेडीमेड कपड़े भी बिकते हैं और थान (कच्चा कपड़ा) भी। साथ ही मैंने दर्ज़ी भी रखे हुए हैं। ग्राहक मेरे यहाँ से कपड़ा खरीदकर वहीं सिलाई भी करवा सकता है। इन तीनों ही क्षेत्रों में मेरी व्यावसायिक चालाकी हमेशा सक्रिय रहती थी।
“ग्राहक को धोखा दिए बिना व्यापार करें, तो हम कैसे व्यापारी कहलाएँ?” – यह मानसिकता हम सभी व्यापारियों के मन में गहराई से बैठ चुकी थी।
रेडीमेड कपड़ों में यदि कपड़ा घटिया भी होता, तो मैं भोले-भाले ग्राहक को उसे बढ़िया माल बताकर बेच देता था (समझदार ग्राहक के सामने तो यह झूठ चल ही नहीं सकता था...)। मैं कपड़ों की बहुत ज़्यादा कीमत बताता

और झूठी गारंटियाँ देता –
“धोने से सिकुड़ेगा नहीं... रंग नहीं उतरेगा... बिल्कुल नया-सा ही रहेगा...” आदि-आदि।
थान बेचते समय मैं चालाकी से लगभग एक मीटर कम काट देता था। और सिलाई में भी कह देता था, “कपड़ा थोड़ा ज़्यादा लगेगा,” जिससे ग्राहक से ज़रूरत से दो-तीन मीटर अधिक कपड़ा मंगवाया जाता। फिर वह अतिरिक्त कपड़ा दर्ज़ी रख लेता और उससे छोटे-मोटे कपड़े सिल लेता।
इस प्रकार की धोखाधड़ी मैंने हद से ज़्यादा की है।
आज मन में विचार आता है –
यदि किसी ने मेरे साथ ऐसा किया होता, तो मुझे कितना गहरा आघात लगता! फिर मैं किसी के विश्वास के साथ विश्वासघात क्यों करूँ?
गुरुदेव! मैंने “विश्वास” शब्द का एक बहुत सुंदर अर्थ सोचा है।
विशिष्ट श्वास = विश्वास।
अर्थात् एक विशेष साँस ही विश्वास है!
यदि हम दूसरों के द्वारा किए गए विश्वास की रक्षा करें, तो वे ग्राहक भी एक विशेष साँस ले सकते हैं – यानी उन्हें गहरा सुख मिलता है, दुःख नहीं। और उस पुण्य के प्रभाव से हमें भी सुख की अनुभूति होती है, दुःख की नहीं।
लेकिन मेरे जैसे लोभी लोग यदि ग्राहकों के विश्वास को तोड़ते हैं, तो वे ग्राहक “विशिष्ट श्वास” वाले नहीं रहते, बल्कि “विगत श्वास” – यानी जिनकी साँस ही निकल गई हो – जैसे हो जाते हैं। और उस पाप के कारण हम भी निश्चित रूप से मृत-तुल्य बन जाते हैं।
मैंने दृढ़ता से यह सत्य समझ लिया है –
विश्वासघात दोनों ओर आहों का कारण बनता है।
जिसने विश्वास किया, वह तुरंत आह भरता है – निराशा की आह।
और मेरे जैसे जिन्होंने विश्वास तोड़ा, वे कुछ समय बाद आह भरते हैं।
यह एक शाश्वत सत्य है।
क्षमा करें महाराज साहेब! आलोचना लिखते-लिखते मेरे विचार भी लिखे जाने लगे...
अब मैं इन सभी बेईमानियों को छोड़ने के लिए पूरी तरह तैयार हूँ। लगभग मैंने इन्हें छोड़ भी दिया है। फिर भी अब तक किए गए सभी पापों के लिए कृपया मुझे प्रायश्चित्त दीजिए।
(15)
साहेब! मेरा जन्म एक अत्यंत संस्कारी और धार्मिक परिवार में हुआ। मेरे माता-पिता ने मुझे अच्छे संस्कार देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। छुट्टियों में वे मुझे महाराज साहेब के पास भेजते थे। हमारा घर मानो एक मंदिर ही था। महाराज साहेब के अतिथि या कोई भी दीक्षार्थी हमारे गाँव में आता, तो वह अवश्य हमारे घर पधारता। मेरे पिता पूरे गाँव में अत्यंत सम्मानित व्यक्ति थे। हमारा परिवार एक धार्मिक परिवार के रूप में जाना जाता था।
बचपन से ही मुझमें अनेक नियम बैठा दिए गए थे –

चौविहार, कंदमूल त्याग, उबला पानी, प्रवचन सुनना, पाठशाला जाना।
रात 10 बजे तक सबको घर आना अनिवार्य था।
10 बजे के बाद कोई इलेक्ट्रॉनिक गैजेट या रिमोट नहीं।
यदि मुझे दोस्तों के साथ बाहर जाना हो या फ़िल्म देखनी हो, तो पहले एक सामायिक करना ज़रूरी था।
जब स्कूल के बाद मेरे पिता ने मुझे कॉलेज भेजने से मना किया, तब मैंने ज़िद करके साइड कोर्स जॉइन कर लिया। वहीं मुझे बुरी संगति मिल गई – मुस्लिम और तेलुगु मित्र। उनकी जीवनशैली बिल्कुल अलग थी। वे बस पूरे दिन घूमते रहते थे – खाना, पीना और मौज-मस्ती।
घर में कोई रोक-टोक नहीं, कोई पूछने वाला नहीं।
अमीर बाप की बिगड़ी औलाद...
यानी ठीक वैसा जीवन जैसा फ़िल्मों में दिखाया जाता है।
हर हफ्ते दो फ़िल्में...
कम-से-कम 45 किलोमीटर की लंबी ड्राइव...
गाड़ी 70 की स्पीड से नीचे नहीं...
हर दिन नए-नए होटलों में खाना...
बिल 2000 से 4000 तक।
एक दिन मैं भी उनके साथ गई।
मुझे लगा – यही तो असली ज़िंदगी जीना है!
पर घर पर क्या कहूँ? पैसे कहाँ से लाऊँ? माँ से क्या कहूँ?
मैंने घर में झूठ बोलना शुरू कर दिया।
WhatsApp / Insta / Snapchat / Facebook – हर जगह मैंने दो-दो ग्रुप बना लिए।
एक ऐसा, जिसे मेरे माता-पिता बिना किसी शंका के देख सकें...
और दूसरा, जिसमें मेरे काले कारनामे चलते रहते थे।
मैं ट्यूशन के बहाने बाहर जाती।
प्रतिक्रमण शुरू होते ही निकल जाती और अँधेरे में गायब हो जाती।
ख़त्म होने से ठीक पहले वापस आ जाती।
सबको लगता – मैं पीछे बैठी होगी।
मैं अपने धार्मिक दोस्तों के नाम लेकर बुरे लोगों के साथ घूमने जाती।
इसमें मेरे पिता को कुछ शक हुआ।
उन्होंने मेरा मोबाइल चेक किया और उसमें ट्रैकर भी डाल दिया।
साहेब! ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था, जहाँ मैंने उन्हें धोखा न दिया हो।
मैं मोबाइल गाड़ी की डिक्की में छोड़ देती...
गाड़ी कॉलेज के पास खड़ी कर देती...

और दूसरी गाड़ी से घूमने चली जाती।
मेरे पिता सोचते – उनकी बेटी कॉलेज में है।
रात में होमवर्क के बहाने कंप्यूटर पर देर रात तक चैटिंग करती।
2-3 बार कमरे की गैलरी से कूदकर रात में बाहर भी गई हूँ।
छुपकर रात में खाना, चीज़ खाना, प्याज़-आलू खाना शुरू कर दिया।
पूजा के लिए कहा जाता, तो बस तैयार होकर बाहर घूम आती।
देर हो जाती, तो कह देती – आज चैत्यवंदन किया।
उपाश्रय जाने के बहाने बाहर जाती।
साहेब! मैंने तो पूजा-स्थलों का भी उपयोग अपने छल-कपट के लिए किया!
प्रभु! मैंने अपने माता-पिता को, ऐसे पवित्र परिवार को, अपने तथाकथित सांसारिक सुखों के लिए अँधेरे में रखा।
– X – X –
माय ब्लैक डायरी - भाग 3
सांसारिक जीवन की स्वीकारोक्ति / अंतरंग भावनाएँ
पाप का तीसरा स्थान :
चोरी = अदत्तादान
(१) छोटी उम्र से ही लालच और अज्ञानता के कारण चोरी करने की वृत्ति मुझमें घर कर गई थी। एक बार मैं अपनी मौसी के घर गया। उनका घर तीन मंज़िला था; वे नीचे की मंज़िल पर खाना बना रही थीं और मैं पहली मंज़िल पर चला गया, जहाँ कोई नहीं था। मेरे दो मौसेरे भाई और दो मौसेरी बहनें कहीं बाहर गए हुए थे। मैं जानता था कि मेरा बड़ा मौसेरा भाई, राजीव, कंचे खेलने में बहुत माहिर था। मैंने यूँ ही उसकी दराज़ खोली तो देखा कि वह कंचों के ढेर से ऊपर तक भरी हुई थी। मैं तो फूला न समाया। यह देखकर कि कोई देख नहीं रहा है, मैंने अपनी कमीज़ की दोनों जेबें कंचों से भर लीं और नीचे उतरने लगा। लेकिन, चूँकि मैंने जीवन में पहली बार इस तरह चोरी की थी, मैं बहुत डरा हुआ था। जैसे ही मैं लकड़ी की सीढ़ियों से नीचे आ रहा था, मेरी मौसी ने रसोई से प्यार से आवाज़ दी, "रुको..." वे मुझे कुछ खाने के लिए देना चाहती थीं, लेकिन मुझे तुरंत लगा कि वे मुझे डाँटने वाली हैं। अगर मैं रसोई में गया तो ज़रूर पकड़ा जाऊँगा। इसलिए मैं वहाँ से तुरंत भाग खड़ा हुआ। मुझे इस तरह भागते देख मौसी को शक हुआ। वे तुरंत ऊपर गईं, खुली दराज़ देखी और कंचों की कमी को भाँप गईं। वे सब कुछ समझ गईं। मैं कोई पेशेवर चोर तो था नहीं कि थोड़ी मात्रा में चोरी करके दराज़ बंद करने की समझ रखता। मैंने अपनी चोरी का सबूत जस का तस छोड़ दिया था। मौसी हमारे घर आईं और माँ से बात की। उनके लिए और मेरी माँ के लिए कंचे कोई मुद्दा नहीं थे; मुद्दा मेरी चोरी की वृत्ति थी! माँ ने मुझे मौसी के सामने ही बुलाया और दो थप्पड़ जड़ दिए। मौसी ने माँ को रोका और मुझसे कहा, "देखो, ये सारे कंचे तुम्हारे ही हैं, बस! लेकिन फिर कभी चोरी मत करना। अगर तुम्हें कुछ चाहिए, तो बस माँग लिया करो। अगर तुम्हारी माँ न दें, तो मैं दूँगी..." उस समय मुझे अपनी गलती का कोई खास अफ़सोस नहीं हुआ। बच्चा होने के

कारण, मैं बस इस बात से खुश था कि मैं बच गया, मुझे माफ़ कर दिया गया और आखिर में कंचे भी मिल गए।

(२) कंचे चुराने की यह आदत मेरे अंदर गहराई तक बैठ गई थी। एक बार, गर्मी की छुट्टियों में, हम सब अपने गाँव में इकट्ठे हुए। हम बाईस लोग एक ही घर में साथ रहते थे। मेरे सबसे बड़े चाचा परिवार के मुखिया थे, और उनका बहुत दबदबा था! सब उनसे डरते थे। घर में कोई भी अतिरिक्त खाने की चीज़ आती तो सब में बराबर बाँटी जाती थी। उस गर्मी में, एक कमरे में बहुत सारे आम रखे हुए थे। कभी-कभी, हम सबको खाने के लिए एक-एक आम मिलता था। एक दिन, मेरी दो चचेरी बहनों ने आम चुराकर खाने की योजना बनाई। अपनी योजना के लिए उन्हें मेरी मदद की ज़रूरत थी क्योंकि जिस कमरे में एक मंच पर आम रखे थे, वहाँ घर के अंदर से किसी की नज़र में आए बिना पहुँचना नामुमकिन था। हालाँकि, उस कमरे की एक खिड़की घर के बाहर की ओर खुलती थी। वह थोड़ी ऊँची थी, मेरी बहनों की पहुँच से बाहर। खिड़की की जाली भी ऐसी थी कि उनके हाथ अंदर नहीं जा सकते थे, लेकिन चूँकि मैं छोटा था, मेरा पतला हाथ अंदर जा सकता था। उन्होंने मुझे एक आम का लालच दिया, और मैं उनकी योजना में शामिल हो गया। उन्होंने मुझे ऊपर उठाया, और मैंने अपने हाथ से एक-एक करके तीन आम निकाल लिए। बाद में, मैंने एक आम खा लिया। मेरी दोनों बहनें चालाक थीं; उन्होंने अपने आम बाहर ही खाए और मुँह अच्छी तरह धो लिया। मैंने आम तो खा लिया लेकिन मुँह नहीं धोया। जब मैं घर के अंदर गया, तो मेरे चेहरे पर लगे आम के दाग सबको दिख गए। मेरे बड़े चाचा ने मुझसे पूछताछ की, और डर के मारे मैंने सब कुछ सच-सच उगल दिया। चाचा ने हम तीनों से उठक-बैठक करवाई, और फिर बाकी सबको भी आम बाँटे। लेकिन इस लालच और अज्ञानता के कारण, चोरी का पाप मेरे भीतर बढ़ता ही गया।

(३) यह प्रवृत्ति और भी मज़बूत होती गई। हमारे घर में, फ्रिज में रसना शरबत के कॉन्सेंट्रेट की बोतलें रखी रहती थीं। मुझे शरबत बहुत पसंद था। मेरी माँ मुझे दिन में मुश्किल से एक गिलास ही पीने देती थीं, लेकिन उससे मेरा मन नहीं भरता था। तो, मैंने इसे छिपकर पीना शुरू कर दिया। फ्रिज के ऊपर काँच के गिलास रखे रहते थे। पानी पीने के बहाने, मैं फ्रिज खोलता, जल्दी से गिलास में कॉन्सेंट्रेट और पानी मिलाकर शरबत बनाता, पी जाता, और फिर गिलास को धोकर उसी में थोड़ा पानी पी लेता था। इस तरह, मैं हर दिन दो-तीन गिलास शरबत चुराकर पी जाता था।

(४) मैं घर में बनी मिठाइयाँ जैसे 'सुखड़ी', 'सिंग नी चिक्की', 'तल नी चिक्की', और 'ममरा नी चिक्की' भी अपनी माँ से छिपाकर खा लेता था। माँ मुझे देती तो थीं, लेकिन हमेशा सीमित मात्रा में। चूँकि ये मेरी पसंदीदा खाने की चीज़ें थीं, मुझे ज़्यादा खाने के लिए चोरी का सहारा लेना पड़ता था। जब भी मेरी माँ 'देरासर-उपाश्रय', सब्ज़ी खरीदने बाज़ार, या किसी के घर जातीं, तो मुझे चोरी करके खाने का मौका मिल जाता। जब बाहर से मिठाइयों के डिब्बे आते, तो माँ हम चारों भाई-बहनों में बराबर बाँट देती थीं, लेकिन जीभ के लालच के कारण, मैं छिपकर और खा लेता था। माँ को अक्सर इसका पता होता था, लेकिन सबसे छोटा होने के कारण, वे मुझसे ज़्यादा कुछ नहीं कहती थीं।

(५) चोरी की वृत्ति ने मुझे स्कूल में भी पाप करने पर मजबूर किया। मैंने परीक्षाओं के दौरान नकल करने का

एक भी मौका नहीं छोड़ा। मैं छोटे-छोटे कागज़ों पर ज़रूरी बातें लिख लेता और उन्हें अपने कंपास बॉक्स में, अपनी जेबों में, कमीज़ के कॉलर में–और यहाँ तक कि ऐसी जगहों पर भी जिन्हें बताया नहीं जा सकता–छिपाकर ले जाता और परीक्षा लिखते समय नकल करता। कभी-कभी मैं अपने आसपास बैठे लोगों के पर्चों में देखकर नकल करता, कभी दूर बैठे दोस्तों से इशारों में बात करके, और कभी आगे या पीछे बैठे छात्र की सप्लीमेंट्री उत्तर पुस्तिका लेकर। मैं कुछ बार पकड़ा भी गया और इसके लिए दो-चार थप्पड़ भी खाए, लेकिन मुझे इन सब की आदत हो गई थी। ऐसा नहीं था कि मैं पढ़ाई में कमज़ोर था, लेकिन मुझे पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मेरी दिलचस्पी सिर्फ टेलीविज़न, क्रिकेट और ऐसी ही दूसरी चीज़ों में थी! उन दिनों मोबाइल फोन नहीं थे, फिर भी मेरा सारा समय हो-हल्ले और मस्ती में ही बीतता था। मुझे बिना किसी रुचि के स्कूल और होमवर्क से निपटना पड़ता था, जिसके कारण परीक्षाओं में नकल करना ज़रूरी हो जाता था। मैंने अपनी S.S.C. की परीक्षा में भी नकल की। किस्मत से, हमारे कक्षा में जिन शिक्षकों की ड्यूटी लगी थी, वे भले लोग थे; वे उदार और दयालु थे। उन्होंने मुझे कोई तकलीफ़ नहीं दी और जब मैं नकल करता तो वे अनदेखा कर देते थे। यह केवल मेरी नकल का ही कमाल था कि मैंने S.S.C. परीक्षा में ७६% अंक प्राप्त किए, लेकिन सच्चाई की परीक्षा में मेरी आत्मा न केवल फेल हुई–बल्कि उसे माइनस में अंक मिले। मैं इन पापों के लिए हृदय की गहराई से क्षमा माँगता हूँ।

(६) म.सा.! मैंने अपने माता-पिता के साथ एक भयंकर धोखा किया है। मैंने आज तक अपने ही घर से १८ लाख रुपये चुराए हैं। आप सोच रहे होंगे कि एक लड़की इतनी बड़ी रकम कैसे चुरा सकती है, और घर में इतना नकद हो भी कैसे सकता है। लेकिन म.सा.! यह बिल्कुल सच है। बात यह है कि मैं एक युवक से बहुत प्रेम करती थी, और वह भी मुझसे प्रेम करता था। लेकिन जब शादी का सवाल आया, तो उसके परिवार ने मना कर दिया, और वह अपने माता-पिता की इच्छा के विरुद्ध जाने की स्थिति में नहीं था। नतीजतन, उसकी सगाई किसी और लड़की से हो गई। जब मुझे यह खबर मिली, तो मैं पूरी तरह टूट गई। मैं बहुत रोई। मैंने खुद को समझाने की बहुत कोशिश की, लेकिन मेरा दिल मानने को तैयार नहीं था। मैंने एक ऑनलाइन ज्योतिषी से संपर्क किया। मुझे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि इनमें से ज़्यादातर लोग सच-झूठ कुछ भी कहकर बस पैसा बनाने के लिए बैठे होते हैं। उस ज्योतिषी ने मुझसे कहा, "तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। उसकी सगाई टूट जाएगी, और तुम्हारी सगाई उससे हो जाएगी। लेकिन उसके लिए, मुझे एक लाख बार 'मंत्रजाप' करना होगा और कुछ अनुष्ठान करने होंगे। इन सब का कुल खर्च एक लाख रुपये आएगा।" म.सा.! मेरे पास इतनी बड़ी रकम कहाँ से आती? लेकिन हम बहुत अमीर हैं, और घर में हमेशा बहुत सारा नकद रहता है। मैंने चालाकी से तिजोरी से एक लाख रुपये चुराए और उस ज्योतिषी के बैंक खाते में जमा करवा दिए। लेकिन पैसा चला गया, और फिर भी, लड़के की सगाई नहीं टूटी। अंदर ही अंदर यह बात मुझे कचोट ज़रूर रही थी कि मैं अपनी ही जैसी एक और लड़की की ज़िंदगी बर्बाद करने की कोशिश कर रही थी। उस बेचारी लड़की की तो कोई गलती ही नहीं थी! उसने जान-बूझकर मेरे प्रिय को मुझसे नहीं छीना था; उसे हमारी स्थिति के बारे में कुछ भी नहीं पता था। लेकिन उस लड़के के प्रति मेरा अंध मोह इतना प्रबल था कि मैं उसे पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार थी, और उसके लिए मैंने ज्योतिषी की योजना में एक लाख रुपये–चोरी के पैसे–गँवा

दिए। जैसा कि कहा जाता है, हारी बाज़ी का जुआरी दूना खेलता है। मैंने शिकायत करने के लिए फिर से उस ज्योतिषी से संपर्क किया। तब उसने एक नया जाल बिछाया। “मैंने सोचा कि तुम पर ज़्यादा खर्च का बोझ न डालूँ, इसलिए मैंने एक लाख रुपये का छोटा अनुष्ठान चुना। मुझे उम्मीद थी कि शायद इससे तुम्हारे ग्रहों के बुरे प्रभाव कट जाएँगे। लेकिन अब मुझे एहसास हो रहा है कि वे दुष्ट ग्रह बहुत शक्तिशाली हैं। वे छोटे-मोटे अनुष्ठान से ठीक नहीं हो सकते। एक बड़ा अनुष्ठान ज़रूरी है। जाप की संख्या वही है, एक लाख, लेकिन इस्तेमाल होने वाली सामग्री बेहद महँगी है। इसलिए, खर्च पाँच लाख रुपये आएगा।” मैंने तो उसे डाँटने के लिए फोन किया था, लेकिन अपने मोह में अंधी होकर, मैं एक बार फिर उसकी बातों में आ गई। मैंने फिर से अपने घर से चोरी की, इस बार नकदी के बजाय सोना। मेरे पिता सोने के कारोबार में हैं, इसलिए मैं एक बिस्किट चुराने में कामयाब रही। मैंने किसी तरह उसे बेचकर पाँच लाख रुपये उस ज्योतिषी को दे दिए। लेकिन बाद में मुझे एहसास हुआ कि मैं ठगी जा चुकी थी। इस बीच, घर पर सोने की चोरी के कारण मेरे पिता बहुत तनाव में आ गए। किसी ने मुझ पर शक नहीं किया, लेकिन एक नौकर पर गहरा संदेह था। उससे पूछताछ की गई और उसे पुलिस को सौंपने की धमकी दी गई। बेचारा बहुत रोया, लेकिन वह क्या कर सकता था? अंत में, मेरे पिता ने उसे नौकरी से निकाल दिया। चूँकि मेरे पिता का ज़्यादातर धंधा गैर-सरकारी था, उन्होंने पाँच लाख रुपये के बिस्किट के लिए पुलिस को शामिल करना बुद्धिमानी नहीं समझी; उन्हें लगा कि यह स्पष्ट है कि वे खुद बड़ी मुसीबत में पड़ सकते हैं। मुझे इस बात का दुख ज़रूर हुआ कि मेरी वजह से उस बेचारे नौकर को अन्यायपूर्ण सज़ा मिली, लेकिन मैं सच नहीं बोल सकी। और इस सब के बाद भी, मूर्खता से, मैंने उस लड़के को अपना बनाने की कोशिशें नहीं छोड़ीं। मैंने उस ज्योतिषी को छोड़ा और ऑनलाइन एक दूसरे, ज़्यादा बड़े ज्योतिषी से संपर्क किया। मैंने उसे सब कुछ बताया। वह ज़ोर से हँसा। “वह ज्योतिषी तो अव्वल दर्जे का बदमाश है। उसे ज़्यादा कुछ आता-जाता नहीं है। ऐसे मामलों में सफलता तभी संभव है जब कोई कम से कम ११ लाख रुपये खर्च करे; अनुष्ठान इतना महँगा होता है। लेकिन वह आदमी तो बस पैसा बना रहा है। उसने तुम्हारे लिए कोई अनुष्ठान या खर्च नहीं किया होगा, क्योंकि तुम्हारे ऊपर जो ग्रहों का प्रभाव है, उसे इतने सस्ते में काटना संभव ही नहीं है।” इस नए ज्योतिषी का नाम ऑनलाइन बहुत प्रसिद्ध था, उसके लिए सभी प्रशंसापत्र सकारात्मक थे, और उसकी बातों में एक अविश्वसनीय आत्मविश्वास था। यह मेरे पापों का ही फल था कि मैं उसकी बातों में आ गई। “क्या आप मेरी सगाई उस लड़के से करवा पाएँगे?” मैंने पूछा। उसने लापरवाही से जवाब दिया, “मैं अपना काम पूरी तरह से करता हूँ, और मैं एक पूरा पेशेवर हूँ। यह ११ लाख तो केवल अनुष्ठान का मेरा खर्च होगा। तुम्हें मेरी निजी फीस के तौर पर १ लाख अतिरिक्त देने होंगे। तुम्हें मेरे खाते में कुल १२ लाख रुपये जमा करने होंगे। तभी मैं अनुष्ठान शुरू करूँगा। और अनुष्ठान में ही मुझे दो महीने लग जाएँगे, क्योंकि उसका अंतिम भाग काली चौदस की रात को किया जाएगा। उसके बाद, तुम्हें एक महीने के भीतर परिणाम दिख जाएगा। अगर तुम्हें विश्वास है, तो हम आगे बढ़ सकते हैं; वरना, राम राम।” और उसने फोन काट दिया। उसकी बातों से मुझे लगा कि उसे पैसे का कोई लालच नहीं है और वह बहुत सीधी बात कर रहा है। तो, मैंने तीसरी बार चोरी की–दो सोने के बिस्किट और दो लाख रुपये नकद। मैंने कुल १२ लाख रुपये लिए और जैसा उसने कहा था, उसे पहुँचा दिए। अब मुझे तीन महीने इंतज़ार करना था।

तीन महीने चार में बदल गए, और लड़के की शादी की तारीख भी तय हो गई। मैं तीव्र 'आर्तध्यान' की स्थिति में आ गई। मैंने उस ज्योतिषी से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन वह तो दोगुना बदमाश निकला। "कैसा पैसा और कैसी बात? सब भूल जाओ।" और ज़ोर-ज़ोर से हँसते हुए उसने फोन काट दिया। मैंने अपने पिता के अठारह लाख रुपये चुराकर बर्बाद कर दिए थे, और मेरे हाथ कुछ नहीं लगा। १२ लाख रुपये की चोरी के बाद, मेरे पिता चिंताग्रस्त हो गए थे। इस बार, उन्होंने किसी नौकर को नहीं निकाला। हो सकता है उन्हें मुझ पर शक हुआ हो, लेकिन उन्होंने कुछ कहा नहीं। उस दिन के बाद, उन्होंने सोना और नकदी इस तरह रखना शुरू कर दिया कि मेरी माँ भी उनसे पूछे बिना उन्हें नहीं ले सकती थीं। म.सा.! जब मैं आपको यह लिख रही हूँ, उस लड़के की शादी हो चुकी है। मैंने उसके लिए उम्मीद छोड़ दी है। हालाँकि मेरा मोह नष्ट नहीं हुआ है, लेकिन मुझे कम से कम यह एहसास तो हो गया है: अपनी स्वार्थपूर्ण इच्छाओं को पूरा करने के लिए, मैं किसी और की ज़िंदगी बर्बाद करने को तैयार थी, और मुझे इसका यही फल मिला है। मैंने अब तक अपने पिता को चोरियों के बारे में नहीं बताया था। लेकिन एक दिन पहले ही, मैंने उन्हें व्हाट्सएप पर एक पत्र लिखा जिसमें मैंने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। मैंने माफी माँगी और उनसे उस नौकर को वापस काम पर रखने का अनुरोध किया। मेरे पिता समझदार थे। उन्होंने मुझे मारा या डाँटा नहीं; वे मुझे और दुख नहीं देना चाहते थे। उन्होंने बस प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा और कहा, "तुम्हारे लिए, मैं १८ लाख ही नहीं, १८ करोड़ भी खर्च कर दूँगा। लेकिन कभी चोरी का सहारा मत लेना, और इन ज्योतिषियों के जाल में मत फँसना। सच्चे और ईमानदार ज्योतिषी बहुत कम होते हैं।" मैंने अपने पिता से कह दिया है, "आप मेरे लिए जो भी लड़का चुनेंगे, मैं उसी से शादी करूँगी।" म.सा.! कृपया मुझे इस पाप के लिए सबसे कठोर 'प्रायश्चित्त' दें। और हाँ, उस नौकर को काम पर वापस रख लिया गया है। मेरे पिता ने उससे सिर्फ इतना कहा, "माफ़ करना, चोरी किसी और ने की थी।" उन्होंने मेरा नाम नहीं बताया। मैं उससे माफी माँगना चाहती थी, लेकिन मेरे पिता ने मना कर दिया। उन्होंने शायद दूसरी उलझनों का अंदाज़ा लगा लिया होगा, इसलिए मैंने ज़िद नहीं की।

(७) म.सा.! मेरे एक जेठ और दो देवर हैं। मेरे पति दूसरे नंबर के हैं। उस समय हमारा परिवार बहुत बड़ा था, और हम सब साथ रहते थे। हमारा परिवार बेहद संपन्न था; घर की तिजोरी में लाखों रुपये नकद पड़े रहते थे। मुझे अब याद नहीं कि चोरी का कारण क्या था, लेकिन मुझे इतना याद है कि मेरे पति और मैंने मिलकर एक फैसला किया और तिजोरी से एक बड़ी रकम चुरा ली। मेरे ससुरजी को एहसास हो गया कि चोरी हुई है, लेकिन ज़ाहिर है, कोई परिवार के सदस्य पर कभी शक नहीं करता। नतीजतन, हमारी गलती का शिकार एक नौकर बन गया। मेरे ससुरजी ने उसे बुरी तरह पिटवाया। मेरे ससुरजी का बहुत दबदबा था, और वे बड़ी ताकत रखते थे। बड़े कारोबार में, गुंडागर्दी करने वाले लोगों के सहारे की ज़रूरत पड़ती है, और उन्होंने उस बेचारे नौकर को ऐसे ही लोगों से बेरहमी से पिटवाया। उसके अंडरवियर को छोड़कर सारे कपड़े उतार दिए गए और फिर उसे पीटा गया। बेचारा बहुत चीखा-चिल्लाया। मेरे पति ने उस समय मुझे इस बारे में बताया था, लेकिन हम चोरी कबूल करने की हिम्मत नहीं जुटा पाए। उस नौकर को पीटकर निकाल दिया गया। लेकिन म.सा.! गरीब की हाय कभी खाली नहीं जाती। यह बात हमें आज, बीस साल बाद समझ में आ रही है। हमारी हालत अब ऐसी है कि भले ही हमने श्री संघ के लिए आपको अपने बंगले में पधारने का सौभाग्य दिया है, लेकिन

अंदर से मेरा परिवार खोखला हो चुका है।
लगभग पंद्रह साल पहले हम सब अलग हो गए थे। मेरे ससुरजी ने खुद ही संपत्ति का बराबर बँटवारा किया। यह बंगला और १५ करोड़ रुपये हमारे हिस्से में आए। लेकिन आज हमारी स्थिति ऐसी है कि बाकी तीनों परिवार बेहद संपन्न हैं। बँटवारे के समय उन्हें हमारे बराबर ही हिस्सा मिला था, लेकिन अब उनकी संपत्ति चौगुनी हो गई है। मुझे उनसे कोई ईर्ष्या नहीं है। हालाँकि, हम पर इस समय चार करोड़ रुपये का कर्ज है। जैसा कि कहा जाता है, बंद मुट्ठी लाख की होती है, म.सा.! अभी हमारी असली स्थिति किसी को नहीं पता, लेकिन मुझे नहीं पता कि यह कब तक चल पाएगा। मेरे पति किसी तरह संभाल रहे हैं, लेकिन फिलहाल हमारी कोई खास आमदनी नहीं है। हमारा एक बेटा और एक बेटी मुंबई में पढ़ रहे हैं, उनके खर्चे, ४ करोड़ के कर्ज पर ४ लाख रुपये का मासिक ब्याज, और ऊपर से इस घर के खर्चे! साहेबजी, आज आपने हमारे घर में कदम रखे हैं, और अब आप इस शहर से जा रहे हैं। लेकिन अगर आप दोबारा इस शहर में आए, तो मुझे पूरा यकीन है कि यह बंगला बिक चुका होगा। हम किसी छोटे से किराए के घर में रह रहे होंगे। समाज में हमारा नाम दिवालिया लोगों में गिना जाएगा। हमने जो चोरी की थी, उसके लिए हमें चुराई गई रकम से ५० से १०० गुना ज़्यादा गँवाना पड़ा है, और एक एकदम निर्दोष व्यक्ति की हाय हमें लगी है। साहेबजी! आपने अपने प्रवचन में सिखाया था: 'हम सज़ा पाएँ अपने किए की, मौत भी हो, तो सहें उसे खुशी से...'। यह विचार मेरे मन में घर कर गया है। कृपया मुझे अपना 'वासक्षेप' प्रदान करें, इसलिए नहीं कि मेरे परिवार पर आई यह विपत्ति टल जाए, बल्कि इसलिए कि हम इससे भी कठोर सज़ा का सामना कर सकें। मेरे पति को जेल जाना पड़ सकता है, या मुझे अपनी आँखों के सामने लेनदारों द्वारा उन्हें गुंडों से पिटते हुए देखना पड़ सकता है। अगर यह सब भी हो, तो मैं उसे सह सकूँ। मैं अपने मन में बस एक ही विचार को मज़बूती से पकड़कर रखना चाहती हूँ: 'मैंने गलत किया है, इसलिए मुझे उसका परिणाम मिल रहा है।' बस इतना ही, साहेबजी! कृपया यह बात मेरे पति को भी समझाएँ। वे डरे हुए हैं, 'आर्तध्यान' की स्थिति में हैं। उनमें आने वाले दुख को सहने की शक्ति नहीं है। कृपया उन्हें वह शक्ति प्रदान करें।
(८) म.सा.! मुझे बचपन से ही चोरी करने की ऐसी आदत है कि अब यह एक लत बन गई है; मैं खुद को चोरी करने से रोक नहीं पाती हूँ। मुझे अब किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, लेकिन यह एक मजबूरी बन गई है। हाल ही में, मैं अपनी पड़ोसन के घर गई और वहाँ एक सोने की चेन पड़ी देखी। मैंने बड़ी सफाई से उसे चुरा लिया। अब मुझे पछतावा हो रहा है, यह सोचकर कि 'वे एक मध्यमवर्गीय परिवार हैं, और किसी के लिए भी सोने की चेन की चोरी तनाव का कारण बनेगी ही!' दो दिन बाद, मैंने चालाकी से वह चेन उनके घर में वापस रख दी। लेकिन मैंने देखा था कि दो दिनों तक उनके चेहरे पर कोई खुशी नहीं थी। उसने मुझसे कहा था, "मेरी चेन खो गई है।" जब उसे वह मिल गई, तो उसने मुझसे कहा, "थी तो घर में ही, लेकिन दो दिन से मिल नहीं रही थी।" मैंने उसे सच नहीं बताया–कि मैंने ही उसे चुराया था और मैंने ही उसे वापस रखा था। लेकिन उसकी हालत देखकर, मुझे प्रवचनों में सुनी दो-तीन घटनाएँ याद आ गईं। देवानंदा ने पिछले जन्म में अपनी भाभी के गहने चुराए थे, और उसके परिणामस्वरूप, देवानंदा का अपना बच्चा चोरी हो गया था। रुक्मिणी ने पिछले जन्म में एक मोरनी को उसके अंडे रंगकर और बच्चे अपने पास रखकर दुख दिया था, और नतीजतन, उसका अपना

बेटा चोरी हो गया था। हालाँकि उन दोनों ने 'आलोचना' (पाप-स्वीकृति) नहीं की थी, अगर मैं कर लूँ, तो शायद मैं बच सकती हूँ। इसी तरह, एक बार मैंने एक मॉल से बड़ी सफाई से कुछ सामान चुरा लिया। वे करीब ५०० रुपये के होंगे। घर आने के बाद, मुझे पछतावा हुआ, मैंने सोचा, मुझे, जिसे पैसे की कोई कमी नहीं है, ऐसी छोटी-मोटी चीज़ें क्यों चुरानी चाहिए? मैंने अपने गुरुजी से बात की, और उन्होंने मुझे सामान वापस करने की सलाह दी। अगले दिन, मैंने २०० रुपये यात्रा पर खर्च करके उस मॉल में जाकर वे चीज़ें वापस कीं। और मैंने अपने ही घर में चोरी भी की है। मेरी सास का स्वभाव कुछ विचित्र है! मेरे प्रति उन्हें कोई स्नेह नहीं है और वे काफ़ी कंजूस हैं। वे घर में आम तो लाईं, पर उन्हें छिपाकर रख दिया। जब मन होता, तब वे खुद खा लेती थीं। मुझे शक हुआ कि उन्होंने आम कहीं छिपाए हैं। मैंने जाँच की तो पता चला कि उन्होंने अपनी अलमारी में साड़ियों के पीछे उन्हें छिपा रखा है। जैसे ही मुझे अवसर मिला, मैंने चार आम चुरा लिए और अपने कमरे में बिस्तर के नीचे छिपा दिए। मैंने तो दरवाज़ा बंद करके एक आम खा भी लिया। दूसरे दिन मेरी सास को पता चल गया कि आम चोरी हो गए हैं। उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या तुमने आम चुराए हैं?" मैंने उल्टे उन्हीं पर आरोप लगा दिया, "घर में आम हैं कहाँ?" पहले तो वे चकरा गईं, क्योंकि उन्हें यह स्वीकार करना पड़ता कि उन्होंने आम छिपाकर रखे थे, अपने बेटे तक को नहीं दिए, मुझे देना तो दूर की बात थी। और यह स्वीकार करना उनके लिए मुश्किल था। लेकिन वे जल्द ही समझ गईं कि मुझे सब पता चल गया है। इसलिए वे खुलकर बोलीं, "आम मैं अपने पैसों से लाई थी। मैंने उन्हें अपनी अलमारी में रखा था, और जिसने उन्हें चुराया है, वह तुम ही हो सकती हो। किसी और की हिम्मत नहीं है कि मेरे कमरे में घुसकर मेरी अलमारी से आम चुरा ले। तुम चोर हो।" मैंने गुस्से में जवाब दिया, "चोर तुम्हारा बाप होगा, मैं नहीं। बिना किसी सबूत के आरोप लगाते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती?" मैंने उनके पिता को गाली दी। इससे वे बेहद नाराज़ हो गईं। उन्होंने मुझ पर काँच का गिलास फेंककर मारा। मैं एक तरफ हट गई, और गिलास दीवार से टकराकर टूट गया। फिर मुझे भी बहुत गुस्सा आया। मैंने अपने हाथ में पकड़ा हुआ स्टील का गिलास उन पर फेंक दिया। वह उनके माथे पर लगा और खून बहने लगा। उनका गुस्सा और बढ़ गया। वे मेरी ओर दौड़ीं, मेरे बाल ज़ोर से खींचे और मुझे तथा मेरे माता-पिता को गंदी-गंदी गालियाँ देने लगीं। अब तक मेरा भी क्रोध मेरे वश में नहीं रहा था। मैंने अपने नाखूनों से उनका गाल नोच लिया, जिससे खून निकल आया। फिर हम दोनों 'मारो या मरो' की भावना से लड़ने लगे। हम दोनों एक-दूसरे के बाल खींच रहे थे, एक-दूसरे को धकेल रहे थे। अपनी युवावस्था के कारण मैं अधिक बलवान थी, इसलिए मैंने उन्हें ज़ोर से धक्का देकर ज़मीन पर गिरा दिया। अब उनका क्रोध चरम पर था। वे उठीं और मुझ पर झपट पड़ीं, मेरे पेट में ज़ोर से घूंसा मारा। मैं दर्द से चिल्ला उठी। लेकिन उस दर्द के बीच भी मैं उस दिन शांत नहीं हुई। मैंने अपने पैर से उनके पेट में लात मारी। चूँकि वे थोड़ी मोटी थीं, मेरी लात से उन्हें बहुत चोट लगी। वे भी ज़ोर से चीखीं। अब उनमें लड़ने की हिम्मत नहीं बची थी, और मेरी भी साँस फूल गई थी। लेकिन इस पूरी लड़ाई के दौरान और उसके बाद, लगभग आधे घंटे तक, जो अपशब्द उन्होंने और मैंने कहे, उन्हें लिख पाना मेरे लिए बहुत कठिन है। उन्होंने क्या कहा, यह मेरा विषय नहीं है, लेकिन मैंने जो कहा, उसका पाप मुझे अवश्य प्रकट करना चाहिए। मैंने उनसे कहा था, "तू कुतिया है; जब कुतिया भूखी होती है, तो वह अपने पिल्लों को भी खा जाती है। उसी तरह, तू अपने बेटे को भी आम नहीं

खाने देती और खुद सब कुछ छिप-छिप कर खा जाती है। तू पेटू है! तेरा बाप ज़रूर भिखारी रहा होगा, इसीलिए तुझे अपने मायके में कभी कुछ खाने को नहीं मिला, और इसीलिए आज तू इस तरह चोरी करके खाती है।" इसके अलावा, मैंने उन्हें वे गालियाँ भी दीं जिन्हें अत्यंत अश्लील माना जाता है।
शाम को मेरे पति घर आए और उन्होंने बारी-बारी से हम दोनों से पूरी कहानी सुनी। वे समझ गए कि अब हमारा एक साथ रहना संभव नहीं है। मेरे ससुर का तो बहुत पहले ही देहांत हो चुका था। मेरे देवर और देवरानी मेरी सास को अपने साथ रखने को तैयार नहीं थे। मेरे पति ने उनके लिए पास में ही एक छोटा सा फ्लैट किराए पर ले लिया और दो दिनों के भीतर वे वहाँ चली गईं। मेरे पति हम दोनों का ख़याल रखते हैं। अब, बहुत समय बाद, मुझे गहरा पश्चात्ताप होता है। एक चोरी की घटना ने इतना बड़ा युद्ध खड़ा कर दिया। मैं अपनी सास से कुत्ते की तरह लड़ी। आज जब मैं उसे याद करती हूँ, तो ऐसा लगता है जैसे हम एक-दूसरे पर भौंके, एक-दूसरे को काटा। मैं और वह जंगली कुत्तों के जोड़े की तरह लड़े। मुझे उनका दोष नहीं देखना है; मुझे केवल अपना दोष देखना है–कि मैं एक कुतिया, एक पेटू, एक चोर, एक बर्बर की तरह गालियाँ बकने वाली बन गई। मैंने एक 'चंडालिनी' जैसा आचरण किया। मैं 'श्राविका' नाम के योग्य नहीं हूँ। गुरुदेव! कृपया मुझे क्षमा करें। मुझे 'प्रायश्चित' देकर शुद्ध करें।
(९) मैं एक जैन डॉक्टर हूँ। कई वर्षों तक मेरा अभ्यास ठीक-ठाक चला, और मुझे कोई समस्या नहीं हुई। लेकिन पैसों के लालच में मैंने जो घिनौने काम किए, उन्हें मैं आपके सामने स्वीकार करना चाहता हूँ। आज मैं ७० वर्ष का हूँ। मैं अपने जीवन की संध्यावेला में पहुँच गया हूँ। मुझे नहीं पता कि यह सूर्य कब अस्त हो जाएगा। मैं अपने इन कलंकित हाथों को धोना चाहता हूँ। मैं मुंबई में रहता हूँ। पैसा कमाने के लिए, मैंने कुछ प्रयोगशालाओं (लैब्स) के साथ व्यवस्था कर रखी थी। जब भी कोई मरीज मेरे पास आता, मैं उसे नई-नई बीमारियों के नाम बताकर डरा देता और फिर यह कहकर, "हमें कोई जोखिम नहीं लेना चाहिए; चलिए कुछ रिपोर्ट करवा लेते हैं," मैं ढेर सारी जाँचें लिख देता था। मैं उनसे ज़ोर देकर कहता कि वे ये जाँचें एक निश्चित प्रयोगशाला से ही कराएँ। वे मेरी सलाह के अनुसार रिपोर्ट ले आते। मुझे पहले से ही पता होता था कि रिपोर्ट सामान्य आएगी, लेकिन मेरा एकमात्र उद्देश्य पैसा कमाना था।
यह धंधा खूब फल-फूल रहा था। मुझे इन रिपोर्टों पर २०% कमीशन मिलता था। उदाहरण के लिए, यदि मैं एक महीने में लैब के लिए दस लाख रुपये का व्यवसाय करता, तो मुझे दो लाख रुपये मिलते। कुछ महीनों में तो एक ही महीने में पचास लाख रुपये की रिपोर्टें बन जाती थीं... और मुझे सीधे दस लाख रुपये मिल जाते थे। मैंने बहुत पैसा कमाया, हाँ! इसके अलावा, मैं वास्तविक बीमारी का सही इलाज भी करता था, यही कारण है कि मरीजों को मुझ पर भरोसा था। मरीज सोचता, 'डॉक्टर कितना अच्छा है, वह सावधानी के तौर पर हमारी ये सारी रिपोर्टें करवाता है...' एक व्यक्ति जीने के लिए कितना भी पैसा खर्च करने को तैयार रहता है, और महाराज साहेब! मुझे लैब से हर महीने के पहले तीन दिनों के भीतर पैसा मिल जाता था। एक युवा जैन व्यक्ति बिचौलिया था; वह कुशलतापूर्वक लैब से मुझ जैसे कई डॉक्टरों तक पैसा पहुँचाने का काम संभालता था। लेकिन मैं इतना निर्दयी था कि अगर महीने की तीन तारीख तक पैसा नहीं आता, तो चौथी तारीख को मैं लैब को फोन करता और उन्हें बुरी तरह डांटता, ऐसे शब्दों का प्रयोग करता, 'क्या तुम्हारा धंधा बंद करने का

इरादा है, या क्या?' कभी-कभी लैब कहती, 'हमने तो पैसा भेज दिया है।' उस स्थिति में, मैं सीधे उस युवा जैन व्यक्ति को फोन करता और उसे डांटता। बेचारा माफी मांगता और तुरंत पैसा पहुँचाने आ जाता। मरीज, जो अक्सर गरीब या मध्यमवर्गीय होते थे, कभी-कभी मुझसे पूछते, 'क्या यह रिपोर्ट न कराएँ तो चलेगा...' मैं अच्छी तरह जानता था कि इसकी ज़रूरत नहीं है। मैं पूरी तरह से बेकार की रिपोर्टें लिख रहा था... लेकिन मैंने कभी कोई दया नहीं दिखाई। मुझे डॉक्टर बनने में खर्च हुए पैसे वसूल करने थे, मुझे दूसरे डॉक्टरों की तरह एक बड़े बंगले में रहना था, समाज में एक अमीर आदमी के रूप में रहना था... एक महंगी कार में घूमना था... मुझे उस तरह की प्रतिष्ठा बनाए रखनी थी। दया दिखाना कोई विकल्प नहीं था। उन मरीजों को कभी-कभी ऐसी प्रयोगशालाएँ मिल जातीं जो २५% या ५०% की छूट देती थीं, लेकिन मैं उनसे कहता, 'ऐसी धर्मार्थ प्रयोगशालाओं की रिपोर्टों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मैं ऐसी रिपोर्टों को बिल्कुल स्वीकार नहीं करता। आपको इसी विशिष्ट लैब में रिपोर्ट करानी होगी...' और वे बेचारे रिश्तेदार से भीख मांगकर या ऊँचे ब्याज पर कर्ज लेकर अपना इलाज करवाते थे... मैंने ऐसे गंभीर पाप किए हैं। इन सभी पापों में सबसे भयंकर पाप, इन सब पापों का बाप, मैंने कोरोना काल में किया। रोज़ाना मामलों की बाढ़ आने लगी। कई मामले लगभग हाथ से निकलने वाले थे... मेरे मन में एक पापी विचार आया: यह व्यक्ति तो वैसे भी मरने वाला है, तो अगर मैं उसकी किडनी निकाल लूँ, तो मुझे बहुत बड़ा मुनाफ़ा होगा; मुझे हर किडनी के लाखों रुपये मिलेंगे... और इस तरह, मैंने किडनी चुराना शुरू कर दिया। कुल मिलाकर, कोरोना काल में मैंने ३६ किडनी चुराईं। उनमें से १० किडनी ऐसे मामलों की थीं जो अंतिम अवस्था में नहीं थे; वे लोग जी सकते थे, लेकिन वे कोरोना के कारण मेरे अस्पताल में भर्ती हुए थे, इसलिए मैंने उनकी किडनी चुरा ली... इस प्रकार, मैंने २६ किडनी उन लोगों की चुराई जो मर रहे थे और १० उन लोगों की जो जी सकते थे। मृतकों के परिवारों को कुछ भी पता नहीं चला, और जो जीवित रहे, उन्हें भी कुछ पता नहीं चला। मैंने इन ३६ किडनी से लगभग पाँच करोड़ रुपये कमाए... कुछ समझदार परिवारों को कुछ संदेह हुआ, इसलिए उन्होंने अपने रिश्तेदार के शव का पोस्टमार्टम कराने पर ज़ोर दिया... उस समय, मुझे पोस्टमार्टम अधिकारी को रिश्वत देनी पड़ी; भ्रष्टाचार तो हर जगह है। और इस तरह मेरी किडनी की चोरी का पता नहीं चला... और महाराज साहेब! आज मैं ७० वर्ष का हूँ। मृत्यु निश्चित है, लेकिन मुझे अपनी मृत्यु से डर नहीं लगता। लेकिन मेरी दोनों किडनी खराब हो गई हैं। मैं डायलिसिस के सहारे जी रहा हूँ... अब, मैं एक किडनी के लिए भीख मांग रहा हूँ, लेकिन इस उम्र में मेरा शरीर उसे स्वीकार नहीं करेगा... मैं बीस लाख रुपये देने को तैयार हूँ, लेकिन कोई किडनी मेरे साथ मेल नहीं खा रही है। मुझे नहीं पता कि मैं और कितने साल जीऊँगा। मेरा एक बेटा और एक बेटी है जो डॉक्टर हैं। मैंने उन्हें यही विशेष सलाह दी है: भले ही कम पैसा कमाना, लेकिन ऐसे भ्रष्ट तरीकों से कभी पैसा मत कमाना। मैं अपने किए कर्मों का फल भुगत रहा हूँ... मुझे केवल २५-३० साल तक जीवन का आनंद मिला, और अब इन अंतिम वर्षों में, मैं हर दिन डायलिसिस की पीड़ा सहता हूँ। मैं तड़प-तड़प कर मरूँगा, और अगले जन्म में मुझे कौन सी गति मिलेगी? मुझे नहीं पता। महाराज साहेब! इस उम्र में, मैं कोई बड़ी तपस्या नहीं कर पाऊँगा... मैं केवल नवकार का जाप और मि... का पाठ कर सकता हूँ। इसके अलावा, आप जो भी उचित समझें, कृपया मुझे वह प्रायश्चित प्रदान करें...

(१०) अठारह वर्ष की आयु में, मैंने हीरे के बाज़ार में प्रवेश किया। शुरुआत में, मैंने अपने पिता के कार्यालय में काम किया, लेकिन वहाँ मैंने ज़्यादा कुछ नहीं सीखा, इसलिए मैं अनुभव प्राप्त करने के लिए दो साल के लिए एक बड़ी फ़र्म में चला गया। उसके बाद, मैं अपने पिता के कार्यालय में लौट आया और धीरे-धीरे अपना व्यवसाय विकसित किया। पहले, मैंने ईमानदारी से व्यापार किया, लेकिन मुझे इस तरह से करोड़पति बनने की कोई ख़ास संभावना नहीं दिखी; इसमें वर्षों लग जाते... और मेरे सिर पर आसानी से पैसा कमाने का नशा सवार हो गया था। मैंने धीरे-धीरे चोरी करना शुरू कर दिया। दलाल मेरे पास हीरे के पैकेट लाते थे, जिन्हें मैं जाँच के लिए रख लेता था। फिर, मैं उनमें से कुछ बेहतर नग निकाल लेता और घटिया नग मिला देता था। वज़न वही रहता था, इसलिए दलाल या किसी और को जल्दी शक नहीं होता था। और जो माल मैं बेचता था, उसमें मैं एक गुणवत्ता के हीरे दिखाता था, लेकिन बिक्री के समय, मैं उसमें थोड़ी मात्रा में घटिया नग मिला देता था... मैंने इन सब से अच्छा पैसा कमाया। बाद में, मैंने एक हीरा-कटाई का कारखाना भी शुरू किया... मैंने लगभग बीस हीरा कारीगरों को काम पर रखा और तैयार उत्पाद बनाने के लिए दूसरों से कच्चे हीरे लेता था। उस प्रक्रिया में भी, मैं अच्छी गुणवत्ता वाले कच्चे हीरों में से बेहतर नग रख लेता और उनकी जगह घटिया नग डाल देता था। मैंने यह सब इतनी चतुराई से किया कि मुझ पर शक बहुत कम ही होता था। मेरा `punya` भी बहुत प्रबल था, और मुझमें अच्छी तरह से बात करने की कला थी, इसलिए मेरी चोरी पकड़ी नहीं गई। कुछ ही समय में, मैं करोड़पति बन गया। अब मेरे पास प्रचुर धन है, लेकिन शांति नहीं है... मेरे बेटों ने मुझसे झगड़ा कर लिया है और अलग रहने चले गए हैं। उन्होंने अपना खुद का व्यवसाय शुरू कर दिया है। एक विशाल २००० वर्ग फुट के फ्लैट में, केवल मैं और मेरी पत्नी रहते हैं। मेरे तीन बेटे, चार पोते और चार पोतियाँ हैं। मैंने उन सभी से एक साथ रहने की विनती की, लेकिन कोई भी मानने को तैयार नहीं हुआ। अगर हम साथ होते, तो हम सोलह लोगों का एक बड़ा परिवार होते। बाकी सब तो छोड़िए, एक भी बेटा मेरे साथ रहने को तैयार नहीं है। एक ही शहर में रहने के बावजूद, मैं पूरी तरह से अकेला हो गया हूँ। मैं अपने पोते-पोतियों से मिलने उनके घर जाता था, लेकिन मेरा आना मेरे बेटों और बहुओं को अच्छा नहीं लगता था। बच्चों को भी यह दादा पसंद नहीं था। उन्हें अपने नए ज़माने के खेल और मोबाइल फोन में ज़्यादा दिलचस्पी थी... आख़िरकार, मैंने उनके घर जाना बंद कर दिया। हम हफ़्ते में एक बार फोन पर बात कर लेते हैं... बस इतना ही। मैं ६५ वर्ष का हूँ, मेरा शरीर बिल्कुल स्वस्थ है, लेकिन मेरा मन उदास है। अब मुझे समझ में आया है कि मैंने अनैतिक तरीकों से, चोरी करके और लोगों को धोखा देकर पैसा कमाया। आज, मेरे पास वह पैसा तो है, लेकिन जिस परिवार के लिए मैंने वह पैसा कमाया, वही मेरे साथ नहीं है। वह सुख, वह शांति, वह संतोष चला गया है। अब, मैं अपना मन धर्म के मार्ग की ओर मोड़ रहा हूँ... मैं हर दिन तीन-चार 'सामायिक' करता हूँ, प्रवचन सुनता हूँ और पूजा करता हूँ। मैंने बड़ी मुश्किल से 'गुरुवंदन' सीखा है। मेरे आध्यात्मिक मित्र 'सामायिक' करने में मेरा मार्गदर्शन करते हैं; वह धार्मिक समूह बहुत अच्छा लगता है। मुझे उसमें अपार शांति मिलती है। मुझे निश्छल प्रेम मिलता है; अगर मैं देर से आता हूँ, तो वे मेरा इंतज़ार करते हैं... किसी 'पुण्योदय' की कृपा से, मुझे अपने ढलते वर्षों में ऐसे मित्र मिले हैं। मैंने अपनी सारी संपत्ति धर्म की सेवा में लगाने की वसीयत कर दी है। और मैंने यह भी निर्दिष्ट किया है कि मेरा नाम कहीं नहीं लिखा जाना चाहिए। क्योंकि मेरा सारा पैसा, यदि आप देखें, तो

चोरी का पैसा है; यह आख़िरकार किसी और का पैसा है। यदि मैं दूसरों के पैसे से धार्मिक कार्य करता हूँ, तो मेरा नाम उससे नहीं जुड़ना चाहिए। अभी भी, मैं बहुत खर्च करता हूँ, लेकिन केवल 'एक सज्जन की ओर से' के रूप में। मैं 'सौजन्य से' की पंक्ति के नीचे भी अपना नाम नहीं लिखवाता। मुझे यह झूठा श्रेय नहीं चाहिए। 'सौजन्य से' की जगह पर, मैंने अपने मित्र का नाम लिखवाया है। मेरी इच्छा केवल 'समाधि' की अवस्था में मरने की है। महाराज साहेब! कृपया मुझे चोरी, धोखाधड़ी और छल के इन पापों के लिए कठोर से कठोर 'प्रायश्चित' दें, लेकिन मेरी उम्र का विशेष ध्यान रखें। मैं अपनी क्षमता को छिपाना नहीं चाहता; जितनी भी शक्ति मुझमें है, मैं उसका पूरा उपयोग करूँगा और अपने 'प्रायश्चित' को जल्द से जल्द पूरा करने का प्रयास करूँगा।

(११) साहेबजी! बचपन में, अज्ञानता के कारण, मैंने 'देरासर' से मिश्री, मिठाई और फल जैसी चीजें चुराकर खाईं। मुझे इस बात का ज्ञान नहीं था कि 'यह 'देवद्रव्य' है; इसका सेवन नहीं करना चाहिए।' समझ आने के बाद, मैंने 'देवद्रव्य' निधि में ₹ , ' '
हो, उसे प्रदान करने की कृपा करें, क्योंकि मैंने सुना है कि 'देवद्रव्य' का उपभोग करने से 'संसार' में अनंत काल तक भटकना पड़ता है। और अब जब मुझे ज्ञान प्राप्त हो गया है, तो मैं 'संसार' में अनंत काल तक भटकना नहीं चाहता।

(१२) मेरे जीवन में एक विकट संकट आया, जिस दौरान मैंने एक ऐसा पाप किया, जिसे कोई भी जैन स्वप्न में भी करने का विचार नहीं कर सकता। हुआ यह कि उन वर्षों में हीरे के बाज़ार में भारी मंदी थी, और बड़ी-बड़ी कंपनियों से भी कई लोगों की छँटनी हो रही थी। जिस कार्यालय में मैं काम करता था, वहाँ से मुझे भी निकाल दिया गया। मेरे परिवार में कुछ अस्वस्थ और वृद्ध माता-पिता, मेरी पत्नी और १२, ९, और ७ वर्ष की आयु के तीन बच्चे थे। यह नौकरी छूट जाने के बाद मैं अपने परिवार का भरण-पोषण कैसे करूँगा? यह मेरे लिए एक विकट चुनौती थी। मैंने अपने मालिक से बहुत विनती की, 'कृपया मुझे मत निकालिए; मुझे कम वेतन पर ही रख लीजिए।' लेकिन उन्होंने कहा, 'हमारे लिए यह संभव ही नहीं है। वरना तुम्हें क्या, हम किसी को भी न निकालते।' मैं उतरा हुआ चेहरा लेकर घर लौटा। उस दिन मुझे देखकर मेरी पत्नी समझ गई। घर में प्रवेश करते ही मैंने उसे बताया, 'नौकरी चली गई।' मेरा तनाव उसी ने भाँपा। बच्चे इन सब बातों को क्या समझते? और मैं उन्हें समझाना भी नहीं चाहता था। वे मासूम बच्चे अपने निश्छल खेलों में मग्न थे। मुझे देखते ही वे 'पापा!' कहकर मुझसे लिपट गए और अपने झगड़ों की शिकायतें करने लगे। उनकी मीठी, तोतली भाषा में, एक पल के लिए मैं भविष्य की चिंताएँ भूल गया। दो-पाँच मिनट उनके साथ खेलने के बाद मैंने उन्हें भेज दिया, लेकिन तुरंत ही वह चिंता रूपी सर्प फिर से मेरे मन पर कुंडली मारकर बैठ गया। मेरी पत्नी ने मुझे खाने के लिए कहा, और मैंने खा लिया। मैं जानता था कि खाना न खाना कोई समाधान नहीं था। ऐसी स्थिति में भी मैंने स्वयं से कहा, 'मेरे मित्र! अच्छी तरह खा लो, क्योंकि क्या पता आने वाले दिनों में पेट भर खाना मिले भी या नहीं?' और मैं हँस पड़ा। मेरी स्नेहमयी पत्नी ने मेरे हँसने का कारण पूछा। मैंने हँसते हुए उसे अपनी सोच बताई: 'अब हमें कम से कम खाना सीखना होगा... और हमें एकांतर उपवास का अभ्यास करना होगा...' इससे पहले कि मैं और कुछ कह पाता, एक सिसकी भरकर, वह रोते-रोते रसोई से बाहर भाग गई। यह सब सहने का

साहस उसमें नहीं था। बच्चों की चिंता निश्चित रूप से उसे भी सता रही होगी। यदि केवल हम दोनों होते, तो एक-दूसरे के सहारे हम बड़े-बड़े दु:ख भी सह लेते... लेकिन मेरे माता-पिता और तीन बच्चे... उनका क्या?... मैंने उसे रोने दिया। और मैंने अपना भोजन समाप्त किया, फिर उसे सांत्वना दी। मैंने उसे आश्वासन दिया, 'मैं नौकरी खोजने की कोशिश करूँगा; हीरे का बाज़ार बहुत बड़ा है, मुझे काम मिल जाएगा...' लेकिन दो-तीन दिनों की गहन कोशिश के बाद, मुझे समझ में आया कि जहाँ पुराने कर्मचारियों को भी निकालने की ज़ोरदार प्रक्रिया चल रही हो, वहाँ नए लोगों को रखने का सवाल ही कहाँ उठता है? हमारे पास जो भी पैसा था, उससे हम दो-तीन महीने गुज़ारा कर सकते थे। यदि मैं अपनी पत्नी के गहने बेच देता, तो और दो-पाँच महीने कट सकते थे, लेकिन यह कोई समाधान नहीं लग रहा था। मुझे किसी भी तरह से आय का एक स्रोत बनाना ही होगा... यह विचार मेरे मन में दृढ़ हो गया... और महाराज साहेब! अंत में मैंने चोरी करने का निश्चय किया। लेकिन चोरी कहाँ की जाए? किसी बैंक से? किसी को चाकू दिखाकर? जेब काटकर?... यह सब असंभव लग रहा था। बहुत सोचने के बाद, मेरी नज़रें दो-एक जगहों पर टिकीं... वहाँ से चोरी करना मुझे आसान लगा। एक था देरासर, जहाँ कई लोग पैसे चढ़ाते थे, और दूसरा था आचार्य भगवंतों के समक्ष, जहाँ कई लोग पैसों से पूजन करते थे। मैंने महान आचार्यों के सामने लोगों को दो-दो हज़ार रुपये के नोटों, चाँदी के सिक्कों, सोने के सिक्कों से पूजन करते देखा था... और मैंने अक्सर देखा था कि वह पैसा वहीं यूँ ही पड़ा रहता था। मैं एक जैन था, देखने में भद्र पुरुष। और तब तक मैं वास्तव में एक भद्र पुरुष ही था। मैंने भी अपनी क्षमता के अनुसार गुरुपूजन किया था और देरासर में प्रतिदिन पैसे चढ़ाए थे। लेकिन अब समय आ गया था कि गुरु को अर्पित किए धन से कई गुना अधिक धन चुराया जाए, प्रभु को चढ़ाए धन से कई गुना अधिक धन ले जाया जाए। एक जैन होने के नाते, मैं ऐसी चोरी कभी नहीं करता। शायद अगर मैं अकेला होता, तो मैंने आत्महत्या भी कर ली होती... लेकिन मेरे बच्चे, मेरे माता-पिता। मैं उन सभी को बेसहारा छोड़कर आत्महत्या नहीं कर सकता था। और इसलिए मैंने चोरी करना शुरू कर दिया। मैं बड़े-बड़े देरासरों और महान आचार्यों की उपस्थिति में जाने लगा। मैं सामायिक लेकर बैठता और उसे पढ़ता। मैं महाराज साहेबों से अपना परिचय कराता, ताकि उन्हें मैं एक धर्मात्मा श्रावक लगूँ। इस प्रकार, वे मुझ पर संदेह नहीं करते। और मेरे लिए सामायिक लेकर बैठना और पढ़ना ज़रूरी भी था; उसके बिना मैं उपाश्रय में एक, दो या तीन घंटे कैसे बैठ सकता था? और उसके बिना मुझे पैसे चुराने का अवसर कैसे मिलता? और गुरुदेव! मैं दोनों स्थानों से चोरी करने में सफल रहा। धीरे-धीरे, मैं इसमें माहिर हो गया। यदि ज्ञानपूजन या गुरुपूजन की थाली में पैसे होते, तो मैं स्वयं पूछता, 'कोई यह पैसा ले जा सकता है; आप ही बताइए, इसे कहाँ जमा करना है? किसे देना है?' महाराज साहेब मुझे इसे ट्रस्ट को देने, या दान पेटी में डालने, या तिजोरी में रखने के लिए कहते। मैं उनके सामने ही पैसे ले लेता, और वे मान लेते, 'यह जमा कर देगा, यह पेटी या तिजोरी में डाल देगा...' लेकिन उस पैसे को कहीं देने के बजाय, मैं उसे घर ले जाता। मैंने पैसे चुराने के लिए बहुत चतुराई का इस्तेमाल किया। कुछ उपाश्रयों में दान पेटी वहीं होती थी, और थाली से पैसे महाराज साहेब के सामने ही पेटी में डालने होते थे। तो, उनकी आँखों के सामने, मैं थोड़े से पैसे पेटी में डालता, और बड़ी सफाई से बाकी अपनी जेब में खिसका लेता... मेरी पत्नी ने मुझसे पूछा, 'यह पैसा आपके पास कहाँ से आता है?' जब उसने सच सुना, तो वह स्तब्ध रह गई। उसने कहा,

‘धर्म का पैसा कभी भी, किसी भी परिस्थिति में नहीं चुराना चाहिए...’ मैंने एक दर्दभरी मुस्कान के साथ कहा, ‘क्या मैं यह नहीं जानता? क्या मैं काम करने को तैयार नहीं हूँ? क्या मैं आलसी हूँ? क्या मैं हराम की कमाई खाने वाला हूँ? क्या मैं कामचोर हूँ?’ हँसते-हँसते, मैं रो पड़ा। वह भी रोने लगी... उसने और कुछ नहीं कहा। लेकिन यह चोरी का पैसा भी घर चलाने के लिए पर्याप्त नहीं था। किसी मंदिर या उपाश्रय से कितना मिल सकता है? कौन रोज़ ५०० या १००० रुपये का नोट चढ़ाता है?... तो संघर्ष जारी रहा। मेरी चिंता अभी भी बनी हुई थी। और अंत में, मेरे मन में एक नया और अत्यंत भयानक विचार आया: देरासर से चाँदी और पंचधातु की प्रतिमाएँ चुराने का। एक पल के लिए, इस विचार मात्र से मेरा पूरा शरीर काँप उठा। मैं प्रभु को चुराकर बेचने की सोच रहा था। यदि मुझे सीधा खरीदार नहीं मिलता, तो मैं प्रभु को पिघलाकर चाँदी या पंचधातु बेचकर हज़ारों या लाखों रुपये पाने की सोच रहा था... मैं कितना बड़ा महापाप करने वाला था... लेकिन कोई भी पाप सोचने में भारी लगता है, और करने में भारी लगता है... धीरे-धीरे, उसकी आदत पड़ जाती है। और मैंने देरासरों में कई धातु और चाँदी की प्रतिमाएँ देखी थीं... तो अब मेरा ध्यान वहाँ गया। दो-तीन दिनों तक, मैंने कुछ बातें जाँचीं: ‘(१) किन देरासरों में चाँदी या पंचधातु की प्रतिमाएँ अधिक संख्या में हैं, ताकि एक-दो के गायब होने पर जल्दी पता न चले... (२) किन समयों पर इन देरासरों में भीड़ कम होती है, ताकि पकड़े जाने की संभावना न्यूनतम हो। (३) किस देरासर में बड़ी प्रतिमाएँ हैं? ताकि मैं कम मेहनत में अधिक पैसा पा सकूँ...’ और गुरुदेव! एक दिन दोपहर ११:३० बजे, पूजा के वस्त्रों में और पूरी योजना के साथ, मैं एक देरासर पहुँचा। जिस प्रभु को मैं चुराने वाला था, उनकी मैंने सच्चे भाव से पूजा की, हाथ जोड़े, क्षमा माँगी और मन में कहा, ‘प्रभु! अपने परिवार को जीवित रखने का मेरे पास कोई और उपाय नहीं है... मैं एक महापाप कर रहा हूँ। मेरे पाप का मेरे पास कोई बचाव नहीं है... अगले भव में मुझे इसके क्या परिणाम भुगतने होंगे, मैं नहीं जानता। लेकिन प्रभु! केवल और केवल विवशता ही मुझसे यह पाप करवा रही है...’ और मेरी आँखों के सामने मेरे वृद्ध माता-पिता, मेरे तीन मासूम बच्चों और मेरी रोती हुई पत्नी के चेहरे आ गए। मेरी आँखों से आँसू बहने लगे... गहरा पश्चाताप था, और साथ में आँसू भी... और जैसे कोई विधि करने वाला प्रभु को विधिपूर्वक उठाता है, मैंने प्रभु को उठाया और उन्हें अपने पूजा के सामान वाले थैले में रख लिया। इस तरह से कि किसी को शक न हो, मैं देरासर से निकल गया। मेरे पुण्य (!) के प्रताप से, मुझे ऐसे लोग भी मिल गए थे जो ऐसे चोरी के माल को पिघलाते थे। मैं पास के एक शहर में ऐसे लोगों के पास गया और प्रभु की ‘हत्या’ करने का पाप किया। साहेबजी! इस तरह, मैंने अलग-अलग देरासरों से कुल तीन प्रतिमाएँ–दो पंचधातु की और एक चाँदी की–चुराईं, उन्हें पैसे में बदला, और अपने परिवार का भरण-पोषण किया। पंचधातु की प्रतिमाएँ नौ इंच ऊँची थीं, और चाँदी की प्रतिमा सात इंच की थी। और हाँ, साहेबजी! मैं एक बात बताना भूल गया। इन्हीं कठिन दिनों में मैंने और मेरी पत्नी ने वर्धमानतप नी ओलि की आराधना शुरू की। इस तरह हम तपस्वी बन गए। मुख्य उद्देश्य केवल एक था: दो लोगों के भोजन का खर्च बचाना... पहले तो मुझे आयंबिल का भोजन अच्छा नहीं लगता था, लेकिन अब सब कुछ स्वादिष्ट लगने लगा था। मैं पेट भरकर खाने लगा था। आराधना के बाद कुछ पारणे और फिर से ओलि... ऐसा करते-करते अब हमने २० ओलि पूरी कर ली हैं। मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूँ ताकि आप समझें कि मैंने ऐशो-आराम से रहने या अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए चोरी नहीं की। और

महाराज साहेब! एक दिन, एक सुनहरा सवेरा हुआ। इन सभी पापों से मुक्त होने का दिन... मुझे पता चला कि इस शहर में, एक अरबपति, ईश्वर से डरने वाले श्रावक ने अपने विशाल बंगले की छत पर एक शानदार घर-मंदिर बनवाया है। उस मंदिर में, मूलनायक संगमरमर के हैं, लेकिन उन्होंने उस देरासर में पाँच इंच की एक सोने की प्रतिमा भी स्थापित की है... मैंने सोचा, 'अगर मैं चाँदी या पंचधातु की प्रतिमाएँ चुराता हूँ, तो मुझे कई चुरानी पड़ेंगी... इसके बजाय, अगर मैं यह एक सोने की प्रतिमा ले लूँ, तो मुझे एक बड़ी राशि मिल जाएगी... मुझे २५-५० प्रतिमाएँ पिघलाने का पाप नहीं करना पड़ेगा। यह एक प्रतिमा मुझे २५-५० प्रतिमाओं जितना पैसा दिला देगी...' और इसलिए, दर्शन करने के बहाने, मैं एक-दो बार चौथी मंजिल की छत पर उस देरासर में गया। मैंने सप्ताह के किसी कार्य-दिवस पर और वह भी ग्यारह बजे के बाद जाने की योजना बनाई। इस तरह, सेठ और परिवार के अन्य लोग कार्यालय में होंगे, तो प्रतिमा चुराने में कोई समस्या नहीं होगी...' और मैंने एक शनिवार का दिन चुना, क्योंकि वहाँ के मूलनायक मुनिसुव्रतस्वामी थे... तो अगर उस दिन कोई मुझसे पूछता, 'तुम यहाँ क्यों आए हो?', तो मेरे पास एक बहाना होता: 'मुझे शनि ग्रह की पीड़ा है। तो एक वैद्य ने मुझे हर शनिवार मुनिसुव्रत प्रभु की भक्ति करने की सलाह दी है। इसलिए हर शनिवार मैं मुनिसुव्रत प्रभु की पूजा करता हूँ... मुझे पता चला कि वे यहाँ के मूलनायक हैं, तो मैं यहाँ पूजा करने आया हूँ...' ११ बजे, मैं देरासर पहुँचा। सौभाग्य से, वहाँ कोई नहीं था... और अधिक समय बर्बाद किए बिना, मैंने सोने की प्रतिमा उठाई और उसे अपने थैले में रख लिया। प्रतिमा छोटी थी, इसलिए वह एक छोटे से थैले में आ गई। मेरा पूजा का बटुआ वही थैला था। और मैं भागा। लेकिन तभी, सेठजी, जो अपने पूजा के वस्त्रों में ऊपर आए थे, उन्होंने मुझे देख लिया। मैं पूरी तरह से डर गया था। मेरी घबराहट देखकर, वे मुझसे कुछ कहने ही वाले थे, कि मैं भाग खड़ा हुआ... मैंने सोचा, 'अब सब खत्म! मेरी चोरी पकड़ी जानी तय है। क्योंकि मैं ऊपर अकेला था, मालिक ने मुझे भागते हुए देखा है, और वह तुरंत देरासर से सोने की प्रतिमा को गायब पाएगा, तो वह मुझे ज़रूर पकड़ लेगा।' मैं तेज़ी से सीढ़ियाँ उतरने लगा। जल्दबाज़ी में, मैं एक बार गिर भी गया। मुझे कहीं चोट लगी, लेकिन उस पर ध्यान दिए बिना, मैं फिर भागा। मैं बंगले से बाहर निकलकर बंगले के गेट तक पहुँच गया, लेकिन उसका दरवाज़ा बंद था। और दो चौकीदारों ने मुझे रोक लिया। 'सेठजी आपको ऊपर बुला रहे हैं।' मैंने ऊपर देखा, और सेठजी छत से देख रहे थे... उन्होंने ऊपर से ही चौकीदारों को निर्देश दे दिया था... अब भागने या लड़ने का कोई मौका नहीं था। मैं कोई गुंडा या बदमाश नहीं था। मैं एक साधारण, लाचार जैन था, अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए मजबूर एक जैन, बिना किसी गलती के नौकरी से निकाला गया एक बेरोज़गार जैन... अगर मैं चालाक होता, तो नौकरी करने के बजाय व्यापार करता। लेकिन मैं स्वभाव से भोला भी था। इसीलिए मेरे जैसे व्यक्ति को नौकरी करनी पड़ती है। मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। जेल की सलाखें मेरी आँखों के सामने आ गईं। पिछली तीन प्रतिमाओं की चोरी का भी पता चल जाएगा, जिससे पूरे समाज में बदनामी होगी... सब मुझे महापापी कहेंगे! चोर! नीच! नास्तिक! प्रभु के परम भक्त मुझ पर थूकेंगे, क्योंकि मैंने भगवान की 'हत्या' की थी! यह सब १०-२०-३० दिनों में खत्म हो जाएगा, लेकिन मेरे परिवार का क्या? क्या वे सड़कों पर बैठकर भीख माँगेंगे? क्या मेरी पत्नी मेरे बच्चों के साथ किसी देरासर के बाहर बैठकर रो-रोकर भीख माँगेगी? क्या वह किसी अन्नक्षेत्र में जाकर, पेट भरने के लिए लाइन में लगकर, सबकी बेइज़्ज़ती सहकर

खाना लेगी... या वह ईसाइयों से पर्याप्त आर्थिक मदद लेकर ईसाई बन जाएगी? या वह किसी लंपट आदमी से पैसे लेकर अपने सतीत्व को भंग होने देगी?... गरीब, भूखे परिवारों में होने वाली कई घटनाएँ मेरे मन में आ गईं। क्या मेरा परिवार भी ऐसे ही किसी संकट में फँस जाएगा?... एक तरफ मेरे विचार चल रहे थे, और दूसरी तरफ मेरे पैर सेठजी के बंगले की ओर चलने लगे! मैं दो चौकीदारों के साथ सेठजी के विशाल हॉल में दाखिल हुआ। अच्छी बात यह थी कि चौकीदारों ने मेरे साथ किसी भी तरह से–न शब्दों से, न चेहरे के भावों से, न हाथों से–कोई दुर्व्यवहार नहीं किया था... किसी भी तरह से नहीं। वे केवल सेठजी के आदेश का पालन कर रहे थे कि मुझे उनके पास ले आओ। मैं हॉल में खड़ा था कि सेठजी कपड़े बदलकर आ गए। मैंने उनके चेहरे पर कोई गुस्सा या तिरस्कार नहीं देखा। अत्यंत प्रेम, आत्मीयता और सम्मान के साथ, उन्होंने कहा, 'कृपया बैठिए...' 'बैठ' कहना एक सामान्य सम्बोधन होता। 'बैठिए' सम्मानजनक था। मैं डर के मारे ज़मीन पर बैठने ही वाला था कि सेठजी ने तुरंत मेरे हाथ पकड़ लिए। उन्होंने कहा, 'डरिए मत। आप जैन हैं, मेरे स्वधर्मी हैं, मेरे भाई हैं... कृपया सोफे पर बैठिए...' मुझे बहुत राहत महसूस हुई; उनके शब्दों में एक अद्‌भुत शक्ति थी। मैं सोफे पर बैठ गया। 'अब बताइए, आपको यह चोरी क्यों करनी पड़ी? आप एक सज्जन व्यक्ति लगते हैं। मुझे विश्वास है कि आपने यह किसी मजबूरी के कारण ही किया है। मैं उसके बारे में जानना चाहता हूँ।' वे मेरे ठीक बगल में बैठ गए थे, मेरे दोनों हाथों को अपने हाथों में लेकर प्यार से सहला रहे थे... बस। मेरी आँखें भर आईं। मेरी झिझक दूर हो गई। मैं कब सोफे से खिसककर सेठजी के चरणों में गिर पड़ा और फूट-फूटकर रोने लगा, मुझे पता ही नहीं चला। सेठजी ने मुझे रोने दिया। अब उन्होंने मुझे ऊपर बैठाने का इशारा भी नहीं किया; वे समझ गए कि 'मुझे इसी तरह अधिक शांति मिल रही है, न कि उनके बगल में सोफे पर बैठकर...' और उनके चरणों में उकड़ूँ बैठकर, मैंने अपनी दुःखभरी कहानी सुनाई... मैंने यह भी बताया कि मेरी २०वीं ओलि चल रही थी... सेठजी शांत मन से सुन रहे थे। वे मेरी तरह ज़ोर-ज़ोर से नहीं रोए, लेकिन उनकी आँखें भी आँसुओं से भीगी हुई थीं। मुझे पता ही नहीं चला कि उनकी पत्नी कब से आकर मेरे पीछे खड़ी थी। सेठजी के इशारे के कारण, वह चुपचाप खड़ी होकर सुनती रही... जैसे ही मेरी कहानी समाप्त हुई, सेठानी बोलीं, 'मैंने आपसे कई बार कहा है कि आप नीलामियों में भाग लेते हैं, मंदिर बनवाते हैं, और संघ निकालते हैं... वह सब ठीक है। लेकिन आपको हमारे जैन भाइयों पर और भी अधिक ध्यान देना चाहिए। वे बहुत ज़रूरतमंद हैं... लेकिन आपने मेरी बातों पर कभी ज़्यादा ध्यान नहीं दिया...' सेठानी के शब्दों में एक मीठी झिड़की थी, और सेठजी ने मुस्कुराते हुए क्षमा माँगने के लिए अपने दोनों कान पकड़ने का इशारा किया। और उन्होंने मुझसे कहा, 'देखिए... आज से मैं आपको अपने यहाँ नौकरी पर रख रहा हूँ। और वह भी आपकी पुरानी नौकरी के वेतन से डेढ़ गुना वेतन पर! दूसरा, अब तक आपने धर्मस्थानों से चुराकर लगभग कितनी राशि प्राप्त की है, वह मुझे बताइए; मैं उन-उन स्थानों पर उससे अधिक राशि दान कर दूँगा। तीसरा, आप दोनों को अपनी ओलि का पारणा मेरे घर पर करना होगा, और उसमें... आपको अपने परिवार को साथ लाना होगा... चौथा, आपको अभी इसी समय अपने हाथों से इस सोने की मूर्ति को सम्मानपूर्वक ऊपर पुनः स्थापित करना है और प्रभु से क्षमा माँगनी है। ऐसा करने से, आप एक बड़े पाप से बच जाएँगे... और पाँचवाँ, आपको तुरंत इन सभी पापों को लिखकर मेरे साथ आचार्य भगवंत के पास आना है। उनसे `प्रायश्चित्त` लेकर शुद्‌ध हो जाइए...' मैं फिर से

उनके चरणों में गिर पड़ा, फिर मुड़कर उनकी पत्नी के चरणों में गिर पड़ा... मेरे मुँह से शब्द निकले, 'आप ही मेरे भगवान हैं...' बस; और कुछ कहने की शक्ति मुझमें नहीं थी। मैं सेठजी के साथ छत पर गया और अत्यंत श्रद्धा के साथ मूर्ति को वहाँ पुनः स्थापित किया। उनसे विदा लेकर, मैं घर गया और अपनी पत्नी को सब कुछ बताया। तुरंत, मेरी पत्नी मुझे वापस सेठजी के बंगले पर ले आई और बोली, 'यही बहुत है कि आपने इन्हें अपनी नौकरी में रख लिया। लेकिन हमें डेढ़ गुना वेतन नहीं चाहिए। हमें केवल उतना ही वेतन चाहिए जितना इन्हें पुरानी नौकरी में मिल रहा था। इनके काम को देखकर, आप जो भी बढ़ोतरी करेंगे, जैसे किसी अन्य कर्मचारी के लिए करते, वह हमें स्वीकार होगी।' यह मेरी पत्नी का बड़प्पन था! चार दिन बाद, हमने सेठजी के बंगले पर अपना उपवास तोड़ा, और उन्होंने हमारे पूरे परिवार की बड़े भाव से सेवा की। मेरी पत्नी ने हमारे तीनों बच्चों को ठीक से समझा दिया था: 'ज़्यादा मत खाना, कोई शोर मत मचाना, वहाँ किसी चीज़ को हाथ मत लगाना, और सेठजी जो कुछ भी दें, उसे स्वीकार मत करना...' तीनों बच्चे संस्कारी थे और उन्होंने अपनी माँ की बातों का पूरी तरह से पालन किया... बच्चों के सदाचारी पालन-पोषण को देखकर सेठजी अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने बाद में मुझसे कहा भी, 'आमतौर पर, मुझे `साधर्मिकों` की सेवा में कम रुचि है! मैं सोचता था कि `साधर्मिक` काम नहीं करते और दूसरों के पैसे पर जीना चाहते हैं... लेकिन आपके परिवार को देखने के बाद, मुझे निश्चित रूप से लगता है कि कई `साधर्मिक` नेक होंगे, और वे केवल लाचारी में ही हाथ फैलाते होंगे...' और इसीलिए मैंने अब `साधर्मिकों` का काम भी अपने हाथ में ले लिया है।' साहेबजी! उन कठिनाई के दिनों में, मैं कई दुर्भावनाओं से भर गया था। (१) ये सभी आचार्य भव्य आयोजन करते हैं और खूब खर्च करते हैं, लेकिन हम जैसे लोगों के बारे में कोई नहीं सोचता। (२) ये अमीर लोग भी केवल देरासर बनाने, भव्य बोलियाँ लगाने, और `उपाधान`, `नव्वाणु`, और `संघ` प्रायोजित करने में ही रुचि रखते हैं क्योंकि वहाँ उन्हें प्रसिद्धि मिलती है। प्रसिद्धि के भूखे इन लोगों को हमारे भोजन के भूखे पेट नहीं दिखते। इन धनवानों को धन के अहंकार ने अंधा कर दिया है! (३) ये प्रमुख जैन अपने बेटे-बेटियों की शादी में करोड़ों खर्च करते हैं; परिवार में कोई तपस्या भी करे, तो लाखों रुपये खर्च करते हैं। वे संगीतकारों और एंकरों पर, इवेंट मैनेजमेंट, कैटरर्स, और निमंत्रण पत्रों पर लाखों खर्च करते हैं। ये सब लोग हमें क्यों नहीं देख सकते, जो मुश्किल से अपना जीवन जी रहे हैं?... साहेबजी! अब मुझे लगता है कि दूसरों के प्रति दुर्भावना रखने से मुझे कुछ नहीं मिलता। उन्हें क्या करना चाहिए, यह उन्हें सोचना है। मुझे केवल यह देखना है कि मेरी कठिनाइयाँ मेरे पूर्वजन्म के पापकर्मों के कारण उत्पन्न हुई हैं... मुझे उन्हें समभाव से और धर्म के मार्ग पर रहकर सहन करना चाहिए... बस इतना ही! वही धनी सेठ और उनकी पत्नी, जिनके लिए मैं इतनी द्वेष भावना रखता था, मेरे भगवान बन गए। उनकी महानता मेरे और मेरे परिवार के जीवन का कारण बनी। जैसे सभी `साधर्मिक` झूठे नहीं होते– कुछ हो सकते हैं, लेकिन अधिकांश अच्छे होते हैं–वैसे ही, सभी धनी लोग बुरे नहीं होते। कुछ हो सकते हैं, लेकिन अधिकांश दयालु, स्नेही, सरल और विनम्र होते हैं... आज, मुझे अपने `जिनशासन` पर बहुत गर्व है। मेरे `जिनशासन` में ऐसे जीवंत, जाग्रत, क्रियाशील अरबपति जैन हैं जो अपने ही घर से सोने की मूर्ति चुराने वाले से भी इतना निश्छल प्रेम दिखाते हैं, जो प्रसिद्धि या यश की किसी भी भूख के बिना परोपकार के कार्य करते हैं... कृपया मुझे प्रायश्चित्त प्रदान करें।

(13) पति का धन किसी न किसी रूप में मेरा ही माना जाता है। फिर भी मैंने उनसे बिना पूछे, उनकी जेब से और तिजोरी से चुपचाप पैसे निकाले हैं। पैसे लेने के बाद भी मैंने उन्हें कभी बताया नहीं। उन्होंने कभी कुछ कहा नहीं, कभी मुझसे पूछा नहीं, कभी मना भी नहीं किया... लेकिन धार्मिक समझ आने के बाद अब मुझे स्पष्ट लगता है कि मुझे पैसे केवल उनसे पूछकर ही लेने चाहिए थे, या कम-से-कम लेने के बाद उन्हें बताना चाहिए था।

पति घर-खर्च के लिए पैसे देते थे, लेकिन बच्चों की इच्छाएँ पूरी करने और अपनी कुछ ज़रूरतों के लिए मुझे और चाहिए होते थे। पहले जब मैंने माँगा था, तो उन्होंने गुस्से में कहा था,

"फ़ालतू खर्च बंद करो... तुम्हें ज़रा भी समझ है कि दुनिया कैसे चलती है?"

उसके बाद मैंने अपनी व्यक्तिगत इच्छाएँ तो कम कर दीं, लेकिन बच्चों की इच्छाएँ पूरी किए बिना मुझे चैन नहीं मिलता था। मैं उन्हें समझाने की कोशिश करती, लेकिन आखिर वे बच्चे ही तो हैं! इसलिए बड़ी माँगों के लिए तो साफ़ मना कर देती थी, लेकिन खाने-पीने, नाश्ते और बाहर घूमने जैसी छोटी-छोटी इच्छाएँ पूरी कर देती थी। इसी कारण मैं इस प्रकार चोरी करने लगी।

यह चोरी अभी तक पूरी तरह बंद नहीं हुई है। उनके क्रोधी स्वभाव को देखकर उनसे पूछने में डर लगता है, क्योंकि मुझे पता है कि वे मना ही कर देंगे। और यदि लेने के बाद बता भी दूँ, तो भी उनके गुस्से का सामना करना पड़ेगा। फिर भी मैं निश्चित रूप से इस चोरी को कम करने का प्रयास करूँगी। हृदय की गहराइयों से मैं इस पाप के लिए मिच्छामी दुक्कडं माँगती हूँ।

(14) जब भी मैं सब्ज़ी या फल खरीदने जाती हूँ, तो चुपचाप चार-पाँच मिर्चियाँ, दो-तीन नींबू या एक-दो टमाटर थैले में डाल लेना मेरी आदत बन गई थी। अधिकतर सब्ज़ीवाले का ध्यान ही नहीं जाता था, क्योंकि मैं यह चोरी तभी करती थी जब उसकी नज़र कहीं और होती थी। यह भी संभव है कि उसे शक होता हो, लेकिन यह सोचकर वह चुप रहता हो कि अगर कुछ कहा तो मैं उससे सामान लेना बंद कर दूँगी और किसी और के पास चली जाऊँगी।

जो भी हो, विवाह के बाद से अब तक – पूरे 25 वर्षों तक – मैंने इस तरह असंख्य बार चोरी की है, शायद हज़ारों बार! और सबसे बड़ी बात यह है कि हमारे घर में कोई आर्थिक तंगी नहीं थी। नींबू, मिर्च, टमाटर जैसी तुच्छ चीज़ें, वह भी इतनी कम मात्रा में, चोरी करने की मुझे कोई आवश्यकता ही नहीं थी। फिर भी मेरा स्वभाव कितना नीच था!

अब मैंने यह सब पूरी तरह छोड़ दिया है। मैं संकल्प करती हूँ कि भविष्य में ऐसी भूल कभी नहीं करूँगी। फिर भी 25 वर्षों में गरीब सब्ज़ीवालों से हज़ारों बार की गई इस चोरी के पाप के लिए कृपया मुझे प्रायश्चित्त प्रदान करें।

(15) एक बार मैं सड़क पर जा रही थी, तभी मेरी नज़र सड़क पर पड़े हुए सौ-सौ रुपये के नोटों की एक गड्डी पर पड़ी। ऐसा लग रहा था कि किसी ने बैंक से पैसे निकाले होंगे और चलते समय वह गड्डी गिर गई होगी। भीड़ होने के बावजूद किसी और की नज़र उस पर नहीं पड़ी थी।

महाराज साहेब! उन दिनों हमारा परिवार अत्यंत कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा था। मैंने तुरंत झुककर वह

गड्डी उठाई, अपने पर्स में रखी और जल्दी से वहाँ से चली गई।
मैंने प्रवचन में सुना था कि यदि कहीं भी, यहाँ तक कि सड़क पर भी, पैसे या गहने पड़े मिलें, तो उन्हें उठाना नहीं चाहिए। उन पैसों को धार्मिक कार्य में भी उपयोग नहीं किया जा सकता। उन्हें जैसा भाग्य हो, वैसा होने देना चाहिए। हाँ, यदि मालिक मिल जाए तो लौटा देना चाहिए। अधिक-से-अधिक यह किया जा सकता है कि उचित घोषणा कर दी जाए कि "यह वस्तु गुम हुई है, मालिक पहचान बताकर ले जाए।" और यदि फिर भी मालिक न मिले, तभी उसे धार्मिक कार्य में लगाया जा सकता है।
मैंने उपाश्रय में ऐसी घोषणाएँ अंगूठी, चेन आदि के लिए कई बार सुनी थीं। यह सब जानते हुए भी, उस समय मुझे स्वयं पैसों की आवश्यकता थी, इसलिए मैंने वह रकम रख ली। वह राशि केवल 10,000 रुपये थी, लेकिन यह घटना 1990 की है... उस समय 10,000 रुपये आज के दो से पाँच लाख रुपये के बराबर थे।
महाराज साहेब! मैं सूरत के नानपुरा क्षेत्र में राजेश्वर अपार्टमेंट में रहती थी। पास ही सुमेरु टावर में किसी विषय पर प्रवचन सुनते समय मुझे वर्षों पहले की यह भूल याद आ गई। प्रवचन के बाद मैंने निजी रूप से महाराज साहेब को सब कुछ बताया और उसी क्षण घर से 10,000 रुपये लाकर उनके निर्देशानुसार साधार्मिक भक्ति में अर्पित कर दिए।
लेकिन उस पाप की आलोचना शेष रह गई थी। मुझे यह भी नहीं पता था कि किए गए पापों की आलोचना और स्वीकारोक्ति भी करनी होती है। इसलिए मैंने तब कोई आलोचना नहीं की। हाल ही में श्रुतज्ञान की एक ऑनलाइन कक्षा में यह सब समझ में आया, और इसलिए अब मैं यह आलोचना कर रही हूँ।
इस विषय में मैंने मूल 10,000 रुपये तो लौटा दिए हैं, लेकिन उस घटना को 30 वर्ष हो चुके हैं। उसका ब्याज मैंने नहीं दिया है। आज हमारी आर्थिक स्थिति सामान्यतः अच्छी है, फिर भी 30 वर्षों का ब्याज काफी अधिक होगा, और मेरे पति शायद इतनी बड़ी राशि देने के लिए सहमत न हों।
दूसरी बात यह है कि चोरी के पाप का प्रायश्चित्त अभी भी शेष है। पैसे लौटाना प्रायश्चित्त नहीं माना जाता; वह तो कर्तव्य है। किसी का पैसा लिया है, तो लौटाना ही पड़ता है – भले ही वह चोरी न भी हो। इसलिए "चोरी" नामक पाप का अतिरिक्त प्रायश्चित्त अभी बाकी है। कृपया मुझे इसके लिए प्रायश्चित्त प्रदान करें।
(16) उस समय मैं साझेदारी के व्यापार में थी। कई लेन-देन ऐसे होते थे, जिन्हें सरकार को दिखाना नहीं होता था, इसलिए हम दोनों अपने-अपने डायरी में उनका संक्षिप्त उल्लेख कर लेते थे। हर छह से बारह महीने में हिसाब मिलान होता था।
मेरी डायरी में मैंने लिखा था –
"मुझे साझेदार को 3 लाख रुपये देने हैं।"
लेकिन किसी कारणवश मेरे साझेदार ने अपनी डायरी में यह नहीं लिखा कि "मुझे उससे 3 लाख रुपये लेने हैं।"
जब हिसाब मिलाया गया, तो उसने इस विषय का कोई उल्लेख नहीं किया। मेरी डायरी में यह साफ़ लिखा हुआ था, और मुझे यह पूरी तरह पता था... फिर भी मैंने जानबूझकर कुछ नहीं कहा, क्योंकि मुझे 3 लाख रुपये का लाभ हो रहा था। मेरा कर्तव्य था कि मैं उसे सच्चाई बताती और उसके पैसे लौटा देती। उसे भले ही याद न

हो, लेकिन मुझे पता था कि वह पैसा उसी का है। और उस समय ऐसा भी नहीं था कि मैं किसी आर्थिक मजबूरी में थी। व्यापार अच्छा चल रहा था, फिर भी मेरे मन में लोभ उत्पन्न हो गया।
मन में आया –
“बिना किसी प्रयास के, बिना सीधी चोरी के, यदि इतना धन मिल रहा है, तो क्यों न ले लिया जाए?”
वर्ष बीत गए। एक बार मेरे ही भाई, जो महाराज साहेब हैं, उनके प्रवचन में इस विषय पर कुछ सुना, तो यह घटना मुझे याद आ गई। रात को मैंने अपने भाई महाराज साहेब को सब कुछ बता दिया। उन्होंने कहा,
“यदि सामर्थ्य है, तो अब भी वह पैसा लौटा दो। क्यों ऐसा कारण बनाना कि भविष्य के जन्मों में तुम्हें दस गुना या लाख गुना लौटाना पड़े?”
मैं मुंबई गई, अपने पुराने साझेदार से मिली और तीन लाख रुपये लौटा दिए। वह अत्यंत आश्चर्यचकित हो गया। जब मैंने उसे सच्चाई बताई और पश्चात्ताप प्रकट किया, तो मेरे पश्चात्ताप के आँसू उसके आनंद के आँसुओं में मिल गए। उसने कहा,
“मित्र! आजकल तो लोग अपना हक़ का पैसा भी माँगने पर नहीं लौटाते। सामर्थ्य होने पर भी नहीं देते। और यदि देते भी हैं, तो देर से या कम देते हैं... ऐसी स्थिति बना देते हैं कि उधार देने वाला ही जरूरतमंद लगने लगता है। लेकिन तुमने तो अद्‌भुत कार्य किया है। तब भी मुझे पता नहीं था, आज भी नहीं, और हमारी साझेदारी भी कब की समाप्त हो चुकी है। फिर भी इतने वर्षों बाद (छह वर्ष हो चुके थे...) तुम इतनी बड़ी राशि लौटाने आए हो। हज़ार-हज़ार धन्यवाद!”
मैंने कहा,
“मित्र! इसमें धन्यवाद की कोई बात नहीं है। क्योंकि मैं छह वर्षों के 3 लाख रुपये का ब्याज भी नहीं दे रही हूँ। यदि मैं मात्र 1% से भी ब्याज जोड़ूँ, तो मुझे 2 लाख 16 हज़ार रुपये ब्याज देना पड़ेगा। वह देती, तब धन्यवाद के योग्य होती। पर मैं उतनी उदार नहीं हूँ...”
वह हँस पड़ा और बोला,
“मेरे लिए ये तीन लाख ही बहुत हैं।”
मुझे संतोष है कि कम-से-कम कुछ हद तक मैं धन-लोभ और चोरी की प्रवृत्ति से बच सकी। न जाने ये गहरे संस्कार पूरी तरह कब नष्ट होंगे? मुझे मोक्ष कब मिलेगा? आप सभी महात्मा वास्तव में धन्य हैं, जो इन सब पापों से मुक्त हैं।
घर पर मैं अक्सर 18 पापस्थानकों का स्तवन सुनती हूँ और रोती हूँ, यह सोचकर –
“मैं इस पापमय संसार का त्याग कब करूँगी और श्रमण कब बनूँगी?”
साहेबजी!
कृपया मुझे प्रायश्चित्त देकर शुद्‌ध करें...
(17) मुझे याद है कि बचपन में, जब हम सूरत में रहते थे, तब वाड़ी क्षेत्र के उपाश्रय में चातुर्मास के लिए एक साधु महाराज साहेब पधारे थे। मैं प्रतिदिन उनके दर्शन के लिए जाता था। कुल मिलाकर वहाँ 25 से अधिक साधु भगवंत थे, लेकिन मैं और मेरे 8-10 मित्र केवल निर्मल्यश म.सा. के पास ही जाते थे, क्योंकि वे बहुत

अच्छी कहानियाँ सुनाते थे।
मैंने उनके पास लगभग 20 प्रकार के अलग-अलग बॉलपॉइंट पेन देखे थे। वे सभी महँगे और अत्यंत उत्तम गुणवत्ता के थे। हमने पहले कभी ऐसे पेन नहीं देखे थे। मुझे वे बहुत पसंद आ गए। आज से लगभग 40 वर्ष पहले, हम जैसे बच्चों के लिए ऐसे पेन बहुत दुर्लभ हुआ करते थे। रोज़-रोज़ उन पेन को देखते-देखते मेरे मन में उन्हें पाने की तीव्र इच्छा उत्पन्न हो गई।
महाराज साहेब से माँगने में मुझे शर्म आ रही थी, लेकिन चोरी करने में शर्म नहीं आई। दोपहर में जब वे गोचरी के लिए गए, तब मैं उनके स्थान पर गया और जिन तीन पेन मुझे सबसे अधिक पसंद थे, उन्हें चुरा लिया।
रात को प्रतिक्रमण के बाद मैं और मेरे मित्र महाराज साहेब के पास कथा सुनने गए। तब उन्होंने हमसे कहा, "मेरे तीन पेन चोरी हो गए हैं, और यहाँ केवल तुम लोग ही आते हो। यहाँ तो सफ़ाई करने वाला भी नहीं आता। और उन पेन का किसी और के लिए क्या उपयोग होगा? इसलिए यदि तुममें से किसी ने वे पेन लिए हों, तो अभी या बाद में मुझे बता देना। यदि तुम्हें पेन चाहिए हों, तो तुम रख सकते हो, मैं नए मँगा लूँगा... लेकिन इस प्रकार साधु की वस्तुओं की चोरी करना बहुत बड़ा अपराध माना जाता है..."
इससे हम सभी पर संदेह आ गया। यदि किसी एक को दोषी ठहराया जाता, तो बाकी सब निर्दोष सिद्ध हो जाते। एक क्षण के लिए मेरे मन में आया –
"मुझे महाराज साहेब को बता देना चाहिए कि पेन मैंने लिए हैं।"
मुझे यह भी पता था कि महाराज साहेब वैसे भी मुझे वे तीनों पेन दे ही देते। लेकिन अपनी गलती स्वीकार करने में मुझे अत्यंत कठिनाई हुई, इसलिए उस समय मैंने स्वीकार नहीं किया। फिर कथा शुरू हो गई और चोरी का विषय वहीं समाप्त हो गया।
अगले दिन जब मैं सुबह वंदन करने गया, तो महाराज साहेब अकेले थे। उन्होंने मुझसे कहा, "यह जो मैत्रा नाम का लड़का यहाँ आता है, वह एक बार इन पेन को देखकर बहुत तारीफ़ कर रहा था – कितने अच्छे हैं, वगैरह-वगैरह। उसके चेहरे पर इनके प्रति इच्छा साफ़ दिखाई दे रही थी, और वह पेन हाथ में लेकर उलट-पलट भी कर रहा था... तो तुम्हें क्या लगता है? क्या हो सकता है कि उसी ने पेन चुराए हों?"
यह सुनकर मुझे बहुत राहत मिली कि उन्हें मुझ पर ज़रा भी संदेह नहीं था। और उसी क्षण मैंने एक और घोर पाप किया। मैंने उनके संदेह को और मज़बूत कर दिया। मैंने कहा,
"मैत्रा एक गरीब परिवार से है। उसने जीवन में ऐसी चीज़ें कभी नहीं देखी हैं, इसलिए उसके द्वारा चोरी किए जाने की संभावना काफ़ी ज़्यादा है। लेकिन साहेबजी! कृपया उससे कुछ मत पूछिए... उसकी बेवजह बदनामी होगी..."
महाराज साहेब ने कहा, "बदनामी कैसी? मैं तो सार्वजनिक रूप से नहीं पूछ रहा हूँ। और न ही किसी और को बताने का मेरा कोई इरादा है। लेकिन मुझे उसे अलग से पूछकर उसकी गलती स्वीकार करवानी चाहिए और उसे सुधारना चाहिए, है न? मेरे मन में उसके प्रति कोई द्वेष नहीं है..."
मुझे लगा कि यदि साहेबजी उससे पूछेंगे और उसके सच्चे इनकार के बाद उनका संदेह दूर हो गया, तो वही संदेह किसी और पर चला जाएगा... और मैं नहीं चाहता था कि यह संदेह आगे बढ़े। इसलिए मैंने कहा,

“साहेबजी! आपकी बात सही है, लेकिन यदि आप उससे इस प्रकार का प्रश्न करेंगे, तो वह बहुत डर जाएगा। यदि उसने चोरी की होगी, तब भी डर जाएगा, और यदि नहीं की होगी, तब भी घबरा जाएगा – उसका स्वभाव ही ऐसा है। और उस गरीब बच्चे को क्यों परेशान करना?... और यदि उसने घर पर यह बात कह दी, तो उसके माता-पिता बहुत व्यथित हो जाएँगे और उसे उपाश्रय आने से ही मना कर देंगे। इसके बजाय आप ऐसा कीजिए – जब हम सभी मित्र आपके पास आएँ, तब चोरी न करने और चोरी के दुष्परिणामों पर एक प्रवचन दीजिए। यदि उससे उसका सुधार हो जाए, तो वही सबसे अच्छा होगा...”
महाराज साहेब ने मेरा सुझाव स्वीकार कर लिया और वैसा ही किया। इस प्रकार मैं पूरी तरह बच निकला।
पहला पाप – मैंने चोरी की।
दूसरा पाप – उस चोरी का दोष मैंने एक पूरी तरह निर्दोष मित्र पर डाल दिया।
और आज भी महाराज साहेब के मन में यह संदेह दृढ़ता से बैठा हुआ है कि “मैत्रा ही वह चोर हो सकता है।”
वर्षों बीत गए हैं, और आज अचानक यह पाप मुझे स्मरण हो आया है। अब मैं महाराज साहेब के सामने यह स्वीकार करूँगा कि वे तीनों पेन मैंने चुराए थे, मैत्रा ने नहीं... और मैंने उस पर झूठा आरोप लगाया था।
हज़ार-हज़ार बार हृदय से – मिच्छामी दुक्कडं।
– X – X –
माय ब्लैक डायरी पार्ट-4
अनेकों जन्मों / भावनाओं की स्वीकृति
चौथा पापस्थान: अब्रहमासेवन = यौन दुर्व्यवहार
(नोट: गले लगाना, चुम्बन, कुचेस्टा = पुरुष और स्त्री के बीच शारीरिक सम्बन्ध से जुड़े अनुचित क्रियाकलाप, सेक्स = अब्रहम, मैथुन... होमो = जब स्त्री स्त्री के साथ या पुरुष पुरुष के साथ, हस्तमैथुन = एम.बी. = जब पुरुष या स्त्री स्वयं पर कुचेस्टा करता है। ऊपर दिए गए अर्थ पाठक को समझने में आसान बनाने के लिए हैं।)
एक महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि मोबाइल फोन, ब्लू फिल्म, वेब सीरीज... और यह सारी तकनीक के कारण, पूरी दुनिया के अरबों लोगों की कामुक इच्छाएँ और वासना भड़क गई हैं। अन्य सभी को छोड़ दें, लेकिन कई संन्यासी जैन, दानी जैन, ट्रस्टी और स्वयंसेवी जैन, भक्त जैन, तीर्थयात्री जैन और तीर्थों के रक्षक भी राक्षस, दैत्य और भूत-प्रेत में परिवर्तित हो गए हैं। जैन समुदाय में जीवन-स्वीकृति और अन्य माध्यमों से सामने आई घटनाएँ इतनी खतरनाक हैं कि उन्हें यहां स्पष्ट भाषा में लिखना मुश्किल है। इन्हें लिखना कठिन है, पढ़ना या बोलना कठिन है, और पचाना लगभग असंभव है।
इसलिए, जैसे हिंसा और अन्य पापस्थानों में हर बिंदु विस्तार से लिखा गया था, इस पापस्थान में बिंदु उसी प्रकार विस्तार से नहीं लिखे जाएंगे। इसके बजाय प्रत्येक बिंदु संक्षिप्त और अस्पष्ट रूप में लिखा जाएगा। पाठक को अपने स्वयं के पापों को पहचानने और कठोर प्रायश्चित्त करने के लिए इन संकेतों का उपयोग करना चाहिए। अपने जीवन-स्वीकृति में पाठक को अपने पापों को पूर्ण विस्तार में लिखना चाहिए। पापों को संक्षिप्त या अस्पष्ट रूप में नहीं लिखना चाहिए। एक और बात यह है कि यहां वर्णित घटनाओं को किसी एक आत्मा के पाप के रूप में नहीं समझना चाहिए। इन्हें कई आत्माओं के पाप के रूप में समझना चाहिए।

इन सबको लिखने का एकमात्र उद्देश्य पाठक को अपने स्वयं के पाप याद दिलाना और उन्हें व्यवस्थित रूप से लिखवाना है। यहां लिखा गया एक भी बिंदु झूठा नहीं है। केवल वही घटनाएँ शामिल की गई हैं जो वास्तव में हुई हैं। बिंदु दो खंडों में लिखे जाएंगे। पहले खंड में सभी बिंदु ऐसे लिखे जाएंगे जैसे "एक पुरुष अपने पाप लिख रहा हो।" दूसरे खंड में सभी बिंदु ऐसे लिखे जाएंगे जैसे "एक स्त्री अपने पाप लिख रही हो।"
यदि कोई बिंदु समझ में न आए, या स्पष्टीकरण चाहिए, तो इसका समाधान ज्ञानी, गंभीर और वरिष्ठ गुरुभगवंतों की संगति से करना चाहिए।
एक पुरुष या स्त्री को अपने जीवन में किए गए अब्रहम से जुड़े पापों पर खेद होना चाहिए। केवल तभी अपनी गलतियों की स्वीकृति सफल होगी... अन्यथा यह व्यर्थ होगा। मन में यह भावना होनी चाहिए: "अरे! मैंने क्या किया? मैं कितना अशुद्ध, नीच और भ्रष्ट हूँ।"
पुरुष दृष्टिकोण से अब्रहम के पापों का स्वीकार
(1) बचपन में मेरे स्कूल शिक्षक ने मेरे साथ होमो किया। उन्होंने मुझे चॉकलेट और बिस्कुट दिए।
(2) घर का नौकर मेरे साथ होमो करता था। उसने मुझे चॉकलेट और बिस्कुट दिए और धमकी दी कि मेरे माता-पिता को मत बताना।
(3) दुकान पर एक पुरुष ने मेरे साथ होमो किया। उसने मुझे चॉकलेट, बिस्कुट और उपहार दिए और धमकी दी कि किसी को मत बताना।
(4) पड़ोसी अंकल ने मेरे साथ होमो किया और मुझे चॉकलेट आदि दिए।
(5) छुट्टियों में मैं पितामह, मातामह, मामा, मामी, फूफा, बुआ के घर गया। वहां मेरे चाचा या चचेरे भाई ने मेरे साथ होमो किया।
(6) मेरी महिला चचेरी बहन ने मेरे साथ असभ्य कृत्य किए; मुझे इसका आनंद मिला... हालांकि मुझे इसका कोई विशेष समझ नहीं था।
(7) मुझमें बुरी छवियाँ बन गईं। मैंने फिल्मों में अनुचित दृश्य देखे और एम.बी. किया।
(8) मेरी अपनी बहन के प्रति अनुचित विचार आए। जब वह सो रही थी, मैंने उसे अनुचित रूप से छुआ।
(9) अपनी मां के शरीर को देखकर अनुचित विचार आए। जब वह सो रही थी, मैंने उन्हें अनुचित रूप से छुआ।
(10) बाथरूम में, मैंने एम.बी. किया और मां या बहन के कपड़े प्रोत्साहन के रूप में इस्तेमाल किए।
(11) जब घर में कोई नहीं होता, मैंने कपड़े प्रोत्साहन के रूप में लेकर एम.बी. किया।
(12) मैंने फ़िल्म पत्रिकाओं और अखबारों में हिरोइन की अनुचित तस्वीरें देखकर एम.बी. किया।
(13) मैंने असभ्य उपन्यास पढ़कर एम.बी. किया।
(14) मैंने अब्रहम कृत्यों के बारे में सिखाने वाली किताब पढ़कर एम.बी. किया।
(15) स्मार्टफोन आने के बाद, मैंने ब्लू फिल्म, वेब सीरीज देखकर सैकड़ों बार एम.बी. किया। मेरे माता-पिता मेरी पढ़ाई को लेकर बहुत चिंतित थे, लेकिन मैं शिक्षा पर ध्यान नहीं दे पाया और मोबाइल फोन के माध्यम से बार-बार यह पाप करता रहा।
(16) मैंने दोस्तों के साथ निजी रूप से ब्लू फिल्म देखी और फिर दोस्त के साथ होमो किया।

(17) 15 वर्ष की आयु में, मैंने अपनी गर्लफ्रेंड (G.F.) के साथ घर पर गले लगाना, चुम्बन, कुचेस्टा, और अब्रहम किया। यह जीवन में पहली बार था जब मैंने अब्रहम किया। हमने यह पाप एक साथ ब्लू फिल्म देखकर किया... बाद में जब वह रोई, मैंने उसे झूठे आश्वासन देकर शांत किया कि 'मैं वैसे भी तुम्हारा पति बनने वाला हूँ।' उसके बाद, मैंने उसके साथ अनेक बार अब्रहम किया (अपने घर, उसके घर, होटल, मित्र के घर... विभिन्न स्थानों पर)।

(18) मैंने गुप्त रूप से अपनी मां, बहन, बुआ या दादी को कपड़े बदलते हुए देखा और उनके शरीर पर अनुचित विचार किए।

(19) मैंने अपने विंडो से अगले भवन में बुआ को कपड़े बदलते देखा। कई बार जानबूझकर इस पाप को किया। उसी फ़्लैट में, मैंने चाचा और बुआ को अब्रहम करते देखा और कई बार अनुचित विचार किए।

(20) गाँव में, महिलाएँ घर के पिछवाड़े में नहाती थीं। मैंने उन्हें छत से कई बार देखा और अनुचित विचार किए।

(21) मैंने बार-बार एक बुआ और लड़की को पड़ोसी भवन के बाथरूम में नहाते देखा।

(22) जब मैं 18 वर्ष से अधिक था और घर में कोई नहीं था, मैंने सफाई करने वाली महिला को अनुचित दृष्टि से देखा, उसे पैसे दिए और अब्रहम किया। यह मैंने कई बार किया।

(23) एक गरीब लड़की को शिक्षा और घर के लिए पैसे चाहिए थे। मैंने उसकी असहायता का लाभ उठाया, उसे बार-बार पैसे दिए और उसके साथ कई बार अब्रहम किया। मैंने यह तीन गरीब लड़कियों के साथ कई बार किया।

(24) एक युवा महिला हमारी दुकान में काम करती थी, और मेरे इरादे उसके प्रति खराब हो गए। एक दिन, मैंने योजना बनाई, एक निजी अवसर का फायदा उठाया और उसके साथ बलात्कार किया... बाद में उसे बहुत सारा पैसा दिया। दुकान में एक और लड़की थी जिसे ऐसे अनुचित कार्य पसंद थे, और मैंने उसके साथ कई बार अब्रहम किया।

(25) मैंने एक युवा महिला के साथ कुचेस्टा किया, उसके फोटो बनाए और फिर उसे ब्लैकमेल किया... और इस तरह, उसके साथ कई बार अब्रहम किया।

(26) मैं रूस, लास वेगास, और बैंकॉक दोस्तों के साथ गया। वहां, मैंने कई बार वेश्यालयों में गया और अत्यंत तीव्र, अशुद्ध भावनाओं के साथ किया। मैंने अत्यंत नीच कृत्य किए... एक ही रात में कई बार अब्रहम किया। यह सोचकर कि 'मैंने पैसा दिया है,' मैंने महिला की इच्छा या इच्छा की परवाह नहीं की... मैंने उन गरीब महिलाओं की असहायता का फायदा उठाया और पैसों की शक्ति से भयानक पाप किए। इस पाप के दौरान, मैंने ऐसी क्रूरताएँ की जिन्हें लिखा या कहा नहीं जा सकता। आज जब मुझे इसका स्मरण होता है, तो मुझे अत्यंत पछतावा होता है... उन लड़कियों के साथ मैं क्या अत्याचार कर चुका था, जो मेरी बहनों जैसी थीं। अगर मेरी मां या बहन उस स्थिति में होतीं?... पाप करने के बाद, मैं अपने दोस्तों के सामने घमंड करता था कि 'मैंने इतने बार अब्रहम किया...' इस प्रकार मैं अधिक बार पाप करने में गर्व महसूस करता था। मुझे अहंकार था कि 'मेरी पाप करने की क्षमता मेरे दोस्तों से अधिक है...' अक्सर, मैं एक ही रात में नौ बार तक यह कृत्य करता

था।

(23-30) यौन दुर्व्यवहार और विश्वासघात

(23) मैंने भारत और विदेश में कई बार नग्न नृत्य देखे, और उनमें नृत्य भी किया। मैंने अभद्र इशारे किए और कई बुरी बातें देखीं। मैंने युवाओं के साथ एक ही रात में कई बार यौन कृत्य (अब्रहम) करने के लिए पैसा खर्च किया। जब एक लड़की ने मेरी क्षमता का मज़ाक उड़ाया, तो मैंने एक ही रात में उसके साथ ग्यारह बार यौन कृत्य किया, सिर्फ यह दिखाने के लिए कि मेरी "शक्ति" कितनी है, इसके लिए दवाइयों का सहारा लिया।

(24) विवाह के लिए मुलाकातों के दौरान, मैंने अनुचित प्रश्न पूछे, अभद्र बातें कीं, और गले लगाना, चुम्बन और दुर्व्यवहार किया। कुछ लड़कियाँ हिचकिचाईं, फिर भी मैंने उन पर यह पाप थोप दिया।

(25) सगाई के बाद, जबकि विवाह अभी लंबित था, मैंने अभद्र बातें और चैटिंग की। मैंने गले लगाना, चुम्बन और दुर्व्यवहार किया। मैं सेक्स करने की कोशिश करता, उसने मना किया। मैंने जबरदस्ती किया; उसने सहमति नहीं दी। फिर मैंने धमकी दी कि सगाई तोड़ दूँगा। फिर भी उसने सहमति नहीं दी, तो मैंने सगाई तोड़ी और कहीं और सगाई की। वहां भी यही किया। वह भी सेक्स के लिए तैयार नहीं थी, लेकिन मेरे दबाव और "अगर सगाई टूट गई तो क्या होगा?" के डर के कारण उसने हाँ कर दी। मैंने उनके साथ सगाई और विवाह के बीच कई बार यौन कृत्य किए।

(26) विवाह से पहले, स्कूल और कॉलेज में मेरी कई गर्लफ्रेंड थीं। मैंने उनके साथ अभद्र चैटिंग की। मैंने अपने अश्लील फोटो उनके मोबाइल पर भेजे और उनके फोटो मांगे, उन्हें तीव्र वासना से देखा। हमने बुरी वीडियो भी एक्सचेंज की। वीडियो कॉल पर, हमने एक-दूसरे के निजी अंग बाथरूम में देखकर दिखाए। मैंने यह कई लड़कियों के साथ कई बार किया। कई बार मैंने अपने भवन की लड़कियों को अपनी गर्लफ्रेंड बनाया और उनके साथ यह पाप किया।

(27) मैं अपने भवन की एक "आंटी" से परिचित हुआ। हम दोनों ने कई बार लिफ्ट में आपसी दुर्व्यवहार किया।

(28) मेरा व्यवसाय बहुत बड़ा है! मैंने अपनी निजी सचिव के साथ कई बार यौन कृत्य किए। वह इसके लिए तैयार थी... मैंने यह सब विवाह के बाद किया, अपनी पत्नी के साथ विश्वासघात करते हुए। व्यवसायिक यात्रा के लिए मैं अक्सर शहर, राज्य, या देश से बाहर जाता, और मेरी निजी सचिव साथ आती... मैंने उस समय और शहर के भीतर भी उसके साथ यौन कृत्य किए।

(29) विदेश में यौन लिप्सा बहुत सामान्य है, इसलिए हर बार नई महिलाओं के साथ सेक्स किया। मुझे साल में लगभग बारह बार विदेश जाना पड़ता था। मैंने एयर होस्टेस के साथ भी यौन कृत्य किए; हर जगह पैसे का लालच देना पड़ा। कई बार, बिना पैसे के भी, विदेशी महिलाएं अपनी इच्छा से आकर्षित हुईं और मैंने उनके साथ यौन कृत्य किया।

(30) साल में दो बार, हम 8-10 जोड़े यात्रा पर जाते। वहां, एक मित्र की पत्नी और मैंने आपसी वासना विकसित की। उसके बाद, हम शहर में निजी रूप से मिले और कई बार सेक्स किया। हम दोनों ने अपने साथी को धोखा दिया... मैंने अपने मित्र के साथ भी विश्वासघात किया।

(31) मैंने अपनी ही साली (पत्नी की बहन) को भी फँसा लिया; उसमें भी मेरे प्रति आकर्षण विकसित हो गया। यह एक सामान्य पहचान से शुरू हुआ, फिर मोबाइल पर अश्लील चैटिंग, फिर फ़ोटो, फिर वीडियो, फिर वीडियो कॉल, फिर शारीरिक रूप से मिलना–गले लगना, चुंबन, दुराचार–और अंत में सेक्स तक पहुँचा! मैंने अपनी साली के साथ कई बार सेक्स किया। मैंने अपनी पत्नी को धोखा दिया, लेकिन मेरी साली ने भी यह नहीं सोचा कि वह अपनी ही बहन के गृहस्थ जीवन में आग लगा रही है।
(32) एक पड़ोस की "आंटी" मुझसे लगभग दस साल बड़ी थीं। उस समय मेरी उम्र लगभग 35 रही होगी। पहचान होने पर हम दोनों फिसल गए और कई बार पाप किए।
(33) मैंने दोस्तों के साथ एक गंदी योजना बनाई। हमने अपनी-अपनी पत्नियों को कारों में बैठाया और सभी ने अपनी कार की चाबियाँ उछाल दीं। जो जिस कार की चाबी पकड़ता, उसे उस कार की महिला के साथ पाप करना होता... इस तरह मैंने अपने दोस्तों की पत्नियों के साथ कई बार पाप किए। इसमें सबकी सहमति थी! दोस्त, दोस्तों की पत्नियाँ, और मैं–सबने हाँ कहा। मैंने अपनी पत्नी को भी दोस्तों को दिया! हमने होटल के कमरों की चाबियाँ बदलकर भी ये पाप किए। मैं और मेरे दोस्त समाज में सम्मानित लोग हैं–धनी, दानदाता, धार्मिक, यहाँ तक कि ट्रस्टी भी–फिर भी हमने ये सारे पाप किए। इन पापों को करने के लिए आमतौर पर माया (छल) और मृषा (झूठ) का सहारा लेना पड़ता है। लेकिन इस "की-चेंज" में छल और झूठ की भी ज़रूरत नहीं पड़ी क्योंकि सबने सहमति दी थी। मैंने तीव्र वासना के साथ ये पाप किए।
(34-40) धार्मिक स्थलों का अपवित्रीकरण और शोषण
(34) यह विवाह से पहले की बात है। डेरासर (मंदिर) के भीतर भामती (परिक्रमा मार्ग) में एकांत का लाभ उठाकर मेरी गर्लफ्रेंड और मैंने एक-दूसरे को गले लगाया और चुंबन किया।
(35) विवाह से पहले मेरी अलग-अलग समय पर कई गर्लफ्रेंड्स थीं। फिर मेरा वैवाहिक जीवन शुरू हुआ, और उनका भी। लेकिन विवाह के कुछ वर्षों बाद मैंने उन सब से फिर संपर्क किया, अतीत को याद किया, और फिर से अश्लील चैटिंग तथा गंदी फ़ोटो/वीडियो/वीडियो कॉल के पाप कई बार किए। मैं कुछ गर्लफ्रेंड्स से एकांत में मिला और यौन पाप भी किए, और यह सब चलता रहा। मैंने केवल अपनी पत्नी को धोखा दिया। बेचारी, उस पर मुझे पूरा भरोसा था, लेकिन मैंने उसके विश्वास की बिल्कुल रक्षा नहीं की। उसे मेरे पापों के बारे में कुछ भी पता नहीं है... वह अँधेरे में है।
(36) पालिताना की धर्मशालाओं के ए.सी. कमरों में मैंने अन्य महिलाओं के साथ, पैसे देकर लाई गई वेश्याओं के साथ, और अपनी पत्नी के साथ भी सेक्स किया है। मैंने तीर्थ स्थल की पवित्रता का उल्लंघन किया है। इसमें मैंने अन्य महिलाओं के साथ लगभग सात बार, वेश्याओं के साथ लगभग पाँच बार, और अपनी पत्नी के साथ कई बार सेक्स किया।
(37) नवटुक में एकांत का लाभ उठाकर मैंने अपनी पत्नी के साथ दो बार पाप किए। मैंने अन्य महिलाओं के साथ भी दो बार पाप किए। विवाह से पहले जब मैंने नव्वाणु (99-यात्रा) की, तब अपनी गर्लफ्रेंड के साथ पहाड़ पर ही कम से कम 10-12 बार सेक्स किया। हमने कई बार गले लगाया और चुंबन किया। हम हाथ पकड़कर चढ़े। हमने सारी यात्राएँ इसी तरह कीं; चढ़ते-उतरते समय अक्सर अश्लील बातें करते थे, और नीचे धर्मशाला

में मैंने अपनी गर्लफ्रेंड के साथ कई छूट लीं... आयोजक सख्त नहीं थे, महाराज साहेब (साधु) भी ढीले थे, इसलिए नव्वाणु के 45 दिनों में मैंने धर्मशाला के कमरों में कई पाप किए। मेरी 99 यात्राएँ 35 दिनों में पूरी हो सकती थीं, लेकिन ये सारे पाप करने के लिए मैंने 99 यात्राएँ 45 दिनों में पूरी कीं। मैंने गिरनार और शिखरजी में भी कई बार ये पाप किए हैं। विवाह से पहले 99-यात्रा में अपनी गर्लफ्रेंड के साथ, और विवाह के बाद जब तीर्थयात्रा पर गया, तब अपनी पत्नी और अन्य महिलाओं के साथ भी!

(38) मैंने स्कूल और कॉलेज में पढ़ाने वाले शिक्षकों के बारे में भी अनुचित बातें कीं। मैंने उनके शरीर के अंगों को देखा। मैंने दोस्तों से अश्लील टिप्पणियाँ कीं। मैंने बहुत बुरी बातें भी कीं। अपने मन में मैंने उन शिक्षकों के साथ सेक्स के विचार भी रखे... मैंने यह सब 7वीं कक्षा से शुरू किया, और हर साल कई शिक्षकों के लिए मेरे मन में तरह-तरह के विचार और कथन रहे। अत्यंत, अत्यंत बुरे!

(39) जब शिक्षक या लड़कियाँ शौचालय जाती थीं, तो मैंने काँच आदि के माध्यम से उन्हें देखने की कोशिश की। मैंने लड़कियों के वीडियो रिकॉर्ड किए, फिर उन्हें ब्लैकमेल किया, और उनके साथ बुरे काम किए... उसके बाद मैंने उन्हें वही अश्लील वीडियो क्लिप्स दे दीं जो मैंने रिकॉर्ड की थीं। इस तरह मैंने कई लड़कियों को गंभीर रूप से परेशान किया, उनकी ज़िंदगी बर्बाद की, और उनकी पवित्रता नष्ट की... इन सब में उनकी सहमति नहीं थी, लेकिन डर के कारण उन्होंने हाँ कहा।

(40) नवरात्रि के दौरान मैंने लड़कियों के साथ गरबा किया, उनकी सुंदरता को देखा, और उनके शरीर के अंगों को घूरा; उन लड़कियों में भी कोई लज्जा नहीं थी... मैं कई लड़कियों से परिचित हुआ। मैंने कई के साथ गले लगना, चुंबन, और दुराचार किया। नवरात्रि के बाद हर दिन मैंने लड़कियों के साथ सेक्स किया... आख़िरी रात मैंने होटल के कमरे में पूरी रात कई बार पाप किए... मैंने यह हर नवरात्रि में किया। विवाह होने तक मैंने ये पापपूर्ण गतिविधियाँ कीं। विवाह के बाद मैं नवरात्रि गया, लेकिन मेरी पत्नी मेरे साथ थी, इसलिए मैंने अपनी पत्नी के साथ पाप किए... कभी-कभी यदि वह मासिक धर्म (M.C.) आदि के कारण साथ नहीं होती, तो उन दिनों मैंने अन्य महिलाओं के साथ पाप किए। मैंने सुरक्षा का उपयोग किया ताकि लड़की गर्भवती न हो। सुरक्षा के कारण मैं लापरवाह हो गया और पाप करता रहा।

(41-47) किशोरावस्था के पाप और पारिवारिक विश्वासघात

(41) 14, 15, 16 और 17 वर्ष की आयु में, मैं इमारत की छत पर एक गर्लफ्रेंड के साथ जाता था और गले लगना, चुंबन आदि करता था। उन चार वर्षों में मैंने यह सैकड़ों बार किया... और केवल एक ही गर्लफ्रेंड नहीं थी, बल्कि तीन बदलीं... वहाँ आम तौर पर सेक्स नहीं होता था। शायद दो-तीन बार हुआ... हाँ! हुआ था, तीन बार हुआ। यह आपसी सहमति से हुआ।

(42) मेरी मौसी की बेटी हमारे घर रहने आई; उसके सामने मैंने अपने सारे कपड़े उतार दिए। वह घबरा गई और भागने की कोशिश की। मैंने जबरदस्ती उसे पकड़ लिया और गले लगाया व चुंबन किया, फिर उसे छोड़ दिया।

(43) मेरी बुआ की बेटी शादीशुदा थी; वह घर आई, और उसका एक दूध पीता बच्चा था। जब वह बच्चे को दूध पिला रही थी, तो मैंने किसी न किसी बहाने से उसके शरीर के अंगों को देखा... वह लगभग पाँच दिन रही;

मैंने हर दिन कई बार उसके अंगों को देखा और बुरे विचार किए।
(44) जब वह बाथरूम में नहा रही थी, तो मैं मेज़ पर चढ़ गया और काँच से उसे देखा; पाँच में से दो दिनों मैंने इस तरह देखा और बहुत बुरे विचार किए।
(45) मेरी सगी आंटी घर आईं; रात में जब वह गहरी नींद में थीं, और उनके कपड़े अस्त-व्यस्त थे, तो मैंने उनके शरीर के अंग देखे और दुराचार करने की कोशिश की... मैं तब केवल 17 वर्ष का था! मेरी आंटी 42-45 वर्ष की थीं। वह मेरी माँ की उम्र की थीं, फिर भी मैं वासना का गुलाम बन गया और ऐसी गंदी हरकत की।
(46) मैं रात में बीच में जाग गया; मेरे माता-पिता के कमरे से कुछ आवाज़ आ रही थी। मैंने खिड़की के काँच से थोड़ा देखा। मैंने दोनों को सेक्स करते हुए देखा। तेरह वर्ष की उम्र में यह देखकर मेरे मन में कई गंदे विचार आए। मुझे इसे देखना अच्छा लगा; उसके बाद मैंने चोरी-छिपे अपने माता-पिता के सेक्स को कई बार देखा... यह सब देखने के बाद मेरे मन में जो वासना भरे विचार उठे–मैंने अपनी ही सगी बहन को, जो मेरे पास ही सो रही थी, वासना भरी नज़रों से देखा, उसके शरीर के अंग देखे... और बुरे विचार किए।
(47) मेरे माता-पिता बाथरूम में "पाप" कर रहे थे जब मैं घर पहुँचा... मुझे पता चल गया, और वे दृश्य मेरी कल्पना में आने लगे, और अत्यंत बुरे विचार आए... कि मुझे भी यह सब करना चाहिए।
(48-59) कामुक दृष्टि और विकृतियाँ
(48) सुंदर और सजी-धजी महिला मुमुक्षुओं को देखकर मेरे मन में कामुक इच्छाएँ उठीं।
(49) सुंदर साध्वीजियों को देखकर आकर्षण हुआ, लेकिन मैंने तुरंत अपने मन और आँखों को नियंत्रित किया।
(50) कुछ साध्वीजियों के पतले वस्त्रों के कारण उनके भीतर के शरीर के अंग दिखाई दे रहे थे; मन में तुरंत कामुक इच्छाएँ उठीं, फिर मैंने मन को हटा लिया... फिर भी मेरी नज़र कई बार उधर चली गई, फिर मैंने उसे वापस खींच लिया। इसके लिए मुझे गहरा पश्चाताप हुआ। मुझे लगा कि उनसे कहूँ, 'कृपया मर्यादा रखें।' लेकिन मैं ऐसा कुछ कह नहीं सका।
(51) मैंने अभिनेत्रियों की अश्लील तस्वीरें इकट्ठा कीं, उन्हें चूमा, और उन तस्वीरों को देखकर मैंने सैकड़ों बार हस्तमैथुन (M.B.) किया।
(52) मैंने हमेशा 31 दिसंबर की रात को भोग-विलास की रात बनाया है। विवाह से पहले गर्लफ्रेंड्स के साथ, गरीब सुंदर लड़कियों के साथ (पैसे देकर), कभी-कभी वेश्याओं के साथ... और विवाह के बाद अपनी पत्नी के साथ, किसी अन्य महिला के साथ, या वेश्या के साथ। पैसा कितना बड़ा पाप है। मुझे यह अब समझ आता है... यह सब केवल सौंदर्य + धन + शक्ति + स्थिति + दुष्ट बुद्धि के पापों के कारण हुआ... मैंने कम से कम 25 नए साल की रातें इस तरह बिताईं हैं... देश में या विदेश में!
(53) मैं डांस पार्टियों में गया, लड़कियों के साथ नाचा; लड़कियाँ बहुत शराब पीती थीं, मैं बिल्कुल नहीं पीता था क्योंकि मैं होश नहीं खोना चाहता था। जब लड़कियाँ बहुत ज़्यादा नशे में गिर पड़ती थीं, तो उनके कपड़े पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो जाते थे और उनके शरीर के अंग आधे खुले हो जाते थे; मैंने यह सब देखा, तीव्र वासना से देखा, और दुराचार भी किया... मैंने कई डांस पार्टियों में इस तरह पाप किए... मैंने फ़ोटो लिए, वीडियो रिकॉर्ड

किए, और बाद में कुछ लड़कियों को ब्लैकमेल करके आगे फ़ायदा उठाया।
(54) हर साल हमारे समाज में होली-धुलेटी के दौरान रेन डांस कार्यक्रम होता है। मैंने गीले कपड़ों में रेन डांस करती महिलाओं और लड़कियों को वासना भरी नज़रों से देखा। मैंने उनके साथ रेन डांस भी किया, और उसमें जानबूझकर उन्हें छुआ। मैंने उन्हें गले लगाया और चुंबन किया।
(55) मैंने शादी-विवाह के कार्यक्रमों में होने वाले कई रेन डांस में भी ये पाप किए।
(56) घर और होटलों के बाथटब में मैंने अपनी पत्नी और अन्य लोगों के साथ भी सेक्स और अश्लील हाव-भाव किए।
(57) बाथरूम में शॉवर के नीचे नहाते समय मैंने अपनी पत्नी और अन्य लोगों के साथ भी अश्लील हाव-भाव किए।
(58) गर्मियों में अपने फार्महाउस की छत पर रात में मैंने अपनी पत्नी, सेक्रेटरी, और अन्य लोगों के साथ सेक्स किया।
(59) मैंने अपनी पत्नी और अन्य लोगों के साथ ओरल सेक्स किया। मैंने यह तीव्र वासना के साथ किया... दोनों तरफ़ से खून निकल आया!
(60-81) कार्यस्थल पर शोषण और तीर्थ-स्थल के पाप
(60) जब मैं एक महानगर की कंपनी में काम कर रहा था, तो कार्यालय में काम करने वाली एक युवा महिला से मेरी पहचान हुई, और उसके साथ भी मैंने कई प्रकार के पाप कई बार किए... मैंने यह लगभग तीन युवा महिलाओं के साथ किया। उनकी प्रशंसा करके, उनके दुखों में सहारा बनकर, उनके कामों में मदद करके, उनकी बीमारी में देखभाल करके... उन्हें अच्छे उपहार देकर, अपने कामों में उनकी राय पूछकर उन्हें महत्व देकर, उन्हें यात्राओं पर ले जाकर, उनके पसंदीदा व्यंजन, आइसक्रीम और पेय पिलाकर... ऐसे कई तरीकों से मैंने लड़कियों को आकर्षित किया, फुसलाया, और मूर्ख बनाया, और फिर पाप किए।
(61) जब मैंने देरसार में दर्शन (पूजा) की, तो मैंने महिलाओं और लड़कियों की सुंदरता को देखा, उनके शरीर के अंगों को देखा; उनके पतले कपड़ों के माध्यम से जो अंग दिखाई दे रहे थे, उन्हें देखकर कामुक इच्छाएँ जागृत हुईं। मैंने उनके आंदोलनों को भी उत्साह से देखा। कुछ महिलाएँ चमर (मच्छरदानी) पकड़े हुए अधिक नाच रही थीं, और इसे देखकर भी कामुकता जागृत हुई। छोटी लड़कियों के बहुत छोटे कपड़ों के कारण सब कुछ देखकर बुरे विचार आए... महिलाओं के खुलासे वाले कपड़ों के कारण उनके शरीर प्रदर्शित हो रहे थे; इसे देखकर कामुक इच्छाएँ जागृत हुईं। चाहे वह साड़ी हो, ड्रेस, पारंपरिक परिधान, या जींस-टीशर्ट... भयानक अभद्रता सब कुछ में प्रवेश कर गई है। उस समय, मैंने अपनी इच्छा से बार-बार यह सब देखा। मैंने मंदिर में ऐसे पाप किए।
(62) देवी-देवताओं की मूर्तियों के शरीर के अंगों को देखकर बहुत बुरे विचार आए; पूजा के बहाने, मैंने लंबे समय तक देखा, और पूजा करते समय, मैंने उन अंगों को भी छुआ।
(63) जब पुजारी की पत्नी या महिला भक्त मंदिर की सफाई करती थीं, तो उन्हें झुकना पड़ता था। उस समय, मैंने जानबूझकर उनके शरीर के अंगों को देखा... और गंदे विचार आए।

(64) चैत्यवंदन के हॉल के ऊपर गुंबद में, देवी-देवताओं की कई मूर्तियाँ हैं। मैंने उनके भाव, शरीर आदि को ध्यान से देखा और बुरे विचार आए।
(65) जब महिलाओं के समूह मंदिर में पूजा सिखाते थे, तो वे अपने हाथ आगे बढ़ाते और तबले या ताली बजाते समय उन्हें उठाते थे... उन समय, उनके शरीर थोड़े से उजागर हो जाते थे; मैंने उन्हें भी कामुक इरादे से देखा... जब किसी लड़की का दुपट्टा गिरा या किसी महिला की साड़ी का पल्लू गिरा, तो मैंने कामुक इरादे से देखा।
(66) मैंने मंदिर में रखे धार्मिक पर्चों में दानदाता परिवारों की तस्वीरें देखीं; मैंने भगवान के सामने सजधज कर, खुलासे वाले कपड़े पहने सुंदर महिलाओं को ध्यान से देखा।
(67) कार्तिक पूर्णिमा और चैत्र पूर्णिमा जैसे दिनों में, मैं पलिताना की तीर्थ यात्रा पर गया; भीड़ का फायदा उठाते हुए, मैंने महिलाओं और युवा लड़कियों को अनुचित तरीके से छुआ। मैंने बड़ी धोखाधड़ी (माया) का अभ्यास किया ताकि ऐसा लगे कि छूना केवल भीड़ के कारण हुआ और कोई कुछ नहीं कह सके।
(68) ऊपर भारी भीड़ थी; सभी दादा (भगवान) के दरबार में पहुँचने के लिए उत्सुक थे। धक्का-मुक्की के कारण, आठ से दस महिलाएँ और लड़कियाँ गिर गईं। उनके कपड़े अस्त-व्यस्त हो गए; उस समय, मैंने उनके शरीर के अंगों को कामुक इच्छा से देखा।
(69) दो बार ऐसा हुआ कि महिलाएँ गिर गईं। उसके बाद, मुझे भी धक्का लगा। मैं गिरने से खुद को रोक सकता था, लेकिन मैंने जानबूझकर महिलाओं पर गिर गया। इस तरह, मैंने उनके शरीर को कामुकता से छुआ और अश्लील इशारे भी किए। जन्मवंचन (ग्रंथ पाठ) की भीड़ में, मैंने ऐसे सभी पाप किए...
(70) जन्मवंचन के दौरान, लड़कियों और महिलाओं के खुलासे वाले आभूषण और कपड़े देखकर, बड़ी कामुक इच्छाएँ जागृत हुईं। मैंने उनके शरीर के अंगों को गंदे भावनाओं के साथ देखा। मैंने अपनी आँखों से उनकी सुंदरता और शरीर के अंगों का शिकार किया, जान-पहचान वाली महिलाओं से एक बहाने से बात करके। उसमें भी, मैंने अपनी प्रेमिका को देखकर अत्यधिक कामुकता को बढ़ावा दिया... जन्मवंचन का तीन घंटे का कार्यक्रम और फिर प्रभवना का वितरण... इन सब में, मैंने केवल अपनी आँखों और हाथों से पाप किए।
(71) जन्मवंचन जैसे दिनों में, प्रातिक्रमान प्रार्थना के बाद, मैंने पूजा के लिए कई मंदिरों में गया; मैंने भगवान के दर्शन केवल एक या दो मिनट के लिए किए, और मैंने भक्ति के लिए बिल्कुल नहीं बैठा। लेकिन मैंने अपनी आँखों से देखने और अपने हाथों से छूने के द्वारा पाप किए।
(72) जब मैं पलिताना-गिरनार चढ़ रहा था, तो तीर्थ यात्रा के बाद उतर रही लड़कियों और महिलाओं के कपड़े अस्त-व्यस्त हो जाते थे, और कई शरीर के अंग उजागर हो जाते थे; कामुकता का कीड़ा होने के नाते, मैंने उसे देखा... 'वे शील क्यों नहीं बनाए रखते?' ऐसे विचार अब मेरे मन में आते हैं। लेकिन उस समय, मुझे सब कुछ पसंद था। 'अगर शील और टूट जाए तो बेहतर है,' ऐसे मेरे गंदे विचार थे। भले ही उन्होंने अपने कपड़ों की शील को नहीं बनाए रखा, मुझे अपने मन और अपनी आँखों की शील बनाए रखनी चाहिए थी... लेकिन शरीर के अंगों के आंदोलनों को देखकर, मैंने अपनी होश खो दी। मैं जानबूझकर अपनी होश खो रहा था।

(73) मिच्छामी दुक्कड़म्... साहेबजी! लेकिन साध्वी (साध्विजी) के पतले कपड़ों के माध्यम से शरीर के अंग दिखाई दे रहे थे; मैं क्या कह सकता हूँ? मैंने अपनी आँखें हटा लीं, लेकिन मन ने निश्चित रूप से कामुक इच्छाओं का तूफान पैदा किया। इसके लिए, मुझे तब भी गंभीर पछतावा हुआ, कि 'मैंने एक साध्वी के लिए बुरा विचार किया।' क्योंकि वे जो वस्त्र (सादा) पहनती थीं, वह हवा में उड़ रहा था, एक बहुत बुरा दृश्य उत्पन्न हो रहा था। अगर आप उन्हें बताकर कुछ बदलाव ला सकें, तो यह अच्छा होगा।
(74) ग्रीष्म ऋतु में मैं नववानु तीर्थयात्रा में शामिल हुआ। भीषण गर्मी थी, इसलिए स्त्रियों ने पतले वस्त्र और वस्त्र पहने थे। ऊपर से चढ़ाई भी करनी थी, इसलिए पूरे शरीर से पसीना टपक रहा था। वस्त्र गीले हो गए थे... चढ़ाई के कारण वे हांफ रही थीं... उस समय यह दृश्य अत्यंत घृणित था। जब मैं अपनी तीर्थयात्रा पूरी करके उतर रहा था, तो कई लड़कियाँ और स्त्रियाँ दूसरी या तीसरी तीर्थयात्रा के लिए विपरीत दिशा से मुझसे मिलने आती थीं; मैंने जानबूझकर अपनी गति धीमी कर दी, और वासना भरी निगाहों से इन घृणित दृश्यों को देखता रहा।
(75) चढ़ाई से थकी हुई लड़कियाँ और स्त्रियाँ जल कुटिया (परब) के पास छाया में ठंडी हवा में लेट जाती थीं; उनके वस्त्र अस्त-व्यस्त होते थे, और थकान के कारण उन्हें अपने वस्त्रों का भी ध्यान नहीं रहता था... ऐसे समय में, मैं उनके शरीर के उन अंगों को देखता था; विश्राम करने के बहाने मैं वहाँ बैठा रहता था और अपनी आँखों से पाप करता था।
(76) उन लड़कियों के साथ जो खुद इन सभी मामलों में ढीली थीं –और मुझे यह पता था– मैंने बुरी चीजों के बारे में भी बात की, और हम दोनों ने दोहरे अर्थ वाले शब्दों का इस्तेमाल किया। हम एक दूसरे को ऐसे बुरे चुटकुले सुनाने के बाद भी हंसे; मैंने ऐसी लड़कियों के शरीर के अंगों को ऐसे देखा जैसे कि वे सही कह रही हों, और उन्होंने मुझे रोका या डांटा नहीं... वे भी उसी बुरे दिमाग की थीं, चाहती थीं 'लड़के हमारी ओर देखें, आकर्षित हों, और हमसे बात करें...' तीर्थ स्थल पवित्र है, नववानु एक पवित्र अनुष्ठान है, लेकिन मैं और वे लड़कियां अपने मन में बहुत ही दुष्ट हैं... बहुत हो गया! मैं और क्या कह सकता हूं?
(77) छठ (दो दिवसीय उपवास) करने के बाद, मैं सत-यात्रा (सात तीर्थयात्राएँ) के दौरान तीर्थयात्रियों की सेवा करने के लिए शामिल हुआ। सेवा करने के बहाने भी मैंने केवल पाप ही किये। लड़कियों और महिलाओं का समर्थन करना। उनका पूरा भार अपने ऊपर ले रहा हूँ। उन पर पानी छिड़कना–इसे उन्हें नहलाने जैसा समझें। उनके कपड़े भीग जाते थे; उस समय मैंने बहुत कुछ देखा। उन्हें पानी की झोपड़ी में आराम कराना, उन्हें लिटाना... उन्हें पंखा झलना... वे थकान, भूख और प्यास के कारण इतने असहाय हो जाएंगे कि उन्हें पता भी नहीं चलेगा कि कोई उन्हें बुरी नजर से देख रहा है। अगर कोई उन्हें अनुचित तरीके से छू रहा हो तो उन्हें पता भी नहीं चलेगा। उन्हें इस बात का भी कम अहसास होता कि उनके कपड़े सही जगह पर हैं या नहीं... ऐसे समय में, मैंने अपनी आंखों और हाथों से कई पाप किए। मैंने उनके पैर भी दबाए, आदि... फिर मैंने जानबूझकर ऐसी सेवाओं में जाना शुरू कर दिया क्योंकि मुझे यह सब देखकर आनंद आता था... मैंने कई महिलाओं को कई तीर्थयात्राएं पूरी करने में मदद की और पाप किये...
(78) 99-यात्रा में मैं लड़कियों और महिलाओं को खाना परोसता था; वे खाते समय थोड़ा झुक जाती थीं,

इसलिए मैं उनके शरीर के अंगों को देखता था, उन्हें कामुक इरादे से देखता था... मैं अक्सर उनके सामने बैठकर खाना खाता था, फिर मैंने उनकी सुंदरता और शरीर के अंगों को भी देखा... कभी-कभी लड़कियां या महिलाएं मेरी सेवा करने के लिए झुक जाती थीं; उस समय भी, मैंने उनकी सुंदरता और शरीर के अंगों को देखा।

(79) शादी के बाद जब मेरी पत्नी ने सात तीर्थयात्राएँ कीं, तो मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के सभी स्वतंत्रताएँ लीं। सेवा के नाम पर, मैंने शारीरिक इच्छाओं को पोषित किया, लेकिन वहां मैंने इसे अपना अधिकार माना... दोनों दिन कमरे में आकर, मैंने स्वयं उसकी मालिश की। उसमें शरीर को छूने से वासना की इच्छाएं जागृत होती थीं।

(80) मैंने उपधान (एक कठोर धार्मिक एकांतवास) किया और वहाँ भी मैंने यही काले कर्म किये। लड़कियों और महिलाओं से परिचित होने के बाद, मैंने उनसे बात करने के बहाने उनकी सुंदरता देखी... उनके करीब जाकर बात करना; उपवास या दिन में एक बार भोजन करने के नियम (निवी) के दिनों में, महिलाएं दोपहर में अपने कमरों में अजीब स्थिति में लेटी रहती थीं... उनके कपड़े पूरी तरह से अस्त-व्यस्त होते थे; उस समय, मैं किसी भी बहाने से वहां गया और उन सभी जगहों को देखा। उपदेशों में भी मैं इस तरह बैठा था कि 'मैं महिलाओं और लड़कियों को देख सकता था।' और मैंने पूरे उपधान के दौरान चल रहे प्रवचनों के दौरान दृश्य वासना के पाप किए। मैंने [नाम प्रारंभिक] को पत्र लिखे और उसका पत्र आया। वह उपधान में भी थी। मैं उनसे निजी तौर पर भी मिला था। मैंने भी कई प्रेम पत्र लिखे और जो उन्होंने लिखे उन्हें पढ़ा। दो या तीन नई लड़कियाँ भी मेरी गर्लफ्रेंड बन गईं; उनके साथ भी, सुंदरता को देखना + शरीर के अंगों को देखना + बुरे अक्षरों को देखना... ये सब पापपूर्ण खेल चलता रहा... मैंने भी 40 वर्षीय विवाहित आंटी के साथ यही पापपूर्ण कार्य किया... मैंने पूरा उपधान इन सभी पापों में बिताया।

(81) दो साल बाद, मैंने उपधान में अपनी सेवा दी; सेवा करने के बहाने, मैंने फिर वही पुराना काम किया। मुझे एहसास हो गया था कि 'लड़कियों को आसानी से मूर्ख बनाया जा सकता है, और इसीलिए उनका शोषण किया जाता है (भोगवई)।' दोनों उपधानों में मैंने सभी महिलाओं और लड़कियों का विश्वास इस तरह जीता था कि अगर मैं उनके कमरे में जाती तो उन्हें अच्छा लगता; अगर मैं उनसे बात करती तो उन्हें अच्छा लगता; वे मुझसे परिचितता (तु-कर) के साथ बात करती। वे मेरे सामने कपड़ों की शालीनता भी बरकरार नहीं रखते थे। उन्हें मुझसे बिल्कुल भी झिझक महसूस नहीं हुई। मैंने इन सबका फायदा उठाकर अपनी आंखें और दिमाग खराब कर लिया... कुल 90 दिनों में मैंने सैकड़ों महिलाओं के साथ हजारों बार इस तरह के पाप किए। मुझे लगता है कि जिस तरह मैंने बात करके और देखकर अपनी गंदी प्रवृत्तियों को पोषित किया, उसी तरह उन महिलाओं ने भी मुझसे बात करके और मुझे घूरकर अपनी प्रवृत्तियों को पोषित किया होगा... लेकिन उनका पाप यह है कि उन्हें पता चले। मुझे अपने पाप को देखना होगा। और मैंने यह बहुत बुरी तरह से किया है।

(82-87) वासना और अश्लीलता की अंतिम स्वीकारोक्ति

(82) जब मैं छ-री पालीत संघ (एक बड़ा पैदल तीर्थयात्रा समूह) के साथ जाता था, तो मार्च सुबह जल्दी शुरू हो जाता था। मैं अपनी प्रेमिका के साथ चला; मैं उसका हाथ पकड़कर भी चला। मैंने कई लड़कियों और

महिलाओं की सुंदरता की तलाश की...

(83) अपनी प्रेमिका के साथ अकेले में, मैंने गले लगाया, चूमा और दुर्व्यवहार किया; जब भी मुझे बंद कमरे का एकांत मिलता, मैं सेक्स भी करता। पूरे संघ में मैंने कुल मिलाकर लगभग चार बार सेक्स किया। और गले लगाना आदि हर दिन, कई बार किया जाता था।

(84) संघ में मैं चुपके से स्त्रियों को खुले शौचालय (स्थानिल) में जाते देखता था; मलमूत्र देखकर वैराग्य (वैराग्य) प्राप्त करने के बजाय, मैं केवल उनके शरीर के अंगों को देखकर वासना महसूस करता था...

(85) कैनवास से बने तंबुओं में नहाती महिलाएं; मैंने भी कैनवास के छोटे-छोटे छेदों से उन्हें देखा... मैं वासना से देखता रहा...

(86) मेरे तीसरी मंजिल के कमरे की खिड़की से पास की एक इमारत में दूसरी मंजिल के ऊपरी मंजिल के फ्लैट के दो बेडरूम दिखाई दे रहे थे। मैंने आंटी और उनकी दो बेटियों को कई बार कपड़े बदलते देखा, मैंने उन्हें जानबूझकर देखा, मैंने उन्हें सैकड़ों बार देखा; समय को ध्यान में रखते हुए, मैंने उन्हें विशेष रूप से उन समयों पर देखा; मैंने उन्हें वासना से प्रेरित देखा, और देखने के बाद, वासना और भी बढ़ गई।

(87) मैंने अपनी पत्नी के साथ हजारों बार सेक्स किया है। लेकिन मैंने ऐसा ब्लू फिल्म्स (पोर्नोग्राफी) आदि देखने के बाद किया, और उस समय, मेरे दिमाग में केवल अभिनेत्रियों और अन्य महिलाओं की कल्पना होती थी, उनके चेहरों को याद करते हुए यह एहसास होता था 'मैं उस अभिनेत्री के साथ सेक्स कर रहा हूं, आदि' मैंने सेक्स किया। मैंने अपनी पत्नी से भी कहा, "जब तुम अब्राहम (सेक्स) में व्यस्त हो, तो अपने पसंदीदा नायक की कल्पना करो; यह अधिक आनंददायक होगा।"

"जब आप अब्राहम में व्यस्त हों, तो अपने पसंदीदा नायक की कल्पना करें; यह अधिक आनंददायक होगा।"

(88) हम दोस्तों ने एक घिनौनी योजना बनाई। हम सभी ने अपनी-अपनी पत्नियों के साथ अब्राहम का एक वीडियो रिकॉर्ड किया और फिर हम सभी दोस्तों ने ये वीडियो एक-दूसरे को भेजे। मैंने अपने सभी दोस्तों के उनकी पत्नियों के साथ अब्राहम वीडियो देखे। मैंने अपनी पत्नी को अपने पास बैठाकर उन्हें देखा। उन्होंने हमारा अब्राहम वीडियो भी देखा होगा। ऐसी है मेरी आत्मा की भ्रष्टता!

(89) ट्रेन से यात्रा करते समय, मैं अपनी होने वाली पत्नी के साथ शौचालय में अनुचित कार्य –गले लगाना और चूमना– करता था, और हम एक सीट पर एक-दूसरे के साथ उन सभी गतिविधियों में भी शामिल होते थे।

(90) बस यात्रा के दौरान भी, मैं जी.एफ + मेरी पत्नी के साथ अभद्र कृत्यों में लिप्त था...

(91) मैंने अपने दोस्तों से इस तरह बात की कि वे अब्राहम के लिए और अधिक उत्सुक हो गए... वे शांत थे; मैंने उन्हें भड़का दिया। मैंने महिलाओं को भी इसी तरह उत्सुक बनाया।

(92) मैंने अपने मित्रों को अनुचित कार्यों के विभिन्न तरीके, अब्राहम के विभिन्न तरीके, तथा आलिंगन और चुंबन के विभिन्न तरीके सिखाए; मैंने स्त्रियों को भी सिखाया। मैंने उन्हें ऐसी शारीरिक शिक्षा दी कि इससे उनमें अवश्य ही भयंकर वासना जागृत हो जाती थी।

(93) मैंने हुक्का पार्लर चलाए और उनके ज़रिए मैंने सैकड़ों-हज़ारों लोगों की अनैतिकता को पोषित किया...

ऐसी व्यभिचारिता को बढ़ावा देकर मैंने लाखों कमाए। मैंने सभी के निजी मामलों को गोपनीय रखने की सुविधा की पेशकश की, यही कारण है कि अधिक लोग मेरे प्रतिष्ठानों में आते थे।

(94) मैं होटल चलाता था और अनैतिक गतिविधियों के लिए सभी कमरे उपलब्ध कराता था... मैंने बहुत पैसा कमाया। मैं आने वाले किसी भी जोड़े को एक कमरा दे दूंगा। अगर 16-17 साल का कोई लड़का और लड़की भी आ जाए तो मैं उन्हें कमरा दे दूंगा। विवाहित युवक अलग-अलग महिलाओं के साथ आते थे। मुझे पूरी तरह से पता होगा कि यह उसकी पत्नी नहीं थी, कि यह महिला अविवाहित थी, या कि वह किसी अन्य पुरुष की पत्नी थी... फिर भी मैं आंखें मूंद लूंगा और इन पापपूर्ण गतिविधियों को जारी रहने दूंगा, क्योंकि मैं इससे काफी लाभ कमा रहा था... मैंने इतनी सारी सुविधाएं प्रदान कीं कि हर किसी ने मेरे होटल पर भरोसा किया, आश्वासन दिया कि 'यहां सब कुछ गोपनीय रहेगा।'

(९५) मैंने खुद होटल नहीं चलाया, लेकिन मैंने एजेंट के तौर पर काम किया। मेरा काम जोड़ों के लिए होटल के कमरे बुक करना था। इसके माध्यम से मैंने सैकड़ों जोड़ों को यह सुविधा प्रदान की। उन्होंने पाप किया, लेकिन सारी व्यवस्थाएं मेरी थीं...

(96) मेरा काम पर्यटन और यात्राओं में है; मैं देश-विदेश में लोगों के लिए होटल और अन्य सभी आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करता हूँ... इन सभी व्यवस्थाओं में, यह समझा जाता है कि वे उन स्थानों पर जाएँगे और अब्राहम के पाप करेंगे, लेकिन व्यवस्था और अनुमोदन... वे सभी पाप निश्चित रूप से मुझ पर आ पड़े हैं।

(97) आज तक मैंने कई जोड़ों की प्रशंसा की है। मैंने उनके अब्राहम के दृश्यों की कल्पना की है। मैंने दूसरे की पत्नी के साथ अपने अब्राहम के दृश्यों की कल्पना की है, और ऐसा करके, मैंने कई बार एमबी में सगाई की है।

(98) 'क्या जैन ऐसा काम कर सकता है?'–यह प्रश्न किसी के मन में भी आएगा। आप भी शायद मेरी बातों पर विश्वास न करें, लेकिन मैंने ऐसे काम किए हैं। मैंने लड़कियों के लिए कमीशन एजेंट का व्यवसाय चलाया है। मैं पुरुषों को वेश्याओं के पास ले जाता था; मैं उनकी व्यवस्था करता था। बदले में मुझे कमीशन मिलेगा। इस तरह, मैंने पुरुषों को वेश्याओं के साथ सैकड़ों बार पाप करने के लिए प्रेरित किया है। इतना ही नहीं, मैंने गरीब लड़कियों और गरीब महिलाओं को भी इस काम के लिए लुभाया और तैयार किया है और वे सहमत हो गई हैं। उन्हें पैसों की जरूरत थी और इस काम से उन्हें ढेर सारा पैसा मिल रहा था... और असंतुष्ट पुरुष हमेशा नई लड़कियों की तलाश में रहते थे। कुछ अविवाहित थे, कुछ अपनी पत्नियों से संतुष्ट नहीं थे, कुछ सुख-सुविधाओं के शौकीन थे... मैं ऐसे सभी पुरुषों के लिए गरीब लड़कियों को खरीदने के व्यवसाय में था। इसमें मैंने जैन लड़कियों और जैन महिलाओं को भी शामिल किया था। मुझे यह भी पता था कि कुछ गिरोह ऐसी गतिविधियों के लिए लड़कियों और महिलाओं का अपहरण भी करते हैं... ये सभी फंसी हुई लड़कियां और महिलाएं वेश्या के रूप में भी काम कर रही हैं... यह सब जानने के बावजूद, मैंने अपना व्यवसाय जारी रखा। भिवंडी जैसे क्षेत्रों में मेरा काम सक्रिय था... लेकिन वर्षों बाद, मुझे इन पापों के लिए पश्चाताप महसूस हुआ। मैंने वह काम और वह क्षेत्र भी छोड़ दिया। मैं वर्तमान में भयंदर में रहता हूँ... (यह एक सच्ची घटना है। 20 साल पहले, जब भयंदर और मीरा रोड के बीच नई रेल पटरियाँ बिछाई जा रही थीं, तो यह सज्जन उस मार्ग पर एक विहार के दौरान साधु भ. से मिले थे, और उस विहार के दौरान उन्होंने एमएस को अपने इस पाप के बारे में

विस्तार से बताया था। वह सज्जन भी पिस्तौल रखते थे... जैनियों में ऐसा कुछ नहीं मिलता, लेकिन ऐसी 0.1% घटनाएं भी घटित हुई हैं... यह एक सत्य तथ्य है।)

(99) मेरी ऊंचाई, शारीरिक बनावट, अभिनय और बोलने की शैली के कारण... मुझे थिएटर में अच्छी प्रशंसा मिली। फिर मुझे धारावाहिकों में छोटी-छोटी भूमिकाएं मिलने लगीं। उसके बाद मुझे मुंबई बुलाया गया और एक फिल्म में अच्छी भूमिका की पेशकश की गई। मैंने स्वीकार कर लिया; मैं बहुत खुश थी... लेकिन उस फिल्म की निर्माता, एक मध्यम आयु वर्ग की महिला, ने मुझसे अब्राहम की मांग की। यह कोई मांग नहीं थी बल्कि एक सौदा था: मैं उसे अब्राहम का सुख देता हूं, और वह मुझे फिल्म में एक भूमिका देती है... मैं विचारों में खो गया था। मुझे करोड़ों लोगों के बीच प्रसिद्ध होने का अवसर मिल रहा था और अगर मैं सफल हुआ तो मेरा भविष्य उज्ज्वल होगा। पैसा था, शोहरत थी, और नायिकाओं के साथ रोमांस था। इस दुनिया में संयम जैसा कुछ नहीं है। जो कोई किसी को पसंद करता है, वह उसके साथ कुछ भी कर सकता है... इस मानवीय दुनिया में जानवरों की दुनिया जीवंत हो उठी थी... और जिस महिला ने यह प्रस्ताव रखा वह भी सुंदर थी; फिल्म जगत में उसका नाम था। मेरा मन प्रलोभित हुआ। मैंने तो उसे हाँ भी कह दिया। रात के किस समय, किस होटल के किस कमरे में... सब कुछ तय हो गया। लेकिन, एमएस! उसके बाद, मैंने शांति से सोचा। मेरी हाल ही में शादी हुई थी; मेरी पत्नी को मुझ पर बहुत भरोसा था। वह मुझसे बहुत प्यार करती थी। मैंने कई उपदेश भी सुने थे; मुझे वह सब याद था। मुझे सुदर्शन शेठ की कहानी याद आ गई। मुझे वह गुरु याद आ गया जिसे मैं अपना मानता था। मुझे प्रभु की याद आई जिनकी भक्ति का मैंने वर्षों तक अभ्यास किया था... और मैंने दृढ़ निर्णय लिया: 'मैं इस संसार में प्रवेश नहीं करना चाहता।' मैंने अपना मोबाइल बंद कर दिया, ट्रेन पकड़ी और अपने शहर के लिए रवाना हो गया। मैं मौत के कगार से बच गया, एमएस!

(100) उस समय मैं 20 साल का था और मेरे बड़े भाई की शादी हो गई। मेरी भाभी घर आ गईं। शारीरिक इच्छा पहले से ही मेरे भीतर थी, लेकिन मेरी भाभी मुझे छोटा भाई मानती थीं। उसके शयनकक्ष के दरवाजे के चाबी के छेद से मैं अक्सर उसे कपड़े बदलते हुए देखता था। यह देखकर मेरे अशुद्ध विचार बढ़ गए और मैं उत्तेजित हो गया... मेरी भाभी को इस सब का पता नहीं था... यह विचार उसके दिमाग में कभी आया ही नहीं था कि 'मैं उसे बुरे इरादों से देखता हूँ... और मैं उसे चाबी के छेद से कपड़े बदलते हुए देखता हूँ।' मैंने अपने भाई और भाभी को भी अंदर अनुचित कार्य करते देखा, कई बार चाबी के छेद से।

(101) मैं उस समय युवा था। हम कार में यात्रा कर रहे थे। मैं अपनी माँ की गोद में बैठा था। पहली बार मुझे इससे विकृत आनंद महसूस हुआ। और उसी क्षण, मेरा हाथ मेरी माँ के गुप्तांगों को छू गया। मेरी माँ को इसका कोई अंदाज़ा नहीं था, लेकिन मुझे वह स्पर्श पसंद आया और मैंने जानबूझकर उसे दो बार और छुआ। तब मुझे अफसोस हुआ कि 'मैं अपनी मां के साथ ऐसा कर रहा हूं।' इसलिए, मैंने उसके तुरंत बाद खुद को रोक लिया।

(102) दादा के दरबार में भी मैं धर्मी नहीं रहा। मैंने अपनी आंखों से कई लोगों का शिकार किया है, लेकिन भीड़ का फायदा उठाते हुए मैंने उन्हें छूने का मौका भी नहीं छोड़ा।

(103) मेरी पत्नी को वासना की बहुत भूख थी, जिसे मैं संतुष्ट नहीं कर सका। वह बार-बार मुझसे अब्राहम के

लिए विनती करती थी। जब मेरा शरीर कमजोर हो जाता, तो वह अपनी अधूरी इच्छाओं के कारण क्रोधित हो जाती, कभी-कभी वह रोती, और मुझे 'नपुंसक' कहती मैं इससे थक गया। अंततः, उसकी संतुष्टि के लिए और उसके अपमान से बचने के लिए, मैंने डॉक्टर से परामर्श करने के बाद गोलियाँ और इंजेक्शन लिए। मुझे पता था कि इनके विपरीत दुष्प्रभाव होंगे, लेकिन मैंने उन्हें नजरअंदाज कर दिया और अपनी पत्नी को संतुष्ट कर दिया। उसके बाद वह खुश रहने लगी, लेकिन कुछ समय बाद मेरे शरीर में समस्याएं पैदा होने लगीं। मुझे गोलियाँ और अन्य दवाएँ बंद करनी पड़ीं।

(104) जब स्त्रियाँ पूजा करने डेरासर आती थीं, तो यदि उनके कपड़े पतले होते थे, तो उनके अंतर्वस्त्र दिखाई देते थे। मैं उन्हें जानबूझकर देखती, लगाव महसूस करती और अशुद्ध विचार रखती... कई बार, मैं दिन के ऐसे समय में जाती जब महिलाओं की भीड़ अधिक होती। कभी-कभी मैं दर्शन और पूजा के बहाने किसी डेरासर में जाती थी, जहां महिलाओं की भीड़ अधिक होती थी, और सिर्फ उनके शरीर और अंगों को देखती थी।

(105) संघ की ओर से मैंने कई बार प्रभावना दिया है। मैंने तपस्या के लिए, उपवास तोड़ने के लिए, या शिविरों के लिए पास वितरित किए हैं। ऐसा करते हुए मैंने स्त्रियों को प्रभावना और पास देने के बहाने उनके रूप-रंगों और अंगों को देखा है और उनके हाथों को छुआ है। कुछ महिलाओं में विनम्रता का कोई भाव नहीं होता; भीड़ में उनके कपड़े उतर जाते और उस समय मैं उनके अंगों को और भी अधिक लगाव से देखती।

(106) दुकानों और सड़क विक्रेताओं के पास महिलाओं के अंडरगारमेंट्स बिक्री के लिए रखे गए थे। मैंने उन्हें गौर से देखा है। मैंने बक्सों पर उन कपड़ों को पहने महिलाओं की तस्वीरों को गौर से देखा है... दोस्तों के साथ, मैंने ऐसे कपड़ों के बारे में अश्लील टिप्पणियाँ की हैं। हमने उनके अलग-अलग रंगों के बारे में भी चर्चा की है।

(107) कपड़ों की दुकानों और शोरूमों के बाहर और अंदर विज्ञापन के लिए महिलाओं के पुतले रखे जाते हैं, उन्हें ड्रेस, साड़ी आदि पहनाई जाती है। ऐसी पुतले जैसी महिलाओं को देखकर मेरे मन में दुष्ट विचार आए हैं। मैं उनके करीब गया और उनके गुप्तांगों को छुआ। कभी-कभी, बेशर्म होकर, मैंने उन पुतले-महिलाओं को गले लगाया और चूमा है। मैं उनके साथ अनुचित कार्य करता रहा हूँ...

(108) मेरी दादी बूढ़ी हो गई थीं और उनका शरीर बड़ा था! मैंने उसकी बहुत सेवा की। लेकिन उस सेवा के बहाने, मैंने उसके अंगों को देखा, उन्हें छुआ, और मेरे भीतर तीव्र विकृतियाँ उत्पन्न हो गईं। मैं उसके साथ अनुचित कृत्यों में लिप्त था। बुढ़ापे के कारण वह मेरे अनुचित स्पर्श को महसूस नहीं कर सकी; वह समझ नहीं सकी। लेकिन मैंने उसकी हालत का फायदा उठाया। मेरे लिए वह मेरी दादी थीं, लेकिन उनका शरीर मेरे लिए सिर्फ एक महिला का शरीर था। यह एक स्त्री का शरीर था जो वासना को पोषित करता था, वासना को उत्तेजित करता था... मैंने कितने भयानक पाप किये होंगे। वासना के कितने घिनौने प्रभाव मैंने अपनी आत्मा पर अंकित किए होंगे... मैंने अपनी विकृतियों को पोषित करने के लिए अपनी 70 वर्षीय दादी के शरीर का उपयोग किया... छोटे बच्चे, लड़कियां, युवा महिलाएं, मध्यम आयु वर्ग या बुजुर्ग महिलाएं –मैंने उन सभी को अपने मन, भाषण और शरीर का शिकार बना लिया है।

एक महिला के नजरिए से पापों की स्वीकारोक्ति

मथेना वंदामी, एमएस! मैंने दोनों किताबें पढ़ी हैं, लक्ष्मण और रुक्मिणी। मैं ऐसे दुखों से बचना चाहता हूं। पाप करते समय मैं सचेत नहीं था, इसलिए अब मैं अपना पाप स्वीकार करने में कोई भय, कोई शर्म नहीं रखूंगा...

मैं अपने सभी पापों का तिरस्कार करता हूं। मैं यह सुनिश्चित करने के लिए 100% प्रयास करूंगा कि ये पाप मेरे जीवन में दोबारा न हों... कृपया मुझे यथासंभव कठोरतम प्रायाचित्त प्रदान करें। किए गए सभी पापों में से:

मेरी अज्ञानता के कारण कुछ पाप हुए।

मेरी समझ के बावजूद कुछ पाप मजबूरी के कारण करने पड़े।

कुछ पाप किसी के दबाव का परिणाम थे।

कुछ पाप ब्लैकमेल का परिणाम थे।

कुछ पाप लालच का परिणाम थे।

कुछ पाप मेरे क्षुद्र स्वभाव (छोटी-छोटी बातों से प्रसन्न होना...) के कारण, किसी की प्रशंसा से आकर्षित होने के कारण, किसी के स्नेह से भावुक हो जाने के कारण, दुःख के समय किसी की मदद के कारण, या भय के कारण हुए।

इसका मुख्य कारण यह है कि शारीरिक इच्छा के प्रभाव मेरे भीतर बहुत गहरे हैं, और उनके कारण मैंने ये पाप किए हैं...

(1) घर के नौकर ने मुझे गले लगाया, चूमा और मेरे साथ अनुचित व्यवहार किया। यह मेरे बचपन की बात है।

(2) मेरे पिता की दुकान का एक आदमी मुझे स्कूल ले जाता था और वापस लाता था... वह मेरे साथ अनुचित काम करता था।

(3) हमारे कार चालक ने मेरे साथ अनुचित व्यवहार किया।

(4) स्कूल ऑटो-रिक्शा चालक ने मेरे साथ अनुचित व्यवहार किया।

(5) एक पड़ोसी चाचा मेरे साथ अनुचित व्यवहार में लिप्त था।

(6) मैं सात साल का था और दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ता था। मैं अपनी छोटी स्कर्ट वाली स्कूल ड्रेस में घर आई। मेरे माता-पिता घर पर नहीं थे। घर के स्थायी नौकर ने मुझे फुसलाकर अपने कमरे में बुलाया और मेरे साथ अब्राहम धारण किया। मुझे अजीब लगा, लेकिन सेवक रामू ने बलपूर्वक यह पाप किया और मुझे धमकी दी, 'किसी को मत बताना,' और मुझे वे चीजें भी दीं जो मुझे पसंद थीं। उसके बाद, उसने रुक-रुक कर मेरे साथ कुल ९ बार अब्राहम किया। एक बार, मैंने अपनी माँ को यह बताने का साहस जुटाया, और मेरे माता-पिता ने रामू को बर्खास्त कर दिया और एक महिला को मेरा देखभालकर्ता नियुक्त किया... इसमें वास्तव में मेरी कोई गलती नहीं है। फिर भी, मैंने इस घटना का खुलासा आपके सामने कर दिया है। जो भी प्रायाचित्त देय है, कृपया उसे प्रदान करें।

(7) मैं 12 साल का था, लेकिन मैं 15 या 16 साल का दिखता था! उस समय मैं अपनी मां के साथ अपने नाना-नानी के घर रहने गया था। उस दिन, केवल मेरे 26 वर्षीय अविवाहित मामा और मैं घर पर थे; मेरी माँ और दादा-दादी बाहर गए थे। मैं बिस्तर पर बैठा अपना मोबाइल देख रहा था। उसी समय मेरे चाचा अचानक मेरे

पास आये। वह अभी अपने मोबाइल पर एक नीली फिल्म देख रहा था, जिसके कारण उसे वासनापूर्ण हमला हुआ। उसने अचानक मुझे पकड़ लिया और कसकर गले लगा लिया, मुझे चूमा... वह और भी बहुत कुछ कर सकता था, लेकिन मैंने उसे जोर से काटा, उसकी पकड़ से बच निकला, और भाग गया... मैं घर तभी लौटा जब मेरी माँ और दादा-दादी वापस आ गए। मैंने अपनी माँ को सब कुछ बता दिया। मेरे दादाजी ने मेरे चाचा को बुरी तरह पीटा। अगले दिन मैं अपनी माँ के साथ अपने घर वापस चला गया।

(8) मेरे दादा हमारे घर आए। मेरे दादाजी का कई साल पहले निधन हो गया था। इस दादा को हमारे पूरे परिवार में बड़ा माना जाता था। उसने मुझे बहुत समय बाद देखा। उसके मन में वासना उत्पन्न हो गई। उसने मुझे अपनी गोद में बैठाया और स्नेह के बहाने मुझे गले लगाया और चूमा। वह उस रात हमारे घर पर रुका और मेरे साथ मेरे कमरे में सोया। मेरे माता-पिता को कुछ भी संदेह नहीं था। रात में वह मेरे साथ कई अनुचित कार्य करता था। मैं कुछ नहीं कह सका। सुबह मैंने अपनी माँ को सब कुछ बता दिया। मेरी माँ मेरी सबसे अच्छी दोस्त है। मैं उसे सब कुछ बताता हूँ... मैं कुछ भी नहीं छिपाता... मेरी माँ ने मेरे दादाजी को कड़ी फटकार लगाई और उनसे सभी संबंध हमेशा के लिए तोड़ दिए।

(9) स्कूल के एक लड़के ने मुझे एक अश्लील संदेश भेजा। उन्होंने मेरे शरीर के अंगों के बारे में तरह-तरह की कल्पनाएँ लिखीं। मेरे लिए इसे लिखना संभव नहीं है, लेकिन संदेश अश्लील प्रकृति के थे।

(10) मैं एक कोर्स पूरा करने के लिए एक महीने के लिए अपने चाचा के घर रहने गया। वहां, मैंने अपने चचेरे भाई-भाई के साथ गहरी घनिष्ठता विकसित की। लगभग दस दिनों के बाद, वह अंतरंगता अपनी सीमा पार कर गई... पहले, हमने गले लगाना और चूमना शुरू किया, फिर हमने अनुचित कार्य करना शुरू कर दिया। लेकिन मेरे मन में यह संकल्प था 'कि मैं अब्राहम नहीं करूंगा।' हालाँकि, यह निर्णय अधिक समय तक नहीं चला, और ग्यारहवें दिन से शुरू हुआ पापपूर्ण नाटक इक्कीसवें दिन अपने चरम पर पहुँच गया। हम दोनों ने स्वेच्छा से संभोग किया। अगले दस दिनों तक हम अब्राहम में लगे रहे... मेरे अपने चचेरे भाई-भाई के साथ!

(11) मैं अपने छोटे भाई के साथ कई बार अनुचित कामों में लिप्त रहा। मैंने इस बात का फायदा उठाया कि उसे कुछ भी समझ नहीं आया। मैंने भाई-बहन के बीच के पवित्र रिश्ते को अपवित्र कर दिया।

(12) मैं नववानु तीर्थयात्रा पर गया और वहाँ मैंने अपने रूममेट के साथ समलैंगिक कृत्यों में शामिल होना शुरू कर दिया। एक कमरे में हम चार लड़कियाँ थीं। उनमें से, एक और लड़की और मैंने इन चीजों का आनंद लिया। हम दोनों कभी-कभी तीर्थयात्रा के लिए देर से निकलते थे, कभी-कभी हम जल्दी निकलते और जल्दी लौट आते, हम अपना एकल भोजन या तो बहुत जल्दी या बहुत देर से करते थे, और हम शाम की भक्ति के लिए नहीं जाते थे... ऐसी रणनीति का उपयोग करके, हम खुद को कमरे में अकेला पाते और समलैंगिक कृत्यों में लिप्त पाते। 45 दिनों में हमने ऐसा कम से कम 30 बार किया...

(13) अपनी शादी के कुछ साल बाद, मैंने फिर से नववानु का कार्यभार संभाला। तब तक मेरे दो बेटे और एक बेटी हो चुकी थी और तीनों बड़े हो चुके थे। मैंने रसोईघर को अपनी बेटी की देखभाल में छोड़ दिया था और नववानु के लिए चला गया था। वहां, मैंने प्रबंधक के प्रति लगाव विकसित किया, और एकांत खोजने के लिए विभिन्न साधनों का उपयोग करके, मैं उसके साथ अब्राहम में संलग्न हो गया। ४५ दिनों में, मैंने कम से कम ३०

बार पाप किया। इसी बीच मेरी बेटी अचानक आ गई। मुझे नहीं पता कि कैसे, लेकिन उसे किसी तरह मेरी पापपूर्ण गतिविधियों के बारे में पता चल गया था। वह मुझ पर क्रोधित थी, वह रोई... लेकिन मेरी शारीरिक इच्छा भयानक थी। मैंने उसकी बात बिल्कुल नहीं सुनी और उस मैनेजर के साथ अपना झगड़ा जारी रखा। नववानु से घर लौटने के बाद भी मैनेजर के साथ फोन कॉल, अभद्र संदेश, फोटो और वीडियो जारी रहे। मैं पालीताना जाने का एक भी मौका नहीं छोड़ूंगा। मेरी बेटी को एहसास हुआ कि मैं बार-बार पालीताना की ओर क्यों भाग रहा था। उसने मुझे रोकने की बहुत कोशिश की, लेकिन मैंने उसकी बात नहीं सुनी। जब भी मैं पालीताना जाता था, मैं उस मैनेजर के साथ कई बार अब्राहम से जुड़ा रहता था। जब मुझे पता चला कि उस मैनेजर से 15-20 अन्य महिलाएं भी पागलों की तरह प्यार करती हैं, तो उसके प्रति मेरा प्यार खत्म हो गया। लेकिन तब तक मैंने अपनी पवित्रता को असंख्य बार अपने हाथों से लूटने दिया था।

(14) स्कूल में और फिर कॉलेज में, मैंने कई बीएफएस किए। मुझे जल्दी ही उनसे प्यार हो गया और उतनी ही जल्दी हमारा ब्रेकअप भी हो गया। जब प्रेम हुआ, तो मुझे उसे व्यक्त करने का केवल एक ही तरीका समझ में आया: 'उसकी खुशी के लिए अपना शरीर अर्पित करना।' इस मूर्खता के कारण, मैं कम से कम 50 बीएफ के साथ कई बार अब्राहम में शामिल हुआ, और मैं अपनी शारीरिक इच्छाओं और विकृतियों को प्यार समझने की गलती करता रहा। इसी तरह, मैंने उन 50 बीएफ की वासना को प्यार समझ लिया। अब मैं समझता हूं कि सच्चा प्यार वह है जो एक-दूसरे के शरीर की अपेक्षा के बिना मौजूद है।

(15) कॉलेज में एक युवक ने किसी तरह मुझे एकांत कमरे में बुलाकर मेरे साथ बलात्कार किया।

(16) मेरे मामा का बेटा कुछ दिनों के लिए हमारे घर आया था। उसने मुझे एक रात के लिए प्रपोज किया! मैं सहमत हो गया, लेकिन मैंने केवल इतना कहा, 'कोई अब्राहमा नहीं।' और उस रात, मैंने उसके साथ अब्राहम को छोड़कर हर पाप किया।

(17) मैंने अपनी सगाई के लिए कई संभावित दूल्हों के साथ व्यक्तिगत बैठकें कीं। सिर्फ़ दो को छोड़कर, सभी ने मेरे साथ गले मिलना, चूमना और अनुचित व्यवहार करना शुरू कर दिया... उसके बाद भी शादी नहीं हो सकी... 20-22 पुरुषों के बाद, मैंने एक से सगाई कर ली। सगाई और शादी के बीच के समय में, उन्होंने मुझसे अब्राहम की मांग की, मुझे मजबूर किया, ऐसी बातें कहीं, 'हम पहले से ही पति और पत्नी हैं।' जब मैं उसके बल से सहमत नहीं हुई, तो वह बहुत क्रोधित हो गया... अंततः, मैं सहमत हो गई, और शादी से पहले, मैंने अपने भावी पति के साथ 20-25 बार अब्राहम से संबंध बनाए। उसके बल के कारण मैंने मुख मैथुन भी किया... ऐसा करते समय मैं भी अशुद्ध विचारों से ग्रस्त हो जाता...

(18) सातवें या आठवें मानक की एक स्मृति शेष रहती है। मेरे स्कूल में १२ वीं कक्षा में पढ़ने वाले एक अमीर लड़के ने मुझे एक प्रस्ताव दिया: '५० रुपये ताकि मैं आपको पांच मिनट के लिए सिर से गर्दन तक छू सकूं। 100 रुपये ताकि मैं तुम्हें गर्दन से नाभि तक छू सकूं। 200 रुपये ताकि मैं तुम्हें सिर से गर्दन तक चूम सकूँ। 500 रुपये ताकि मैं तुम्हें गर्दन से नाभि तक चूम सकूँ!' मुझे पैसों की परवाह नहीं थी, फिर भी जिज्ञासावश मैंने उसे एक-एक करके चारों काम करने दिए। हर बार, विकृतियाँ और वासना बढ़ती ही गई।

(19) मैं एक दुकान पर काम कर रहा था। दुकान के मालिक ने मुझे गले लगाया और चूमा। मैंने अपनी नौकरी

की खातिर इतना स्वीकार किया। एक बार वह मुझे भण्डार कक्ष में ले गया और मेरे साथ अब्राहम का अभ्यास किया। मैं ज्यादा विरोध नहीं कर सका; कुछ हद तक मुझे यह पसंद भी आया।

(20) अपने माता-पिता' की अनुमति से, मैंने एक मेट्रो शहर में एक घर किराए पर लिया और एक बड़ी कंपनी में नौकरी शुरू की। वहां मेरी मुलाकात कई युवकों से हुई। आज़ादी का जीवन! गले लगना और चूमना पूरी तरह से आम बात थी! लेकिन एक वेश्या की तरह, मैंने कई युवकों के साथ अब्राहम में सगाई की... यह मेरी शादी से पहले की बात है।

(21) शादी के कुछ साल बाद, मैं अपने पति से पूरी तरह संतुष्ट नहीं थी, इसलिए मेरी नज़र मेरे पति से हटकर उसके दोस्त पर चली गई। वह भी मेरी तरह ही कामुक था और मैंने अपने पति के दोस्त के साथ व्यभिचार शुरू कर दिया। काफी समय बाद मुझे पता चला कि इस दोस्त ने अपने प्यार के जाल में अनगिनत महिलाओं को फंसाया और उनका शोषण किया। 'उसे केवल मेरे शरीर में रुचि थी।' मैं क्रोधित हो गया और उसे छोड़ दिया।

(22) मेरे जीवन में एक अविश्वसनीय घटना घटी है। मेरे पति अपने एक दोस्त को घर ले आये। उसने मुझसे कहा, 'यह मेरा बचपन का सबसे अच्छा दोस्त है। तुम्हें देखकर वह पागल हो गया है। वह तुम्हारे बिना मर जायेगा. ऐसी है उसकी हालत। क्योंकि तुम्हारे लिए उसकी इच्छा पूरी नहीं हो रही है, उसने अपनी कलाई की नस को ब्लेड से काटने की कोशिश की है... इसलिए तुम्हें हर शनिवार की रात उसके साथ बितानी चाहिए। तुम्हें मेरी अनुमति है. मैं घर छोड़ दूँगा।' और इस तरह, अपने पति के कहने पर, मैं कई रातों तक उनके अपने दोस्त के साथ अब्राहम में लगी रही।

(23) मेरी सास चार महीने तक मानसून का अवलोकन करने के बाद घर लौट आईं। दोस्त के साथ अफेयर अब बंद हो चुका था। लेकिन मेरी सास ने मुझसे कहा, 'मैं छोटी उम्र में विधवा हो गई थी और मैंने अपने बेटे का पालन-पोषण किया। लेकिन इच्छाएं अभी भी मेरे भीतर छिपी हुई थीं। मानसून रिट्रीट के दौरान संघ का एक आम आदमी मेरे साथ वहां था। मुझे उसके प्रति लगाव हो गया। जब मैंने उनसे शारीरिक सुख मांगा तो उन्होंने कहा, 'मुझे आपकी बहू से गहरा लगाव है। मैं तुम्हें उतनी ही बार खुशी दूँगा जितनी बार वह मुझे देगी। तुम उसे मनाओ...' मेरी खातिर तुम्हें इस बात से सहमत होना होगा।' और मेरी सास की ताकत के कारण, और गरीब आदमी की दयनीय स्थिति को देखकर, मैंने स्वीकार कर लिया। अपनी सास के कहने पर और उनकी खुशी के लिए, मैंने उस आम आदमी के साथ अब्राहम में सगाई की, जो मेरे पिता की उम्र का था। मेरी सास भी उनके साथ अब्राहम में लिप्त थीं। ऐसा ८-१० बार हुआ। उसके बाद, मेरी सास को भी पश्चाताप हुआ और यह सब बंद हो गया। मेरे जीवन में ऐसी घटनाएँ घटी हैं जिन पर कोई विश्वास नहीं कर सकता... मैं एक वेश्या से भी अधिक पापी हूँ... एक पतित स्त्री से भी अधिक पापी हूँ... मैं एक व्यभिचारिणी हूँ... मैं कोई जीवित प्राणी नहीं हूँ; मैं केवल एक भोजन हूँ। भूखे लोग मुझे खा जाते हैं। मैं शिकार हूँ। शिकारी मेरा शिकार करते हैं. गिद्ध जैसे राक्षस, राक्षस, राक्षस और वासना से पागल आदमी मुझे टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं। मेरा एकमात्र उपयोग दूसरों की भूख को संतुष्ट करना है! हालाँकि, इन सबमें मुझे भी आनंद मिला... यह अब्राहम ऐसा है कि इसमें वासना लगभग हमेशा पुरुष और स्त्री दोनों में जागृत होती है। पुरुष में तो यह गुण अवश्य होता है, लेकिन

महिला में भी यह गुण लगभग हमेशा होता है...
(24) मैं पाँच दशमांश पर भी अपने पति के साथ अब्राहम में लिप्त रही। कई बार मैंने अब्राहम के विरुद्ध बधा किया, लेकिन मेरे पति ने मुझे मजबूर किया। जब मैंने उनसे तर्क करने की कोशिश की तो वे क्रोधित हो गये और देव तथा गुरु के बारे में बुरा-भला कहने लगे। इसलिए, उसे शांत करने के लिए, मैंने बधा को तोड़ दिया। लगभग तीन बार ऐसा हुआ कि मुझे स्वयं भी अब्राहम की तीव्र इच्छा हुई, इसलिए यद्यपि मुझे बधा का ज्ञान था, फिर भी मैंने उसे तोड़ दिया। यह इच्छा मुझमें वेब सीरीज देखने से उत्पन्न हुई। किसी भी स्थिति में, मैं अपने पति के साथ प्रतिदिन गले मिलती, चूमती आदि रहती थी। मैंने अपने पति के साथ ओरल सेक्स भी किया।
(25) मैं खरीदारी करने एक दुकान पर गई, कुछ साड़ियाँ देखीं, लेकिन मुझे कोई भी पसंद नहीं आई। दुकानदार ने मुझसे आदरपूर्वक कहा, 'महोदया! कृपया स्टोररूम के अंदर आएं; वहां कई नए डिज़ाइन और साड़ियों की किस्में हैं।' बिना ज्यादा सोचे-समझे मैं स्टोररूम के अंदर चला गया। इस बीच दुकानदार ने अपने स्टाफ को कुछ निर्देश दिए। अंदर आने के बाद उसने मेरे साथ बलात्कार किया... मुझे खुद पर बहुत गुस्सा आया, लेकिन मैं क्या कर सकती थी? किसी अजनबी आदमी के साथ एकांत जगह में कभी नहीं जाना चाहिए। मुझे यह समझ लेना चाहिए था...
(26) मेरे पति को अपने व्यवसाय में घाटा हुआ। लेनदार अपना पैसा मांगने के लिए हमारे घर आने लगे। वे गाली-गलौज करते और जोर-जोर से चिल्लाते। उन्हें शांत करने के लिए मेरे पति ने मेरा इस्तेमाल किया। मुझे यह लिखते हुए शर्म आ रही है, लेकिन मैंने उन सभी के सामने अपना शरीर उजागर कर दिया। जब उन्होंने मेरे साथ कुछ स्वतंत्रताएं लीं, तो मैंने इसकी अनुमति दे दी... लेकिन वे लोग बार-बार आने लगे, बार-बार स्वतंत्रताएं लेने लगे। अंततः, इन सब से थककर मैंने अपने पति से इस बारे में चर्चा की और एक नई योजना बनाई। उनके सामने मैंने अचानक अपने कपड़े फाड़ दिए और जोर-जोर से चिल्लाने लगी... वे लोग डर गए। उनके खिलाफ बलात्कार के प्रयास का एक बड़ा मामला दर्ज किया जाएगा। वे जल्दी से भाग गए। इस बीच, मेरे पति की अटकी हुई धनराशि वसूल हो गई, और उन्होंने कर्ज चुका दिया।
(27) मुझे नृत्य का बहुत शौक था। मैंने एक कोरियोग्राफर से नृत्य सीखना शुरू किया। मुझे नृत्य सिखाने के बहाने उन्होंने कई स्वतंत्रताएं लीं। मुझे भी उनका स्पर्श पसंद आया और मैं उनके साथ अब्राहम में संलग्न हो गया। हम कई बार गले मिले, चूमे और अनुचित कार्य किए, और कई बार अब्राहम भी हुआ...
(28) नवरात्रि के दौरान, मैंने विचित्र कपड़े पहने, और उछल-कूद करके नृत्य किया...
मैंने इस तरह से नृत्य किया जो अधिकाधिक प्रदर्शनकारी होता गया... इसके माध्यम से, मैं युवा पुरुषों के मन में शारीरिक इच्छा जगाने में सहायक बन गयी। मेरा एकमात्र प्रयास उन्हें मेरी ओर देखने, मेरी प्रशंसा करने और मेरी ओर आकर्षित करने की दिशा में था। इसमें मुझे अपनी स्थिति और लोकप्रियता का पता चला। मैं पंद्रह साल की उम्र से हर साल ऐसा करता था।
(29) नवरात्रि के दौरान, मैं हर रात अपने बीएफ के साथ अब्राहम के कार्यों में संलग्न रहता था। मेरे बॉयफ्रेंड भी बदलते रहे... यहां तक कि नृत्य करते समय भी मैं उत्तेजक इशारे करती थी और इस तरह हंसती थी कि उत्साह पैदा होता था और शिष्टाचार की सीमाएं टूटती जाती थीं।

(30) मैंने होली-धुलेटी वर्षा नृत्य में भी यही किया था। वहां, जब मेरा पूरा शरीर और कपड़े पानी में भीग गए, तो दृश्य और भी अश्लील हो गया। यह देखकर, युवा पुरुष अधिक इच्छा से अभिभूत हो जायेंगे। भीड़ में नाचते समय मैंने अपने बॉयफ्रेंड को गले लगाया और चूमा तथा अनुचित हरकतें कीं।
(31) नवरात्रि के दौरान नृत्य प्रतियोगिताएं हुआ करती थीं और मैंने प्रथम स्थान जीतने के लिए बहुत मेहनत की थी। मैं अंतिम दौर तक पहुंच गया और जीत भी गया... लेकिन जिस जज ने मुझे पुरस्कार दिया, उसने मुझे पास बुलाया। इस अधेड़ उम्र के जज ने मुझे बधाई देने के बहाने न सिर्फ मुझे छुआ बल्कि गले लगाया और चूमा भी। चूँकि 'यह सब आधुनिक समय में आम बात है', मैंने विरोध नहीं किया। लगभग हर प्रतियोगिता में, पुरस्कार देने से पहले –यानी, अंतिम दौर से पहले– और पुरस्कार देने के बाद, जज मेरा इस्तेमाल करते थे, और मैंने कभी इनकार नहीं किया, मैंने इसे स्वीकार कर लिया। ऐसा लगभग हर बार हुआ। हर जगह, भ्रष्ट पुरुष, राक्षस, जानवर, शैतान और बदमाश मेरे जैसी लड़कियों के गुणों को लूटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ये भेड़िये किसी भी महिला में माँ, बहन या बेटी को देखने में असमर्थ हैं। इन भूखे भेड़ियों को स्त्रियाँ केवल वासना की भूख मिटाने के लिए भोजन के रूप में दिखाई देती हैं। जिस प्रकार गिद्ध निरंतर अपने शिकार की तलाश में रहता है, उसी प्रकार ये मानव गिद्ध भी सदैव सुंदरता और शरीर के शिकार की तलाश में रहते हैं। चौंकाने वाली बात यह है कि जहां जंगल में शिकार गिद्ध से बचने के लिए संघर्ष करता है, वहीं यहां मेरी जैसी लड़कियां स्वेच्छा से इन गिद्धों को उनका शिकार करने देती हैं। अपनी सुंदरता और शरीर का प्रदर्शन करके, वे इन कामुक गिद्धों को आमंत्रित करते हैं और कहते हैं, 'आओ, और मुझे अपना शिकार बनाओ।' या फिर वे स्वयं गिद्धों के पास जाते हैं और प्रस्ताव रखते हैं, 'यहाँ, मेरा शिकार करो...' यह पूरा संसार पापपूर्ण नाटकों से भरा हुआ है। आज, अपने गुस्से में, मैं दृढ़ता से मानता हूं कि इन नृत्य प्रतियोगिताओं के आयोजक, उनके निर्णायक, वर्षा नृत्य के आयोजक, मिस सिटी जैसी प्रतियोगिताओं के आयोजक और निर्णायक, तथा वहां उपस्थित युवा या मध्यम आयु वर्ग के पुरुष –घर पर मां, बहन और बेटियां होने के बावजूद– सभी भ्रष्ट हैं। जो लोग मेरे जैसी अन्य महिलाओं के शरीर और सुंदरता को वासना भरी आँखों से गौर से देखते हैं, वे बदमाश, जानवर, शैतान, राक्षस, लुटेरे, गुंडे, नीच, नीच हैं... वे चंडाल हैं, वे गंदगी हैं... मेरे शब्द कठोर लग सकते हैं, लेकिन मैं इस विश्वास पर कायम रहूंगा।
(32) मिस कॉलेज प्रतियोगिता में भी यही हुआ था। मिस सिटी प्रतियोगिता में मैं अंतिम दौर में पहुंच गयी। अंतिम दौर से एक दिन पहले, मुख्य आयोजक ने एक प्रस्ताव रखा: 'हम आपको प्रथम पुरस्कार देंगे, लेकिन आपको एक रात मेरे साथ और एक रात मुख्य न्यायाधीश के साथ बितानी होगी।' और मिस सिटी बनने के अपने जुनून में, तथा मिस स्टेट और मिस इंडिया बनने की महत्वाकांक्षा के साथ, मैंने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। मैंने प्रथम स्थान तो जीता, लेकिन मैंने एक-एक रात के लिए दोनों को अपने गुणों को लूटने दिया। इन सभी प्रतियोगिताओं में, मैंने छोटे, खुले कपड़े पहने–ऐसे वस्त्र जो आकर्षक थे और वासना भड़काने के लिए डिज़ाइन किए गए थे। मैंने ऐसा मेकअप किया था जो इच्छा को भड़का सकता था। मंच पर मैंने अपने शरीर को विचारोत्तेजक ढंग से विकृत किया और उसी प्रकार चला... मैंने हजारों लोगों में भ्रष्टता और इच्छा जगाई, तथा दूसरों में अनंत, अनंत, अनंत पाप एकत्रित किया और उन्हें एकत्रित करने के लिए प्रेरित किया।

ऐसा लगा जैसे वह पाप तुरन्त फलित हो गया, क्योंकि उस आयोजक और न्यायाधीश ने उस रात मुझे कठोर यातना दी। जिस तरह एक कुत्ता या बिल्ली कबूतर को चीरता है... उसी तरह उन्होंने मेरे साथ क्रूरता की। यह महसूस करते हुए कि 'ऐसा ही होता रहेगा' मैंने आगे की सभी प्रतियोगिताओं को छोड़ दिया। जब मुझे मिस सिटी घोषित किया गया, तो आयोजक और जज ने मेरी बहुत प्रशंसा की थी, और हजारों लोगों ने मुझे बधाई दी थी... उन्होंने मुझे बहुत अच्छा महसूस कराया था। परन्तु जब मैंने उन्हीं दो व्यक्तियों से, जो पूरी तरह असहाय थे, इतना क्रूर न होने की विनती करते हुए कहा, 'अब्राहम में लग जाओ, परन्तु क्रूर मत बनो', तो उन्होंने मुझ पर कुछ गालियां दीं और कहा, 'यह पुरस्कार मुफ्त में नहीं मिलता।' और दो रातों तक मुझे उनके अत्याचारों की भारी पीड़ा सहनी पड़ी। एक तरह से यह बलात्कार के अलावा और कुछ नहीं था। अंत में उन्होंने मुझसे कहा, 'यदि आप आगे बढ़ना चाहते हैं, तो इन सबके लिए तैयार रहें। आगे चलकर आप ऐसे लोगों से मिलेंगे जो हमसे भी बदतर हैं।' उनके शब्द एक चेतावनी थे, और मैंने उन सभी सपनों को त्याग दिया।

(33) यह मेरी शादी से पहले हुआ था। मैं अपनी मौसी के घर रहने गया था। मेरी चाची के पति (फुआ) की नज़र बहुत ख़राब थी। वह बार-बार मुझे तिरछी निगाहों से देखता था। एक बार, जब मैं नहाने गया तो मुझे एहसास हुआ कि तौलिया अंदर नहीं है, इसलिए मैंने अपनी चाची से तौलिया मांगा। लेकिन मेरे चाचा इसे मुझे देने आये। जब मैंने तौलिया लेने के लिए दरवाजा थोड़ा खोला तो वह अंदर घुस आया और मुझे तौलिया थमा दिया। मुझे बहुत शर्म आई, लेकिन यह वही था जो वह देखना चाहता था। दोपहर में या रात में, जब मैं सो रहा होता, तो वह मेरे पास खड़ा होता और गंदी निगाहों से मुझे घूरता। मैंने अचानक अपनी आँखें खोलीं और उसे देखकर चौंक गया... इसलिए वह भाग गया। लेकिन जिस दिन से मुझे इस बात का पता चला, मैं रात को दरवाजा बंद करके सोने लगा।

(34) मेरी चाची का बेटा हमारे घर आया; वह छोटा था। मेरे भीतर पहले से ही अशुद्ध प्रवृत्तियाँ थीं। वह मेरे कमरे में सो रहा था। मैं उसके साथ एक खेल खेलता, कहता, 'मैं तुम्हारी माँ हूँ, तुम मेरे बेटे हो...' या 'मैं पत्नी हूँ, तुम पति हो।' फिर, इस खेल के बहाने, मैं उसे गले लगाती, चूमती और उसके साथ अनुचित व्यवहार करती... मैंने उसके साथ कई, कई, कई भयानक काम किए।

(35) यह पाप मेरी शादी के कुछ साल बाद हुआ। मुझे डेरासर में एक आदमी से गहरा लगाव हो गया। मैं भी उसी समय डेरासर के पास जाने लगा, जब वह जा रहा था, और उसे बार-बार देखने लगा। किसी बहाने से उसे भी मेरी वासनापूर्ण भावनाओं का एहसास हो गया और उसने भी मेरे बारे में अशुद्ध विचार विकसित कर लिये। फिर फोन कॉल शुरू हो गए। पहले तो यह आपसी धार्मिक प्रोत्साहन था... फिर हमने एक-दूसरे में सांत्वना पाने के लिए अपनी सांसारिक परेशानियों को साझा करना शुरू कर दिया। वह मेरा दुःख देखकर दुखी हो जाता (या कम से कम ऐसा दिखावा करता), और मैं उसका दुःख देखकर दुखी हो जाती (या ऐसा दिखावा करती)। धीरे-धीरे हमने कहीं मिलने का निर्णय लिया और फिर यह स्पर्श, आलिंगन, चुंबन, अनुचित कृत्यों और अंततः अब्राहम तक पहुंच गया। यह मामला लंबे समय तक चलता रहा। फिर किसी कारणवश यह रुक गया। इस पूरे समय के दौरान, हम अक्सर अश्लील तस्वीरों, वीडियो का आदान-प्रदान करते थे और

वीडियो कॉल करते थे।
(36) जब मैं कॉलेज में था, रोज़ डे, वैलेंटाइन डे, फ्रेंडशिप डे जैसे दिनों पर... मैं नये युवकों के संपर्क में आया। उस समय, मैंने इन सबका भरपूर आनंद उठाया। अब्राहमा तक के पाप मेरे लिए आम बात हो गई थी। कपड़े बदलना और बॉयफ्रेंड बदलना मुझे एक जैसा ही लगता था। मैंने अपने बी.एफ. के साथ नीली फिल्में देखीं और इसी तरह के अश्लील कृत्य करने की कोशिश की। हमने एक-दूसरे को अनुचित तस्वीरें और वीडियो भेजे। हम लोग बहुत सारी अभद्र बातें करने लगे... मैंने अपने माता-पिता को पूरी तरह से धोखा दिया। मैं कॉलेज जाने के बहाने घर छोड़ देता था, लेकिन मैं कक्षाएं छोड़ देता था और अपने बीएफ के साथ पाप करता था। मैं और क्या लिख सकता हूं? मेरे पास मिचामी दुक्कादम कहने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। जो किया गया है उसे मैं बदल नहीं सकता।
(37) मेरे पिता मुझे कभी कॉलेज नहीं भेजना चाहते थे, लेकिन उस समय मेरी पढ़ाई करने और खुद को कुछ बनाने की तीव्र इच्छा थी। मैंने अपनी माँ को आश्वस्त किया, और मेरी माँ ने मेरे पिता को आश्वस्त किया। मेरा कॉलेज जीवन शुरू हुआ, लेकिन पहले ही दिन से कुछ उपद्रवी लड़कों ने मुझे परेशान करना शुरू कर दिया। हर पाँच या सात दिन में वे मुझे किसी नए तरीके से परेशान करते थे। मुझे डर था कि 'अगर मैं उसकी बात नहीं सुनूंगा, तो वह मुझे शांति से पढ़ाई नहीं करने देगा।' उसने मुझसे कहा, 'अपने हाथ मिलाओ और मेरे पैरों को छूओ।' कॉलेज में प्रवेश लेने से पहले मैं हर दिन ऐसा करता था। उन्होंने कहा, 'अपने कान पकड़ो और दस सिट-अप करो।' मैं हर दिन ऐसा करता था। उसने कहा, 'घोड़े की तरह चलो।' मैं हर दिन ऐसा करता था। कुछ दिनों बाद, वह मेरी पीठ पर बैठने लगा और मुझे चलने पर मजबूर करते हुए कहने लगा, 'चल मेरे घोडे टिक टिक टिक...' और फिर, जो होना ही था, वह हो गया। उसने पहले गले लगाने को कहा, फिर चूमने को... और एक दिन, उसने मुझे एक होटल के कमरे में बुलाया और मेरे साथ अब्राहम से बात की। मैंने कॉलेज जाना बंद कर दिया। मैंने अपनी माँ को बताया, और मेरी माँ ने मेरे पिता को बताया। मेरे पिता ने मुझे डंडे से बुरी तरह पीटा; मेरी माँ बड़ी मुश्किल से मुझे बचा पाई। उस लड़के के फोन आने लगे और मैं बहुत परेशान हो गया। वह मुझे किसी न किसी तरह से धमकाता रहा। अंत में, मेरी माँ मुझे मेरे नाना-नानी ' घर ले गई। हमने मोबाइल फोन बंद कर दिया। किसी तरह, उस लड़के ने हमारा ठिकाना ढूंढ लिया और वहां एक पत्र लिखा। इसमें उन्होंने मेरे साथ किए गए अश्लील कृत्यों का सूक्ष्म विस्तार से वर्णन किया। मेरी माँ भयभीत थी। हमने नवकर मंत्र का जाप करना शुरू कर दिया। तीसरे या चौथे दिन खबर आई कि 'लड़का दोस्तों के साथ सैर पर गया था और नदी में डूब गया।' हमें राहत मिली। लेकिन मेरी माँ भी यह सोचकर चौंक गईं, 'वह हमारे नवकर मंत्र की शक्ति के कारण मर गए।' मैंने यह समझाने की बहुत कोशिश की कि 'वह अपने पापों के कारण मर गया।' फिर भी, हमारे लौटने पर मेरी माँ ने उनके घर पर पूछताछ की। वह अपने माता-पिता का इकलौता बेटा था। वे अब वंचित थे। मेरी माँ ने उन्हें हर महीने पाँच हज़ार रुपये भेजना शुरू कर दिया।
(38) मुझे साधुओं और साध्वियों पर असीम विश्वास था और हमेशा रहेगा। लेकिन कुछ ऐसी घटनाएँ घटीं जिन्हें मेरे लिए अपने पापों के रूप में स्वीकार करना अनिवार्य है। हमारे शहर में रहने वाली एक साधुजी मुझे हर दिन चूमती थी, मुझे अपनी गोद में बिठाती थी और मेरे साथ खेलती थी। वह मुझे चॉकलेट देती थी। मुझे

लगता है कि उसके कार्य शारीरिक इच्छा से पैदा हुए थे। उसने मुझे कई बार अनुचित तरीके से छुआ।
(39) मैंने छोटे कपड़े पहनकर और सूर्यास्त के बाद भी उपश्रय में जाने की आदत बना ली थी। मैंने उपाश्रय की मर्यादा का पालन नहीं किया।
(40) छोटे-मोटे प्रश्नों या स्वीकारोक्ति (अलोकाना) के बहाने मैं युवा साधुओं से जुड़ गया। मैं अक्सर उनसे मिलने जाता था और घंटों बातें करता था। मैं यह सब साधुजी भगवंत के साथ भी कर सकता था, लेकिन अपनी दुष्ट प्रवृत्तियों के कारण मैंने विपरीत लिंग के साथ अपना संपर्क बढ़ा लिया।
(41) गोचारी के दौरान घर में उत्तेजक पोशाक पहनकर मैंने अनेक साधु भगवद्दों के मन को भ्रष्ट करने का बड़ा पाप किया। मैंने दुपट्टा या इसी तरह का कोई अन्य आवरण पहनने के औचित्य पर ध्यान नहीं दिया।
(42) यह मेरी शादी के बाद की बात है। मैं गर्भधारण करने में असमर्थ थी। किसी की सलाह पर मैं मूर्ख की तरह साधु एमएस के पास गया। बच्चे की चाहत में मैंने उस साधु से अपने हाथों से मेरे पेट पर वसाक्षेप लगाने को कहा।
(43) मैं उचित सीमाओं से अनभिज्ञ था, इसलिए मैं अक्सर साधु एमएस के उपाश्रय में अकेले जाता था। मैं लगभग सोलह या सत्रह साल का था। मुझे साधु एमएस के साथ बात करने में आनंद आने लगा और उन्होंने मुझे अपना समय भी दिया। मैं अपना सिर ओधनी से ढके बिना ही चला जाऊंगा। मैं अक्सर जींस और टी-शर्ट पहनकर जाता था। मेरे बाल अक्सर खुले रह जाते थे। साधु से कम से कम तीन हाथ की दूरी पर बैठने के बजाय, मैं उसके बहुत करीब बैठूंगा। मैं साधु एमएस के साथ बिना किसी शिष्टाचार के हंसा और मजाक किया। साधु ने एक बार भी मुझे डांटा नहीं या मेरे उत्तेजक कपड़ों, मेरे खुले बालों या मेरे इतने करीब बैठने के बारे में कोई निर्देश नहीं दिया। उन्होंने स्वयं मुझसे सहजता से बात की। अब मुझे एहसास हुआ कि मैंने बहुत-सी सीमाएं तोड़ दीं और मेरी वजह से मैंने साधुओं के दिमाग को कलंकित कर दिया।
(44) मुझे ध्यान रखना चाहिए था कि झुकते समय मेरी मुद्रा (वंदन) बहुत खुलासा करने वाली हो सकती है, लेकिन मैंने ऐसा कोई ध्यान नहीं दिया। इससे अत्यंत अशोभनीय दृश्य उत्पन्न हुए, जिसके कारण साधुओं के मन में अनुचित विचार उत्पन्न हुए होंगे। मैं इस सब में एक साधन बन गया।
(45) एक साधु एम.एस. एक शक्तिशाली वक्ता, युवा और बुद्धिमान थे। मैं उसकी ओर आकर्षित हो गया। यह किसी गुरु (गुरुबाहुमन) के प्रति श्रद्धा नहीं थी; यह इंद्रियों का खेल था। अब मुझे यह बात समझ में आ गई है। वह साधु एमएस देर रात तक मुझसे मोबाइल फोन पर बात करते थे। हम दिन में भी बात करते, संदेश भेजते और फिर वीडियो कॉल शुरू हो जाती। धीरे-धीरे बातचीत अभद्र हो गई और पूरी रात जारी रही। चैट भी स्पष्ट हो गई, और फिर हमने फोटो और वीडियो भेजना शुरू कर दिया... यह सब अकथनीय था। मैंने यह सब उत्सुकता से किया। वह मुझे प्रेम पत्र लिखता था, बहुत अश्लील। मैं उसे जवाब लिखूंगा। हम दोनों बहुत नीचे गिर गए। एक अंधकारमय क्षण में, मैंने भी उसके साथ शरीर के पाप किये, और वह भी, कई बार। उस साधु एमएस ने न केवल मुझे बर्बाद कर दिया बल्कि अपना मठवासी जीवन भी नष्ट कर दिया। जब मुझे सच्ची समझ का एहसास हुआ तो मैंने सब कुछ पीछे छोड़ दिया। लेकिन वह साधु एमएस आज भी उपदेश देते हैं। वह मेरे जैसी लड़कियों और महिलाओं को बहकाता है। यह पंचम काल का प्रभाव है। मैं कुछ नहीं कर

सकता। मैंने अपने जीवन में अन्य पुरुषों के साथ कई पाप किए हैं, लेकिन यह सबसे बड़ा पाप लगता है, क्योंकि मैंने इसे एक साधु के साथ किया था। कृपया मुझे शुद्ध बनाओ, महाराज साहब! मैं अब अपने सांसारिक अस्तित्व का विस्तार नहीं करना चाहता। मुझमें अब और अधिक कष्ट सहने की शक्ति नहीं है।
(46) मैं सूर्यास्त के बाद भी साधु एमएस के उपाश्रय में बैठकर बातें करता रहा हूं। कभी-कभी, मैं सूर्यास्त के बाद एक घंटे तक साधु एमएस के साथ उनके उपाश्रय में बात करना जारी रखता था। यदि कई अन्य साधु भी मौजूद होते, यदि मेरे पति भी मेरे साथ होते, तो भी मुझे सूर्यास्त के बाद वहां नहीं रहना चाहिए था। मैंने इस नियम का कई बार उल्लंघन किया। इस बहाने कि 'सूर्यास्त के बाद आधे घंटे तक रोशनी रहती है' मैंने साधु एमएस के उपाश्रय में सूर्यास्त के बाद दो मिनट, कभी-कभी पांच, दस या पंद्रह मिनट तक रहकर बातचीत में शामिल होकर नियम तोड़ा। मुझे इसका प्रायश्चित करना होगा।
(47) छारी पालीत संघ के विहार के दौरान, मैं साधु एमएस के ठीक बगल में, या उनके ठीक पीछे, या उनके ठीक सामने चलता था। हमने बातें कीं, मजाक किया और हँसे। मैंने साधु के साथ ऐसा व्यवहार किया जैसे वह मेरा बीएफ हो। मैंने साधु एमएस से बात करके ही पूरे विहार पूरे कर लिए।
(48) मैंने साधु एमएस के साथ गिरनार और पालीताना की तीर्थयात्रा की–यह पूरी तरह से पागलपन का कार्य था! मेरा विचार था, 'मैं साधु एमएस के साथ तीर्थयात्रा करना चाहता हूं।' इसलिए अगर मैं थक गया और रुक गया, तो साधु एमएस मेरे लिए रुक जाएगा। अगर साधु एमएस रुक गए तो मैं भी रुक जाऊंगा। इस प्रकार हमने पति-पत्नी की तरह मिलकर तीर्थयात्रा पूरी की। साधु एमएस के बगल में, उनके पीछे या उनके सामने चलना, बातें करना और हंसना... यह सब बेहद अनुचित है। लेकिन मैंने ये सारी गलतियाँ अपनी नासमझी, मूर्खता और विवेक की कमी के कारण कीं। मन में यह विचार आता है कि साधु एमएस को मुझे रोकना चाहिए था। लेकिन उसने अपनी अशुद्ध इच्छाओं के कारण इस सारे दुराचार की अनुमति दी। और मैंने यह सब मूर्खता, अज्ञानता और आसक्ति के कारण किया।
(49) गिरनार और पालीताना में तीर्थयात्रा के दौरान मैंने शिष्टाचार के कई नियम तोड़े। गर्मी की छुट्टियों में नववानु यात्रा के दौरान मैंने पतले कपड़े पहने थे और ओधनी भी नहीं रखी थी। जैसे-जैसे मैं चढ़ता गया, मेरे कपड़े पसीने से भीग जाते और और भी पारदर्शी हो जाते। इन सब बातों से एक अश्लील तमाशा पैदा हो गया, लेकिन मैंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। यहां तक कि जब किसी ने इस ओर ध्यान दिलाया तो मैंने उनकी बात नहीं सुनी। आराम करने के स्थानों (पैराब्स) पर, मैं थकावट के कारण पूरी तरह से लेट जाता था, इस बात की परवाह किए बिना कि मेरे कपड़े कैसे व्यवस्थित हैं। उतरते समय कभी-कभी मेरे कपड़े उड़ जाते थे और मैं उन्हें ठीक करने की कोशिश करता था... लेकिन इससे बहुत अनुचित दृश्य उत्पन्न होता था। तेजी से उतरते समय मेरे शरीर की हरकत भी दर्शकों के लिए उत्तेजक थी। ऐसी कई सीमाएँ थीं जिन्हें मुझे बनाए रखना चाहिए था, और मैं उन्हें बनाए रखने में सक्षम था, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया। शादी से पहले मैं जो तीर्थयात्राएं कपड़ों में करती थी और शादी के बाद साड़ियों में... दोनों अवसरों पर और अनेक तीर्थयात्राओं में, मैं शिष्टाचार का पालन करने में असफल रही, हालांकि मैं बेहतर जानती थी। वास्तव में, अब मुझे लगता है कि मेरे मन की कहीं गहराई में पुरुषों को आकर्षित करने का घिनौना इरादा रहा होगा। इसीलिए मैंने शिष्टाचार

नहीं बनाए रखा, है ना? अन्यथा, पुरुषों के साथ इतने वर्षों के अनुभव के बाद, क्या मुझे यह जानने की समझ नहीं होगी कि उन्हें क्या आकर्षित करता है? वे कौन सी चीजें देखते हैं जो उन्हें कामुक बनाती हैं? मैं यह सब कैसे नहीं जान सका? बेशक, मुझे पता था।

(50) जब मैंने छह दिन के उपवास के बाद सात तीर्थयात्राएँ कीं, तो मैंने आचरण के कई नियम भी तोड़े। मैं एक युवक के सहयोग से चढ़ाई पर चढ़ा, जिसमें उसने मुझे करीब से छुआ। मैंने पुरुषों से अपने पैरों पर दबाव डाला। पुरुषों ने मुझ पर पानी छिड़का, इतना कि ऐसा लगा जैसे वे मुझे नहला रहे हों। मेरे सारे कपड़े गीले और पारदर्शी हो गये। पुरुषों ने यह सब देखा होगा। पिछली दो तीर्थयात्राएँ मैंने केवल अपने दोनों हाथों को दो व्यक्तियों के कंधों पर रखकर पूरी कीं। इस सब में, उपवास, प्यास, भूख और कमजोरी के कारण, मुझे तीव्र इच्छा का अनुभव नहीं हुआ, लेकिन छोटे-मोटे विचार निश्चित रूप से उठे। मैं इससे इनकार नहीं कर सकता। अब मुझे यह स्पष्ट लगता है कि पानी को इस तरह से नहीं फेंका जाना चाहिए कि कपड़े भीग जाएं, और पुरुषों को किसी भी परिस्थिति में किसी महिला को नहीं छूना चाहिए। यह आदर्श होना चाहिए। खैर, यह सिर्फ मेरी भावना है। लेकिन तथ्य यह है कि उन सात तीर्थयात्राओं में, मैं दूसरों की उत्तेजना का साधन बन गया और स्वयं भी उत्तेजित हो गया, और यही मेरा पाप है।

(51) एक साधु की जांघ पर एक सथियो का निशान होता है, और वह इसे सभी को दिखाता है; इसे देखने के लिए एक रेखा बनती है। मैंने मूर्ख की तरह, जिज्ञासावश, उसकी जांघ पर लगे उस सथियो को देखा। लेकिन यह पाप है। इसे देखने का क्या फायदा है? साधु की जांघ को देखना–कितना गंदा काम है! मैंने ऐसा काम क्यों किया?

(52) मैंने शादी के जुलूसों में सड़कों पर दिल खोलकर नृत्य किया है। उत्तेजक कपड़े, श्रृंगार और शारीरिक गतिविधियां... यह आश्चर्य की बात होगी यदि पुरुष उत्तेजित न हों! लेकिन मेरी इच्छा सभी को अपनी ओर आकर्षित करने की थी; मैं चाहता था कि हर कोई मेरी ओर देखे। मेरा उद्देश्य केवल मेरी उपस्थिति पर ध्यान देना था। इतने घिनौने इरादे से मैंने बिना किसी पश्चाताप के नृत्य किया। शादी से पहले कई बार मैंने लड़कों के साथ नृत्य किया, और शादी के बाद, मैंने अपने पति के साथ-साथ अन्य पुरुषों के साथ भी नृत्य किया, सड़क पर उछल-कूद की! अब जब मैं इन दृश्यों को याद करता हूं तो मुझे शर्म आती है। जब मैं उस समय के पुरुषों की सैकड़ों वासना-भूखी आँखों की कल्पना करता हूँ, तो मुझे डर लगता है। मैं ऐसे पापों में क्यों फँस गया? मुझे अपना शरीर प्रदर्शित करने की क्या आवश्यकता थी? मैं बाज़ार की एक महिला से बेहतर नहीं बन पाई। सभी प्रकार के नीच पुरुष मेरी ओर देखते थे, और मैं उन्हें देखने देती थी, यहां तक कि सक्रिय रूप से खुद को उनके सामने दिखाती थी। हे गुरुदेव! मिचामी दुक्कादम.

(53) सिद्धिताप के सामूहिक जुलूस में, अपने परिवार के कहने पर और अपनी सहमति से, मैंने उपवास के आठवें दिन सड़क पर नृत्य किया। सैकड़ों लोगों ने मुझे नाचते देखा। मुझे यकीन है कि उन्होंने मुझे तपसवी (तपस्वी) के रूप में नहीं देखा। मुझे देखकर उनमें आध्यात्मिक प्रशंसा (अनुमोदन) की भावना उत्पन्न नहीं होती। उनमें केवल एक ही भावना उत्पन्न हुई होगी: एक 19 वर्षीय लड़की को नाचते देखकर वासना की भावना! भ्रष्टता की भावनाएँ! मैंने पाप को धर्म के क्षेत्र में भी प्रवेश करने दिया। जो लोग यह सब देख रहे थे,

उन्होंने भले ही मेरे साथ शारीरिक रूप से कुछ नहीं किया हो, लेकिन उनके मन में तो सब कुछ किया ही होगा। मन के पाप के कारण ही तंदुलिया मत्स्य सातवें नरक में जाता है, तो ये सभी आत्माएं कहां जाएंगी?
(54) मुझे अपने भाई के दोस्त पर क्रश हो गया, लेकिन मैं उसे बता नहीं सका। उन्होंने दीक्षा ली। एक दिन, जब मेरी माँ मेरी किताबें जाँच रही थी, मेरी नोटबुक से एक प्रेम पत्र गिर गया। यह मुझे लिखा गया था, लेकिन नीचे प्रेषक का कोई नाम नहीं था। मैंने सोचा, 'उस लड़के के मन में मेरे लिए भावनाएँ विकसित हुई होंगी; उसने यह पत्र लिखा होगा। चूँकि मैंने कोई उत्तर नहीं दिया, इसलिए उन्होंने दीक्षा ले ली।' मुझे बहुत अफसोस हुआ। यदि वह पत्र उस समय मेरे हाथ में आया होता तो मैं तुरंत हाँ कह देता। मेरी इच्छा पूरी हो जाती. लेकिन अब क्या किया जा सकता है? उसके बाद मेरी शादी हो गई, मैं दो बच्चों की मां बन गई और अतीत को भूल गई। लेकिन अचानक मुझे खबर मिली कि 'वही साधु एमएस हमारे संघ में आ गए हैं।' सत्रह साल पुरानी इच्छाएँ फिर से जागृत हो गईं। मुझे लग रहा था कि उसने मुझसे प्यार किया है और मैंने उससे प्यार किया है। इसलिए मैं उससे मिलने ऐसे गया जैसे मैं किसी लंबे समय से खोए हुए प्रेमी से मिलने जा रहा हूं। मेरे कपड़े भी अस्त-व्यस्त थे। एमएस ने मुझसे शिष्टाचार बनाए रखने को कहा। मैं क्रोधित हो गया. जब मैंने सब कुछ समझाया तो एमएस ने कहा, 'आप गंभीर गलतफहमी में हैं। मैंने तुम्हें कभी कोई पत्र नहीं लिखा। मैं हमेशा तुम्हें अपनी बहन मानता था। कृपया ऐसे विचारों को अपने मन से निकाल दें। और अगर मैंने वह पत्र लिखा भी होता तो भी मैं अब साधु हूं। उस समय से सत्रह साल बीत चुके हैं! तुम्हें शर्म आनी चाहिए।' मुझे एहसास हुआ कि मैंने स्थिति को पूरी तरह से गलत समझा था। फिर मैं वहीं से चला गया। इस मामले में, मैंने एक साधु एमएस से संपर्क किया और उसे अपना पुराना प्रेमी मान लिया, अपनी साड़ी ठीक से नहीं पहनी, कोई शिष्टाचार नहीं रखा और उससे एक प्रिय व्यक्ति की तरह बात की। ये सभी पाप मेरे आसक्ति से उत्पन्न हुए थे।
(55) महाराज साहब! ३५ साल की उम्र के बाद उपदेश सुनने से मेरी जिंदगी बदल गई। मैंने लगातार धर्म का पालन करना शुरू कर दिया: प्रतिक्रमण के दो सत्र, पूजा, व्याख्यानों में भाग लेना, और अयाम्बिल और एकासन जैसे उपवास करना। यहां तक कि मेरे पति के साथ मेरी बातचीत भी अनिवार्य रूप से उपदेशों के विषयों पर केंद्रित हो जाती थी। मेरे पति को धर्म में कोई रुचि नहीं थी। वह अन्य महिलाओं और वेश्याओं के साथ गलत रास्ते पर भटक गया। मुझे यह बात बहुत बाद में पता चली। मैं इसे सहन नहीं कर सका. मैं अपने पति को खोना नहीं चाहती थी। मैंने उसके साथ अब्राहम में संलग्न होने की अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी। उनकी इच्छा पर, मैंने उनके साथ नीली फिल्में, अश्लील फिल्में और वेब सीरीज देखीं। मैंने डांस पार्टियों में उसके साथ अश्लील डांस किया। उसे आकर्षित करने और खुश करने के लिए मैंने घर और बाहर दोनों जगह छोटे और उत्तेजक कपड़े पहने। मेरी पोशाक देखकर कुछ लोगों ने मुझे ऐसा न करने की सलाह भी दी, लेकिन मैं उन्हें असली कारण नहीं बता सका। मैं अभी अपने पति के कहीं और जाने को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हूं। मैंने कई अनुचित कार्य किये। उस पति को, जो एक भटकते भूत की तरह था, पकड़ने के लिए मैं बहुत नीचे गिर गयी। और यह कहना गलत है कि उस दौरान मुझे कोई लगाव महसूस नहीं हुआ। मैंने इस सब का आनंद लिया। प्राथमिक इरादा अपने पति को अपना ही रखना था, लेकिन ऐसा करने से मैं भी शारीरिक

इच्छाओं के दलदल में फंस गई।
(56) यह मेरी किशोरावस्था की बात है। मेरे घर पर एक पालतू कुत्ता था। रात में मैं उसके साथ अश्लील हरकतें करता था। उसके मरने के बाद मैंने दूसरा कुत्ता पाला और उसके साथ भी वही पाप किया। मैंने सैकड़ों बार पाशविकता का प्रदर्शन किया।
(57) यह भी मेरी किशोरावस्था की बात है। मैंने अपने बेडरूम में एक खास तकिया रखा। रात को मैं उसे गले लगाकर सो जाता था। कल्पना कीजिए 'यह मेरा बी.एफ. है, मेरा पसंदीदा हीरो है', मैं तकिये के सहारे अभिनय करूंगी। इस तरह, मैं सैकड़ों बार हस्तमैथुन में संलग्न रहा।
(58) किशोरावस्था से ही मेरी एक बुरी आदत थी: मेरी नज़र हमेशा किसी भी आदमी के निजी अंगों की ओर जाती थी। मंदिर, उपाश्रय या किसी भी अन्य स्थान पर मैं पुरुषों के शरीर को इस तरह देखता था। मैंने यह पाप सैकड़ों बार किया। मैंने छोटे बच्चों के गुप्तांगों को प्रत्यक्ष रूप से देखा जब वे कपड़े नहीं पहने हुए थे।
(59) मेरी गायन आवाज़ अच्छी थी. मैं संगीत सीखने के लिए संगीत कक्षा में जाने के लिए 10 किमी की यात्रा करता था। मैं अपने शिक्षक (सर) का पसंदीदा बन गया। हमारा परिचय बढ़ता गया और फिर वही सारे पाप घटित हुए –गले लगाना, चूमना, आदि, और अब्राहम भी, वह भी लगभग पांच बार। उसके बाद मैंने वहां सीखना बंद कर दिया।
(60) पाठशाला में अविवाहित युवा शिक्षक ने मुझे धर्म के बारे में बहुत कुछ सिखाया, लेकिन अंततः उनकी नज़र भी भ्रष्ट हो गई। वह मेरे साथ अनुचित व्यवहार में लिप्त हो गया, जिसके बाद मैंने उसके साथ पढ़ाई करना पूरी तरह से बंद कर दिया।
(61) उस दिन दोपहर 11:30 बजे मैं पूजा करने गया। डेरासर में केवल मंदिर का पुजारी (पुजारी) था। मुख्य मूर्ति की पूजा करने के बाद, मैं नेमिनाथ दादा की पूजा करने के लिए तहखाने (भोयरा) में गया। तहखाना गहरा था। पुजारी ने इस अवसर का फायदा उठाया और तहखाने में मेरे साथ बलात्कार किया। बाद में, जब वह जाने के लिए उठ रहा था, तो मेरे अंदर भयंकर क्रोध उमड़ पड़ा। मैंने अचानक उसका पैर खींचा और उसे ज़मीन पर फेंक दिया। उसका चेहरा फर्श से टकराया और खून बहने लगा। इससे पहले कि वह प्रतिक्रिया कर पाता, मैंने उसके पेट पर जोर से और तेजी से लात मारना शुरू कर दिया। वह दर्द से चिल्लाया। मैंने उसके गुप्तांगों पर जोरदार लात मारी। मैंने उसके सिर पर धातु के बर्तन से बार-बार वार किया। वह खून से लथपथ था। अंत में, मैंने उसके चेहरे पर लात मारी और उसके दांत तोड़ दिए, और फिर मैं भाग गया। मैं घर गया और अपनी माँ को बताया। अगले दिन, हमने खबर सुनी कि 'पुजारी अस्पताल में है, उसे होश आ गया है लेकिन वह पुलिस को कुछ नहीं बता रहा है।' मुझे उसे इस तरह पीटने का कोई पछतावा नहीं है। आज तक, मैं उसके प्रति कोई द्वेष नहीं रखता, लेकिन मुझे यह स्पष्ट लगता है कि यदि ऐसे भ्रष्ट लोगों को तत्काल दंड मिलता है, तो वे जीवन भर पाप करना भूल जाएंगे। कई अन्य लड़कियों का सम्मान बच जाएगा। उन पतितों को दोबारा वह पाप करने से रोका जाएगा। बलात्कार के दौरान, वह अपनी वासना के कारण शक्तिशाली था, और चूंकि यह मेरे लिए अप्रत्याशित था, इसलिए मैं भयभीत थी। लेकिन बलात्कार के बाद वह लंगड़ा और तनावमुक्त हो गया था; उसे मेरे हमले का कोई आभास नहीं था। और जैसे ही मैं प्रतिशोधी हो गया, मेरे भीतर एक भयानक

ताकत उमड़ पड़ी।
(62) अपने पति के साथ अब्राहम में लिप्त रहते हुए, मैंने अपने मन में विभिन्न नायकों और अन्य पुरुषों की कल्पना की। इस कल्पना के कारण, मुझे अधिक उत्तेजना और अधिक तीव्र इच्छाओं का अनुभव हुआ।
आपके द्वारा प्रदान किया गया पाठ एक गहन व्यक्तिगत और कच्चा स्वीकारोक्ति (अलोकाना) है, जो दो मुख्य भागों में विभाजित है: खंड 58-88 यौन अपराधों (अपवित्रता/अब्राहमा) पर केंद्रित है, और खंड 1-15 ("ब्लैक डायरी" से) भौतिक चीजों और आत्म-छवि (अधिकार/परिग्रह) के प्रति जुनूनी लगाव पर केंद्रित है।
भाग 1: वासना और कदाचार की स्वीकारोक्ति (58-88)
(63) मैं एक "ब्लू फिल्म" (पोर्नोग्राफी) देखने के लिए थिएटर गया था। यह फिल्म देखते समय मुझे और मेरे पति को अत्यधिक वासना का अनुभव हुआ। अंधेरे का फायदा उठाते हुए, हम एक-दूसरे के साथ अनुचित शारीरिक कृत्यों में लगे रहे। उन दृश्यों को विशाल स्क्रीन पर देखने से भयानक इच्छाएँ भड़कना तय था, और मैंने इसका अनुभव किया।
(64) मैंने पुरुषों की मौजूदगी में स्विमसूट पहनकर स्विमिंग पूल में स्नान किया। यह जानकर कि पुरुष मुझे देख रहे थे, मुझे गर्व महसूस हुआ। नहाते समय मैंने जानबूझकर अपने शरीर को इस तरह हिलाया कि उनकी आंखें और भी अधिक आकर्षित हों।
(65) जब मैं गोवा गया, तो मैंने छोटे कपड़े पहने और समुद्र के किनारे घूमता रहा, समुद्र में नहाया और उन बुरे दृश्यों को अपने मोबाइल पर पोस्ट किया। मैंने अपने बॉयफ्रेंड (बीएफ) के साथ कई तरह की स्वतंत्रताएं लीं; हम समुद्र में एक साथ नहाते थे। होटल में हम अनैतिकता में लिप्त थे। शादी के बाद भी जब हम कपल ट्रिप पर गए तो हमने ऐसे ही पाप किए। मैंने अन्य पतियों के साथ गंदे चुटकुले बनाए, अश्लील चुटकुले साझा किए, और जब मेरे पति मौजूद थे तब भी हमने एक-दूसरे को कामुक इरादे से देखा।
(66) मेरी सगाई के बाद मेरे पति मुझमें ज़्यादा दिलचस्पी नहीं ले रहे थे। उसे आकर्षित करने के लिए मैंने गंदी बातें और चैटिंग शुरू कर दी। मैंने जानबूझकर कपड़े बदलते समय वीडियो कॉल चालू रखी ताकि वह सब कुछ देख सके। जब वह मुझसे मिलने आते तो मैं कमरे को बंद कर देती और गले मिलने और चूमने लगती तथा कई ऐसे काम करती जिनका जिक्र नहीं किया जा सकता। मेरे व्यवहार ने उसे उत्तेजित कर दिया, और वह भी कदाचार में संलग्न होने लगा।
(67) ट्रेन में यात्रा करते समय, मैं अपने भावी पति के साथ शौचालय में गई और शारीरिक दुराचार, गले लगाने और चूमने में लिप्त हो गई, और हमने ट्रेन की एक ही सीट पर अनुचित चीजें कीं।
(68) मेरे पति का स्वभाव शांत है; उन्हें सेक्स, गले मिलने या चुंबन में कम रुचि है। लेकिन मेरी वासना इतनी तीव्र थी कि मैं हर दिन यह आनंद चाहता था। हर रात मैं उससे भिखारी की तरह भीख मांगता था। मैं कई बार रोया, कई बार गुस्सा हुआ। जब मैं उससे संतुष्ट नहीं होती थी, तो मैं हस्तमैथुन (एमबी) का अभ्यास करती थी। ऐसा अनगिनत बार हुआ, और मैं अभी भी इस पाप को नहीं छोड़ सकता।
(69) अपने पति से संतुष्टि न मिलने के कारण मैंने बाज़ार से सेक्स टॉय खरीदे और उनके ज़रिए अपनी वासना को संतुष्ट करने की कोशिश की। दुकानदार ने मुझसे कहा, "यदि आप इस मशीन के बजाय प्रत्यक्ष

आनंद चाहते हैं, तो मैं तैयार हूं।" मैंने स्वीकार कर लिया और उस दुकानदार के साथ चार बार सेक्स किया, फिर उसे छोड़ दिया।

(70) मैंने ऑनलाइन डेटिंग ऐप्स के माध्यम से कई बार अनैतिकता में भाग लिया।

(71) हमने "ब्लाइंड डेट" खेला मैंने अपनी आंखों पर एक काला कपड़ा बांधा, वहां खड़े एक आदमी को पकड़ा, फिर कपड़ा हटाया और उसके साथ यौन संबंध बनाए। हमने कॉलेज में यह खेल खेला था और शादी के बाद भी मैं इस पापपूर्ण खेल में उत्सुकता से शामिल हो गयी।

(72) मुझे यह लिखते हुए शर्म आ रही है, लेकिन एक महिला भिक्षु (साधविजी) ने कई बार मेरे साथ समलैंगिक कृत्य किए। मुझे भी यह पसंद आया और मैंने उसे रोका नहीं। यह पाप कम से कम १०० बार हुआ।

(73) बगीचों जैसे सार्वजनिक स्थानों पर, लोगों के गुजरने के बावजूद मैंने बेशर्मी से अपने बीएफ को गले लगाया और चूमा। हम एक दूसरे से चिपके बैठे रहे, इस बात की परवाह किए बिना कि किसने देखा। मेरे कपड़े उत्तेजक थे और शादी के बाद मैंने अपने पति के साथ भी सार्वजनिक रूप से ऐसा ही किया।

(74) मैं बाइक पर अपने बीएफ के पीछे बैठ गया और दोनों हाथों से उसे कसकर पकड़ लिया। वह जानबूझकर अचानक ब्रेक लगाता और मैं उस पर दबाव डालता। हम दोनों को यह पसंद आया। मेरी टी-शर्ट ऊपर उठ जाती थी, जिससे एक अशोभनीय दृश्य उत्पन्न होता था; मुझे यह सब पसंद था और कॉलेज के दौरान मैंने ऐसा सैकड़ों बार किया।

(75) मैंने तंग और उत्तेजक कपड़े पहने और ऐसी शैलियों में खड़ा हुआ जो निश्चित रूप से पुरुषों के मन में वासना को प्रज्वलित कर देगी। मैंने कई जगहों पर जानबूझकर ऐसा किया। शादी के बाद भी मैंने पीछे नहीं हटी।

(76) अपने माता-पिता को जाने बिना, मैंने गंदी फिल्में देखीं और इतिहास को हटा दिया। मैंने गुप्त फ़ोल्डर बनाए और अश्लील सामग्री देखकर सैकड़ों बार पाप किया।

(77) मैंने अपने दोस्तों को सेक्स में शामिल होने के लिए प्रेरित किया, इसकी प्रशंसा करते हुए कहा कि "यह बहुत मज़ेदार है", जिससे वे इसके लिए उत्सुक हो गए। मैंने पुरुषों के साथ भी ऐसा ही किया।

(78) मैंने अपनी महिला मित्रों को पतियों या बीएफएस को आकर्षित करने के गंदे तरीके सिखाए। मैंने पुरुषों को यह भी सिखाया कि "जबरदस्त आनंद" पाने के लिए अपनी जीएफ/पत्नियों के साथ कैसे व्यवहार करना है मैंने अपने अनुभव के आधार पर उन्हें अश्लील इशारे सिखाए।

(79) मैंने अपने मासिक धर्म चक्र (एमसी) के दौरान कई बार अपने पति के साथ सेक्स किया, कभी-कभी उनके बल पर, लेकिन ज्यादातर मेरी अपनी इच्छा के कारण।

(80) शादी से पहले मेरे पति मुझे फोन पर बताते थे कि उन्हें महिलाओं के शरीर के कौन से अंग पसंद हैं। मैं उन्हें कई बार वीडियो कॉल पर वे हिस्से दिखाता था।

(81) जब मैं छोटा था, तो मैं अपने माता-पिता के कमरे में फर्श पर सोता था जबकि वे बिस्तर पर सोते थे। कई रातों को मैं जाग गया और उनके चुंबन की आवाजें सुनीं। मैं उठा नहीं, लेकिन वहीं लेटे-लेटे सुनता रहा। युवा

होने के कारण मुझे सब कुछ पता नहीं था, लेकिन टीवी/मोबाइल के कारण मेरे मन में एक विचार आया। उन छवियों से मेरा दिमाग दूषित हो गया।
(82) प्रवचन सुनते समय, एक सुंदर मुनि के प्रति मेरे मन में काम-वासना जाग्रत हुई। यहाँ तक कि 'यह मेरे पति हैं' जैसे दूषित विचार आए और उनके साथ शारीरिक क्रियाओं की कल्पना भी की।
(83) मैं फिटनेस के लिए जिम गई और तंग कपड़े पहने, जिससे कई पुरुषों में वासना का कारण बनी। जिम का प्रशिक्षक सिखाने के बहाने मुझे कई बार छूता था, और मुझे यह अच्छा लगता था। धीरे-धीरे, मुझे उस स्पर्श की चाह होने लगी।
(84) मेरा चेहरा और शरीर आकर्षक थे। मेरे पति ने अपने व्यवसाय में मेरा इस्तेमाल किया। किसी "बुरे काम" के लिए नहीं, बल्कि मुझे ग्राहकों से मिलने और उन्हें व्यापार के लिए प्रेरित करने के लिए आकर्षक कपड़ों और मेकअप में ऑफिस जाना पड़ता था। ग्राहक मेरे सौंदर्य का रसपान करते और मन में गंदे विचार लाते, और उसके बदले में हमारा व्यापार फलता-फूलता था। अब मैं समझती हूँ कि एयरलाइंस, नर्सिंग और विज्ञापनों में महिलाओं को आगे क्यों रखा जाता है। इसका एक ही गणित है: सुंदर महिलाएँ ग्राहकों को खुश करती हैं, और व्यापार बढ़ता है। मैंने पैसों के लिए अपने सौंदर्य और हाव-भाव की नीलामी की। भगवान जाने मैंने कितने भारी कर्म बांधे।
(85-88) मैंने फिल्मों और सीरीज़ में बार-बार रोमांस/चुंबन के दृश्य देखे। मैंने माता-पिता से छिपकर, सही उम्र से पहले पोर्नोग्राफी और वयस्क सामग्री देखी। मैंने फिल्मी दृश्यों के आधार पर व्यभिचार की कल्पना की। मैंने गलत वेबसाइटों का इस्तेमाल किया और एकांत में अपने बॉयफ्रेंड/होने वाले पति के साथ यौन संबंध बनाए। मैंने रूमानी गीतों को व्यभिचार से जोड़ा और उन्हें अच्छा माना।
(89-90) मैंने अपने बॉयफ्रेंड को व्यभिचार के लिए उत्साहित किया, यह दिखावा करते हुए कि मेरे हाव-भाव "गलती से" हो गए थे। मैंने उसे दोबारा ऐसा करने के लिए ब्लैकमेल करने हेतु उसकी नग्न तस्वीरें लीं। मैंने अपने पति/बॉयफ्रेंड को सेक्स के लिए परेशान किया, उन्हें अपनी उंगलियों पर नचाया।
(91-92) स्कूल/कॉलेज में दिखावा करने या अपना रुतबा बढ़ाने के लिए, मैंने न चाहते हुए भी छोटे कपड़े पहने, सिर्फ इसलिए ताकि मुझ पर "रूढ़िवादी" का ठप्पा न लगे। मैंने अपने बॉयफ्रेंड को गले लगाया/चुंबन दिया, भले ही मुझे यह हमेशा पसंद न हो। मैंने ईर्ष्या के कारण ट्यूशन/स्कूल में लड़कियों को उनके बॉयफ्रेंड/गर्लफ्रेंड की स्थिति को लेकर छेड़ा और अफवाहें फैलाईं।
भाग २: मेरी काली डायरी – ममत्व/परिग्रह
(1) मैं सुंदर हूँ। बचपन में, मैं बार-बार आईने में देखता था, अपनी सुंदरता पर प्रसन्न होता था। अब मुझे एहसास होता है कि यह चेहरा बुढ़ापे में मुरझा जाएगा और श्मशान में राख हो जाएगा, तो फिर यह मोह क्यों?
(2) मुझे अपने बालों और नई हेयर स्टाइल का जुनून था। मैं फिल्मी नायकों और क्रिकेटरों की नकल करता था। इसमें बहुत पैसा खर्च होता था। मेरे माता-पिता कहते थे कि यह बर्बादी है और प्राकृतिक बाल ईश्वर का उपहार हैं, लेकिन मुझे उनकी सलाह पर ऊब और गुस्सा आता था। मैं कभी-कभी "मवाली" जैसा दिखता था, जिससे वे नफरत करते थे, लेकिन मुझे कोई परवाह नहीं थी। अब मुझे एहसास होता है कि इस जुनून के

कारण, मैं भविष्य के जन्मों में बालों में जूँ बन सकता हूँ, या गंजा पैदा हो सकता हूँ। मैंने घर पर हेयर स्टाइलिंग मशीन का भी इस्तेमाल किया...

(3) बालों को मुलायम रखने के लिए मैं रोज शैम्पू का इस्तेमाल करता था। किसी ने मुझे बताया कि उनमें मांसाहारी तत्व (चर्बी/खून) होते हैं, लेकिन मैंने अपने बालों की खातिर जानवरों के प्रति होने वाली हिंसा को नजरअंदाज कर दिया। अब मुझे एहसास होता है कि भविष्य के जन्मों में, दूसरे लोग अपने बालों को मुलायम बनाने के लिए मेरे खून/चर्बी का इस्तेमाल कर सकते हैं।

(4) मैं गोरा रहने और अच्छी महक के लिए रोज लक्स जैसे साबुनों का इस्तेमाल करता था। मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि साबुन हिंसा से बना है या नहीं।

(5-6) मुझे कपड़ों के मिलान का जुनून था–कौन सी शर्ट के साथ कौन सी पैंट। मुझे अपनी काली जींस, टी-शर्ट और चश्मे बहुत पसंद थे। स्कूल में "सिविल ड्रेस" वाले दिनों में, मैं जल्दी जाता था ताकि मैदान में खड़ा हो सकूँ और हर कोई मेरे "टॉप" कपड़ों की ओर आकर्षित हो। मैं चमड़े की बेल्ट पहनता था और उनका मिलान करता था। ट्यूशन में, जहाँ ४०० छात्र थे, मैंने आकर्षण के ये नाटक किए।

(7) मेरे पास एक बिल्कुल अच्छी साइकिल थी, लेकिन मैंने अपने माता-पिता को नवीनतम हीरो रेंजर मॉडल खरीदने के लिए मजबूर किया क्योंकि इससे मेरे अहंकार को तुष्टि मिलती थी। मैंने छोटी दूरी तक भी पैदल चलने से इनकार कर दिया क्योंकि "पर्सनैलिटी" तो एक टॉप साइकिल पर ही महसूस होती थी।

(8) कॉलेज में मेरी हरकतें बढ़ गईं। जवानी आ गई थी, और प्रभावित करने के लिए लड़कियाँ थीं। एक साइकिल काफी नहीं थी। मैंने एक महंगी, असाधारण बाइक (रॉयल एनफील्ड) ली ताकि जब मैं प्रवेश करूँ तो तेज आवाज से सब मुझे देखें। बाद में, मैंने एक उच्च श्रेणी की कार ले ली। मैं उसे पार्क करता और चश्मे और आकर्षक कपड़ों में एक "हीरो" की तरह बाहर निकलता। मैं पढ़ने नहीं जाता था; मैं दिखावा करने जाता था।

(9-10) मुझे परफ्यूम/इत्र/पाउडर का जुनून था। मैं चाहता था कि जब मैं गुजरूँ तो पूरा माहौल सुगंधित हो जाए। मैं मांसपेशियों को बनाने के लिए जिम में रोज एक घंटा कसरत भी करता था। मुझे अपनी फिटनेस का जुनून था और मोटा न होने के लिए अपने भोजन पर सख्ती से नियंत्रण रखता था। अगर कोई मुझे मोटा कहता, तो मुझे गुस्सा आता और मैं डाइटिंग पर चला जाता।

(11) मुझे जूतों का पागलपन था। ब्रांडेड, महंगे और विभिन्न प्रकार के। मेरा एक नियम था: एक बार पहने हुए जूते ७ दिनों तक दोबारा नहीं पहने जाएँगे। मोजों के लिए भी, मुझे ब्रांडिंग और मैचिंग का जुनून था। अगर वे थोड़े भी फट जाते, तो मैं उन्हें फेंक देता और नए खरीद लेता। जब मेरे पिता पैसे बचाने की कोशिश करते, तो मैं उन्हें कंजूस कहता। अपने पिता के पैसे का उपयोग करते हुए, मुझे धन के मूल्य का एहसास नहीं हुआ। अब मुझे पछतावा है कि मैं उन पैसों से गरीबों की मदद कर सकता था।

(12) मुझे स्टेशनरी–रबर, पेंसिल, पार्कर पेन–पर ममत्व था। मैं दूसरों को उनका उपयोग नहीं करने देता था। मैंने दोस्तों के आकर्षक रबर चुराए भी और जब उन्होंने पूछा तो झूठ बोला।

(13-14) मुझे अपनी तस्वीरों का जुनून था। मेरे फोन में ११,००० सेल्फी थीं। जब एक मुनि ने मुझे उन्हें हटाने के

लिए कहा, तो मैंने ३,००० हटाने का प्रण लिया, लेकिन यह तय करने में मुझे ३ दिन लग गए कि कौन सी हटानी हैं क्योंकि मुझे वे सभी प्रिय थीं। एक महीने के भीतर, मैंने ४,००० नई ले लीं। मैं रोज एक घंटा अपनी १४,००० तस्वीरों को देखने में बिताता, अपनी तुलना नायकों से करता। मैंने अपने फोन के पीछे अपनी स्टाइलिश फोटो भी चिपकाई और तारीफ पाने के लिए हर महीने उसे बदलता था।

(15) मैं स्कूल/कॉलेज में अपनी गर्लफ्रेंड से बहुत परेशान रहता था। अगर वह किसी दूसरे लड़के से बात करती, तो मैं ईर्ष्या से जल उठता। मैं कठोर शब्दों का प्रयोग करता, लेकिन जब वह मुझे अनदेखा करती, तो मैं एक भिखारी की तरह उससे भीख माँगता। जब उसने आखिरकार रिश्ता तोड़ दिया, तो मैं गहरे अवसाद में चला गया। मैंने हजारों कॉल और संदेश किए। मैंने चाकू से अपना हाथ भी काटा और उसे एक तस्वीर भेजी। उसने मुझे वापस फोन किया, लेकिन सिर्फ गाली देने के लिए, कहा, "तू गधा है... कुत्ते की तरह मेरे पीछे भौंकना बंद कर... अगर तू मर भी गया, तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ेगा..."

वह इस झाँसे में नहीं आएगा।' और उसने मेरा नंबर ब्लॉक कर दिया...

इस पूरी अवधि के दौरान, यू.डी. के प्रति मेरे स्नेह के कारण, मैंने बहुत `raaga-dvesha` किया। मेरे मन में आत्महत्या के विचार भी आए। यह लगभग डेढ़ साल तक चला, जिसके बाद मैं बड़ी मुश्किल से इससे बाहर निकल पाया।

(16) कुछ समय बाद, एक और प्रेम प्रसंग शुरू हुआ। वहाँ भी, मेरा लगाव गहरा होता गया। 'मेरी यू.एफ., मेरी जी.एफ.'–बस यही जाप मेरे दिमाग में चलता रहता था। मेरा स्वभाव भी शक्की था। अगर मैं उसे फोन करता और उसका फोन व्यस्त होता, तो मुझे तुरंत शक होता, 'क्या वह किसी और लड़के से बात कर रही है? क्या उसका कोई और बॉयफ्रेंड है?' और फिर, एक पुलिसवाले की तरह, मैं उससे कई सवाल पूछकर उसे परेशान करता। बेचारी लड़की सच जवाब देती, लेकिन मुझे संतोष नहीं होता। तो मैं उसका मोबाइल फोन चेक करता... उसे भी मुझसे सच्चा प्यार था। वह मुझे छोड़ना नहीं चाहती थी, इसलिए वह मुझे अपना मोबाइल देखने देती। मेरा विश्वास जीतने के लिए, वह कुछ भी डिलीट नहीं करती या लॉक नहीं करती। लेकिन फिर भी, मेरा शक्की स्वभाव नहीं गया। मुझे अक्सर शक होता, 'क्या वह किसी और लड़के से मिल रही है?' तो मैं उसे कई बार फोन करता और पूछता, 'तुम अभी कहाँ हो? किसके साथ हो?' बेचारी लड़की तड़प जाती, लेकिन फिर भी सच जवाब देती... लेकिन उसमें भी, मुझे शक होता, 'कहीं वह झूठ तो नहीं बोल रही?' तो मैं उसे वीडियो कॉल करने को कहता। इस तरह, मुझे पता चल जाता कि वह कहाँ है और किसके साथ है। लेकिन एक बार भी मुझे मेरे शक को पुष्ट करने के लिए कुछ नहीं मिला। इस सब के बाद, मुझे उस पर पक्का विश्वास हो जाना चाहिए था, लेकिन मेरे गहरे लगाव का स्वभाव ही ऐसा था। 'मेरी जी.एफ. सिर्फ मेरी है। वह सिर्फ मुझसे बात करे, सिर्फ मुझसे संपर्क रखे...'–ऐसी जिद घर कर गई थी। ऊपर से, एक दिन मैंने उसे एक लड़के के साथ एक स्टॉल पर खड़े होकर पानीपुरी खाते हुए देखा। वह उस लड़के से मुस्कुराकर बात कर रही थी। उनके साथ एक और लड़की भी थी। लड़का भी स्मार्ट था। मुझे इतना तीव्र क्रोध आया कि मैं खुद को नियंत्रित नहीं कर सका। मैं सीधे उसके पास गया। उसने मुझे देखा। इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, मैंने सबके सामने उसे एक जोरदार थप्पड़ मारा। उस लड़के ने तुरंत मुझे पकड़ लिया; वह भी गुस्से में आ गया था,

लेकिन मेरी जी.एफ. ने कहा, 'उसे जाने दो।' और फिर, अत्यधिक क्रोध से, उसने मुझसे कहा, 'बस। हमारा रिश्ता अब खत्म। तुम्हें बिल्कुल भी समझ नहीं है। ये दोनों मेरे चचेरे भाई-बहन हैं। वह मेरे चाचा का लड़का है। वे हमारे घर शहर से बाहर से आए हैं, और मैं समझ गई हूँ कि तुमने क्या मान लिया है... अब से, मेरा तुमसे कोई रिश्ता नहीं है।' और वह तुरंत वहाँ से चली गई। मैं बस एक मूर्ख की तरह उसे देखता रहा। मैंने उसे 'सॉरी' के संदेश भेजे, लेकिन सब व्यर्थ था। मुझे खुद पर बहुत गुस्सा आ रहा था। मेरे शक्की स्वभाव और मेरी संकीर्ण सोच के कारण, मैंने यह भयानक नुकसान उठाया। खैर, यह सब अतीत की बात है। लेकिन मेरे अंदर जो ममत्व की भावना थी, 'यह यू.एफ. सिर्फ मेरी है! वह सिर्फ मुझसे बात करे। उसकी हर मुस्कान मेरे लिए है... उसका हर मीठा शब्द मेरे लिए है... उसका हर फोन मेरे लिए है...'–यह सारा ममत्व मेरा बहुत बड़ा दोष था।
अत्यंत भाव से मिच्छामी दुक्कड़म
(17) मुझे पाठशाला की एक घटना याद है। मैंने २७-भव स्तवन सुनाया था, और बदले में, मुझे `पाठशाला ` से प्रभावना के रूप में एक कैसरोल और एक घड़ी दी गई। मेरे साथ एक और लड़के को भी एक घड़ी दी गई। मुझे उसकी घड़ी का मॉडल बहुत पसंद आया; मुझे मेरा मॉडल कम पसंद आया। तो मैं दुखी हो गया, लेकिन कुछ कह नहीं सका। लेकिन मेरा पुण्य अच्छा था, क्योंकि वह लड़का खुद मेरे पास आया और बोला, 'मुझे तुम्हारी घड़ी पसंद है, तो तुम यह मुझे दे दो और बदले में यह ले लो।' मैं बहुत खुश हो गया। बाहरी तौर पर, मैंने उस पर उपकार करने का दिखावा किया। अपनी पसंदीदा घड़ी पाकर, मैं अत्यधिक आनंदित हुआ। मेरे इस `राग` के लिए, गहरे भाव से, मिच्छामी दुक्कड़म. भगवान के स्तवन को सुनाने का आनंद प्राथमिक होना चाहिए। इसके बजाय, ऐसे पुद्गल के लिए, मैंने क्या राग -द्वेष किया? मेरा अज्ञान कितना गहरा था?
(18) वह कैसरोल लेकर, मैं त्रिकालवंदना करने के लिए एक म. सा. के पास गया, और उन्होंने मुझसे वह कैसरोल माँगा। शायद उन्होंने केवल मज़ाक में ही माँगा था, यह परखने के लिए कि मैं दूँगा या नहीं... मैंने उन्हें दे दिया। पहली बात, यह शर्म थी कि 'एक म. सा. को कोई कैसे मना कर सकता है?' और दूसरी बात, मुझे विश्वास था कि 'एक म. सा. को इसकी कोई आवश्यकता नहीं होगी, इसलिए वह निश्चित रूप से मुझे वापस दे देंगे...' लेकिन म. सा. ने उसे रख लिया। बिना एक शब्द कहे, मैं दुखी मन से घर चला गया। मैंने सोचा, 'वह कल वापस दे देंगे।' लेकिन तीन दिन बीत गए। मैं हर सुबह पूजा के दौरान वंदन करने जाता, और रात में पाठशाला के बाद। वह `म. सा.` मुझसे बात करते, लेकिन उन्होंने कभी कैसरोल का जिक्र नहीं किया... तीन दिन बाद, मेरा धैर्य जवाब दे गया। तो, जब म. सा. व्याख्यान देने गए थे, मैं उनके कमरे में गया और सब कुछ जाँच लिया कि 'मेरा कैसरोल कहाँ है?' लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला। मैं निराश होकर चला गया। फिर, दो दिन बाद, उन्होंने मुझे कैसरोल दे दिया। मुझे बड़ी राहत महसूस हुई। उस समय, मैंने औपचारिक रूप से यह भी नहीं कहा, 'म. सा.! यदि आपको आवश्यकता हो तो कृपया इसे रख लें,' क्योंकि मुझे डर था, 'कहीं म. सा. इसे रख न लें?' और मैं जल्दी से नीचे चला गया। कैसरोल वापस मिलने की खुशी अपार थी। अब मुझे एहसास होता है कि एक तुच्छ पुद्गल के प्रति मैंने अपने ममत्व (ममत्व) के कैसे परिणाम भुगते। मैंने कितने गहरे संस्कार बना लिए... म. सा.! अत्यंत भाव से मिच्छामी दुक्कड़म... मेरी केवल यही आकांक्षा है कि मेरे ये सभी संस्कार टूट जाएँ।

(19) संवत्सरी के दिन, पाठशाला के बच्चों के लिए अतिचार सुनाने का प्रावधान था। क्यूँकि हमारा संघ बड़ा था, एक प्रतिक्रमण निचले हॉल में और एक ऊपरी हॉल में होता था। यदि मैं निचले हॉल में अतिचार सुनाता, तो मुझे एक महत्वपूर्ण प्रभावना मिलती। और यदि मैं ऊपरी हॉल में करता, जहाँ ज्यादातर दूसरे लड़के थे, तो कोई प्रभावना नहीं मिलती। मुझे प्रभावना से अत्यधिक लगाव था, लेकिन यह अभी तक तय नहीं था कि मैं ऊपर सुनाऊँगा या नीचे। यह केवल निश्चित था कि 'मैं और मेरा दोस्त, हम दो सुनाएँगे।' सुबह से, मैं लगातार इसी सोच में था: 'मैं निचले हॉल में कैसे सुना सकता हूँ?' मुझमें पाठशाला के शिक्षक से पूछने की हिम्मत नहीं थी। तो मैं अपने दोस्त के पास गया और, उसके पैरों में गिरकर, सचमुच भीख माँगी, 'कृपया मुझे नीचे सुनाने दो।' लेकिन वह नहीं माना। उसने केवल एक बात कही: 'निर्णय केवल शिक्षक ही करते हैं। हम वैसा ही करेंगे जैसा वह कहेंगे...' मैं अत्यधिक तनाव में आ गया। मैंने भगवान से प्रार्थना की। और मेरे पुण्योदय के कारण, मुझे नीचे अतिचार सुनाने को मिला, और मुझे ५०० रुपये की प्रभावना मिली... मैं बहुत खुश हो गया। मैं पैसे के प्रति इस ममत्व भाव, इस लालच से, अपने दिल की गहराइयों से घृणा करता हूँ। `अतिचारसूत्र` सुनाने का फल मेरे मन में केवल पैसा ही रहा। मैंने अपनी आत्मा के बारे में बिल्कुल नहीं सोचा। बचपन में बने धनमूर्च्छा के वे संस्कार धीरे-धीरे बड़े होते गए, और मुझमें सैकड़ों, हजारों, लाखों और करोड़ों रुपये का लालच प्रकट हुआ। मेरे इस धनमूर्च्छा के लिए, मेरे अस्तित्व के मूल से, मिच्छामी दुक्कड़ं।

(20) प्रभावना और अन्य स्रोतों से मुझे जो भी पैसा मिला था, मैंने उसे अपनी दराज में सबसे नीचे छिपा कर रखा था। मैंने उसे कभी खर्च नहीं किया। हर दो-तीन दिन में, मैं उस पैसे को निकालता, उसे देखता, और उसे गिनता... मुझे पता था कि अंदर पड़े रुपये बढ़ने वाले नहीं हैं। फिर भी, मूर्च्छा क्या है? ममत्व क्या है? मैंने यह पाप लगभग पाँच-छह महीने तक किया। उसके बाद, भगवान महावीर का जन्म कल्याणक का दिन आया, और चूँकि मुझे भगवान महावीर बहुत प्रिय हैं, मैंने एक ही दिन में वह सारा पैसा प्रभुभक्ति पर खर्च कर दिया, और मुझे उससे परम संतोष भी मिला। मैं इसे केवल भगवान की कृपा मानता हूँ...

(21) मेरे पिता द्वारा अर्जित धन भी पर्याप्त था, और फिर मैं भी कमाने लगा था; मेरी अच्छी आय थी। लेकिन मेरा स्वभाव कंजूस था। मैं किसी को पैसे नहीं देता था... मुझे याद है कि कई बार मेरे दोस्त मुसीबत में थे, वास्तविक समस्याओं के साथ। उन्होंने मुझ पर भरोसा किया और मुझसे पैसे माँगे, लेकिन मैंने कुछ दोस्तों को साफ मना कर दिया, और कुछ दोस्तों से मैंने 'पिताजी मना करते हैं...' आदि जैसे बहाने बनाए। वास्तव में, मैंने अपने पिताजी से पूछा भी नहीं था। और मैं अपने कमाए हुए पैसे उन्हें बिना पूछे दे सकता था... लेकिन धन के प्रति गहरे मूर्छा के कारण, मैंने अपने दोस्तों की मदद नहीं की।

(22) धनमूर्च्छा के कारण, मैंने कई लोगों के साथ अन्याय किया है... मैंने घर के नौकरों को घिस-घिसकर उनसे काम लिया है। मैंने उनकी लाचारी का फायदा उठाया है। हालाँकि मैं उन्हें तय वेतन देता था, लेकिन मैंने तीन लोगों का काम दो लोगों से करवाया और इस तरह एक नौकर के वेतन के बराबर पैसे बचाए। मैंने ऑफिस के कर्मचारियों के लिए भी ऐसा ही किया है। और अगर किसी कारण से वे किसी दिन नहीं आते, तो मैंने उनका वेतन काटा है। अगर वे देर से आते... तो उसके लिए भी मैंने पैसे काटे हैं। मुझे पता था कि 'नौकरी मिलना मुश्किल है... और अगर वे चले गए, तो कई और बेरोजगार लोग हैं... जिन्हें मैं आसानी से ढूंढ सकता हूँ,

लेकिन उन्हें नौकरी नहीं मिलेगी।' तो वे नौकरी छोड़ने वाले नहीं थे। और मैंने उनकी इसी लाचारी का फायदा उठाया। मैंने उनके चेहरों पर उदासी, दीनता देखी है; मैंने उन्हें गिड़गिड़ाते हुए देखा है, लेकिन मैं एक पत्थर-दिल इंसान बन गया था... और उनका आशीर्वाद पाने के बजाय, मैंने केवल उनकी बद्दुआएँ ही कमाई हैं। मेरे इन सभी पापों के लिए, मिच्छामी दुक्कड़म. अगर यह मेरे साथ हुआ होता तो? यह सोचकर आज पछतावा होता है।

(23) मजदूर, नौकरानियाँ, ऑफिस के कर्मचारी... अपने घरों में कठिनाइयों के कारण, वे अक्सर अपने वेतन का अग्रिम अनुरोध करते थे, लेकिन तब भी, मैंने नहीं दिया। और अगर मैंने कभी दिया, तो मैं वेतन जल्दी देने के लिए एक निश्चित प्रतिशत काटकर कम राशि देता था। बेचारे लोगों को चिकित्सा या अन्य कारणों से इसकी तत्काल आवश्यकता होती थी। वे वेतन-दिवस तक इंतजार नहीं कर सकते थे, इसलिए मजबूरी में, वे काटा हुआ वेतन स्वीकार कर लेते थे, और मुझे इतने पैसे बचाने पर खुशी भी महसूस होती थी।

(24) महँगाई, बीमारी और अन्य कारणों से, कर्मचारी अक्सर मुझसे अतिरिक्त पैसे माँगते थे... मैंने वह दान नहीं दिया। उन्होंने इसे कर्ज के रूप में भी माँगा। लेकिन मैंने कर्ज देने से इनकार कर दिया, या मैंने ब्याज दर इतनी अधिक रखी कि बेचारे ब्याज के डर से ही चुप हो जाते। कुछ ने अपनी मजबूरी के कारण, उच्च ब्याज पर कर्ज भी लिया। मैंने उन्हें पूरी तरह से निचोड़ लिया है। मैंने कर्ज के बदले उनका घर या उनके गहने ले लिए थे, इसलिए अगर वे लोग भाग भी जाते या पैसे वापस नहीं करते, तो भी मेरे लिए कोई समस्या नहीं थी, क्योंकि घर और गहने मेरे पास थे, है न! और मैं उनकी तनख्वाह से ब्याज काटना भी जानता था। म. सा. मैं केवल नाम का जैन था। मैं, जो चींटियों और कीड़ों को बचाता था, धन के लालच के कारण अपने कर्मचारियों के प्रति निर्दयी हो गया था। उनके आँसू, उनकी लाचारी, उनकी दीनता... मुझे कुछ भी दिखाई नहीं देता था। मुझे केवल एक ही चीज़ दिखाई देती थी: 'मैं इससे अपना आर्थिक लाभ कैसे उठा सकता हूँ?' वे चाहते थे कि 'दिवाली के दौरान, मैं उन्हें एक अतिरिक्त वेतन, एक बोनस दूँ...' लेकिन मैंने वेतन नहीं दिया। इसके बजाय, मैं उन्हें मिठाई के डिब्बे देकर सस्ते में निपट गया। वे चाहते थे कि 'मेरे घर पर किसी भी धार्मिक या सामाजिक अवसर पर, मैं उन्हें एक उपहार दूँ...' मैंने उन अवसरों पर सभी काम करने में उन्हें शामिल तो किया, लेकिन कोई उपहार नहीं दिया। मैंने बस अनुमोदना किया, उन्हें कुछ जोर-जबरदस्ती से अच्छा खिलाया, सारा बाहरी स्नेह दिखाया, लेकिन जो भूख उन्हें थी, जो जरूरत उन्हें थी, मैंने उसे बिल्कुल पूरा नहीं किया...

(25) मैंने एक नया घर बनवाया, और मुझे उससे गहरा राग था। मैंने व्यक्तिगत रूप से देखरेख की और सब कुछ तैयार करवाया। उसमें, मैंने अपना मास्टर बेडरूम वास्तव में भव्य शैली में तैयार करवाया। मैंने ऐसे रंग और फर्नीचर बनवाए कि जो कोई भी उसे देखता, मंत्रमुग्ध हो जाता। आईना + बिस्तर + चादर + बाथरूम + वॉशरूम + अलमारियाँ + लैंप + प्रकाश व्यवस्था + छत + टाइल्स + संगमरमर + खिड़कियाँ + पर्दे + मेकअप का सामान + साबुन + शैम्पू + शॉवर + बाथटब + स्टॉपर + ताला + चाबियाँ + शौचालय, नल, पेंट... हर छोटी-बड़ी चीज का फैसला मैंने खुद किया। इसके लिए, मैंने अनगिनत चीजें देखीं और तभी इन वस्तुओं को अंतिम रूप दिया। मैंने इसमें महीनों बर्बाद किए, लेकिन मुझे अपनी पसंद पर घमंड भी था... तौलिया, चादर पर बिछाई जाने वाली शीट, कंबल, एसी... इन सभी चीजों में, मैंने अपने फैसले को प्राथमिक रखा। मेरी

आकांक्षा मानव लोक में देवलोक के सुखों का आनंद लेने की थी... लेकिन म.सा. ! इस सब का क्या उपयोग है? मैंने यह सब बनवाया; यह यहीं रहेगा, और इसे सब छोड़कर, मैं मर जाऊँगा और कहीं और चला जाऊँगा... तो मैंने ये सारे पाप किसके लिए किए? क्या यह संभव नहीं है कि मेरा अगला जन्म इन्हीं वस्तुओं में से किसी एक के रूप में हो? और म.सा.! ऐसा नहीं था कि मैंने इसे सिर्फ एक बार बनवाया... जब भी मैं उन चीजों को देखता, राग उत्पन्न होता। अगर कोई उनकी प्रशंसा करता, तो और भी राग उत्पन्न होता। मैं उन वस्तुओं को निहारता, उन्हें बार-बार छूता, और बहुत आनन्दित होता। लाखों रुपये का खर्च, अनंत पुण्य का खर्च, भयंकर पापों का बंधन... और इस सब के बदले, मैंने आँखों और त्वचा के तुच्छ सुख प्राप्त किए। लाभ मुश्किल से १% था और उसके मुकाबले, नुकसान असीम है... और इस लाभ को लाभ भी नहीं कहा जा सकता... क्योंकि यह एक ऐसा लाभ था जो भयानक नुकसान लेकर आया। आज, मैं इन सभी मूर्छा के लिए सच्चे हृदय सेमिच्छामी दुक्कड़म कहता हूँ। अब उन पुद्गल के प्रति राग कम हो गया है; मैं इसे अभी और कम करना चाहता हूँ। मैं बहुत जल्दी मोक्ष जाना चाहता हूँ। मुझमें दीक्षा लेने का साहस तो नहीं है, पर यथाशक्ति आराधना करने की भावना अवश्य है। मैं आपके विशेष आशीर्वाद की विनम्र प्रार्थना करता हूँ...

(26) हॉल में एक बड़ा टी.वी., सोफा सेट, तकिये, जूते-चप्पल रखने के लिए कैबिनेट..., दरवाज़े की घंटी की डिज़ाइन, उसकी आवाज़... इनमें से हर एक चीज़ का निर्णय मैंने ही किया। मैं कितनी ही दुकानों में भटका; पत्नी के साथ अक्सर कहा-सुनी भी हो जाती थी। हमारी पसंद कभी-कभी अलग होती थी, और छोटे-मोटे झगड़े भी हो जाते थे। वह अक्सर नाराज़ हो जाती... मैं किसी-न-किसी तरह उसे मना लेता, पर करता अपनी ही मर्ज़ी की। कुछ चीज़ों में, उसे खुश करने के लिए मैंने उसकी इच्छा के अनुसार भी किया, लेकिन वे भी ऐसी चीज़ें थीं जहाँ मेरी भी पसंद वही थी, बस मेरा झुकाव किसी दूसरे विकल्प की ओर अधिक था... इसलिए मुझे ज़्यादा कुछ छोड़ना नहीं पड़ा... जब मैं अपने बेटे और बेटी के शयनकक्षों में दखल देने गया, तो उन्होंने मुझे साफ़-साफ़ कह दिया, 'हमारे बेडरूम में आपकी दखलअंदाज़ी नहीं चलेगी।' ...तो, मज़बूरन मुझे वहाँ अपनी ज़िद छोड़नी पड़ी। फिर भी, मैं बार-बार उन्हें सलाह और सुझाव देता रहा... मैं खुद पर काबू नहीं रख सका। मेरे बेटे और बेटी दोनों ने गुस्से में मुझसे बात की, मेरी मर्यादा को तोड़ा। मेरे अहंकार को चोट पहुँची... लेकिन अंत में, जीत उन्हीं की हुई। हालाँकि, अंत तक मैं इस बारे में बड़बड़ाता रहा... जो मुझे पसंद नहीं आया, उसके बारे में बोले बिना मैं रह ही नहीं सका... मेरी इस मूर्छा के लिए, एक बहुत विशेष `मिच्छामी दुक्कडं`। और हाँ! जब मैं रसोई के लिए सलाह देने गया, तो मेरी पत्नी इतनी भड़क उठी कि उसने मुझे साफ़ शब्दों में कह दिया, 'ख़बरदार! अगर रसोई के बारे में एक शब्द भी बोला तो...' बच्चे भी अपनी माँ के पक्ष में हो गए। मैं तब चुप हो गया। लेकिन मैं अपने स्वभाव को रोक नहीं सका। डाइनिंग टेबल, उसकी कुर्सियाँ, काँच के गिलास, बर्तन... कटोरियाँ... इन सब में भी, जो कुछ मुझे पसंद नहीं आया, मैं उसके बारे में बड़बड़ाता रहा... अंत में मेरी पत्नी, बार-बार गुस्सा होकर, थक भी गई और ऊब भी गई... उसने व्यंग्यात्मक लहजे में मुझसे कहा, 'तुम्हें तो भगवान भी नहीं सुधार सकते...' मेरे इस ममत्व के लिए, एक बहुत विशेष मिच्छामी दुक्कडं।

(27) मुझे अपनी कार और बाइक से इतना `raaga` था कि मैं उन्हें रोज़ धुलवाता, अच्छी तरह साफ़ करवाता... अगर नौकर नहीं होता, तो मैं ख़ुद उन्हें साफ़ करता... भले ही कितना भी पानी बर्बाद हो, मुझे उसकी परवाह

नहीं थी। कार और बाइक का मॉडल और रंग तय करने में, मैंने अपनी ही ज़िद पकड़े रखी। यह सब ममता का ही परिणाम था... कार या बाइक का उपयोग यात्रा के लिए होता है; रंग या मॉडल से क्या फ़र्क पड़ता है? लेकिन उस समय, मेरा मन यह सब सोचने को तैयार नहीं था।

(28) बहुत सारा पैसा कमाकर, मैंने निवेश के लिए ज़मीन खरीदी, लेकिन मैं उसे बार-बार जाकर देखता रहता था कि कहीं कुछ गरीब लोग उस पर झोपड़ियाँ बनाकर रहने न लगें। मुझे लगातार चिंता रहती थी कि कहीं गुंडे उस ज़मीन पर अपना अड्डा न बना लें। इसलिए मैंने वहाँ एक चौकीदार भी रखा था। फिर, उस ज़मीन के आसपास मॉल और अन्य चीज़ों की योजना आने से, ज़मीन की कीमत बढ़ गई, और मैं बेहद खुश हो गया। मैंने जागती आँखों से कई सपने देखे कि 'बिना किसी मेहनत के मैं करोड़ों रुपए कमा लूँगा।' लेकिन कुछ समय बाद, वह मॉल और अन्य चीज़ों की योजना रद्द हो गई, और कीमत धड़ाम से गिर गई। मैं बहुत तनाव में आ गया; मुझे गहरा सदमा लगा। गुंडों ने चौकीदार को भगा दिया और उस ज़मीन पर अपना अड्डा बना लिया, तो मैंने दूसरे गुंडों को पैसे देकर उन गुंडों की पिटाई करवाई। उसके बाद, किसी ने वहाँ झोपड़ियाँ बना लीं, तो मैंने पुलिस को रिश्वत देकर उन झोपड़ियों को तुड़वा दिया। वह ज़मीन मेरी थी; गुंडों या गरीबों का वहाँ कोई हक़ नहीं था, यह बात सच है। लेकिन अंत में, ये सब ममता के ही तूफ़ान थे! मेरे मरने के बाद, वह ज़मीन मेरी कैसे रहने वाली थी? मैंने ज़रूरत से कहीं ज़्यादा पैसा कमाया। उसमें ममत्व पैदा हुआ। मुझे उसे धर्मक्षेत्र में खर्च करना चाहिए था। पैसे को बार-बार निवेश करके बढ़ाने के बजाय, सबसे अच्छा उपाय था कि पैसे को धर्म के खेत में बोकर पुण्य बढ़ाया जाए। मुझे उस समय यह विवेक प्राप्त नहीं हुआ, इसलिए मैं सिर्फ़ एक ज़मीन के टुकड़े को लेकर तीव्र राग-द्वेष का शिकार बन गया। और फिर भी, सद्बुद्धि नहीं आई। अंततः, कुछ समय बाद, मुझे कुल मिलाकर उसमें अच्छा मुनाफ़ा मिल रहा था, तो मैंने वह ज़मीन बेच दी और शांति पाई। लेकिन इन सभी पापों के लिए, एक बहुत विशेष मिच्छामी दुक्कडं।

(29) इस अनुभव के बाद, मैंने तय किया कि ज़मीन के सौदों में बिल्कुल नहीं पड़ना है... लेकिन कुत्ते की दुम टेढ़ी ही रहती है। एक बार, मुझे बहुत सस्ते में एक ज़मीन मिल रही थी। मालिक ने कहा, 'मुझे अभी पैसों की सख़्त ज़रूरत है, इसलिए मज़बूरी में इसे सस्ता बेच रहा हूँ।' और मैं फिर से लालच में आ गया, और मैंने वह ज़मीन खरीद ली। मैंने नकद राशि का भुगतान भी कर दिया। कागज़ों पर हस्ताक्षर और मुहर, सब कुछ हो गया। लेकिन कुछ समय बाद, मेरे घर पुलिस की पूछताछ आई। जिस व्यक्ति से मैंने ज़मीन खरीदी थी, वह उसकी थी ही नहीं। उसका मालिक तो कोई और ही था। लेकिन उस आदमी ने झूठे दस्तावेज़ बनाकर मुझे धोखा दिया था। और उसने किसी और की ज़मीन मुझे बेच दी। मैं इस मामले में फँस गया; इसमें कुछ 'दो नंबर' का भी मामला था, और मुझ पर दूसरे अपराध भी साबित हो रहे थे... तो अंत में, संघर्ष करने के बावजूद, मुझे जेल जाना पड़ा... कुछ दिनों बाद, मैं जेल से छूट गया, लेकिन मामला अभी भी चल रहा था। अदालत के चक्कर काट-काट कर मैं बुरी तरह परेशान हो गया। मेरे पैसे गए, वह तो नुकसान था ही। लेकिन मुझे महीनों तक मानसिक पीड़ा सहनी पड़ी। मुझे उस धोखेबाज़ पर भयानक गुस्सा आया। लेकिन वह कहीं भाग गया था। असल में, मुझे ख़ुद पर गुस्सा होना चाहिए था। गलती ज़्यादातर मेरी ही थी। मुझमें लालच जाग गया था। अगर कोई इतनी सस्ती ज़मीन बेच रहा है, तो मुझे शक होना चाहिए था कि 'कुछ गड़बड़ है...' मुझे उन कागज़ों

की अच्छी तरह जाँच करवानी चाहिए थी... मुझे उस आदमी के बारे में ठीक से जानकारी हासिल करनी चाहिए थी... लेकिन मैंने ऐसा कुछ नहीं किया। और मैं लालच नामक दलदल में फँस गया। मैं अपने ही कर्मों से फँसा... तो गलती मेरी ही मानी जाएगी, है न? अंत में, पुलिस, वकील... को रिश्वत देकर, मैं बड़ी मुश्किल से उस मामले से बाहर निकला। मेरे लालच नामक इस गंभीर पाप के लिए, एक अत्यंत गहन मिच्छामी दुक्कडं। (30) हम तीन भाई थे। जब धन और संपत्ति का बँटवारा हुआ, तो बड़े भाई ने धोखा दिया। जहाँ हर एक का हिस्सा १०० करोड़ का बनता था, उसने हम दोनों को ५०-५० करोड़ दिए और २०० करोड़ की संपत्ति अपने पास रख ली। मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने अपने छोटे भाई को उकसाया। हम दोनों ने बड़े भाई के साथ भयानक झगड़ा किया; बहुत बड़ी बहस हुई। पिता और माता भी मौजूद थे। हमने उन्हें इस मामले में शामिल किया। उन्होंने भी बड़े को समझाने की कोशिश की, उसे न्याय करने को कहा... लेकिन बड़े की एक ही बात थी: 'ये दोनों कई सालों बाद व्यापार में आए हैं। मैंने मेहनत करके पूरा व्यापार खड़ा किया है। आप कह सकते हैं कि खाना बनाने की सारी मेहनत मैंने की, ये दोनों तो बस तैयार थाली पर खाने बैठ गए हैं... ५०-५० करोड़ देना भी बड़ी बात है...' अंत में, मेरा गुस्सा बेकाबू हो गया। मैंने गंदी गालियाँ दीं, तो बड़े ने मुझे ज़ोर का थप्पड़ जड़ दिया। अब मैंने भी सारी मर्यादा त्याग दी। मैंने उसका गला पकड़ लिया। जब मेरी भाभी उसे बचाने आईं, तो मैंने उसे धक्का देकर गिरा दिया, लेकिन फिर छोटे भाई और पिताजी ने बड़े को मेरी पकड़ से छुड़ाया। बड़े भाई का दम घुट गया था। क्रोध के कारण, मुझमें एक राक्षसी शक्ति आ गई थी... दो-पाँच मिनट बाद, बड़े को कुछ राहत महसूस हुई। बिना कुछ कहे, वह चुपचाप घर से चला गया। हम तीनों भाई अलग-अलग रहते थे; यह पूरी बैठक छोटे भाई के घर पर हुई थी... लेकिन अगले दिन, बड़े का संदेश हम सबके पास आया, '५० करोड़ से एक पाई भी ज़्यादा नहीं दी जाएगी। जो कर सकते हो, कर लो।' पिता और माता ने हम दोनों को बहुत समझाने की कोशिश की कि 'तुम्हारा कारोबार अच्छा चल रहा है। तुम अच्छा कमा रहे हो। कोई समस्या नहीं है। यह ५० करोड़ भी एक बड़ी रकम है। अगर तुम इसे सिर्फ़ ब्याज पर भी लगा दोगे, तो घर बैठे महीने के ५ लाख रुपए मिलेंगे... तो अब संघर्ष छोड़ दो।' लेकिन मैं और छोटा नहीं माने। हमने अदालत में मुक़दमा दायर कर दिया। लेकिन उसमें, बड़े भाई ने एक शानदार चाल चली। कानूनी संपत्ति सिर्फ़ ६० करोड़ की थी! बाकी सब 'दो नंबर' का था! वह सब बड़े के पास था। तो अगर तीन हिस्से होते भी, तो एक को सिर्फ़ २० करोड़ मिलते। और बड़े ने छोटे से कहा, 'मैं तुम्हें ७५ करोड़ दूँगा। तुम केस से हट जाओ, मेरे पक्ष में आ जाओ, वरना तुम्हें सिर्फ़ २० ही मिलेंगे।' और छोटे ने लालच में आकर मेरे साथ विश्वासघात किया। अंत में, मेरे हाथ मुश्किल से २० करोड़ आए। बड़े के हाथ २०५ करोड़ और छोटे के हाथ ७५ करोड़ आए। मैं यह सब बर्दाश्त नहीं कर सका। मुझे बड़े और छोटे पर इतना गुस्सा आया कि मैं उन दोनों को मार डालना चाहता था, उनके घर जाकर दोनों की हत्या कर दूँ, उनके बच्चों को सड़क दुर्घटना में मार दूँ...' महीनों तक ऐसे भयानक विचार आते रहे। दोनों के परिवारों से बातचीत पूरी तरह बंद हो गई थी। मैंने अपनी माँ और पिताजी से मिलना भी बंद कर दिया, क्योंकि वे छोटे के घर पर थे। मेरा परिवार बिल्कुल अकेला हो गया। वे दोनों फिर से एक हो गए। छोटे ने अपना स्वार्थ साधने के लिए कैसे धोखे का खेल खेला... वह मैं साफ़ देख सकता था... असल में, यह सब देखकर मुझमें वैराग्य उत्पन्न होना चाहिए था, लेकिन इसके बजाय, सिर्फ़ क्रोध ही उत्पन्न हुआ... सालों तक,

हमने एक-दूसरे का मुँह तक नहीं देखा। उन्होंने मुझे अपने किसी भी समारोह में नहीं बुलाया, और मैंने उन्हें अपने किसी भी समारोह में नहीं बुलाया। मैंने उनकी निंदा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इन एक-दो फुलस्केप पन्नों में जो लिखा है, वह वर्षों तक चले आर्त्त-रौद्र ध्यान का एक बहुत ही संक्षिप्त विवरण है।
म.सा.! १७ साल बाद, अब मुझे पश्चाताप हो रहा है। मैंने वैराग्य पर आपके प्रवचन सुने। मैंने क्षमापना पर प्रवचन सुने... और मैं दौड़कर छोटे के घर गया... मेरे माता-पिता अब ७० की उम्र पार कर चुके थे। मैं उनके चरणों में गिर गया और क्षमा माँगी, बहुत रोया, छोटे के सामने भी आँसू बहाए। वह छोटा था। गलती ज़्यादातर उसी की थी। फिर भी, यह सब भूलकर, मैं उसके पैरों में गिर गया और क्षमा माँगी। मैंने सिर्फ़ एक ही बात कही, 'मुझे प्यार चाहिए, मुझे स्नेह चाहिए।' और छोटा भी भावना में भीग गया। हम दोनों गले मिले, बहुत रोए। मेरी पत्नी और छोटे की पत्नी भी एक-दूसरे से गले मिलीं। छोटे ने भी अपनी गलतियाँ स्वीकार कीं कि '७५ करोड़ का प्रस्ताव मिलने पर और कोर्ट केस में सिर्फ़ २० करोड़ मिलते देख, मैंने पासा पलट दिया... मैंने धोखा दिया...' मैंने कहा, 'सब भूल जाओ! आज तो मैं बस यही कहता हूँ कि मेरे छोटे भाई को मिला, तो सब घर में ही है...'
... क्या फ़र्क पड़ता है?..."
उसके बाद, हम सब मेरे बड़े भाई के घर गए। मैंने आँखों में आँसू लिए, उनके चरणों में गिरकर क्षमा माँगी... बचपन में, इसी भाई ने मेरा कितना ख़याल रखा था, कितनी बार मेरी रक्षा की थी, और मेरी ढाल बनकर खड़े हुए थे। अगर मैं किसी चीज़ के लिए रोता, तो वह मुझे वह चीज़ लाकर देते और शांत कराते। अगर मेरे माता-पिता मुझे डाँटते, तो वह मेरा बचाव करते। वे मीठी यादें मुझे याद आ गईं, और मैंने रोते हुए उन्हें सब कुछ बताया। पूरा परिवार आँसुओं में डूब गया। सत्रह साल के झगड़े की आग, क्षमा के जल से सत्रह घंटों में बुझ गई... अब, हमारी भाईचारगी इतनी गहरी हो गई है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता... मेरे बड़े भाई ने मुझे ८० करोड़ और मेरे छोटे भाई को २५ करोड़ देने की पूरी योजना बनाई, लेकिन हम दोनों ने दृढ़ता से मना कर दिया, यह कहते हुए, "आपके पास जो पैसा है, वह हमारा ही है। आप हमारे पिता के स्थान पर हैं... बस!..."
म.सा.! पैसे के प्रति उस भयानक मोह और उससे उत्पन्न हुए कषायों के लिए, एक गहन मिच्छामी दुक्कडं।
(31) जैसा मेरे बड़े भाई ने मेरे साथ किया था, वैसा ही मैंने अपने साझेदार के साथ किया। उसे मुझ पर पूरा विश्वास था; सारा हिसाब-किताब मेरे पास था, और मेरे पास कपटी मन को छिपाने के लिए मीठी ज़ुबान थी। मैं पैसे के लालच पर काबू नहीं पा सका। यह सुनिश्चित करने के लिए कि मुझे बड़ा हिस्सा मिले, मैंने खातों में हेरफेर किया और लाखों रुपयों का गबन कर लिया। कुछ वर्षों के बाद, मेरे साझेदार को संदेह हुआ और उसे सब समझ आ गया, लेकिन कानूनी तौर पर वह कुछ नहीं कर सकता था। उसके बाद, जो होना था वही हुआ: बहस, गरमागरम कहा-सुनी, गालियाँ... और अंत में, साझेदारी ख़त्म करने की बात! लेकिन उसे ख़त्म करने में भी भयानक झगड़े हुए, क्योंकि सारे खाते मेरे पास थे, और उसने आँखें मूँदकर विश्वास करके कागज़ों पर हस्ताक्षर और मुहर लगा दी थी। इसलिए, चाहे अदालत में हो या समुदाय के सम्मानित बुज़ुर्गों के सामने, उसके पास अपना मामला साबित करने का कोई रास्ता नहीं था। अंत में, वह रो-रोकर टूट गया और मुझसे भीख माँगने लगा। "कम से कम मेरे परिवार के बारे में तो सोचो..." उसने गुहार लगाई। लेकिन मैंने

हेरफेर किए गए खातों के अनुसार संपत्ति को ठीक आधा-आधा बाँट दिया, जो असल में मेरे लिए मुश्किल से ७५% और उसके लिए २५% था। उसके पास इसे स्वीकार करने के अलावा कोई चारा नहीं बचा... हमारी साझेदारी समाप्त हो गई... साहेब! आप जिस कर्मा सिद्धांत की बात करते हैं, वह बिल्कुल सच साबित हुआ। मेरे इस पाप-कर्म के तुरंत बाद, मुझे दिल का दौरा पड़ा, और अस्पतालों के चक्कर शुरू हो गए। जैसे मैंने अपने साझेदार को कानूनी रूप से लूटा था, वैसे ही डॉक्टरों ने मुझे कानूनी रूप से लूटा। रिपोर्ट और ऑपरेशन पर लाखों रुपए स्वाहा हो गए। मुझे एहसास हुआ कि मैंने जो पाप किए थे, उनका तत्काल फल मुझे मिल गया है। मैंने तो सिर्फ़ पैसा लूटा था, लेकिन कर्म की सत्ता ने मेरा पैसा और मेरा स्वास्थ्य दोनों लूट लिए। मुझे गहरा पश्चाताप हुआ। मैंने अपने साझेदार से क्षमा माँगी और उसकी २५% राशि वापस कर दी... उसका सदमा कम हुआ, लेकिन शून्य नहीं हुआ। फिर भी अपनी ओर से, मैंने १००% क्षमा-याचना की। अंततः, जो कुछ भी हुआ, वह पैसे के पाप के कारण ही हुआ।

(32) एक समय था जब मैं बहुत संकट में था। मेरा व्यवसाय पूरी तरह से ठप हो गया था, और मैं कर्ज के जाल में भी फँस गया था। मेरी बड़ी बहन अपने ससुराल में संपन्न थी। मैंने उससे बात की, और मेरे प्रति स्नेह के कारण, उसने किसी तरह मुझे ४० लाख रुपए देने की व्यवस्था की। दो-तीन साल बाद, मेरी बहन ने पैसे वापस माँगे। सच तो यह था कि उसने और मेरे जीजाजी ने भी मेरी मदद करने के लिए करीबी रिश्तेदारों से उधार लिया था; २० लाख उनके अपने थे, और २० बाहर से लाए गए थे... इसलिए उनका सबको चुकाना ज़रूरी था। लेकिन मेरे साधन सीमित थे, और मेरी नीयत भी ख़राब हो गई थी। मैं तुरंत २० लाख रुपए वापस कर सकता था, भले ही इससे थोड़ी मुश्किल होती, क्योंकि तब तक मैं कर्ज से मुक्त हो चुका था। और जिस बहन और जीजा ने मेरी मुसीबत में मदद की थी, उन्हें अधर में नहीं छोड़ना चाहिए था... लेकिन मैंने बेशर्मी से उन्हें जवाब दिया: "मैंने यह पैसा लौटाने की नीयत से नहीं लिया था..." मेरी बहन स्तब्ध रह गई। मेरी वजह से उसे अपने ससुराल में बहुत आलोचना का सामना करना पड़ा। उसने किसी तरह अपने उधार के लगभग दस लाख रुपए चुकाए... फिर, परिवार के बुज़ुर्गों को मध्यस्थता के लिए लाया गया, और बैठकें हुईं। अंत में, बुज़ुर्गों के दबाव के कारण, मैंने तुरंत १० लाख रुपए लौटा दिए। बाकी रकम के लिए, मैंने और समय माँगा। लेकिन मेरे मन में पाप यह था कि 'मैं अब वह वापस नहीं दूँगा... शायद अगर और दबाव पड़ा, तो छोटी-छोटी किश्तों में दूँगा...' इस तरह, मैंने ३० लाख रुपए खा लिए। मेरी बहन से बोलचाल बंद हो गई। यह लिखते हुए मुझे रोना आ रहा है। मेरी बहन, मेरी बड़ी बहन, ने माँ की तरह बनकर संकट के समय मेरी मदद की थी। अपने ससुराल में रहते हुए इतनी बड़ी सहायता करना एक असंभव कार्य था। लेकिन उसने यह सब अपने छोटे भाई के प्रति स्नेह के कारण किया... और मैंने उस स्नेह को धन के अपने पापी जुनून से चकनाचूर कर दिया। मुझे याद है कि आखिरी बैठक में मेरी बहन ने कितना विलाप किया था, वह कैसे रोई थी, कितनी नाराज़ हुई थी... मैंने अपनी बहन की भावनाओं की हत्या कर दी थी... म.सा.! आपके प्रवचन सुनने और आपकी किताबें पढ़ने के बाद, मुझे अपनी राक्षसी प्रवृत्ति का एहसास हुआ है। उस घटना के बाद, रक्षा बंधन का दिन मेरे लिए कभी नहीं आया। मेरी बहन की राखी बाँधने की कोई इच्छा नहीं थी, और मेरा भी उस राखी से कोई संबंध नहीं रहा। लेकिन इस साल, रक्षा बंधन के दिन, मैं अचानक राखी और मिठाई का डिब्बा लेकर उसके घर पहुँच गया।

संयोग से, दरवाज़ा उसी ने खोला। इतने सालों बाद मुझे इस तरह देखकर, वह सोच में पड़ गई। आख़िरकार, वह एक महिला थी, और महिलाएँ स्वाभाविक रूप से अधिक भावुक होती हैं... उसने मुझे अंदर आने को कहा। मेरे जीजाजी सोफे पर बैठे थे। वे बहुत नेक स्वभाव के व्यक्ति थे; उन्होंने मुझे बैठने के लिए कहा, लेकिन उन दोनों के दिलों का घाव भरा नहीं था। अगर मेरे पास पैसे नहीं होते और मैं चुका नहीं पाता... तो वे भूल जाते। लेकिन मेरे पास पैसा आ गया था, फिर भी मैंने इतनी बेशर्मी से अभद्र व्यवहार किया था, इसीलिए वे इतने गहरे आहत थे। मैंने अपनी बहन को वहीं बिठाया और अपने पश्चाताप की बात कही। मैं १० लाख रुपए नकद लेकर गया था, जो मैंने उन्हें दे दिए... मैंने क्षमा माँगी... मैंने अपना सिर अपनी बहन की गोद में रखा और बहुत रोया। उसने प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेरा; वह भी रो रही थी, और मेरे जीजाजी भी भावुक हो गए थे... मैंने उन्हें हीरों का एक पैकेट भी दिया। "यह पुराना स्टॉक मेरे पास पड़ा था। बाज़ार मंदा होने के कारण इसे बेचना ठीक नहीं लग रहा था, लेकिन यह पंद्रह-बीस लाख का तो होगा ही। जैसे ही मेरी आर्थिक स्थिति सुधरेगी, मैं आपको पैसे देकर यह स्टॉक वापस ले लूँगा। और अगर आपको इसे बेचने का मौका मिले, तो आपको पूरी आज़ादी है।" मैंने देखा कि उन्हें मेरे पैसे या मेरे स्टॉक की उतनी चिंता नहीं थी। मुझमें जो बदलाव आया था, उससे उन्हें परम संतोष मिला। मेरे जीजाजी ने पैकेट लौटा दिया, "पैसे जब दे सको तब दे देना... पैकेट की कोई ज़रूरत नहीं है..." उसके बाद, हमने दो घंटे तक कई बातों पर चर्चा की। मेरी बहन ने राखी बाँधी और मुझे मिठाई खिलाई... मैंने खाना वहीं खाया... म.सा.! अगर मुझे जिनवचन न मिले होते, तो मैं धन के इस जुनून पर कभी काबू नहीं पा सकता, न ही मैं इस पवित्र प्रेम को प्राप्त कर पाता। मैं अपनी आत्मा में संतोष का आनंद नहीं पा सकता था। जिनशासन को, जिनवचन को, और आप जैसे महापुरुषों को करोड़ों-करोड़ वंदन! और मेरे इन सभी पापों के लिए, एक गहन मिच्छामी दुक्कडं।

(33) मुझे अपनी पत्नी की दो बातों से अत्यधिक लगाव था: एक, उसके बाल, और दूसरा, उसकी आँखें! उसके बाल अत्यंत काले, मुलायम और लंबे थे... और उसकी आँखें बड़ी थीं। जब वह काजल लगाती, तो और भी सुंदर लगती थी। मैंने उससे कहा था कि उसे हमेशा अपने बाल सँवार कर रखने चाहिए, यूँ ही कैसे भी नहीं, और आँखों में काजल लगाकर रखना चाहिए। और वह इसका पालन करती थी। ऐसा करने में, उसके अपने रूप-सौंदर्य के प्रति उसका लगाव पोषित होता था, लेकिन मेरा लगाव कहीं ज़्यादा पोषित होता था। मैं अक्सर उसकी आँखों को निहारता रहता... यह सब लगाव की एक तीव्र भावना थी। जब मुझे पता चला कि एक श्रावक, अपनी पत्नी के बालों के प्रति अपने जुनून के कारण, मरकर उसी के बालों में जूँ के रूप में पैदा हुआ, तो मैं भयभीत हो गया। मुझे यह ज्ञान हुआ कि 'हिंसा ही एकमात्र बड़ा पाप नहीं है। एक भी जीव को मारे बिना, ऐसी लगाव की भावनाएँ भी घोर पाप का कारण बन सकती हैं...' उसके बाद, मैंने अपनी पत्नी से कहा कि वह उन दोनों चीज़ों के बारे में सामान्य रहे, यह कहते हुए, 'तुम्हें मेरे लिए यह करने की ज़रूरत नहीं है...' और मैंने उस लगाव को दूर करने का सचेत प्रयास किया है। लेकिन अब तक इतने गहरे लगाव को पोषित करने के लिए, मैं मन, वचन और काया से अत्यंत निष्ठापूर्वक मिच्छामी दुक्कडं करता हूँ।

(34) मुझे यह भी बहुत पसंद था जब मेरी पत्नी विशेष रंगों की कुछ ड्रेस या साड़ियाँ पहनती थी। इसलिए, समारोहों और अन्य कार्यक्रमों में, मैं विशेष रूप से इस पर ज़ोर देता था। कभी-कभी वह चिढ़कर कहती, 'मुझे

पता है कि कौन सी ड्रेस या साड़ी पहननी है, या तुम्हें?' लेकिन मैं फिर भी ज़ोर देता था। ज़्यादातर, उसकी पसंद और मेरी पसंद में बहुत बड़ा अंतर नहीं होता था, इसलिए वह मेरी बात मान लेती थी, और मेरे लगाव की तुष्टि हो जाती थी। इसके ऊपर, अगर समारोह में लोग उसके कपड़ों की तारीफ़ करते, तो मैं गर्व से फूल जाता, क्योंकि आख़िरकार वह मेरी पसंद थी... जुनून के इन सभी परिणामों के लिए, मिच्छामी दुक्कडं।

(35) जब मेरी पत्नी लटकने वाले झुमके पहनती थी, तो वह बहुत सुंदर लगती थी। उसके कान से कंधे तक लटकने वाला और झूलने वाला मोती (या कुछ ऐसा ही) मुझे बहुत-बहुत पसंद था। मुझे उसके बिना मेरी पत्नी का श्रृंगार अधूरा लगता था... इसलिए, मेरे कहने पर, उसने अपनी ड्रेस और साड़ियों से मेल खाने वाले कई रंगों और डिज़ाइनों में कई लटकने वाले झुमके (लंबे, लटकते हुए कान के आभूषण) बनवाए थे, और वह उन्हें समारोहों में अवश्य पहनती थी। मैं उसे पहनाता था। कई बार, जब हम बाहर जाते थे, तब भी मैं इन सब बातों पर ज़ोर देता था। यह भी एक गहरा लगाव था, और उसके लिए, एक गहन मिच्छामी दुक्कडं।

(36) मेरी पत्नी की आँखों की रोशनी कम हो गई, तो उसने चश्मा पहनना शुरू कर दिया। हे भगवान! मेरा मन एकदम खिन्न हो गया। वह एक अधेड़ उम्र की, परिपक्व महिला जैसी दिखने लगी थी। मैंने तुरंत उसकी आँखों का ऑपरेशन करवा दिया। तब जाकर मुझे शांति मिली। अब मुझे एहसास होता है कि छोटी-छोटी बातों में भी आसक्ति ने मुझे किस कदर घेर रखा था। उस समय, यह सारी आसक्ति मुझे कभी पाप जैसी नहीं लगती थी। लेकिन जिनशासन को समझने के बाद, अब मुझे एहसास होता है कि आत्मा का सहज स्वभाव तो वीतरागता है, जिसमें छोटी-से-छोटी आसक्ति भी एक दोष है, एक दाग है। और भले ही मैं अपनी इन सभी आसक्तियों को छोटा मानता हूँ, पर असल में ये सभी बड़े दोष हैं। यदि एक-एक आसक्ति को धोया न जाए, पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त से दूर न किया जाए, तो यह आत्मा का भयंकर अहित कर सकती है। देखिए, पूज्य संभूति मुनि को एक स्त्री के बालों के स्पर्श के प्रति आसक्ति ने उनका कैसा भयंकर अहित किया। मेरी सभी (दिखने में छोटी पर वास्तव में बड़ी) आसक्ति की भावनाओं के लिए, मनःपूर्वक मिच्छामी दुक्कडं।

(37) जब मेरी संपत्ति बहुत बढ़ गई, तो मैंने उससे सोना खरीदा और उस सोने को अपने घर की दीवारों में छिपा दिया। कोई दीवार तोड़कर अंदर देखने तो वाला है नहीं। चाहे आई.टी. विभाग आए या चोर आएँ... मैं एकदम निश्चिंत हो गया। मैंने लाखों रुपये नकद घर में अनाज की बोरियों में रखे टिन के डिब्बों में छिपा दिए। इस तरह, मैंने कई बेहिसाब संपत्तियाँ छिपाईं ताकि किसी को पता न चले। जब मैंने अनुपमा की कहानी सुनी, जिसे जमीन खोदते हुए सोने का एक घड़ा मिला था, तब मुझे समझ आया। वह सलाह देती है: 'इसे ऐसी जगह रखो जहाँ सारी दुनिया इसे देख सके, पर कोई चुरा न सके।' और उसकी सलाह पर, उस सोने से आबू पर्वत पर एक देरासर बनवाया गया। आज भी पूरी दुनिया उसे देखती है, पर कोई उसे चुरा नहीं सकता। मुझे भी ऐसा ही करना चाहिए था; मुझे अपनी अतिरिक्त संपत्ति को ऐसी जगह लगाना चाहिए था जहाँ उसका सर्वोत्तम उपयोग होता और साथ ही, कोई उसे चुरा भी नहीं सकता... पर यह सारी समझ मुझे आपकी किताबें पाने और आपके प्रवचन सुनने के बाद ही आई। अब मैं ठीक यही करना चाहता हूँ। लेकिन पहले जो मुझे नकद और सोने के प्रति गहरी आसक्ति थी, उसके लिए मनःपूर्वक मिच्छामी दुक्कडं।

(38) मुझे धन से ऐसी आसक्ति थी कि किसी भी धार्मिक कार्य में, मैं खर्च करने से बचने के लिए कोई-न-कोई

बहाना खोज लेता था, और अपनी पत्नी तथा दूसरों को भी रोकता था... यदि कोई देरासर बन रहा हो या मूर्ति की प्रतिष्ठा हो रही हो... तो मैं कहता, 'जीवित लोग भूख से मर रहे हैं, उनके लिए कुछ करो! इस बेजान पत्थर पर इतना खर्च करने का क्या मतलब है?' जब धार्मिक सम्मान की बोलियाँ लगतीं, तो मैं कहता, 'यह सब दिखावा है। मैं तो गुप्त रूप से करना चाहता हूँ... इन नीलामियों में, बेचारे मध्यमवर्गीय लोग तो भाग भी नहीं ले सकते... ऐसी बोली का क्या मतलब है?' जब साथी जैनों की मदद की बात आती, तो मैं बहाना बनाता। 'उन्हें नौकरियाँ दी जानी चाहिए, उन्हें व्यापार में शामिल किया जाना चाहिए... उन्हें आलसी क्यों बनाना?' जब गरीबों की मदद की बात आती, तो मैं बहाना बनाता। 'इसी तरह तो सब कामचोर बन जाते हैं...' जब तपस्या करने वालों को उपहार देने की बात आती, तो मैं कहता, 'उपहार देकर उनमें लालच क्यों पैदा करना? उनकी साधना शुद्ध बनी रहे, इसके लिए उपहार बिल्कुल नहीं देना चाहिए।' जब उपवास समाप्ति के उपलक्ष्य में भोज की बात आती, तो मैं तुरंत कोई बहाना ढूंढ लेता कि 'ये लोग तो तपस्या के बहाने मौज-मस्ती कर रहे हैं। वे तपस्या के लिए नहीं खाते, बल्कि खाने के लिए तपस्या करते हैं। तपस्या से पहले भोज, तपस्या के दौरान भोज, तपस्या के बाद भोज...' संक्षेप में, मैंने कभी भी धार्मिक क्षेत्र में किसी भी तरह से पैसा खर्च नहीं किया, और यद्यपि मैंने इसके लिए तरह-तरह के बहाने बनाए, पर मूल कारण धन के प्रति मेरी मूर्च्छा थी। मैं अपनी संपत्ति से कभी अलग नहीं हो पाता था। अब मैं अपने लिए कह सकता हूँ, मैं समझ सकता हूँ कि 'मैं एक कंजूस था...' मैं वह था जिसे दुनिया कंजूस-शिरोमणि कहेगी। मुझे धन के प्रति इस मूर्च्छा और इसके कारण हुई धर्मक्षेत्रों की निंदा से घृणा है। मैं हृदय की गहराई से क्षमा माँगता हूँ।

(39) मैंने तीन फ्लैट खरीदकर रखे हैं। मेरे पास अपने लिए पहले से ही ४००० वर्ग फुट का फ्लैट है; मुझे किसी और फ्लैट की ज़रूरत नहीं है। लेकिन मैंने निवेश किया, और यह सुनिश्चित करने के लिए कि फ्लैट खाली न पड़े रहें, मैंने उन्हें किराए पर दे दिया, जिससे मुझे आमदनी भी होने लगी। मैंने धन आने का कोई रास्ता नहीं छोड़ा। मुझे तीनों फ्लैटों से महीने का डेढ़ लाख रुपया मिलता है... इसके अलावा, मैंने लोनावाला में एक बंगला रखा हुआ है। मैं वहाँ छुट्टियों में या जब भी मन करता है, जाता हूँ। अतीत में, मैं अक्सर वहाँ दूसरी औरतों के साथ, वेश्याओं के साथ गया हूँ और आनंद लिया है, लेकिन मैंने वह सब बहुत पहले छोड़ दिया था। फिर भी, वहाँ परिवार के साथ जाना और रहना जारी है। साल में पाँच-सात दिन के आनंद के लिए, मैंने अपने सिर पर इस पूरे बंगले का बोझ डाल लिया है। बंगले में एक बगीचा है, एक फलोद्यान है (जहाँ फल उगते हैं)... वनस्पतिकाय की हिंसा का पाप भी जारी है... मैं अब भी इसे छोड़ नहीं पा रहा हूँ... हृदय से, मिच्छामी दुक्कडं।

- - X - X - -

(ऊपर दिए गए 39 बिंदु एक पुरुष द्वारा लिखे गए हैं। इनमें से कई बिंदु थोड़े-बहुत फेरफार के साथ महिलाओं पर भी लागू होते हैं। हालांकि, महिलाओं का parigraha अक्सर पुरुषों से भिन्न प्रकार का हो सकता है। इसे ध्यान में रखते हुए, निम्नलिखित बिंदु एक महिला के दृष्टिकोण से लिखे गए हैं जो अपने परिग्रह, अपनी आसक्ति की भावनाओं और अपनी मूर्च्छा के बारे में लिख रही है... इनमें, पुरुष द्वारा उल्लिखित बिंदु भी दोहराए जा सकते हैं... जिसके लिए हम विनम्रतापूर्वक क्षमा चाहते हैं...)

(1) मेरे शुभ कर्मों की कृपा से, मुझे अद्‌भुत सौंदर्य प्राप्त हुआ; मैं एक नायिका की तरह दिखती थी... लेकिन मेरा दुर्भाग्य यह था कि मुझे इस सौंदर्य के प्रति अत्यंत मोह था। मैं अक्सर घंटों आईने में अपना प्रतिबिंब देखती रहती थी... वह सौंदर्य बदलने वाला तो था नहीं... पर सिर्फ देखने से मेरे अहंकार की तुष्टि होती थी, मेरी आसक्ति को संतोष मिलता था, और मुझे खुशी महसूस होती थी, इसलिए मैं देखती रहती थी। इसी उद्देश्य से, मैंने अपने शयनकक्ष में एक बड़े आकार का आईना लगवाया था। इस तरह, मैं सिर्फ अपना चेहरा ही नहीं, बल्कि सिर से पाँव तक अपना पूरा शरीर देख सकती थी... मैंने पोशाक और श्रृंगार के साथ अपने पूरे शरीर को देखकर असीम आसक्ति का सेवन किया... उसके लिए, हृदय से, मिच्छामि दुक्कडं। मेरे माता-पिता इस पागलपन के लिए मुझे डाँटते थे, हँसते हुए कहते थे, 'जब हम तुम्हें तुम्हारे ससुराल भेजेंगे, तो हमें एक बड़ा आईना भी देना पड़ेगा।' लेकिन मैंने उनकी किसी बात पर ध्यान नहीं दिया। शादी के बाद भी, मैंने अपने शयनकक्ष में विशेष रूप से वैसा ही एक बड़ा आईना लगवाया।

(2) अपने सौंदर्य को बनाए रखने के लिए, स्नान करना आवश्यक था। इसमें, मैं बहुत अधिक साबुन और शैम्पू का उपयोग करती थी। मुझे स्नान करने में बहुत आनंद आता था। हर दिन, कम-से-कम आधा घंटा सिर्फ स्नान में व्यतीत होता था। सप्ताह में एक या दो बार तो एक घंटा भी बीत जाता था। कारण? मेरे सौंदर्य को बनाए रखने का प्रयास, सुख के प्रति आसक्ति! मैंने अपने मानव जीवन का बहुमूल्य समय इसमें व्यर्थ कर दिया।

(3) बचपन में, मुझे खिलौनों से भी बहुत लगाव था। उनमें से, मेरे पास एक गुड़िया थी जिसे मैं पूरे दिन अपने साथ रखती थी। रात में सोते समय भी, मैं उसे अपने बगल में सुलाती थी। मैं उससे बातें करती थी... एक दिन, वह गुड़िया खो गई, और मैं इतना रोई कि मेरी माँ को तुरंत मुझे एक नई गुड़िया खरीदकर देनी पड़ी...

(4) मुझे अपने लंबे, रेशमी, घने काले बालों से भी गहरा लगाव था। टीवी पर बालों के जो भी विज्ञापन देखती, अखबारों में बालों के जो भी विज्ञापन पढ़ती... मैं वे उत्पाद लाकर अपने बालों की देखभाल के लिए लगन से प्रयास करती। हद तो तब हो गई जब किसी ने कहा, 'बालों में अंडे की जर्दी लगाने से वे बेहद मुलायम और सुरक्षित हो जाते हैं।' अब, मेरे बालों में कोई समस्या नहीं थी; वे न तो रूखे होने लगे थे और न ही झड़ रहे थे... लेकिन मेरे मन में ऐसी धुन सवार हो गई कि जैन होने के बावजूद, मैंने एक अंडे का तरल, एक पंचेन्द्रिय जीव का तरल, अपने बालों पर लगाया और उसे अच्छी तरह मला... और जब इससे मेरे बाल और भी बेहतर हो गए, तो मैंने कई बार अंडे की जर्दी का इस्तेमाल किया। अंडा आखिर एक जीवित प्राणी जैसा दिखता तो नहीं था; उसमें कोई चूजा तो दिखाई नहीं देता था... इसलिए सबके कहने के बावजूद, मैंने इसे हिंसा नहीं माना। अब मुझे एहसास होता है कि अंडे के अंदर का तरल पदार्थ चूजे का प्रारंभिक रूप है... विवाह से पहले और बाद में अनगिनत बार किए गए इस पाप के लिए, गहन मिच्छामी दुक्कडं।

(5) गर्मी और अन्य कारणों से, मेरे चेहरे पर मुंहासे हो गए, और मैं इतनी डर गई कि मैं तीव्र आर्त्तध्यान की स्थिति में जीने लगी। 'मेरा सौंदर्य नष्ट हो गया...' यह विचार मुझे लगातार सताता रहता था। मैं डॉक्टर-दर-डॉक्टर से परामर्श करके इलाज करवाती रही, लेकिन मुंहासे ठीक नहीं हो रहे थे। मुझे किसी को अपना चेहरा दिखाने में शर्म आने लगी... केवल इन मुंहासों के कारण मेरा स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। मैं अक्सर गुस्सा करने लगी। अगर कोई मुंहासों के बारे में कोई टिप्पणी करता या पूछता, तो मेरा मन तुरंत अशांत हो जाता। एक

चेहरे के लिए जो मृत्यु के बाद राख हो जाना है, मैंने भयंकर आर्त्तध्यान किया... क्या गहन अज्ञान और तीव्र महोदय! चिंता तो तब करनी चाहिए जब आत्मा मैली हो... इसके बजाय, मैं व्यर्थ में अपने चेहरे के मैले होने की चिंता करती रही। बहुत समय बाद, एक इलाज कारगर हुआ, और मुंहासे ठीक हो गए। वह डॉक्टर मुझे भगवान जैसा लगने लगा। उसके बाद, मुझे अपने ठीक हुए चेहरे से और भी अधिक आसक्ति हो गई। इन सभी मूर्च्छा की भावनाओं के लिए, गहन मिच्छामी दुक्कडं।

(6) मुझे अपने होठों से भी बहुत लगाव था। जब भी मैं घर से बाहर निकलती, मेरे पास हमेशा एक ब्रांडेड लिपस्टिक होती थी। भले ही मैंने निकलने से पहले होठों पर रंग लगा लिया हो, लिपस्टिक फिर भी मेरे साथ होती थी... अब, मैं दो-तीन घंटे के भीतर दोबारा लिपस्टिक तो लगाने वाली नहीं थी, फिर भी पता नहीं क्यों, मैं उसे हमेशा अपने साथ रखती थी। और मेरे पर्स में एक छोटा सा आईना भी होता था... जब भी समय मिलता, मैं आईने में अपना चेहरा देखती, अपने बाल ठीक करती... अगर मेरे होठों पर लिपस्टिक ठीक नहीं दिखती, अगर ऐसा लगता कि ऊपरी होंठ पर ज्यादा और निचले होंठ पर कम है, तो मैं अपने होठों को एक-दूसरे से दबाकर रगड़ती ताकि रंग दोनों होठों पर एक समान हो जाए... आत्मा की यह कैसी कलुषित वृत्ति है कि होठों के रंग में थोड़े से अंतर के लिए, जिसे शायद ही कोई देख पाता, इतना ज़ोरदार प्रयास करती है, फिर भी यही आत्मा काम, क्रोध आदि के दागों को हटाने का कोई प्रयास नहीं करती जो पूरी दुनिया को दिखाई देते हैं और जिन्हें हर कोई नापसंद करता है... मैंने अपने पूरे जीवन में, लिपस्टिक का रंग बराबर करने के लिए अपने होठों को आपस में रगड़ने के रूप में सैकड़ों बार आसक्ति का यह गंभीर पाप किया है। उसके लिए, एक गहन मिच्छामि दुक्कडं। अब, मैंने लिपस्टिक का उपयोग पूरी तरह से बंद कर दिया है। न तो अहिंसक वाली, और न ही रामदेवजी के उत्पाद। आसक्ति स्वयं ही सबसे बड़ी हिंसा है; इससे बड़ी हिंसा और क्या हो सकती है? ईश्वर मुझे मेरे भविष्य के सभी जन्मों में पागलपन जैसे इस पाप से बचाए।

(7) बचपन से ही मुझे कपड़ों से बहुत लगाव था। पहले फ्रॉक, फिर ड्रेस, जींस और टी-शर्ट, घाघरा-चोली, साड़ियाँ... मैं इन सबको जमा करती रही। मेरी शादी से पहले, मेरे पास कम-से-कम १०० जोड़ी ड्रेस और पश्चिमी कपड़े रहे होंगे। शादी के बाद, मेरे पास लगभग २०० साड़ियाँ थीं... मैं मैचिंग के बिना भी नहीं रह सकती थी। कपड़ों का रंग-मिलान तो ज़रूरी था ही, पर उसके साथ-साथ, मैं अपने माथे पर लगी बिंदी, झुमके, बालों में बकल या रबर बैंड का भी बिल्कुल सटीक रंग-मिलान करती थी... इसमें भी बहुत समय बर्बाद होता था। 'यह मुझ पर अच्छा लग रहा है। यह मुझ पर अच्छा नहीं लग रहा है।' मैंने ऐसा सैकड़ों बार, शायद हजारों बार किया होगा... मैंने धर्म का भी पालन किया, लेकिन मुझे लगता है कि मेरे पास केवल क्रिया का धर्म है, भाव का धर्म नहीं है। जो व्यक्ति अपनी आसक्ति की भावनाओं को कम नहीं करता, विशेष रूप से ऐसी तुच्छ बातों में, उसके पास भाव का धर्म कैसे हो सकता है?... मेरे कपड़ों के परिग्रह के पाप के लिए, मैचिंग के पाप के लिए, विभिन्न रिबन, बकल, बिंदी और झुमकों के परिग्रह के पाप के लिए, मन:पूर्वक मिच्छामी दुक्कडं।

(8) मैचिंग के संदर्भ में, मैं नेल पॉलिश के बारे में तो बिल्कुल भूल ही गई। मैं अपने हाथों और पैरों के नाखूनों को भी मैचिंग करके रंगती थी... खासकर समारोहों के लिए! मुझे अपने नाखून बिना रंगे हुए बिल्कुल पसंद नहीं थे। मुझे नाखून बढ़ाने का भी शौक था। लंबे नाखूनों पर रंग अधिक उभरकर आता था, इसीलिए मुझे

यह शौक हो गया। मैं उन नाखूनों को यूँ ही नहीं रखती थी; मैं उन्हें ठीक से आकार देती थी... भगवान ने कहा है, 'गौतम! एक क्षण के लिए भी असावधान मत रहो।' और मैंने अपने जीवन के बहुमूल्य घंटे सिर्फ अपने नाखूनों को तराशने, रंगने और मैचिंग करने में बर्बाद कर दिए। मैंने कर्मों का क्षय नहीं किया; मैंने कर्म बांधे। मैंने अपनी आसक्ति कम नहीं की; मैंने उसे बढ़ाया। मिच्छामी दुक्कडं।

(9) मेहंदी के रंग में, मेरी आत्मा भी रंगों से रंग गई थी। मैंने बेहतरीन, सबसे जटिल डिजाइन लगाने में सक्षम होने के लिए मेहंदी की कक्षाएं लीं, और मैं एक विशेषज्ञ बन गई। शादियों और अन्य अवसरों पर, मैं अपने दोनों हाथों पर मेहंदी लगवाती थी, और मैं कई अन्य लोगों को भी लगाती थी। मैंने इसे अपने लिए आय का एक स्रोत भी बना लिया। मुझे पैसे की ज़रूरत नहीं थी, लेकिन चूँकि मैं अच्छी-खासी रकम कमा रही थी, तो उसे क्यों जाने दूँ? मेहंदी के रंग के प्रति आसक्ति, डिजाइन के प्रति आसक्ति, पैसा कमाने के प्रति आसक्ति, प्रशंसा के शब्दों के प्रति आसक्ति... मैंने ऐसी आसक्तियों के ढेर पोषित किए, और इसमें काफी समय बर्बाद हुआ। एक हाथ पर मेहंदी लगाने में ही एक-दो घंटे लग जाते थे... और शादियाँ व अन्य समारोह एक के बाद एक आते रहते थे। आज तक, मैंने अपने मानव जीवन के सैकड़ों घंटे सिर्फ मेहंदी लगाने में बर्बाद कर दिए हैं। अनंत पुण्य कर्म बांधने के क्षणों में, मैंने केवल अनंत पाप और अनंत गहरे नकारात्मक संस्कार ही बांधे। मैंने कितनी बड़ी मूर्खता की है... गुरुदेव! एक गहन मिच्छामी दुक्कडं...

(10) मेहंदी के साथ-साथ, मैंने मेकअप करना भी सीखा। इस कला में निपुण होने का मुझे ईश्वर-प्रदत्त वरदान था। अपने शुभ कर्मों के कारण, मैं काफी प्रसिद्ध हो गई। करोड़पति और अरबपति परिवारों के लोग अपनी शादियों और अन्य समारोहों में मेकअप के लिए मुझे बुलाने लगे। मैं स्वयं एक करोड़पति परिवार की बेटी (और बाद में, बहू) थी... लेकिन हर मेकअप सत्र के लिए, मुझे हजारों रुपये मिलते थे। १० हजार, २० हजार...! दूसरे शहरों से भी प्रस्ताव आने लगे। विपणन के लिए, मैंने अब तक किए गए सभी मेकअप की तस्वीरें और वीडियो रखे थे, और मैंने उन्हें प्रसारित कर दिया था... लोगों को वे बहुत पसंद आए, इसलिए जबरदस्त माँग थी, और पैसे, पद और प्रसिद्धि के लालच में, मैंने वे सभी प्रस्ताव स्वीकार करना शुरू कर दिया... मैं हर साल लाखों रुपये कमाने लगी। इसमें, मेरा बहुत अधिक समय बर्बाद हुआ, क्योंकि दूसरे शहरों की यात्रा में काफी समय लगता था। और हर महिला का मेकअप करने में कम-से-कम तीन से चार घंटे लगते थे। अगर मुझे मेकअप के लिए शहर से बाहर जाना पड़ता, तो यह तय था कि इसमें दो दिन लगेंगे। अगर मैं अब तक मेकअप पर बर्बाद हुए कुल समय की गणना करूँ, तो यह महीनों के बराबर होगा। और समय की इस बर्बादी के साथ-साथ, मेरे अपने माता-पिता के साथ संबंध बिगड़ गए। वे मुझे मना करते थे,

यह खंड "ब्लैक डायरी" की स्वीकारोक्तियों को जारी रखता है, जो दो मुख्य क्षेत्रों पर केंद्रित है: खंड १०-१५ में बताया गया है कि कैसे पेशेवर महत्वाकांक्षा और माँ के लगाव ने परिवार को बर्बाद कर दिया, और खंड १६-२० लालच, कंजूसी और भौतिक कबाड़ के प्रति अत्यधिक लगाव की आध्यात्मिक कीमत पर प्रकाश डालता है।

भाग १: महत्वाकांक्षा, लालच और माँ का जुनून

(11) मेरे पति और ससुराल वाले मुझसे कहते थे, "हमें और पैसे की क्या ज़रूरत है? तुम्हें इसकी क्या ज़रूरत है? अगर काम करना ही है, तो हमारे शहर में करो। अकेले दूसरे शहरों में क्यों जाना, अक्सर रात की यात्राएँ

करके? दूसरे पुरुषों पर क्यों भरोसा करना?" लेकिन मैंने नहीं सुनी; मैं उनसे लड़ी और फिर भी गई। अपनी शादी के समय, मैंने अपने होने वाले पति के साथ एक शर्त रखी थी कि मैं मेकअप के काम के लिए बाहर जाऊँगी। हमारी शादी इस समझौते के साथ हुई कि मैं महीने में एक बार जाऊँगी। शुरुआत में, यह ठीक था, लेकिन फिर बड़े प्रस्ताव आने लगे। मुझे लगा कि "संबंध" बनाए रखना ज़रूरी है। मेरे पति और ससुराल वालों के साथ छोटे-मोटे झगड़े शुरू हो गए। मैं महीने में २-३ रविवार बाहर रहती थी। मेरी सास पर घर के काम का बोझ बढ़ गया, और उनका मन मेरे प्रति खट्टा हो गया।

यह संघर्ष तब रुक गया जब मैं गर्भवती हुई और बच्चे में व्यस्त हो गई। लेकिन जब मेरा बेटा चार साल का हो गया, तो मैंने फिर से शुरू कर दिया, उसे अपनी सास की देखभाल में छोड़कर। मेरे पति ने विनती की, "बच्चे के बारे में सोचो; उसे तुम्हारी ज़रूरत है।" लेकिन मैंने नहीं सुनी। पद और धन मुझे अपने बच्चे से अधिक प्रिय लगे।

सबसे बड़ा नुकसान मेरे चारित्र्य का हुआ। मैं यह सोचकर पूरी तरह तैयार होकर (सज-धजकर) जाती थी कि इससे मेरी कीमत बढ़ती है। पुरुष मेरे सौंदर्य को घूरते, बहानों से मुझसे बात करते, कुछ ने मुझे छुआ, और कुछ ने बेशर्मी से मुझे गले लगाया। मैंने इसे आधुनिक युग में "आम" मानकर स्वीकार कर लिया। फिर मुझे एक बहुत बड़ा झटका लगा। जब मैं एक मेकअप असाइनमेंट के लिए शहर से बाहर थी, एक शादी की पार्टी के साथ एक होटल में ठहरी हुई थी, तो एक आदमी कामांध हो गया। उसने किसी तरह एक चाबी हासिल की, रात में मेरे कमरे में घुस आया, और मेरे साथ बलात्कार किया। उस रात मैं फूट-फूट कर रोई। मैंने अपने पति को फोन किया और उन्हें सब कुछ बताया। वे इतने महान और नेक थे कि उन्होंने मुझे ताने देने के बजाय सांत्वना दी। वे मुझे सुबह-सुबह लेने आए, और तभी मुझे उनका सच्चा प्यार समझ में आया। मैंने उसी दिन वह काम छोड़ दिया। पैसे और प्रतिष्ठा के पाप के कारण, मेरा शील खंडित हो गया। मैं गहराई से पश्चाताप करती हूँ।

(12) शादी के सात साल तक मेरे कोई संतान नहीं हुई। मैं गहरे दु:ख (Artdhyan) में थी। मैंने जन्मकुंडली दिखाई, अनुष्ठान और उपचार किए। अंत में, मैं गर्भवती हुई। उसी क्षण से, एक गहरा लगाव (Raag) बन गया। मेरे बेटे के जन्म के बाद, मैं अत्यधिक रक्षात्मक हो गई। अगर वह सोता, तो मैं उसे लगातार देखती रहती; अगर वह रोता, तो मेरा तनाव आसमान छू जाता, और मैं अपने पूरे परिवार को तनाव में डाल देती। अगर उसे बुखार होता, तो मैं रोने लगती। अगर कोई उसके गालों को चिकोटी काटता या उसके साथ मज़ाक करता, तो मैं उनका अपमान कर देती। अपने जुनून के कारण, मैंने दुश्मन बना लिए। लोग मेरा मज़ाक उड़ाते हुए कहते, "असली माँ तो यही है; बाकी सब तो डायन हैं।"

मेरे अत्यधिक लाड़-प्यार ने मेरे बेटे को जिद्दी और अहंकारी बना दिया। वह एक देवता की तरह रहता था जिसकी हर इच्छा पूरी की जाती थी। वह गलत रास्ते पर जाने लगा। मेरे पति ने मुझे चेतावनी दी, लेकिन मेरे अंधे मोह ने मुझे अपने बेटे से कुछ भी कहने से रोक दिया। मैंने उसे ७वीं कक्षा में बिना परिणाम सोचे एक आईफोन दे दिया। मेरी बुद्धि पर मोह (Moha) का परदा पड़ गया था। मेरे लगाव के कारण, उसने धूम्रपान, हुक्का, शराब पीना, और क्रिकेट सट्टेबाजी में हजारों रुपये हारना शुरू कर दिया। वह आधी रात को नशे में घर

आता। जब उसके पिता उसे सलाह देते, तो वह अपने पिता को तब तक पीटता जब तक कि खून न बहने लगे। मैंने उसकी उल्टी साफ की। मेरे बेटे का लगाव मेरा सबसे बड़ा पाप था। जैसे गांधारी का दुर्योधन के प्रति लगाव ने कुरु वंश का नाश कर दिया, वैसे ही मेरे लगाव ने मेरे घर को नरक बना दिया। उसने सट्टेबाजी में लाखों रुपये खो दिए; उसके पिता को कई बार उसके कर्ज चुकाने पड़े, जिससे हमारी संपत्ति खत्म हो गई। उसने अपने जन्मदिन पर अपने पिता के पैसे से दोस्तों के लिए बड़ी-बड़ी होटल पार्टियाँ दीं। उसने एक प्रेमिका पर कम-से-कम ५० लाख रुपये खर्च किए। उनके ब्रेकअप के बाद, वह शराब और पार्टियों में और डूब गया। दो बार पुलिस हमारे घर आई। रिश्तेदारों ने हमसे कहा कि उसे सार्वजनिक रूप से बेदखल कर दो ताकि वह सीखे, लेकिन मुझे डर था कि वह आत्महत्या कर लेगा। अंत में, हमने अपना घर बेच दिया और उसका सामाजिक दायरा तोड़ने के लिए दूसरे शहर चले गए। इस तनाव के कारण मेरे पति को मधुमेह और हृदय रोग हो गया। अब मुझे एहसास होता है कि इस लगाव ने हमारी ज़िंदगी बर्बाद कर दी। मैं गहराई से पश्चाताप करती हूँ।

(13) एक हेयर सैलून ने "मुफ्त बाल उपचार" का विज्ञापन दिया जिसमें १९-२२ साल के प्रशिक्षु महिलाओं के बालों पर अभ्यास करेंगे। "मुफ्त" सेवा और "सुपर हेयर" के लालच ने मुझे वहाँ पहुँचा दिया। एक युवक ने मेरे बाल धोए और उनका उपचार किया। बाद में, मुझे एहसास हुआ कि एक अजनबी आदमी का मुझे इस तरह छूना कितना गलत था। कौन जाने उसके मन में क्या बुरे विचार थे? भले ही उसके विचार ठीक थे, मैंने गलती की। मैं "मुफ्त" और "सौंदर्य" के लालच के लिए पश्चाताप करती हूँ।

(14) मुझे सैंडल और हील्स का जुनून था। कॉलेज में और शादी के कई सालों बाद, मैंने उन्हें "व्यक्तित्व" के लिए पहना। उन्हें पहनकर चलने से मेरे अहंकार को पोषण मिलता था। मुझे अच्छा लगता था कि सबकी नज़रें मेरी चाल पर हों। इन पापी भावनाओं को पोषित करने के लिए मैं पश्चाताप करती हूँ।

(14 - मूल में संख्या दोहराई गई) मुझे अपनी बेटी से भी अंधा मोह था। मेरे पति ने मुझे उसे सीमा में रखने की चेतावनी दी, लेकिन मैंने नहीं सुनी। वह विवाह से पूर्व ही गर्भवती हो गई। मुझे उसके मोबाइल से पता चला। मैं उसे गर्भपात के लिए ले गई। मैं इस पाप के लिए पश्चाताप करती हूँ।

(15) गर्भपात वाले प्रकरण से पहले, मेरी बेटी को एक अन्य जाति के लड़के से प्रेम हो गया। मुझे उसके फ़ोन में इसके प्रमाण मिल गए। वह उसी से विवाह करने की ज़िद पर अड़ गई। मुझे ऐसा गहरा आघात लगा कि मैं मूर्छित हो गई। मेरा स्वास्थ्य बिगड़ता चला गया, पर वह निष्ठुर और अविचलित बनी रही। तब मुझे बोध हुआ कि मेरा गहरा मोह ही मेरे दुःख का कारण था। मैं कर्तव्य और अनासक्ति के बीच संतुलन बनाने में असफल रही। मैं पश्चाताप करती हूँ।

(16) (उनके दृष्टिकोण में) एक स्त्री होने के नाते, मुझमें उदारता की कमी थी। यदि घर में कोई अच्छा भोजन बनता, तो मैं उसे नौकरों को नहीं देती थी। एक बार जब मेरे देवर के बच्चे घर आए, तो मैंने मिठाई (सुखड़ी) छिपा दी और केवल अपने बच्चों को ही खिलाई। मैं पश्चाताप करती हूँ।

भाग २: लोभ और कृपणता के पाप

(17) एक साध्वीजी की निश्रा में एक मुमुक्षु बहन ओलीजी की तपस्या कर रही थीं। चूँकि वे साध्वीजी रिश्तेदार

थीं, उन्होंने तपस्या के पारणे का कार्यक्रम मेरे घर पर रखा। मेज़बानी मैंने की, पर मैं इतनी कंजूस थी कि मैंने केवल साधारण चीज़ें ही बनवाईं: मूँग, राब, दूध, खाखरा और शीरा। आज मुझे अपनी इस संकीर्ण मानसिकता पर शर्म आती है। उन्होंने २० दिनों तक उपवास किया था! यदि यह उनका अपना घर होता, तो वहाँ एक भव्य भोज का आयोजन होता। मुझे उनके साथ अपनी बेटी जैसा व्यवहार करते हुए मिठाई, नाश्ते और प्रेम से सत्कार करना चाहिए था। जब बहुमान (उपहार स्वरूप धनराशि) देने की बात आई, तो मैंने अपनी अलमारी में ₹ ₹ , ₹
प्रसिद्ध प्रवचनकार साध्वीजी बन गई हैं। मैंने अपने लोभ के कारण एक महान आध्यात्मिक अवसर खो दिया। मैं पश्चाताप करती हूँ।

(18) मेरे पति अक्सर मंदिर में दान या चढ़ावा (बोली) करते थे। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं था और मैं उनसे लड़ती थी। मैं सोचती, "धर्म के नाम पर इतना पैसा क्यों बर्बाद करना?" मैं कई-कई दिनों तक उनसे बात करना बंद कर देती या ध्वजारोहण समारोह में जाने से मना कर देती। जब मुझे पता चला कि वह छिपकर दान कर रहे हैं, तब भी मैंने उन्हें बहुत डाँटा। मुझे यह बोध नहीं हुआ कि प्रभु के मार्ग में खर्च किया गया धन एक निवेश है। मैं पश्चाताप करती हूँ।

(19) मेरे पति अक्सर मुझसे पुराने कपड़े, बर्तन, या खिलौने फेंकने के लिए कहते थे जो अनुपयोगी थे। लेकिन मुझे 'कबाड़' से इतना मोह था कि मैं उन्हें जाने नहीं दे सकती थी। अंत में, उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उन्हें गरीबों को दे दूँ। उन्हें दान देने के बजाय, मैंने उन्हें भंगारवाले को कौड़ियों के भाव (₹ -)
उन्हें गरीबों को दिया होता, तो मुझे लाखों का पुण्य मिलता, पर मेरे लोभ ने मेरी विवेक-बुद्धि पर पर्दा डाल दिया। मैं पश्चाताप करती हूँ।

(20) शाम को यदि भोजन बच जाता, तो मेरा परिवार मुझसे कहता कि इसे चौकीदार या जानवरों को दे दो और फ्रिज में मत रखो। पर मैं उस भोजन को छोड़ नहीं पाती थी। मैं उसे फ्रिज में रखकर अगले दिन कुछ 'नया' बनाकर या उसे गर्म करके फिर से उपयोग में ले आती, और इस बात की अनदेखी कर देती कि बासी भोजन, जिसमें बेइन्द्रिय जीव (सूक्ष्मजीव) उत्पन्न हो जाते हैं, को खाने में कितना पाप है। मैं चौकीदार को भोजन तभी देती थी जब मुझे उससे कोई अतिरिक्त काम करवाना होता था। मैं पश्चाताप करती हूँ।

(21) जब हमने एक नया घर खरीदा, तो मेरे पति ने कहा कि हम वहाँ कोई भी पुरानी चीज़ नहीं ले जाएँगे; हम सब कुछ गरीबों को दे देंगे। इस बात पर मैं पूरे परिवार से लड़ी। मैं पुराने पायदान और चप्पलें रखने तक के लिए झगड़ी। यह 'मितव्ययिता' नहीं, बल्कि शुद्ध कृपणता थी। मैं तुच्छ वस्तुओं का मोह भी नहीं छोड़ सकी। मैं इन छोटी-छोटी वस्तुओं के प्रति अपनी आसक्ति के लिए मिच्छामी दुक्कड़ं माँगती हूँ।